भारतीय दिगम्बर जैन अभिलेख और तीर्थ परिचय

मध्यप्रदेश : १३वीं शती तक



सम्पादक – लेखक

डॉ. कस्तूरचन्द्र जैन 'सुमन'

एम.ए.पी.एच.डी



प्रकाशक

श्री दिगम्बर जैन साहित्य संस्कृति संरक्षण समिति

डी–३०२ विवेक विहार, दिल्ली–११००६५

फोन २१५२२४४

पुष्प संख्या : ६

प्रप्ति स्थान (१) श्री दिगम्बर जैन साहित्य–संस्कृति
संरक्षण–समिति
डी–३०२, विवेक विहार, दिल्ली–११००६५
फोन : २१५२२४४

(२) जैन साहित्य–विक्रय केन्द्र
जैन विद्या संस्थान, श्री महावीरजी
जिला करौली, राजस्थान–३२२२२०

संस्करण : प्रथम

प्रतियाँ : १,०००

प्रकाशन वर्ष : २००१

मूल्य : 120/-

I.S.B.N. : 81-900470-8-6

(१)

परम पूज्य आचार्य हमारे,
जन जन के नेत्रों के तारे।
जिनके दर्शन से खुल जाते,
बन्द रहे जो हिय के द्वारे।।

(२)

वाणी सुनहिय खिल जाता है,
ज्यों पंकज रवि से खिल जाते।
तीर्थ धन्य हो गये धरा पर,
यदि गुरुवर के पग पड जाते।।

(३)

जगल में मंगल हो जाता,
कष्ट नहीं कोई रह पाते।
जैसे लिमिर भाग जाता है,
प्राची में सूरज के आते।।

(४)

ऐसे गुरुवर विद्यासागर,
को सादर मैं करूँ नमन।
मध्यप्रदेश के जैन लेख –
रचना गुरुवर को है अर्पन।।

विनयावनत चरणचञ्चरीक
(डॉ० कस्तूरचन्द्र जैन 'सुमन'
बॉसातारखेड़ा (दमोह) म.प्र.

प्राक्कथन

डॉ० कस्तूर चन्द 'सुमन' द्वारा सम्पादित्य ग्रंथ "मध्यप्रदेश के दिगम्बर जैन अभिलेख" बड़े परिश्रम से तैयार किया गया है। डॉ० समुन ने इन शिलालेखों का मूल पाठ सानुवाद प्रस्तुत कर विवेच्य ग्रंथ की उपादेयता में वृद्धि की है। यह निश्चित ही शोधार्थियों एवं जैन साहित्य व कला के विद्वानों के लिए उपयोगी सामग्री संजोए हुए है। मैं इसके शीघ्र ही समुचित प्रकाशन की संस्तुति सहित कामना करता हूँ। इस परिक्षम के लिए डा० सुमन प्रशंसा के पात्र हैं।

जयपुर
१२/३/२०००

रत्न चन्द्र अग्रवाल
भूतपूर्व निदेशक, पुरातत्त्व
व संग्रालय विभाग
जयपुर
८/१६२, मालवीय नगर
जयपुर–१७

प्राक्कथन

अभिलेख भारतीय इतिहास के स्त्रोत के रूप में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं। हमारे अतीत के एक बड़े अंश का पुनर्निर्माण विभिन्न माध्यमों में अंकित अभिलेखों के आधार पर ही किया गया है। इसीलिये जैन कला एवं इतिहास की दृष्टि से जैन धर्म या संस्कृति से सम्बद्ध लेखों की अपनी महत्ता है। विद्वानों ने अधिकांश जैन अभिलेखों का अध्ययन तो किया है, पर उन्हें क्षेत्र या विषयानुसार संग्रहीत करने के प्रयत्न अधिक व्यापक रूप से नहीं किये है।

बडी प्रसन्नता का विषय है कि संस्कृत, प्राकृत, भारतीय इतिहास जैन शास्त्रों और अन्य सम्बद्ध विषयों के प्रसिद्ध आदरणीय श्री डॉ० कस्तूर चन्द जैन 'समुन' जी महोदय ने मध्यप्रदेश के समी जैन अभिलेखों को हिन्दी अनुवाद या साराशं सहित तथा अपनी टिप्पणियॉ लगाकर एक साथ संग्रहीत कर भारतीय इतिहास के विद्वान तथा विद्यार्थियों के मनन एवं अध्ययन के लिए एक सराहनीय प्रयास किया है। इस संग्रह में डॉ. सुमन जी ने मध्यप्रदेश के गुप्तकाल से लेकर लगभग ईसा की तेरहवीं शती तक के लेख सम्मिलित किये हैं। इनमें मध्यप्रदेश के सभी महत्त्वपूर्ण जैन लेख आ गये हैं। इन अभिलेखों से क्षेत्र की जैन मूर्ति कला तथा वहॉ के आर्थिक, राजनीतिक एवं सामाजिक इतिहास पर अच्छा प्रकाश पडता है।

तथा रामगुप्त के काल की जिन प्रतिमाओं के मिलने के पूर्व इतिहासकारों मे यह धारणा थी कि गुप्त युग में केवल पॉच तीर्थंकरों की ही पूजा का प्रचलन था, जिनमें आदिनाथ, शान्तिनाथ नेमिनाथ, पार्श्वनाथ और महावीर का उल्लेख किया जाता था। पर महाराजाधिराज रामगुप्त द्वारा बनवायी इन जिन मूर्तियों से स्पष्ट हैं कि उस युग में भगवान चन्द्रप्रभ और भगवान पुष्पदन्त तथा सम्भवतः अन्य तीर्थकरों की पूजा प्रचलित हो चुकी थी। तथा सामान्यतः तीर्थंकर को अर्हत् कहा जाता था। इन लेखों से यह भी विदित होता है कि रामगुप्त की जैन धर्म में विशेष आस्था थी इसीलिये उसके विरूद के रूप में कहीं 'परम भागवत' का उल्लेख नहीं है। हमारी राय में रामगुप्त गुप्त वंश का राजा था और शायद आदर्श श्रावक रूप में पूर्णतः अहिसंक बन चुका था।

अन्य दृष्टियों से भी यह कृति अत्यन्त उपादेय एवं रूचिकर है। और सामान्य रूप से पढेलिखें व्यक्ति को भी इतिहास एवं उसके स्त्रोतों का ज्ञान करवाती हैं। आदरणीय डॉ० कस्तूरचन्द सुमन जी को मैं इस विद्वतापूर्ण ग्रन्थ के प्रणयन कराने के लिये बधाई देता हूँ। मेरा पूर्ण विश्वास है कि यह ग्रन्थ विद्वान एवं साधारण जैन इतिहास के पाठक के लिये परम उपयोगी सिद्ध होगा।

नई दिल्ली
१३ मई २००१

मुनीशचन्द्र जोशी
(पूर्व महानिदेशक भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण)

प्राक्कथन

ग्रन्थ ३०३ प्राचीन जैन शिला–लेखों का संग्रह है जो तिथिक्रम से सिलसिलेवार अंकित हैं। प्राचीनतम शिलालेख महाराजधिराज रामगुप्त के शासनकाल के हैं। इनकी शब्दावली गुप्तकालीन शिला लेखों से कुछ भिन्न है जिनकी ओर विशेष ध्यान आकृष्ट किया गया है। प्रत्येक शिलालेख का मूलपाठ भावार्थ तथा ऐतिहासिक मूल्यांकन के साथ दिया गया है। अवश्यकतानुसार अन्य ज्ञातव्य पहलुओं की ओर भी संकेत किया गया है जिनमें प्रतिमा–शास्त्रीय अध्ययन का विशिष्ट स्थान है।

जिन अभिलेखों का संग्रह इस ग्रन्थरत्न में हुआ है वे अभी तक अल्पज्ञात तथा अज्ञातप्राय थे। ये मध्यप्रदेश के उन स्थलों से उपलब्ध हैं जो अधिकतर अल्पज्ञात थे। इनके प्रकाशित होने से जैन धर्म तथा कला के मध्यकालीन इतिहास तथा तत्संबंधी अन्य ज्ञातव्य विषयों पर नया भंडार सामने आया है जो इतिहास के अन्य पहलुओं पर विशद प्रकाश डालते हैं।

इस ग्रन्थ की छपाई में एक कमी रह गयी है। अंग्रेजी उद्धरणों में भूलें रह गई हैं जो खराब हैं। उनके ठीक हो जाने से पुस्तक अधिक उपादेय हो जाएगी। ये भूलें शुद्ध हो जाये तो ग्रन्थ सर्वांगड़ीण समृद्ध हो जायेगा। ऐसा सर्वांगड़ीण अध्ययन अन्य क्षेत्रों के अभिलेखों के लिये अभी तक नहीं हुआ है। विद्वान लेखक इसके लिये साधुवाद के पात्र हैं।

सी–१२१, साकेत
नई दिल्ली
१०–३–२००१

कृष्णदेव
भूतपूर्व निदेशक
(भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण)

प्राक्कथन

मुझे डॉ० कस्तूर चन्द 'सुमन' द्वारा लिखित पुस्तक ,'भारतीय दिगम्बर जैन अभिलेख' भाग प्रथम मध्यप्रदेश देखने का सुअवसर प्राप्त हुआ। उसे मैंने भली भाँति पढ़ा है और समझा है। डॉ० सुमन ने अत्यधिक परिश्रम से इसमें समाहित सामग्री स्थान–स्थान पर घूम कर एकत्रित की हैं इसके लिये वह बधाई के पात्र हैं। उन्होंने प्रत्येक अभिलेख को गहराई से और सूक्ष्मता से पढ़ा है और उसका उल्लेख किया है। जैन प्रतिमाओं का अध्ययन भी उन्होंने विस्तार से किया है। अपनी तरह की यह पहली पुस्तक है जिसमें यह सामग्री देखने को मिली। निश्चित ही जैन पुरातत्त्व और जैन इतिहास को समझने में इस पुस्तक का बड़ा योगदान रहेगा। सभी अभिलेखों को एक स्थान पर एकत्रित करना ही अपने आप में बहुत बड़ी बात है। हम लोग आशा कर सकते हैं और अपेक्षा करते हैं कि डॉ० सुमन अन्य क्षेत्रों के पुरातत्त्व का अध्ययन करेंगे और उसे जनता के समक्ष लायेंगे।

लखनऊ
२०–८–२०००

ओम प्रकाश (अग्रवाल) जैन
महानिदेशक
इंडियन काउंसिल ऑफ कन्जरवेशन इंस्टीयूट
लखनऊ–२२६०२४

प्रकाशकीय

श्री दि० जैन साहित्य एवं संस्कृति संरक्षण समिति अपना नौवां पुष्प सुधी पाठकों की सेवा में प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष एवं महान् गौरव का अनुभव कर रही है। प्रस्तुत ग्रंथ के रचनाकार श्री डा० कस्तूर चंद्र जी 'सुमन' जैन समाज के विख्यात विद्वान् एवं प्रमुख कथा–शिल्पी है। अपनी कथा संरचनाओं में आपने जो ख्याति अर्जित की है उससे सारा समाज भली भांति परिचित है, पर इस कृति से आपने अपने इतिहास एवं पुरातत्व के क्षयोपशम को उजागर किया है।

लेखक ने दि० जैन अभिलेख और तीर्थ परिचय में मध्यप्रदेश को प्राथमिकता दी है, पर यह मध्यप्रदेश इतना विशाल और विस्तृत है कि छत्तीसगढ़ को अलग कर देने पर भी इसकी विशालता और विस्तृतता में कोई अन्तर नहीं आ रहा है अतः अभिलेखों को देखते हुए इसे मध्यदेश कहें तो ज्यादा उपयुक्त रहेगा। मध्यदेश की सीमाएं बांधते हुए किसी कवि ने लिखा है :–

इत चम्बल उतबेतवा, मालवदेश महान्।
दक्षिण दिशि है नर्मदा, उत्तर तौंस सुजान।।

सभी अभिलेख और तीर्थ इसी सीमा में विद्यमान है। इसी परिधि मे चन्देले और बुन्देले शासकों ने राज्य किया था और ये लोग जैनधर्म के प्रति बड़े उदार और सहिष्णु रहे हैं। चन्देले शासकों की जडें तो खोजने पर गोल्ल देश में पाई जाती हैं। गोल्ल देशाधिप तो "नूत्न चंदिल वंशी" जैन थे। जब गोल्लदेशाधिप किसी कारण विशेष से गोल्लाचार्य के रूप में दीक्षित हो गये तो राज्य में अफरातफरी मच गई और जिस के सींग जहां समाने थे, वहीं समा गये। नन्नुक नामक महा सामन्त जो नूत्न चंदिल वंशी थे कालिंजर में आ बसे और अपने वंश के 'नूत्न' शब्द को छोड़कर चंदिल सं चंदेल वंश के संस्थापक बन गये और यहीं से चंदेल वंश की शुरू आत हो गई यह समय सं. ८५७ का था। और परमर्दिदेव (सं. १२८२) तक यह वंश खूब फलता फूलता रहा तथा जैन मूर्ति कला, जैनधर्मायतन एवं जैन स्थापत्य का खूब विकास हुआ। देवगढ़, खजुराहो, पचराई, महोबा इसके उदाहरण है। जैन उपजाति गोलापूर्व का प्राचीनतम उल्लेख बहोरीबन्द की कायोत्सर्ग प्रतिमा में मिलता हैं।

चन्देलों का अंतिम शासक कीरत सिंह (सं. १५७७) अपने समय तक काफी दुर्बल और वर्चस्व हीन हो चला था, उधर मलखान सिंह बुन्देला परमर्दि देव (१२८२) के समय से ही अपनी सैन्य शक्ति सुसंगठित और सबल बनाने लगा था और कीरत सिंह चन्देले के समय तक बुन्देल शासक काफी सबल और सशक्त हो गये थे। उन्होंने चन्देलों को परास्त कर उसी प्रदेश के स्वयं शासक बन बैठे और उन्होंने अपनी राजधानी गढ़–कुढार और कालिंजर से उठाकर ओरछा बना ली और अपना सांस्कृतिक वैभव एवं इतिहास रचने लगे। इसी के साथ जैन इतिहास, पुरातत्व, कला तथा स्थापत्य को भी विकसित होने का सुअवसर प्राप्त हुआ जिसे डा० सुमन जी ने सजोया, संभारा और अनुसंधित्सु मनीषियों के समक्ष प्रस्तुत किया है, यद्यपि इस कार्य को पूर्ववर्ती विद्वानों ने भी भली भांति प्रस्तुत

किया है पर डा० सुमन जी की शैली स्वयं में अनूठी ही है। अपनी पी.एच.डी. की थीसिस को कई भागों में बांटकर बुने हुए शोध को सुधी पाठकों को परोस रहे हैं।

श्री सुमन जी ने अपने श्रम और ज्ञान की जो श्रेष्ठता इस ग्रंथ में प्रस्तुत की है उससे मध्यदेश का जैन इतिहास, जैन पुरातत्व जैन कला और जैन स्थापत्य भली भांति उजागर हुआ है जिसे पढ़कर इतिहास पुरातत्व एवं कला प्रेमी निश्चय ही प्रमुदित और सजग होंगे और इससे लोगों के ज्ञान में अभिवृद्धि भी होगी तथा मध्यदेश के जैन धर्म संबधी प्राचीन उद्धरणों की प्रामाणिकता का रसास्वादन कर सकेगें।

ऐसे अच्छे और प्रामाणिक तथ्यों से भरपूर श्रेष्ठ ग्रंथ को देकर डा. सुमन जी साधुवाद के पात्र हैं तथा भविष्य में भी ऐसी ही उत्कृष्ट कोटि की मणियां चुन चुनकर श्रेष्ठतम मुक्ताहार तैयार करके देगें ऐसी आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है। डा. सुमन यशस्वी हो और साहित्य तथा इतिहास व पुरातत्व के दैदीप्यमान नभ पर नक्षत्र की भांति दमकते रहे, चमकते रहें, इसी सद्भावना और शुभ कामना के साथ।

बडे हर्ष का विषय है कि इस पुस्तक के लिए संपूर्ण कागज की व्यवस्था श्री महावीर प्रसाद जैन (माचिस वाले) शक्ति नगर दिल्ली, श्री विरेन्द्र जैन (जैन साडी हाऊस) तेलीवाडा शाहदरा दिल्ली, श्री श्रीमन्दर दास जैन कालका जी नई दिल्ली, एवं विजय कुमार कवर सैन जैन, धारुहेडा हरियाणा ने उदार ह्रदय से प्रदान की है। एतदर्थ समिति उन के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करती है।

दिनाक
१६ मार्च २००१

कुन्दन लाल जैन
कार्यकारी अध्यक्ष

बडे खेद के साथ के सूचना देते हुए हाथ कांप रहे है कि हमारी समिति के वयो वृद्ध अध्यक्ष परम श्रद्धेय पूज्य समादरणीय पं. पन्ना लाल जी साहित्यचार्य का ६ मार्च २००१ को पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी के सान्निघ्य में समाधिमरण पूर्वक निधन हो गया है। अब हम उनके शुभाशीष एवं युक्ति पूर्ण मार्ग निदेशन से सदा के लिए वंचित हो गये हैं। प्रभु उन्हें सद्गति प्रदान करें तथा पारिवारिक जनों को धैर्य धारण करने की क्षमता प्रदान करें। इतिशम् ॐशान्तिः ॐशान्तिः ॐशान्तिः

हम हैं उनके दुःख से दुःखी
समिति के सभी सदस्य

भारतीय दिगम्बर जैन अभिलेख और तीर्थ-परिचय

भाग एक- मध्यप्रदेश

भारत में मध्यप्रदेश और मध्यप्रदेश में बुन्देलखण्ड का नाम सदा से ही प्रसिद्ध रहा है। यहाँ दिगम्बर जैनों के द्वारा धर्मायतनों का निर्माण कराया गया और उनमें तीर्थकर प्रतिमाओं की प्रतिष्ठाएँ सम्पन्न कराकर सदा से ही उन्हें वेदियों पर विराजमान किया जाता रहा है तथा नित्य उनकी अर्चना-वन्दना भी की जाती रही है। प्रतिष्ठा महोत्सवों के समय उन प्रतिमाओं का प्रतिष्ठाकाल तथा प्रतिष्ठा करानेवाले श्रावकों के नाम उनकी आसनों/पादपीठों पर अंकित कराये जाते रहे हैं जिनमें जैन संस्कृति का इतिहास सुरक्षित मिलता है।

प्रतिमाओं के पादपीठों पर जो अभिलेख-सामग्री उपलब्ध होती है, उसमें जैन उपजातियों के नाम भी दर्शाये गये हैं। मध्यप्रदेश से प्राप्त प्रस्तुत रचना में तीन सौ तीन अभिलेख संगृहीत हैं। इनमें जिन अभिलेखों में जैन उपजातियों के नाम उपलब्ध हैं उनका सन्दर्भ सहित द्वितीय परिशिष्ट में पृथक रूप से उल्लेख किया गया। प्रथम परिशिष्ट में अकारादि क्रम से उन स्थलों का नामोल्लेख भी किया गया है जिन स्थलों से प्रस्तुत रचना की अभिलेखादि सामग्री प्राप्त हुई है। प्रत्येक स्थल के नाम के सामने वहाँ से प्राप्त अभिलेख संख्या भी दर्शाई गयी है।

अभिलेखीय विशेषता

संगृहीत अभिलेखों की विशेषता है कि मूलपाठ यथावत् रखकर आवश्यक सुधार कोष्टकों में बताये नये हैं। मूलपाठों में कोई परिवर्तन नहीं किया गया है। जिस पाठ को मौलिक और अधिक शुद्ध समझा गया है उसे मूलपाठ के रूप में स्वीकृत किया गया है। अन्य मूलपाठ 'पाठान्तर' शीर्षक के अन्तर्गत दर्शाये गये है और दोनों पाठों का अन्तर 'पाठ टिप्पणी' में समझाया गया है।

पाठकों को विषय सामग्री भली प्रकार समझ में आ सके इसके लिए मूलपाठों के हिन्दी-अनुवाद 'भावार्थ' के रूप में दे दिये गये है। जहाँ तक संभव हुआ है, अनुवाद मूलानुगामी रखने के लिए इतर विद्वानों की सहायता लेने में भी संकोच नहीं किया गया है। अन्य पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित सामग्री का साभार संगृहण किया गया है। अभिलेख-सामग्री सभी पाठकों को ग्राह्य बन सके। सभी समझ सकें इसके लिए 'व्याख्या' शीर्षक के अन्तर्गत पारिभाषिक शब्दों को देकर विषय-वस्तु को ग्राह्य बनाना गया है। प्रतिमालेखों की स्थिति में प्रतिमा का सांगोपांग विवरण भी दे दिया गया है। यदि मूलपाठ पाषाण खण्डों पर उत्त्कीर्ण प्रशस्तियों के रूप में प्राप्त हुए है तो प्रशस्ति के उस पाषाणखण्ड का पूर्ण परिचय दे दिया गया है। अभिलेख में यदि समय अंकित नहीं मिला है तो समय का तर्क पूर्वक निर्णय किया गया है। मूलपाठों में प्राप्त ऐतिहासिक स्थलों और नामों का सामान्य परिचय भी दिया गया है।

कतिपय अभिलेखों में पद्य समाहित हैं। उन पद्यों का जिस छन्द में कवि ने निर्माण किया है उन छन्दों का नामोल्लेख नहीं हैं। छन्द ज्ञान के अभाव में अभिलेख को लय गति पूर्वक पढना संभव नहीं। अतः पाठक पढ़कर रसानुभूति कर सकें इसके लिए छन्दों

के नाम भी दर्शाये गये हैं। संबंधित किंवदन्तियों का समावेश भी कर दिया गया है।

अंग्रेज विद्वानों द्वारा अंग्रेजी में दी गयी विषय सामग्री जिन पुस्तकों में उपलब्ध होती है वे पुस्तकें विश्वविद्यालयों और महानगरों के पुस्तकालयों में ही मिल पाती है। सामान्य व्यक्ति उन्हें प्राप्त नहीं कर पाता है। आज से लगभग तीस वर्ष पूर्व सामग्री का चयन किया गया था। स्याही के घुमिल हो जाने और पत्र-जीर्ण होकर फट जाने से तथा पुनः पुस्तकें उपलब्ध न कर सकने से संभव है कि अंग्रेजी भाग में अशुद्धियों हों, कृपया पाठक क्षमा करें। पाठक विषयवस्तु के संबंध में अंग्रेजों के विचार जान सकें सम्पादक का एक मात्र यही उद्‌देश्य है।

अभिलेख के पूर्ण विवरण के पश्चात् अभिलेख प्राप्तिस्थल का परिचय तथा वहाँ पहुँचने के मार्ग का भी उल्लेख कर दिया गया है। सामग्री की प्रामाणिकता के लिए आवश्यक सन्दर्भ भी दे दिये गये है।

सामाजिक व्यवस्था : श्रावक-अन्वय-आम्नायादि

अभिलेख प्राचीन जैन संस्कृति के परिचायक है। अभिलेखों से ज्ञात होता है कि वर्तमान में जैन जिन विभिन्न उप जातियों में विभाजित है, वे उपजातियाँ विक्रम संवत् ग्यारह में उदित ज्ञात होती हैं। प्रथम उल्लेख पचरई लेख संख्या २७ में द्रष्टव्य है।

सामान्यतः जैन उपजातियों के नाम अन्वयान्त मिलते हैं जैसे परपाटान्वय, गोलापूर्वान्वयादि। अन्वय पद का उपयोग शासकों में गुप्त राजवंश के शासकों ने भी किया है। उन्होंने अपने वंश को 'गुप्तान्वय' संज्ञा दी है (ले.सं. ४)। अपने अनुयायियों की पृथक वंश परम्परा दर्शाने के लिए आचार्यो के नाम संयुक्त कर 'भद्रान्वय' (ले.सं. ४) जैसे नाम भी व्यवहृत हुए हैं। इसी प्रकार पृथक गणों में 'देशीगणान्वय' जैसे नाम भी (ले.सं. ३५) रचे गये।

अन्वय के समान ही 'आम्नाय' पद का व्यवहार भी होता रहा है। चन्द्रकराचार्याम्नाय (ले.सं. ३५), कुन्दकुन्दाचार्याम्नाय (ले.सं. २३), गोलापूर्वाम्नाय (ले.सं. ३५) नाम इस सन्दर्भ में उल्लेखनीय हैं। राजकीय वंशों और विभिन्न वर्गो ने अपनी जाति के आगे 'कुल' पद जोड़कर भी अपना परिचय दिया है, उदाहरणार्थ यदुकुल (ले.सं. ६) राष्टकूटकुल (ले.सं. ३५) गोलापूर्वकुल (ले.सं. ५७, ५८) पखाडकुल (ले.सं. ७३) आदि।

भीमपुर प्रशस्ति संवत् १३१६ में पौरपाटकुल का नामोल्लेख इस सन्दर्भ में उल्लेखनीय है (ले.सं. ५७, २७०)। कुल के समान कतिपय जैन उपजातियों के अन्त मे 'वंश' पद भी संयुक्त किया गया है। मेडतवाल वंश (ले.सं. ५७, १२४) गृहपतिवंश (ले.सं. ५७, १५६ और ले.सं. २०४) ऐसी उपजातियाँ द्रष्टव्य हैं। इस प्रकार जाति के सन्दर्भ में प्राचीनकाल में अन्वय, आम्नाय, कुल और वंश जैसे शब्दों का प्रयोग तो हुआ है किन्तु 'जाति' शब्द का नामोल्लेख कहीं नहीं हुआ है।

पौरपाटान्वय की प्राचीनता के सन्दर्भ में साढौरा (गुना) में विराजमान प्रतिमा के अभिलेख को संवत् ६१० का बताया गया है। अभिलेख निम्न प्रकार पढा गया है-

"संवत् ६१० वर्षे माघ सुदि ११ मूलसंघे पौरपाटान्वये पाटनपुर संघई"। प्रस्तुत प्रतिमा

लेख में लेख की लिपि, प्रतिमालेख में उल्लिखित मूलसंघ का नामोल्लेख, पौरपाटान्वय और संघई पद विचारणीय हैं। संवत् ६१० के निकट कुछ समय पूर्व तक अभिलेखों में ब्राह्मी लिपि का व्यवहार होता रहा है (ले.सं. ४) जबकि इस प्रतिमालेख में नागरी लिपि अंकित है। दूसरे इस लेख में मूलसंघ का नामोल्लेख मिलता है जोकि दसवीं सदी के पूर्व न अभिलेखों में मिला है और न साहित्य में ही। संघई या सिंघई जैसे पद रथोत्सवों की देन हैं। तेरहवी शती के पूर्ववर्ती किसी अभिलेख में ऐसे पदों के उल्लेख नहीं मिलते हैं। इस प्रकार इन विचारों के आलोक में ज्ञात होता है कि प्रस्तुत लेख का समय संवत् ६१० न होकर १६१० संवत् होना संभावित है। प्रतिमा पंचफणी होने से सुपार्श्वनाथ की ज्ञात होती है।

इसी प्रकार चौरासी मथुरा मन्दिर की पिछली एक बेदी पर विराजमान पार्श्वनाथ तीर्थंकर प्रतिमा का अभिलेख भी विचारणीय है। यह लेख निम्न प्रकार पढा गया है-

"सं. १८६ माघ शुक्ला ८ आष्टाशाखे प्रतिष्ठितं डेरिया मूरी श्रीकरढाकेन"। इस प्रतिमा लेख का संवत् १८६० भी बताया गया है। सम्पूर्ण लेख दो पंक्ति का है जो निम्न प्रकार पढने में आता है-

१. संवत् १८६ (०) माघ पा (मा) स सु (शु) क्ले पक्षे ८ सा वासरकै
२. प्रतिष्टतं वेरिया वरी ढाकर ढाकन।।

लेख में डेरिया या वेरिया पद दर्शाते हैं कि जैन जातियों में ये पद पौरपाट और गोलापूर्वाम्नाय के गोत्रों के नाम हैं। संवत् १८६ में जातियों का उद्‌भव नहीं हुआ था। अतः संवत् १८६ न होकर १८६० तर्क संगत प्रतीत होता है। लेखों में संवत् मास पक्ष तिथि के बाद प्रायः दिन का नाम मिलता है अतः आष्टाशाखे के स्थान में सोमवासर पद पढ़ने में आता हैं लेख में असावधानी वंश संवत् सूचक इकाई अंक शून्य और सोम में 'म' वर्ण उत्कीर्ण होने से रह गये हैं।

यह प्रतिमा काले संगमरमर पाषाण से पद्मासन मुद्रा में अंकित है। सिर पर सप्तफणावलि और चिह्नस्थल पर अंकित सर्प पार्श्वनाथ प्रतिमा होने की उद्‌घोषणा करते हैं कर्ण स्कन्ध स्पर्शी हैं। श्रीवत्स चिह्न यथास्थान है। आसन पर दो पंक्ति में नागरी लिपि और हिन्दी भाषा में उक्त लेख उत्कीर्ण है। फणावली सहित ऊचाई लगभग डेढ फुट है। यह प्रतिमा ६/६/१९६६ में वरुआसागर निवासी श्री हुकुमचन्द्र जैन को उनको आये स्वप्न के अनुसार मथुरा- वृन्दावन मार्ग पर अक्रूर (धौरेरा) के निकट भूगर्भ से प्राप्त हुई थी। वहाँ से लाकर यह प्रतिमा चौरासी मथुरा में १५/७/१९६६ को स्थापित की गयी। प्रतिमा के अंकन में सौम्यता है।

संघ, गण, गच्छादि

मूलसंघ

प्रस्तुत अभिलेखों में सोनागिरि का संवत् १०३५ (ले.सं. १६) का भित्तिलेख प्रथम लेख है जिसमें "मूलसंघ बलात्कारगण" दोनों का एक साथ नामोल्लेख मिलता है। सिद्धवरकूट के संवत् ११११ के प्रतिमालेख में (ले.सं. २३) मूलसंघ बलात्कारगण और

कुन्दकुन्दाचार्याम्नाय तीनों नाम एक साथ उपलब्ध हैं। छतरपुर से प्राप्त संवत् १२७२ के प्रतिमालेखों में (ले.सं. २५०, २५१, २५२, २५३) में सरस्वतीगच्छ का नाम भी मूलसंघ के साथ दिखाई देता है। इस प्रकार संवत् १३१० के शुभारम्भ से मूलसंघ, बलात्कारगण, सरस्वतीगच्छ और कुन्दकुन्दाचार्याम्नाय चारों के नाम एक साथ उत्कीर्ण किये जाने लगे (ले.सं. २६७)। मूलसंघ के एक अपर गण का नाम आरसीगण था (ले.सं. १८६)।

काष्ठासंघ

दूबकुण्ड से प्राप्त प्रकाशित लेख संवत् ११५२ (ले.सं. ४०) से ज्ञात होता है कि इस काल में काष्ठासंघ नामक कोई यति संघ अस्तित्व में आ गया था। इसके गण का नाम लाटवागट था। इस गण के उन्नत रोहणद्वि गुरु देवसेन थे। रत्नत्रयधारी कुलभूषण, सूरि दुर्लभसेन, पंडित अम्बरसेन, शान्तिसेन ये सभी परम्परा से गुरु देवसेन के शिष्य थे। दूबकुण्ड के ही संवत् ११५२ के चरणलेख में (ले.सं. ४०) गुरु देवसेन को काष्ठासंघ का महाचार्यवर्य कहा गया है तथा उनके चरणयुगल स्थापित किया जाना बताया गया है।

बारहवीं सदी में धार के निकट यह लाटवागडगण अब गण न रहकर लाटवागडसंघ के नाम से विश्रुत हो गया था (ले.सं. २२८)। वदनाकर से प्राप्त लेखों में (ले.सं. २५८, २५९) यही नाम मिलता है।

माथुरा संघ

वदनावर के एक लेख (ले.सं. १९१) से संवत् १२२८ में इस संघ कर अस्तित्व ज्ञात होता है। पंडिताचार्य श्री धर्मकीर्ति के शिष्य ललिताकीर्ति इसी संघ के थे। इन गुरु शिष्य दोनों का नामोल्लेख बदनावर के संवत् १२३४ के प्रतिमालेख में भी (ले.सं. २००) हुआ है।

देवसेन संघ

छतरपुर से संवत् १२३४ का एक प्रतिमालेख ऐसा भी उपलब्ध हुआ है (ले.सं. २०१) जिसमें देवसेन नामक संघ का नामोल्लेख हुआ है।

पण्डित मुनि

विद्वत्ता के कारण मुनि 'पण्डित' विरुद से विश्रुत रहे हैं। दबकुण्ड के संवत् ११४५ के प्रशस्तिलेख में (ले.सं. ४०) मुनि अम्बरसेन को इस विरुद से विभूषित बताया गया है। अहार से प्राप्त संवत् १२१० के महावीर प्रतिमालेख में एक ऐसे पंडित विशालकीर्ति का नामोल्लेख है, जिनके नाम के बाद आर्यिका त्रिभुवनश्री का नाम आया है तथा दोनों की पूर्णश्री और धनश्री शिष्याएँ निर्देशित की गयी हैं (ले.सं. १२३)। यहाँ विशालकीर्ति एक विद्वान् मुनि ज्ञात होते हैं। अहार के ही संवत् १२१३ (ले.सं. १४१) में कुटकान्वयी पंडित लक्ष्मणदेव उनके शिष्य श्रीमान् आर्यदेव, शिष्या आर्यिका ज्ञानश्री, एल्लिका जाजमा और मातिवि के नाम मिलते हैं। इस से पंडित लक्ष्मणदेव भी विद्वान् मुनि रहे ज्ञात होते हैं। वे ससंघ विहार करते रहे हैं। आर्यिका लक्ष्मश्री और चारित्रश्री पंडित लक्ष्मणदेव की ही शिष्याएँ थी (ले. सं. १६२)। खजुराहो के संवत् १२१५ के एक लेख में (ले.सं. १५७) पंडित श्री राजनंदि और उनके शिष्य पंडित श्री भानुकीर्ति तथा आर्यिका मेरुश्री के नामोल्लेख हुए हैं। गुरु शिष्य दोनों इस लेख में विद्वान् बताये गये हैं। अहार के संवत् १२२८ के लेख में (ले.सं. १६४)

पंडित जिनचंद्र और उनके शिष्य भामचंद्र, आर्यिका गौरसी के नाम आये हैं। पण्डित माणिक्यनन्दि तो प्राकृतचक्रवर्ती भी कहे गये हैं (ले.सं. ८६)।

सिद्धान्ती मुनिः सिद्धान्तविद् होने से मुनियों को सिद्धान्ती कहा जाता था। सिद्धान्ती देवश्री (ले.सं. १४८) और सिद्धान्ती सागरसेन (ले.सं. १६१, १६३) के नाम उल्लेखनीय हैं।

आचार्य मुनिः अभिलेखों में ऐसे उल्लेख भी मिलते हैं जिनमें मुनियों को आचार्य पद से विभूषित बताया गया है। ऐसे मुनियों में आचार्य चन्द्रक्षमा, आचार्य सर्पसेन (ले. सं. प्रथम), आचार्य भद्र, आचार्य गोशर्म (ले.सं. ४), आचार्य देवचन्द्र (ले.सं. ८), आचार्य कुन्दकुन्द (ले.सं. २२), आचार्य केवलि (ले.सं. २४), आचार्य (ले.सं. १६४)देवचंद्र मंत्रवादिन (ले.सं. ३१), आचार्य चन्द्रकर (ले.सं. ३५), महाचार्य श्री देवसेन (ले.सं. ४०), आचार्य श्रीसेन (ले.सं. ४४), आचार्य कुमारसेन (ले.सं. १७१), आचार्य ललितकीर्ति (ले.सं. १६१), आचार्य भट्टाराम (ले.सं. १८७), आचार्य श्री प्रभाचन्द्र (ले.सं. २२३), आचार्य माधवचन्द्र (ले.सं. २३०), आचार्य श्री वीरनंदि (ले.सं. २३४), आचार्य श्री पद्मकीर्ति (ले.सं. २४८), आचार्य श्री कल्याणकीर्ति (ले.सं. २५८) के नाम स्मर्णीय हैं। ले.सं. २७६ में आचार्य धनकीर्ति और उनके शिष्य आचार्य कुमुदचन्द्र के नाम भी मिलते हैं।

मुनिः अभिलेखों में निर्ग्रन्थ साधु के लिए गुरु, मुनि और महामुनि विरुद् व्यवहृत हुए हैं। खजुराहो संवत् १०११ ले.सं. ७ में श्री वासवचन्द्र मुनि को महाराजगुरु कहा गया है। इसी प्रकार दूबकुण्ड प्रशस्ति सं. ११४५ ले.सं. ३३ में देवसेन को गुरु पदधारी बताया गया है। मुनि विरुद से विभूषित बताये गये मुनियों में रामचन्द्र (ले.सं. १८०), लोकनन्द, देवनन्द (ले.सं. १८१) के नाम उल्लेखनीय हैं। इसी प्रकार महामुनियों में सगुणचंद (ले. सं. ४५) और गुणचन्द नाम आदरपूर्वक लिये जा सकते हैं।

आर्यिका, एल्लिकाः अहार से प्राप्त संवत् १२१० के महावीर प्रतिमालेख में आर्यिका त्रिभुवनश्री का नामोल्लेख हुआ है (ले.सं. १२३)। वे विद्वान् विशालकीर्ति मुनि की शिष्या कही गयी हैं। अहार के ही संवत् १२१३ के एक लेख में (ले.सं. १४१) ज्ञानश्री और एल्लिका जाजमा तथा मातिवी के नाम भी उपलब्ध हैं। इन्हें पंडित (मुनि) लक्ष्मणदेव की शिष्या बताया गया है। अहार के ही संवत् १२१३ के एक अन्य लेख में आर्यिका श्रमिणी सिद्धणीलला का नामोल्लेख भी हुआ है (ले.सं. १४७)। आर्यिका मेरुश्री को खजुराहो के संवत् १२१५ के लेख में पंडित (मुनि) राजनंदि का शिष्या बताया गया है (ले.सं. १५७)। अहार के संवत् १२१६ के एक प्रतिमालेख में आर्यिका जयश्री का नाम मिलता है। रतश्री और पूर्णश्री उनकी शिष्याएँ कही गयी हैं (ले.सं. १६१)। अहार के ही संवत् १२१६ के महावीर प्रतिमालेख में पंडित (मुनि) लक्ष्मणदेव के शिष्यों में मुनि आर्यदेव, आर्यिका लक्ष्मश्री तथा एल्लिका चारित्रश्री के नाम भी मिलते हैं (ले.सं. १६२)। अहार के संवत् १२२८ के महावीर प्रतिमालेख में आर्यिका गौरसी और उनकी चेली ललिताश्री के नाम भी (ले.सं. १६४) उपलब्ध हैं। मुनि भामचन्द्र और ये आर्यिकाएँ पंडित श्री जिनचन्द्र के शिष्य थे।

भट्टारक : इस सन्दर्भ में सर्वाधिक प्राचीन प्रतिमालेख अहार से संवत् १२१३ का मिला है (ले.सं. १४६)। इसमें भट्टारक माणिक्यदेव और गुण्यदेव के नाम मिलते हैं। श्री मंगलदेव के शिष्य पद्मदेव भट्टारक का नाम अहार के संवत् १२१३ के शांतिनाथ

प्रतिमालेख में द्रष्टव्य है (ले.सं. १६०)। इस प्रकार भट्टारकों के देव पदान्त नाम तो मिलते ही हैं, कीर्ति पदान्त नाम भी परवर्तीकाल में रखे गये। बदनावर के संवत् १३०८ के एक प्रतिमालेख में कल्याणकीर्ति का नाम मिलता है (ले.सं. २६४)। इन्हें लाटवागटसंघ से संबंधित होना बताया गया है। कीर्तिपदान्त नामों में एक नाम भट्टारक नरेन्द्रकीर्ति छतरपुर के संवत् १३१० के प्रतिमालेख (ले.सं. २३७) में उल्लिखित है। चंद नामान्त नामों में छतरपुर से प्राप्त संवत् १२७२ (ले.सं. २४६ से २५१) के लेख में भट्टारक प्रभाचंद का नाम उल्लेखनीय हैं। इन उल्लेखों के आलोक में कहा जा सकता है कि संवत् १२१३ के निकट भट्टारकप्रथा विद्यमान रही है। और तेरहवीं शताब्दी तक उसका अस्तित्व बना रहा ज्ञात होता है।

मानस्तम्भ : अहार क्षेत्र में स्थित मानस्तम्भों से (ले.सं. ११–१२) ज्ञात होता है कि संवत् १०११ के निकटवर्ती समय में उत्तर भारत में मन्दिरों में मानस्तम्भों की स्थापना की जाने लगी थी।

सामाजिक भावना

मन्दिरों और प्रतिमाओं के निर्माण में समाज की बड़ी श्रेष्ठ भावनाएँ रही हैं। समाज ने भोगोपभोगों की कामनाएँ नहीं की। समाज ने कर्मों को शुभ माना। ज्ञानावरणादि कर्मों को दुख का कारण जाना और माना कि कर्मों का क्षय हुए बिना सुख संभव नहीं। उदयगिरि लेख में (ले.सं. ४) जिन प्रतिमा का निर्माण पुण्य का तथा पुण्य कर्म–वैरियों के क्षय का कारण स्वीकार किया गया है–"क्षयाय कर्मारिगणस्य धीमान् यदत्रपुण्यं तदपाससर्ज्ज"। जिन प्रतिमा के निर्माण से आठों कर्मो पर विजय दर्शाई गयी है– अष्टकर्मारि जयनाय कारापितेयं प्रतिमा (ले.सं. ८४)। जिन प्रतिमाओं का निर्माण यद्यपि पुण्य के लिए भी किया जाता रहा है–"पुण्याय कारितेयं प्रतिमा" (ले.सं. ११२) परन्तु मूल उदेश्य पुण्यार्जन न रहकर कर्मक्षय ही रहा है (ले.सं. १५८)।

प्रतिमा और मन्दिरों के निर्माण एवं नमन में श्रेयस की भावना ही निहित रही है। श्रेयस का अर्थ है कल्याण । कल्याण भी वह जो संसार से छुटकारा दिला दे। ले.सं. ८७ में अरिष्टनेमि को प्रणाम किये जाने में यही भावना अभिव्यक्त होती है। ले.सं. ६३ में भी यही भावना समझ में आती है। अहार के संवत् १२१० के लेख से भी (ले.सं. १२७) इन्हीं भावनाओं का उद्घोष होता है।

इस प्रकार ये अभिलेख मन्दिरों, प्रतिमाओं के निर्माण तथा उनकी सदा वन्दना का एक मात्र यही उद्देश्य दर्शाते है कि संसार में जीव को दुखदायी हैं उसके स्वयं के कर्म। ये कर्म आठ हैं। इनका क्षय जिनेन्द्र वन्दना बिना संभव नहीं। अतः यदि पुण्यार्जन भी किया है तो कर्मक्षय के लिए वह भी त्याग दे। मूल उद्देश्य शाश्वत् मोक्ष–सुख की प्राप्ति का ही एक मात्र लक्ष्य रहे तो ही प्रतिमानिर्माण और वन्दना सार्थक है।

अभिलेख-संकलन

पी.एच.डी उपाधि हेतु 'मध्यप्रदेश के जैन अभिलेखों का सांस्कृतिक और समालोचनात्मक अध्ययन' विषय पर शोध प्रबन्ध लिखा गया था। इस प्रसंग में जो अभिलेख प्रकाशित हुये थे उन्हें पत्राचार द्वारा एकत्रित किया गया था। पश्चात् उनका अध्ययन करते समय अनुभव में आया कि जो लेख प्रकाशित हुए है, उनके मूलपाठ पंक्तिबद्ध नहीं

हैं। अनुस्वारों के स्थान में पाठकों ने अनुनासिक कर दिये है। अन्य परिवर्तन, परिवर्द्धन भी स्वेच्छानुसार कर दिया गया है। अभिलेखों के शुद्धपाठ तथा उनका भावानुवाद करने के भाव बने रहे। धीरे–धीरे नये अभिलेख भी एकत्रित हुए और चिरकांछित भावानुकूल कार्य सम्पन्न हुआ। प्रसन्नता है यह कार्य प्रकाशित हो रहा है।

कृतज्ञता

प्रस्तुत रचना में संगृहीत अभिलेख जिन रचनाओं से लिये गये हैं, उन रचनाओं के सम्पादकों/लेखकों का मैं आभारी हूँ। जिन साहित्य प्रेमियों ने मेरे निवेदन पर अभिलेख–सामग्री प्रेषित की है, मैं उनके प्रति भी कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ। जिन मनीषियों के निबन्धों से सहायता ली गयी है उनका भी मैं कृतज्ञ हूँ।

इस प्रसंग में डॉ० भागचन्द्र जैन 'भस्कर' पूर्व अध्ययक्ष पालि–प्राकृत विभाग नागपूर विश्वविद्यालय, नागपूर का विशेष आभारी हूँ। आपने तथा आपके कुटुम्ब ने सराहनीय और अनुकरणीय सहयोग देकर इस कार्य को आगे बढ़ाया है। यह रचना डॉ० भास्कर जी के मार्गदर्शन का ही प्रतिफल है। उनका वात्सल्यभाव सदैव स्मरण रहेगा।

डॉ० कमलचंद जी सोगाणी संयोजक जैनविद्यासंस्थान श्रीमहावीरजी (करौली) राजस्थान की सराहनीय सौजन्यता के प्रति अनुगृहीत हूँ। आपकी सद्कृपा से ही यह कार्य प्रकाशन योग्य बन सका है। अपभ्रंश भाषा के विकास में आपका सराहनीय योगदान है।

आदरणीय प्राचार्य कुन्दनलाल जी का भी अनुगृहीत हूँ। आपने संरक्षक दिगम्बर जैन साहित्य–संस्कृति संरक्षण समिति को प्रस्तुत रचना के प्रकाशन का परामर्श देकर जो अभिलेखों के प्रति स्नेह दर्शाया है वह आदरणीय है।

अन्त में भाई श्री शिखरचन्द्र जी, श्री प्रवीण जी डी–३०२ विवेक विहार दिल्ली की सौजन्यता और साहित्य स्नेह की सराहना करता हूँ। धन तो अनेक श्रीमन्तों को प्राप्त है पर वे श्रीमन्त कितने हैं जो सारस्वत कार्यो में अपने धन का सदुपयोग कर संस्कृति–सुरक्षा में सहयोग करते हैं।

सहधर्मिणी पुष्पलता जैन वी.ए. तथा आत्मज पंकज जैन साहित्याचार्य धर्मालंकार बी.एस.सी.एम.सी.ए साधुवाद के पात्र हैं जिन्होंने इस सारस्वत कार्य में सदा सहयोग किया है। डॉ० हरिश्चन्द्र जैन साहित्याचार्य, एम.ए.पी.एच.डी श्री गो.दि. जैन संस्कृत महाविद्यालय मुरैना म.प्र. को भी साधुवाद देना हैं जिन्होने सिहोंनियाँ सोनागिरि साथ रहकर इस पुनीत कार्य में हाथ बटाया है।

अन्त में समिति का आभारी हूँ। समिति ने प्रस्तुत रचना प्रकाशित कर सम्पादक का मनोबल बढ़ाया है। समिति के सभी पदाधिकारियों का अनुगृहीत हूँ।

–(डॉ) कस्तूरचन्द्र जैन 'सुमन'



108 आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

विषय-सूची

३६.	छतरपुर	पार्श्वनाथ प्रतिमा	वि. संवत् ११४६	७६
३७.	त्रिपुरी	अर्हत् प्रतिमा	" ११४६	७६
३८.	छतरपुर	शान्तिनाथ प्रतिमा	" ११४६	७७
३६.	दूबकुण्ड	अर्हत् प्रतिमा	" ११५१	७८
४०.	"	चरण	" ११५२	७६
४१.	"	वासुपूज्य प्रतिमा	" तिथि रहित	७६
४२.	भोजपुर	अर्हत् प्रतिमा	वि. संवत् ११५७	८०
४३.	ऊन	मन्दिर–भित्ति	११ वीं शताब्दी	८१
४४.	गोदलमऊ	पार्श्वनाथ प्रतिमा	" ११६०	८३
४५.	ऊन	अर्हन्त प्रतिमा	" ११६७	८३
४६अ	उर्दमऊ	पद्मप्रभ प्रतिमा	" ११७१	८४
४६ब	छतरपुर	पार्श्वनाथ प्रतिमा	" ११८०	८५
४७.	चैत	स्तम्भ	" ११८२	८५
४८.	"	"	" ११८३	८६
४६.	ग्वालियर	अर्हत् प्रतिमा	" ११८७	८७
५०.	"	"	" ११६०	८७
५१.	अहार	शान्तिनाथ प्रतिमा	" ११६३	८८
५२.	कुडीला	आदिनाथ प्रतिमा	" ११६६	८६
५३.	मंडला	"	" ११६८	६०
५४.	अहार	धर्मनाथ प्रतिमा	" ११६६	६१
५५.	"	"	" ११६६	६२
५६.	"	आदिनाथ प्रतिमा	" ११६६	६३
५७.	मऊ	नेमिनाथ प्रतिमा	" ११६६	६४
५८.	"	मुनिसुव्रतनाथ प्रतिमा	" ११६६	६५
५६.	जतारा	शान्तिनाथ प्रतिमा	" ११६६	६६
६०.	बंधा	अजितनाथ प्रतिमा	" ११६६	६७
६१.	अहार	आदिनाथ प्रतिमा	" १२००	६७
६२.	"	मुनिसुव्रतनाथ प्रतिमा	" १२००	६८
६३.	"	आदिनाथ प्रतिमा	" १२००	६६
६४.	कुड़ीला	चन्द्रप्रभ प्रतिमा	" १२००	१००
६५.	अहार	सुमतिनाथ प्रतिमा	" १२०२	१०१
६६.	"	आदिनाथ–प्रतिमा	" १२०२	१०२
६७.	कुडीला	आदिनाथ प्रतिमा	" १२०२	१०३
६८.	छतरपुर	नेमिनाथ प्रतिमा	" १२०२	१०४
६६.	पपौरा	आदिनाथ प्रतिमा	" १२०२	१०५
७०.	पपौरा	आदिनाथ प्रतिमा	" १२०२	१०६
७१.	मऊ	शान्तिनाथ प्रतिमा	" १२०३	१०७
७२.	मऊ	आदिनाथ प्रतिमा	" १२०३	१०८
७३.	मऊ	अर्हन्त प्रतिमा	तिथि रहित	१०६

७४.	अहार	अर्हन्त प्रतिमा	वि.संवत् १२०३	१०६
७५.	अहार	आदिनाथ प्रतिमा	" १२०३	११०
७६.	अहार	अजितनाथ प्रतिमा	" १२०३	१११
७७.	अहार	अर्हन्त प्रतिमा	" १२०३	११२
७८.	अहार	आदिनाथ प्रतिमा	" १२०३	११३
७९.	अहार	शान्तिनाथ प्रतिमा	" १२०३	११४
८०.	अहार	अर्हन्त प्रतिमा	" १२०३	११५
८१.	अहार	अर्हन्त प्रतिमा	" १२०३	११६
८२.	अहार	आदिनाथ प्रतिमा	" १२०३	११७
८३.	अहार	आदिनाथ प्रतिमा	" १२०३	११८
८४.	अहार	आदिनाथ प्रतिमा	" १२०३	११९
८५.	अहार	महावीर प्रतिमा	" १२०३	१२०
८६.	छतरपुर	नेमीनाथ प्रतिमा	" १२०३	१२१
८७.	छतरपुर	अर्हन्त प्रतिमा	" १२०५	१२१
८८.	खजुराहो	अर्हन्त प्रतिमा	" १२०५	१२२
८९.	खजुराहो	मन्दिर भित्ति	" १२०५	१२३
९०.	खजुराहो	मन्दिर भित्ति	" १२०६	१२३
९१.	मदनपुर	मन्दिर भित्ति	" १२०६	१२४
९२.	गुड़ार	शान्तिनाथ प्रतिमा	" १२०७	१२४
९३.	अहार	चन्दप्रभ प्रतिमा	" १२०७	१२५
९४.	अहार	चन्दप्रभ प्रतिमा	" १२०७	१२६
९५	अहार	पुष्पदन्त प्रतिमा	" १२०७	१२६
९६.	अहार	सुमतिनाथ प्रतिमा	" १२०७	१२७
९७.	अहार	पद्मप्रभ प्रतिमा	". १२०७	१२८
९८.	अहार	आदिनाथ प्रतिमा	" १२०७	१२९
९९.	अहार	अर्हन्त प्रतिमा	" १२०७	१२९
१००	अहार	महावीर प्रतिमा	" १२०७	१३०
१०१.	छतरपुर	नेमिनाथ प्रतिमा	" १२०८	१३२
१०२.	"	आदिनाथ प्रमिमा	" १२०८	१३२
१०३.	अहार	नेमिनाथ प्रतिमा	" १२०९	१३३
१०४.	"	अर्हत प्रतिमा	" १२०९	१३४
१०५.	"	"	" १२०९	१३५
१०६.	"	महावीर प्रतिमा	" १२०९	१३६
१०७.	"	महावीर प्रतिमा	" १२०९	१३७
१०८.	"	अरनाथ प्रतिमा	" १२०९	१३७
१०९.	"	शान्तिनाथ प्रतिमा	" १२०९	१३८
११०.	"	कुन्थुनाथ प्रतिमा	" १२०९	१३९
१११.	"	धर्मनाथ प्रतिमा	" १२०९	१४०
११२.	"	आदिनाथ प्रतिमा	" १२०९	१४१

११३.	"	नेमिनाथ प्रतिमा	" १२०६	१४२
११४.	छतरपुर	अर्हत प्रतिमा	" १२०६	१४३
११५.	बंधा	आदिनाथ प्रतिमा	" १२०६	१४३
११६.	"	शम्भवनाथ प्रतिमा	" १२०६	१४४
११७.	"	"	" १२०६	१४४
११८.	"	नेमिनाथ प्रतिमा	" १२०६	१४४
११६.	बजरंगढ	अर्हत प्रतिमा	" १२०६	१४५
१२०.	अहार	अभिनन्दननाथ प्रतिमा	" १२१०	१४६
१२१.	"	चन्द्रप्रभ प्रतिमा	" १२१०	१४६
१२२.	"	महावीर प्रतिमा	" १२१०	१४७
१२३.	"	"	" १२१०	१४८
१२४.	"	अर्हन्त	" १२१०	१४६
१२५.	"	आदिनाथ प्रतिमा	" १२१०	१५०
१२६.	"	"	" १२१०	१५१
१२७.	"	अजितनाथ प्रतिमा	" १२१०	१५२
१२८.	"	आदिनाथ प्रतिमा	" १२१०	१५३
१२६.	पचरई	अर्हन्त प्रतिमा	" १२१०	१५४
१३०.	"	स्तम्भ	" १२१०	१५४
१३१.	अहार	आदिनाथ प्रतिमा	" १२११	१५५
१३२.	"	अर्हन्त प्रतिमा	" १२११	१५६
१३३.	"	महावीर प्रतिमा	" १२११	१५७
१३४.	"	अर्हन्त प्रतिमा	" १२१२	१५८
१३५.	अहार	अर्हन्त प्रतिमा	" १२१२	१५८
१३६.	खजुराहो	महावीर प्रतिमा	" १२१२	१५६
१३७.	मदनपुर	अर्हन्त प्रतिमा	" १२१३	१५६
१३८.	अहार	आदिनाथ प्रतिमा	" १२१३	१६०
१३६.	"	अर्हन्त प्रतिमा	" १२१३	१६१
१४०.	"	आदिनाथ प्रतिमा	" १२१३	१६१
१४१.	"	महावीर प्रतिमा	" १२१३	१६२
१४२.	"	"	" १२१३	१६३
१४३.	"	आदिनाथ प्रतिमा	" १२१३	१६४
१४४.	"	सुमतिनाथ प्रतिमा	" १२१३	१६५
१४५.	"	महावीर प्रतिमा	" १२१३	१६६
१४६.	"	सुमतिनाथ प्रतिमा	" १२१३	१६७
१४७.	"	महावीर प्रतिमा	" १२१३	१६७
१४८.	"	आदिनाथ प्रतिमा	" १२१३	१६८
१४६.	"	पाण्डुकशिला	" १२१३	१६६
१५०.	छतरपुर	अर्हत प्रतिमा	" १२१३	१७०
१५१.	नरवर	"	" १२१३	१७१

१५२.	पचराई	"	" १२१३	१७१
१५३.	सोनागिरि	शीतलनाथ प्रतिमा	" १२१३	१७२
१५४.	अहार	आदिनाथ प्रतिमा	" १२१४	१७३
१५५.	बजरंगढ़	पद्मप्रभ–प्रतिमा	" १२१५	१७३
१५६.	खजुराहो	शंभवनाथ प्रतिमा	" १२१५	१७४
१५७.	"	अभिनन्दननाथ प्रतिमा	" १२१५	१७५
१५८.	अहार	नेमिनाथ प्रतिमा	" १२१६	१७६
१५९.	"	शान्तिनाथ प्रतिमा	" १२१६	१७७
१६०.	"	" "	" १२१६	१७८
१६१.	"	अर्हत प्रतिमा	" १२१६	१७९
१६२.	"	महावीर प्रतिमा	" १२१६	१८०
१६३.	"	अभिनन्दननाथ प्रतिमा	" १२१६	१८१
१६४.	"	विमलनाथ प्रतिमा	" १२१६	१८२
१६५.	"	अर्हत् प्रतिमा	" १२६१	१८३
१६६.	"	शासनदेवी–प्रतिमा	" १२१६	१८४
१६७.	वदनावर	अर्हत् प्रतिमा	" १२१६	१८५
१६८.	"	"	" १२१६	१८५
१६९.	ऊन	शंभवनाथ प्रतिमा	" १२१८	१८६
१७०.	अहार	पद्मावती देवी	" १२१८	१८७
१७१.	बदनावर	अर्हत प्रतिमा	" १२१९	१८७
१७२.	बजरंगढ	" "	" १२२०	१८८
१७३.	अहार	चन्द्रप्रभ	" १२२२	१८९
१७४.	नागदा	आदिनाथ प्रतिमा	" १२२२	१९०
१७५.	वदनावर	अर्हत् प्रतिमा	" १२२२	१९०
१७६.	"	सुपार्श्वनाथ प्रतिमा	" १२२२	१९१
१७७.	पचराई	अर्हत् प्रतिमा	" १२२२	१९२
१७८.	धार संग्रहालय	"	" १२२३	१९२
१७९.	अहार	आदिनाथ प्रतिमा	" १२२३	१९३
१८०.	चूलगिरि	मंदिर–शिलालेख	" १२२३	१९४
१८१.	"	" "	" १२२३	१९५
१८२.	पनागर	अर्हत प्रतिमा	" १२२५	१९६
१८३.	छतरपुर	आदिनाथ प्रतिमा	" १२२५	१९६
१८४.	अहार	महावीर–प्रतिमा	" १२२५	१९७
१८५.	"	अर्हत–प्रतिमा	" १२२५	१९८
१८६.	धार संग्रहालय	" "	" १२२६	१९९
१८७.	"	" "	" १२२६	१९९
१८८.	इन्दौर संग्रहालय	नेमिनाथ–प्रतिमा	" १२२७	२००
१८९.	झारडा	शासन देवी	" १२२७	२०१
१९०.	"	" "	" १२२७	२०२

१६१.	बदनावर	अर्हत् प्रतिमा	" १२२८	२०२
१६२.	अहार	आदिनाथ प्रतिमा	" १२२८	२०३
१६३.	"	नेमिनाथ प्रतिमा	" १२२८	२०४
१६४.	"	महावीर–प्रतिमा	" १२२८	२०५
१६५.	बदनावर	अच्युतादेवी प्रतिमा	" १२२६	२०६
१६६.	जयसिंहपुरा संग्रहालय	अर्हत् प्रतिमा	" १२२६	२०७
१६७.	बदनावर	" "	" १२३०	२०७
१६८.	बजरंगढ	अजितनाथ–प्रतिमा	" १२३१	२०८
१६६.	खजुराहो	अर्हत् प्रतिमा	" १२३४	२०६
२००.	बदनावर	" "	" १२३४	२०६
२०१.	छतरपुर	आदिनाथ–प्रतिमा	" १२३५	२१०
२०२.	बजरंगढ़	शान्तिनाथ प्रतिमा	" १२३६	२११
२०३.	सोनागिरि	नन्दीश्वरद्वीप स्तम्भ	" १२३६	२११
२०४.	अहार	शान्तिनाथ–प्रतिमा	" १२३७	२१२
२०५.	"	कुन्थुनाथ–प्रतिमा	" १२३७	२१६
२०६.	"	पंचतीर्थ–प्रतिमा	" १२३७	२२१
२०७.	"	शान्तिनाथ–प्रतिमा	" १८३७	२२२
२०८.	"	अर्हन्त–प्रतिमा	" १२३७	२२३
२०६.	"	नेमिनाथ–प्रतिमा	" १२३७	२२३
२१०.	"	आदिनाथ–प्रतिमा	" १२३७	२२४
२११.	"	महावीर–प्रतिमा	" १२३७	२२५
२१२.	"	सुमतिनाथ प्रतिमा	" १२३७	२२६
२१३.	"	आदिनाथ प्रतिमा	" १२३७	२२७
२१४.	"	अर्हत प्रतिमा	" १२३७	२२८
२१५.	"	अर्हत प्रतिमा	" १२३७	२२६
२१६.	"	शान्तिनाथ–प्रतिमा	" १२३७	२२६
२१७.	मदनपुर	मंदिर स्तम्भ	" १२३६	२३०
२१८.	अहार	अर्हत–प्रतिमा	" १२४१	२३३
२१६.	विदिशा	गोमेध प्रतिमा	" १२४२	२३३
२२०.	ऊन	शान्तिनाथ–प्रतिमा	" १२४२	२३४
२२१.	पनागर	अर्हत् प्रतिमा	" १२४४	२३५
२२२.	बजरंगढ़	नेमिनाथ–प्रतिमा	" १२५०	२३६
२२३.	ऊन	महावीर–प्रतिमा	" १२५०	२३७
२२४.	"	श्रेयांसनाथ–प्रतिमा	" १२वीं सदी	२३७
२२५.	अलीराजपुर	श्रुतदेवी–प्रतिमा	" १२वीं सदी	२३८
२२६.	धार संग्रहालय	अर्हत् प्रतिमा	" १२वीं शताब्दी	२३८
२२७.	"	"	" "	२३६
२२८.	"	"	" "	२४०

अभिलेख - 1

दुर्जनपुर चन्द्रप्रभ–प्रतिमालेख तिथिविहीन, भाषा–संस्कृत, लिपि–ब्राह्मी

मूलपाठ

१– भगवतोर्हतः चंद्रप्रभस्य प्रतिमेयं कारिता म–

२– हाराजाधिराज श्री रामगुप्तेन उपदेशात् पाणिपा–

३– त्रिक चंद्रक्षमाचार्य्य क्षमण श्रमण प्रशिष्य आचार्य्य

४– सर्प्पसेन क्षमण शिष्यस्य गोलक्यान्त्याः सत्पुत्रस्य चेलु क्षमस्येति।[1]

पाठ–टिप्पणी

इस लेख में डॉ. गोयल ने यथास्थान अवग्रह और न् अनुस्वार का अनुनासिक के रूप मे व्यवहार किया है। उन्होंने क्षमण पद में 'म' के स्थान में 'प' तथा प्रशिष्य के पश्चात् 'स्य' पद के होने का अनुमान लगाया है। अर्थ की दृष्टि से 'स्य' के स्थान में 'स्या' पद अधिक सगत प्रतीत होता है। चतुर्थ पंक्ति में डॉ. गोयल ने 'चेलु' को 'चेल्ल' तथा 'क्षमस्येति' पद को 'क्षम (प) णस्येति' पढा है।[2]

भावार्थ

भगवान् अर्हन्त चन्द्रप्रभ की यह प्रतिमा महाराजाधिराज श्री रामगुप्त के द्वारा पाणिपात्रिक आचार्य क्षमण–श्रमण चन्द्रक्षमा के प्रशिष्य, आचार्य सर्पसेन क्षमण के शिष्य, गोलक्यान्ती के सुपुत्र क्षमण चेलु के उपदेश से बनवाई (प्रतिष्ठित कराई) गई।[3]

व्याख्या

१. **अर्हत् :** आठ कर्मों में ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनीय और अन्तराय कर्मों का नाश करनेवाले अर्हन्त कहलाते हैं। इनकी संख्या चौबीस है।

२. **भगवान :** जैनों के अर्हन्त, जिन्हें तीर्थंकर कहा जाता है।

३. **चन्द्रप्रभ :** वर्तमान चौबीस तीर्थंकरों में आठवें तीर्थंकर।

४. **क्षमण :** संस्कृत भाषा में 'क्षपण' शब्द व्यवहृत हुआ है। आचार्य रविषेण के अनुसार क्षीणराग तथा क्षमा से युक्त, तप से शरीर कृश करते हुए पाप नष्ट करनेवाले श्रमण–क्षपण कहलाते हैं।[4]

५. **श्रमण :** यह संस्कृत भाषा की श्रम् धातु से बना रूप है जिसका अर्थ है परिश्रम करना। आचार्य रविषेण ने उज्जवल कार्य करनेवाले परम निर्दोष श्रम में वर्तमान साधुओं को 'श्रमण'

कहा है।[4]

६. **आचार्य :** पांच प्रकार के आचार का स्वयं आचरण करते हुए दूसरों से आचरण करानेवाले मुनि आचार्य कहलाते हैं।[5] ये बारह तप, दस धर्म, पांच आचार, छः आवश्यक और तीन गुप्तियों सहित छत्तीस गुणों के धारी होते हैं।[6]

७. **पाणिपात्रिक :** हाथ रूपी पात्र में आहार करनेवाले निर्ग्रन्थ दिगम्बर मुनि पाणिपात्रिक कहलाते हैं।

८. **गोलक्यान्ती :** मूलपाठ में आया 'गोलक्यान्त्याः' शब्द गोलक्यान्ती शब्द से निष्पन्न षष्ठी विभक्ति का रूप है। स्त्रीलिंग में व्यवहृत होने से यह नाम चेलु क्षमण की जननी का नाम ज्ञात होता है।

९. **प्रतिमा :** प्रति+मा+अङ्+टाप् इस स्थिति पूर्वक बना शब्द है। इसके प्रतिबिम्ब, समानता, आकृति, बुत अर्थ बताये गये हैं।[7]

१०. चेलु : यह क्षमण था। इसे आचार्य चन्द्रक्षमा क्षपण का प्रशिष्य और आचार्य सर्पसेन क्षपण का शिष्य बताया गया है। ये अपने समय के कुशल धर्मोपदेशक रहे हैं।

डा. गोयल ने मूलपाठ में चेलु को चेल्ल पढा है तथा उसका अर्थ शिष्य बताया है।[8] मूलपाठ में वर्णो का द्वित्व रूप रेफ के संयोग में हुआ है। अतः लेखनी शैली की परम्परा को ध्यान में रखते हुए डॉ. गोयल की चेल्ल शब्द सम्बन्धी दोनों मान्यताएं तर्कसंगत प्रतीत नहीं होतीं। चेल्ल का अर्थ शिष्य नहीं है। श्री बाजपेयी और डा. गायि के द्वारा पढा गया चेलु शब्द शुद्ध प्रतीत होता है।[9]

प्रतिमा–परिचय

लगभग ढाई फुट ऊंचाई में यह प्रतिमा सिर–विहीन प्राप्त हुई है। पद्मासन मुद्रा में प्रतिमा के पीछे भग्न भामण्डल और दोनों ओर गले में एकावली धारण किये हुए चमरवाही देवाकृतियाँ अंकित हैं। वक्षस्थल पर श्रीवत्स चिन्ह है। नाभि गहरी और गोल अंकित की गई है। आसन पर मध्य में धर्मचक्र और दोनों ओर विपरीत दिशाओं में मुख किये हुए एक–एक सिंह अंकित है। चिह्न अंकित नहीं है। मूलपाठ में नाम देकर प्रतिमा का परिचय कराया गया है। आसन पर संस्कृत भाषा का ब्राह्मी लिपि से चार पंक्तियों में प्रस्तुत मूलपाठ उत्कीर्णित है। प्रतिमा के निर्माण में बलुए पत्थर का व्यवहार हुआ है। प्रतिमा का धड पूर्ण विकसित एवं सुपुष्ट वक्षस्थल युक्त है जो गुप्तकालीन मूर्तिकला की अपनी विशेषता है। धड के बहिर् भाग में दोनों ओर निकली हुई कुहनी विशेष उल्लेखनीय है।[10]

अभिलेख–प्राप्तिस्थल

इस अभिलेख का प्राप्तिस्थल विदिशा से दो मील दूर वेस नदी के किनारे स्थित दर्जुनपुर[11] नामक ग्राम है। विदिशा–दिल्ली–बम्बई रेलमार्ग में बीना और भोपाल के मध्य रेलवे स्टेशन है। मध्यप्रदेश का जिला और सर्वाधिक प्राचीन स्थल है।

अभिलेख का समय

रामगुप्त समुद्रगुप्त का ज्येष्ठ पुत्र बताया गया है। कहा गया है कि समुद्रगुप्त की मृत्यु के उपरान्त रामगुप्त ने सिंहासन पर अधिकार कर लिया था, किन्तु वह निर्बल और कामुक था।[12] इतिहासकार राखालदास बनर्जी ने इस रामगुप्त को द्वितीय चन्द्रगुप्त का बड़ा भाई मानकर यह प्रतिपादित किया है कि रामगुप्त ने समुद्रगुप्त और द्वितीय चन्द्रगुप्त के मध्य कुछ समय शासन किया था।[13] चन्द्रगुप्त द्वितीय के पांचवें शासन वर्ष का एक स्तम्भ–लेख मथुरा से गुप्त सम्वत् ६१ का प्राप्त हुआ है।[14] इस लेख से चन्द्रगुप्त द्वितीय का ईसवी ३७५ में राज्य–शासन करना प्रमाणित होने से तथा रामगुप्त का इस लेख में उल्लेख होने से यह प्रतिमा लेख ईसवी ३७५ के पूर्व का ज्ञात होता है।

इस प्रतिमा–लेख में रामगुप्त को महाराजाधिराज विरुद से विभूषित बताये जाने तथा पूर्वी मालवा से उसके सिक्कों के प्राप्त होने से[15] उक्त रामगुप्त के शासन करने का अनुमान तर्क संगत प्रतीत होता है। देवीचन्द्रगुप्तम् नाटक में उल्लिखित इसके जीवन की घटनाओं से भी वह समुद्रगुप्त के पश्चात् ईसवी ३७५ के पूर्व कुछ समय शासक रहा प्रमाणित होता है।

संदर्भ

1 *श्री कृष्णदत्त बाजपेयी, भारतीय ज्ञानपीठ, मध्य प्रदेश का एलबम नम्बर 8, 79–80 और दुर्जनपुर के लेख शीर्षक से नई दुनिया जबलपुर : 23 फरवरी 1969 अंक में प्रकाशित*

2. *1 भगवतोऽर्हतः चन्द्रप्रभस्य प्रतिमेय कारिता म–*
2 हाराजाधिराज श्री रामगुप्तेन उपदेशात् पाणिपा–
3. त्रिक चन्द्रक्षमाचार्य्य क्षम (प) ण– श्रमण–प्रशिष्य (स्या) चा–
4 र्यर्य सर्प्पसेन क्षम (प) ण शिष्यस्य गोलक्यान्त्या (:)
सत्पू (त्पु) त्रस्य चेल्ल क्षम (प) णस्येति।
डॉ. श्रीराम गोयल, गुप्तकालीन अभिलेख, कुसुमांजलि प्रकाशन मेरठ, ईसवी 1984, पृष्ठ 93–94

3. *वही, पृष्ठ 94।*

4. *तपसा क्षपयन्ति स्वं क्षीणरागाः क्षमान्विताः ।*
क्षिण्वन्ति च यतः पापं क्षपणास्तेन कीर्तिताः ।।
पद्मपुराण· 109, 87।

5 *श्रमणाः सितकर्माणः परमश्रमवर्तिनः।*
वही, 109, 90

6. *अ. दंसणणाणपहाणें वीरयचारित्त वरतवायारे।*
अप्पं परं च जुंजई सो आइरियो मुणी झेओ।।
आचार्य नेमिचन्द, द्रव्यसंग्रहः गाथा 52।
ब. आचार्या यत्सदाचार चरन्त्याचारयन्ति च।
पद्मपुराणः 109, 89

7. *आप्टे, संस्कृत–हिन्दी कोशः मोतीलाल बनारसीदास वाराणसी प्रकाशन, 1981 ई. पृष्ठ 654*

8. *डॉ. श्री राम गोयल, गुप्तकालीन अभिलेख · पृष्ठ 95।*

9. *वही, पृष्ठ 94, पाठ टिप्पणी।*

10. *जैन कला एवं स्थापत्य, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, भाग 1, पृष्ठ 133।*

11. डॉ. श्रीराम गोयल, गुप्तकालीन अभिलेख, पृष्ठ 95।
12. भारतीय इतिहास : एक दृष्टि, भारतीय ज्ञानपीठ ईसवी 1961, प्रकाशन पृष्ठ 142।
13. डॉ. श्रीराम गोयल, गुप्तकालीन अभिलेख, पृष्ठ 95
14. 1. सिद्धम् (1) भट्टारक–महाराज – (राजाधि) राज श्री समुद्रगुप्त–स–
    2. (त्पु) अत्रस्य भट्टारक–म (हाराज)–(राजाधि) राज–श्री–चन्द्रगुप्त–
    3. स्य विज (य) राज्य संवत्स (रे) (प) चमे (5) कालानु वर्त्तमान
    4. संवत्सरे एकषष्ठे 60 (+) 1....(प्र) थ मे शुक्लदिवसे
    वही पृ. 100
15. वही, पृष्ठ 96।

अभिलेख - २

दुर्जनपुर, पुष्पदन्त– प्रतिमालेख, तिथिविहीन, भाषा संस्कृत लिपि ब्राह्मी

मूलपाठ

१. भगवतोर्हतः पुष्पदंतस्य प्रतिमेयं कारिता म

२. हाराजाधिराज श्री रामगुप्तेन उपदेशात्......

३. ....

४. ....[१]

पाठ–टिप्पणी

श्री बाजपेयी ने इस लेख की आरम्भिक दो पंक्तियाँ तथा डा. गोयल ने तीन पंक्तियाँ पढ़ी हैं।[२] डॉ. गोयल के अनुसार तीसरी पंक्ति में 'चन्द्रक्षमणाचार्य' पाठ है जबकि प्रथम लेख में 'चन्द्रक्षमाचार्य' पाठ है।

भावार्थ

भगवान् अर्हन्त पुष्पदन्त की यह प्रतिमा महाराजाधिराज श्री रामगुप्त के द्वारा... ....बनवाई (प्रतिष्ठित कराई) गई।

प्रतिमा–परिचय

प्रतिमा का मुख खण्डित हो गया है। प्रतिमा के पीछे भामण्डल है। पार्श्वभाग में दोनों ओर चँवरवाही एक–एक इन्द्र सेवारत है। वक्षस्थल पर श्रीवत्स का चिन्ह अंकित है। नाभि गहरी और गोल है पद्मासन मुद्रा में निर्मित इस प्रतिमा की आसन के मध्य

में धर्मचक्र का अंकन है। इसकी दोनों ओर एक–एक सिंहाकृति विपरीत दिशा में मुख किये उत्कीर्ण है। चिन्ह नहीं है। अन्य विवरण प्रथम लेख के समान है।

संदर्भ

1. *श्री कृष्णदत्त बाजपेयी, भारतीय ज्ञानपीठ: मध्यप्रदेश का एलबम नं. 8 पृष्ठ 82। एवं दैनिक नई दुनिया: जबलपुर 23/2/69 ईसवी अंक।*
2. *डॉ. श्रीराम गोयल द्वारा पठित मूलपाठ–*
   1. *भगवतोऽर्हतः पुष्पदन्तस्य प्रतिमेयं कारिता म*
   2. *हाराजाधिराज श्रीरामगुप्तेन उपदेशात् पाणिपात्रिक*
   3. *चन्द्र क्षम (ण) (चाया) र्य्य (क्षम (ण) ण)– श्रमण प्रशि (ष्य)....*
   4. *........................ ....ति*

   डॉ. श्रीराम गोयल, गुप्तकालीन अभिलेख: पृष्ठ 94।

अभिलेख -3

दुर्जनपुर, चन्द्रप्रभ–प्रतिमालेख, तिथि विहीन, भाषा संस्कृत, लिपि ब्राह्मी

मूलपाठ

१. भगवतोर्हतः चंद्रप्रभस्य प्रतिमेयं कारिता म

२. हाराजाधिराज श्री रामगुप्तेन उपदेशात्......पा

३. ......चंद्रक्षमाचार्य्य क्षमण श्रमण प्रशिष्य आचा

४. .....(र्य्य) सर्प्पसेन क्षमण शिष्यस्य गोलक्यान्त्याः सत्पुत्रस्य चेलु क्षमस्येति।[1]

पाठ–टिप्पणी

डॉ गोयल ने इस लेख की केवल आरंभिक दो पंक्तियाँ पढ़ी हैं। इन पंक्तियों में उन्होंने मूलपाठ में तीर्थंकर का नाम 'पद्मप्रभ दिया है'[2] जबकि श्री बाजपेयी ने तीर्थंकर का नाम 'चन्द्रप्रभ' पढ़ा है।

भावार्थ

श्री बाजपेयी के अनुसार भगवान् अर्हन्त चन्द्रप्रभ और डॉ. श्रीराम गोयल के अनुसार पद्मप्रभ की यह प्रतिमा महाराजिधराज श्री रामगुप्त के द्वारा (पाणिपात्रिक) चन्द्रक्षमाचार्य क्षमण–श्रमण के प्रशिष्य, आचार्य सर्पसेन क्षमण के शिष्य, गोलक्यान्ती के पुत्र क्षमण चेलु के उपदेश से प्रतिष्ठित हुई।

प्रतिमा का समय, प्राप्तिस्थल और विन्यास प्रथम व द्वितीय लेख की प्रतिमाओं के समान है।

तीनों प्रतिमाओं का सामान्य परिचय

डॉ. गोयल ने इन प्रतिमाओं की प्राप्ति के संबंध में लिखा है कि वे तीनों जैन प्रतिमाएं एक खेत को बुलडोजर से साफ करते समय प्राप्त हुई थीं। बुलडोजर से टकराने के कारण इनके ऊपरी व पार्श्व भाग कुछ खण्डित हो गये हैं। अब ये विदिशा–संग्रहालय में सुरक्षित हैं।[3] श्री बाजपेयी ने शैली आदि की दृष्टि से इनका मथुरा की गुप्तकालीन प्रतिमाओं के साथ निकट सादृश्य बताया है। वे इनकी आसनों पर उत्कीर्ण लेखों की लिपि उदयगिरि तथा सांची के गुप्तकालीन अभिलेखों जैसी मानते हैं।[4]

इन प्रतिमा–अभिलेखों का महत्व

दुर्जनपुर के तीनों प्रतिमा–लेख तिथि–विहीन और छोटे होने पर भी ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। इतिहास में अब तक रामगुप्त के संबंध में भिन्न–भिन्न धाराणाएँ रही हैं। अभिलेखों के अभाव में शासक नहीं माना गया था किन्तु इन लेखों में रामगुप्त को 'महाराजाधिराज' कहे जाने से यह प्रमाणित है कि उसने शासन किया था।

क्या रामगुप्त जैन था?

इतिहासकार सरकार ने रामगुप्त को जैन माना है। वे इन प्रतिमालेखों के रामगुप्त को चन्द्रगुप्त द्वितीय का भाई नहीं मानते।[5] सरकार की इस मान्यता के संबंध में डॉ. गोयल का अभिमत है कि इन प्रतिमा–लेखों में रामगुप्त को जैन नहीं बताया गया है। उसके द्वारा मात्र जैन–मूर्तियाँ बनवाये जाने से उसे जैन नहीं कहा जा सकता है। यह तो उसकी जैन सम्प्रदाय के प्रति सहिष्णुता थी। भारतीय शासकों में यह–प्रवृत्ति सदा रही है। शिलाहार नरेश गणादित्य ने जैन, बौद्ध और शैव मंदिर बनवाये थे, जबकि वह स्वयं महालक्ष्मी–भक्त था।[6] इसी प्रकार राजा बज्रदामन् और राजा विक्रमासिंह ने भी जैन प्रतिमा बनवाई और जैन मंदिर को दान दिया था, जबकि दोनों जैन नहीं थे।[7]

संदर्भ

1. श्री कृष्णदत्त बाजपेयी, भारतीय ज्ञानपीठ, मध्यप्रदेश का एलबम, क्रमांक 8 पृष्ठ 80। एवं दैनिक– नई दुनिया जबलपुर 23/2/69 ई0 अक।

2. डा. श्रीराम गोयल द्वारा पठित मूलपाठ

1. भगव (तो) है (तः) (पद्म) प्रभस्य प्रतिमेयं (का)रिता महा (राजा) धिरा (ज)

2. श्री (रामगुप्ते) न उ (पदेशात्) (पा) णि (पात्रि)....

3. ....

4. ....

5. श्रीराम गोयल, गुप्तकालीन अभिलेख, पृष्ठ 94।

3 वही, पृष्ठ 93।

4. जैन संदेश, शोधांक 31, पृष्ठ 301–302।
5. श्रीराम गोयल गुप्तकालीन अभिलेख, पृष्ठ 86
6. वही.
7. अ– पूर्णचन्द्र नाहर, जैन लेख संग्रह, भाग 2, लेख संख्या 1439।
   ब– एपिग्राफिका इण्डिका, भाग 2, दूबकुण्ड प्रशस्ति–पंक्ति 54–58।

अभिलेख - ४

उदयगिरि, गुहा–लेख, गुप्त संवत् १०६, भाषा–संस्कृत, लिपि–ब्राह्मी

मूलपाठ

१. नमः सिद्धेभ्यः (।।) श्री संयुतानां गुणतोयधीनां गुप्तान्वयानां नृपसत्तमानां
२. राज्ये कुलस्याभिविवर्द्धमाने षड्भिर्य्युते वर्षशतेथ मासे (।।) सु कार्त्तिके बहुलदिनेथ पंचमे–
३. गुहामुखे स्फट विकटोत्कटामिमां जितद्विषो जिनवर पार्श्वसंज्ञिकां जिनाकृतिम् शमदमवान–
४. चीकरत् (।।) आचार्य्य भद्रान्वयभूषणस्य शिष्यो ह्यसावार्य्य कुलोद्गतस्य आचार्य्य गोश–
५. र्म्ममुनेस्सुतस्तु पद्मावताश्वपतेर्म्भटस्य (।।) परैरजस्य रिपुघ्नमानिनस्स सङ्घि–
६. लस्येत्यभिविश्रुतो भुवि स्वसंज्ञया शङ्करनामशब्दितो विधायनयुक्तं यतिमा–
७. र्गमास्थितः (।।) स उत्तराणां सदृशे कुरूणां उदंग्दिशादेशवरे प्रसूतः
८. क्षयाय कर्म्मारिगणस्य धीमान् यदत्र पुण्यं तदपाससर्ज्ज (।।)[1]

पाठ–टिप्पणी

पं. परमानन्द शास्त्री ने यह अभिलेख फ्लीट के 'गुप्त अभिलेख' ग्रन्थ पृष्ठ २५८ से अपने लेख में उद्धृत किया है। इसमें उन्होंने संस्कृत अवग्रह (ऽ) के बिना द्वितीय पंक्तिगत 'शतेथ' और 'दिनेथ' पद किये हैं।[2] श्री कृष्णदत्त वाजपेयी ने भी रामगुप्त अभिलेख में कहीं अवग्रह नहीं पढ़ा है।

अनुवाद

पंक्ति १–२ सिद्धों को नमस्कार। परमोत्कृष्ट कुल के गुप्तवंशीय राजाओं के, जो श्री से संयुक्त (श्रीमान) (तथा) गुणों के समुद्र हैं, अभिवर्द्धमान शासनकाल में, वर्ष एक सौ छः में उत्तम कार्तिक मास में कृष्ण पक्ष के पांचवे दिन–

पंक्ति ३ उसने (अर्थात शंकर ने जिनका नाम नीचे पंक्ति ६ में आता है) जिसने (धर्म) के शत्रुओं को जीत लिया है तथा जो शम और दम से युक्त है– इस गुहा मुख में एक जिन मूर्ति का, जो विस्तीर्ण नागफणों तथा विकटा (=अलंकृत) है और (जो) जिनों में श्रेष्ठ (तथा) पार्श्वनामधारी हैं, निर्माण कराया।

पंक्ति ४–६ वह (अर्थात् शंकर जो छठी पंक्ति में उल्लिखित है) उत्तम कुल में उत्पन्न (उस) मुनि आचार्य गोशर्मा के शिष्य हैं जो आचार्य भद्र के कुल के आभूषण थे, परन्तु वह भट अश्वपति संघिल–जो शत्रुओं द्वारा अजेय (थे) और स्वयं को शत्रुघ्न मानते थे– और पद्मावती के (गर्भ से उत्पन्न) पुत्र रूप में पृथिवी पर अधिक प्रसिद्ध हैं, (वह) अपने नाम शंकर से पुकारे जाते हैं (तथा) शास्त्रीय विधान के अनुरूप यतियों के मार्ग में स्थित रहते हैं।

पंक्ति ७–८ उत्तर दिशा के श्रेष्ठ प्रदेश में जो (कल्याण में) उत्तर कुरुओं के प्रदेश के सदृश है, उत्पन्न हुये उस बुद्धिमान ने (अर्थात् शंकर ने) इस (कृत्य) में जो भी पुण्य है उसे (धार्मिक) कृत्यों के शत्रु–समूह के विनाश–हेतु निर्धारित कर दिया है।[3]

व्याख्या

जितद्विष– राग, द्वेष, मोह, आदि अन्तरङ्ग शत्रुओं के विजेता अथवा इच्छा, काम, क्रोध, मोह, गर्व और ईर्ष्या इन लोक प्रसिद्ध षड्–रिपुओं को जीतनेवाले।

जिन– इन्द्रिओं के जेता जिनेन्द्र, तीर्थंकर।

पार्श्व– तेईसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ।

भद्रान्वय– आचार्य भद्र के नाम पर स्थापित एक अन्वय। इसमें हुए मुनि गोशर्म, उनकी गुरु–परम्परा एवं स्थान आदि की अब तक खोज नहीं हो सकी है। संभव है इस अन्वय की स्थापना आचार्य भद्रबाहु या समन्तभद्र के नाम पर हुई हो, क्योंकि 'भद्र' किसी नाम का पूर्व या अन्त पद है, पूर्ण नाम नहीं है। अतः यह भद्रबाहु या समन्तभद्र का आद्यन्त हो सकता है। एक भद्राचार्य का नाम पद्मपुराण में भी आया है।[4] वे यही हैं कि नहीं निर्णयपूर्वक नहीं कहा जा सकता।

गोशर्म–आचार्य भद्र के अन्वय में हुए इस नाम के एक कुलभूषण आचार्य मुनि।

शंकर– एक यति आचार्य गोशर्म मुनि के शिष्य। अभिलेख में इन्हें उत्तर दिशा में उत्पन्न बतलाया गया है। अतः यह लेख उत्तरभारत में विद्यमान उदयगिरि (विदिशा) से प्राप्त हुआ है, अतः प्रतीत होता है कि यहाँ उत्तरदिशा से उत्तर भारत गृहीत है और गोशर्म मुनि तथा उनके गुरु आचार्य भद्र उत्तर भारत के रहे होंगे।

विकटा–मोनियर विलियम्स ने इसका इसका अर्थ एक प्रकार की देवी परिचारिका किया है[5] डॉ. गोयल का कहना है कि यह विशेषतः बौद्धधर्म में मान्य थी। इस देवी की प्रतिमा अब गुफा में नहीं है।[6] फ्लीट ने बादामी की जैन गुफाओं में पार्श्वनाथ–प्रतिमा के पास फणोवाले नाग की आकृति और सर्पफण युक्त एक ऐसी स्त्री की आकृति अंकित होने का उल्लेख किया है, जिसने छत्र की यष्टि पकड़ रखी है।[7] यही स्त्री आकृति या

देवी परिचारिका और कोई नहीं, जैन परम्परा में मान्य पद्मावती देवी है। वह बौद्धदेवी नहीं है। वास्तव में तपस्या में लीन पार्श्वनाथ पर कमठ नाम के दैत्य ने उपसर्ग किये थे उनका निवारण धरणेन्द्र और पद्मावती नाम के भवनवासी देव–देवी युगल ने किया था, जो पार्श्वनाथ के अतीव कृतज्ञ थे। पार्श्वनाथ प्रतिमा पर इसी युगल देवी का अंकन इस गुफा में भी किया गया है।

भट अश्विपति संघिल – 'भट' का शाब्दिक अर्थ योद्धा होता है, तथा 'अश्वपति' सम्भवतः एक सैनिक उपाधि थी, जो घुड़सवार सैनिकों के सेनापति को दी जाती थी। संघिल इस पद पर नियुक्त रहे हैं।

उत्तरकुरु– यह क्षेत्र हिमालय उत्तर भाग में स्थित माना जाता था। इतिहासकार जिमर ने इसकी पहिचान काश्मीर से की है। उन्होंने इसे शाश्वत् सुख का प्रदेश बताया है। एतरेय ब्राह्मण के समय से यह देवक्षेत्र माना जाने लगा। बौद्ध साहित्य में भी यह प्रायः दैवी प्रदेश के रूप में उल्लिखित है।[८]

जैन साहित्य में भी इसका उल्लेख है। इसे उत्तम भोगभूमि कहा है तथा यह सुमेरू पर्वत के उत्तर–भाग में वर्णित किया गया है। अतः यह यहां विवक्षित नहीं हो सकता। किन्तु लोक में प्रसिद्ध हिमालय के उत्तर भाग को ही उत्तर कुरु कहा गया जान पड़ता है।[९]

कर्मारिगण– डॉ. गोयल ने इसका अर्थ 'अरिषट्क' इच्छा, काम, क्रोध, मोह, गर्व तथा ईर्ष्या बताया है।[१०]

जैनदर्शन में कर्म आठ बताये गये हैं।[११] अतः कर्मारिगण का अर्थ अष्ट कर्मों का समूह है। जैन साधु इन्हीं कर्मो के क्षय हेतु साधना में लीन रहते हैं।

सिद्ध– अष्ट कर्म और शरीर रहित, लोक और अलोक का ज्ञाता–द्रष्टा, लोक के अग्रभाग में स्थित आत्मा।[१२]

अभिलेख–परिचय

यह अभिलेख उदयगिरि (विदिशा) की दसमी गुफा से प्राप्त हुआ है। इसे कनिंघम ने 'जैनगुफा' नाम दिया है। इसकी लम्बाई पूर्व से पश्चिम की ओर पचास फुट तथा चौड़ाई सोलह फुट बताई गई है। इसके पांच कक्ष हैं। यह अभिलेख गुफा के प्रमुख कक्ष से दूसरे कक्ष में जाने वाले द्वार के मेहराब पर उत्कीर्ण है। इसमें कुल आठ पंक्तियां हैं।[१३] भाषा संस्कृत और लिपि ब्राह्मी है। प्रथम पंक्ति के 'नमः सिद्धेभ्यः' पद को छोड़कर सम्पूर्ण अभिलेख पद्य में है। इसमें पांच श्लोक हैं, जिनमें क्रमशः इन्द्रवज्रा, रुचिरा, इन्द्रवज्रा, वंशस्थ और उपेन्द्रवज्रा छन्द व्यवहृत हुए हैं। अभिलेख का समय गुप्त संवत् में वर्ष एक सौ छह बताया गया है, किन्तु उस समय के गुप्त शासक का नाम नहीं दिया गया है। गुप्त संवत् ईसवी ३१९ में आरंभ हुआ था।[१४] अतः प्रस्तुत लेख ईसवी ४२५ का ज्ञात होता है।

संदर्भ

1 डॉ श्रीराम गोयल गुप्त कालीन अभिलेख : पृष्ठ 142।

2. मध्य भारत का जैन पुरातत्व शीर्षक लेख, अनेकान्त–छोटेलाल जैन स्मृति अंक, वर्ष 19, किरण 1–2, पृष्ठ 68।

और इण्डियन एण्टीक्वेरी : जिल्द 11, पृष्ठ 310।

कनिंघम रिपोर्ट: भाग 10, पृष्ठ–54 ।

3. डॉ. श्रीरामगोयल, गुप्तकालीन अभिलेख, पृष्ठ 143।
4. आचार्य रविषेण, पद्मपुराण: पर्व 80, श्लोक 189।
5. डॉ. श्रीराम गोयल, गुप्तकालीन अभिलेख, पृष्ठ 144।
6. वही.
7. वही
8. डा. गोयल, गुप्तकालीन अभिलेख, पृष्ठ 144।
9. आचार्य गृद्धपिच्छ, तत्त्वार्थसूत्र, अध्याय 3, सूत्र 29–30।
10. गुप्तकालीन अभिलेख, पृष्ठ 144।
11. तत्वार्थ सूत्र, अध्याय 8, सूत्र 4 ।
12. आचार्य नेमिचन्द्र, द्रव्यसंग्रह, गाथा 51।
13. 10 cave lies high up in the north western end of the hill and is not very easily accessible. I have named it the 'Jain Cave' because the inscription, inside declares it to have been dedicated to 'Parshanath' whose image was placed at the mouth of the Cave. The main excavation which runs from east to west is 50 feet in length by 16 feet in breadth, and is divided into five rooms by cross. walls built of rough stones. The two innermost room are respectively 17½ feet by 6¾ feet and 16½ feet by 8¼ feet. The other three rooms are respectively 14¾ feet and 11½ feet. From the southern most room or second excavation, consisting of three small rooms, runs from north to south.

    The inscrition is engraved on the face of the rock on of the northern rooms it is the perfect order, save a few letters at the ends of the times, which have been injured by the chipping away of the angular edge of the rock, it is in 8 Lines which I read as follows.

    कनिंघम, आर्कि. सर्व्हे रिपोर्ट, जिल्द 10, पृ0 54
14. भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ: भाग 3 पृ. 28।

अभिलेख - ५

ग्वालियर अर्हत् प्रतिमालेख, सम्वत् ६२५

मूलपाठ

सं. ६२५...........

अभिलेख–परिचय

अभिलेख श्री गोकुलचन्द्र दिगम्बर जैन मंदिर में विराजमान दो इंच ऊंची और एक इंच चौडी, धातु से निर्मित एक प्रतिमा की आसन पर उत्कीर्ण है। इस लेख का केवल संवत् ही पढ़ा जा सका है।[1] यहाँ के अन्य प्रतिमा–लेखों से[2] प्रस्तुत लेख भी संस्कृत भाषा और नागरी लिपि में अंकित होने का अनुमान लगाया जा सकता है।

संदर्भ

1 पं परमानन्द शास्त्री, अनेकान्त, वर्ष 22, पृष्ठ 122।

2 स 1343 वर्षे श्री शुभकीर्तिदेव भार्या जदु पुत्र नरपति प्रणमति।
वही,

अभिलेख - ६

बड़नगर मंदिर शिलालेख, संवत् ६३३, भाषा–संस्कृत, लिपि–नागरी

मूलपाठ

१. तर प्रसिद्धम् श्री........ वक राज्ये यदुकुल म्लक्कु ।

२. क्त्यत्रयिविघ्नो तत्क्षेत्रभिर्विभावितं अङ्घोदेः श्री

३. दिघ्हागो धनपतेः ककुभि निर्पमार्ग्गः अस्यमुदद्रुन्

४. मिमस्य शशाङ्क तपनस्थितेः उमनेयं नवस्हक।

५. स्यम् सं. ६३३ वैशाखो सुदि १४[1]

पाठ–टिप्पणी

मूलपाठ में 'म्लक्कु! पद अशुद्ध प्रतीत होता है। इसके स्थान में अर्थ की

दृष्टि से 'तिलक्कु' पद अधिक शुद्ध है। इस पद के बाद 'लो शब्द होने की संभावना है।

व्याख्या

धनपतेः ककुभिः निर्पमार्ग्गः – धनपति का अर्थ कुबेर तथा ककुभि का अर्थ दिशा होता है। कुबेर का उत्तर दिशा का स्वामी होने से 'धनपतेः ककुभिः' पद का अर्थ 'उत्तर दिशा' निकलता है।

अतः 'धनपतेः ककुभिः निर्पमार्ग्ग' पद से मंदिर का मुख्य–द्वार उत्तर दिशा में रहा ज्ञात होता है।

उपमेयं नवहट्टक–कनिंघम ने इस पद का अर्थ 'नया बाजार भराया जाना' किया है।[2] मूलपाठ में आये 'शशाङ्क तपनस्थितेः उमनेयं नवहट्टक' पद में उमनेयं के स्थान पर 'उपमेयं' शब्द रहा प्रतीत होता है। तथा लगता है मंदिर पर नया स्वर्ण–कलश चढ़ाया था, जो सूर्य–चन्द्र के प्रकाश सदृश दैदीप्यमान था।

अभिलेख–परिचय

यह अभिलेख मध्य प्रदेश के एरण स्थान से तेरह मील दक्षिण–पूर्व में तथा विदिशा से ५० मील उत्तर–पूर्व में स्थित पठारी ग्राम से दक्षिण की ओर तीन मील दूर ज्ञाननाथ पर्वत की तलहटी में एक झील के किनारे बसे हुए बड़ो या बड़नगर ग्राम में गडरमर–मंदिर के पश्चिम की ओर मंदिर–समूह के बाहर चतुष्कोण शिलाखण्ड पर पाँच पंक्तियों में संस्कृत भाषा तथा नगरी लिपि में अंकित मिला है।

इसमें यदुवंशी किसी नरेश के राज्यकाल का संकेत है, तथा संवत् ६३३ वैशाख शुक्ल १४ मंदिर की प्रतिष्ठा तिथि दी गई है।[3]

गडरमर–मंदिर

ईसवी १८५१ द्वारा कनिंघम में इस मंदिर में एक लेटी हुई अवस्था में स्त्री–मूर्ति को देखा गया था। आरंभ में इसे उन्होंने मायादेवी और उसके साथ शिशु अवस्था में बुद्ध का अंकन समझा था। उनके मन में देवकी और बालकृष्णा की प्रतिमा होने की संभावना भी उदित हुई थी, किन्तु मंदिर का निकट से परीक्षण करने पर उन्हें कोई संदेह नहीं रहा कि यह जैन मंदिर है तथा यह प्रतिमा माता त्रिशला और शिशु महावीर की है।[4]

किंवदन्ति

इस मंदिर के संबंध में किंवदन्ति प्रचलित है कि यहाँ एक गड़रिया प्रतिदिन अपनी भेड़ें चराने आता था। एक भेड़ इस स्थान से प्रतिदिन आती और दिनभर इसकी भेड़ों के साथ–साथ चरती तथा संध्या होते ही जैसे ही इसकी भेड़ें घर लौटती कि वह भेड़ भी लौटकर अपने उसी स्थान पर चली जाती जहाँ से वह आती थी। एक दिन गड़रिये ने यह रहस्य जानने की इच्छा की। वह संध्या समय उस भेड़ के पीछे–पीछे गया। भेड़

अपने स्थान पर पहुँच कर अदृश्य हो गई। गड़रिये ने वहाँ ध्यान लगाये एक मुनि को देखा। उसने मुनि से भेड़ की चराई मांगी मुनि ने उसे मुस्कराते हुए कुछ मका के दाने दिये। गड़रिया मका के दाने लेकर घर आया। उसने सम्पूर्ण घटना कहते हुए वे दाने अपनी धर्मपत्नी को दिये धर्मपत्नी ने क्रोधित होकर उन दानों को उपलों पर फेंक दिया। गडरनी रसोई के लिए जैसे ही उपले लेने गई कि उसे उपले स्वर्णमय दिखाई दिये। इस रहस्य को जानने की इच्छा से गड़रिया भागा–भागा मुनि के पास गया किन्तु उसे मुनि दिखाई नहीं दिये।

गड़रिये ने कहा जाता है इस स्वर्ण से यहाँ एक जैन मंदिर बनवाया था जो कालान्तर में 'गडरमर मंदिर' के नाम से विश्रुत हुआ।[5] कनिघम ने इस मंदिर के निर्माण में प्राचीन तथा ध्वस्त जैन और हिन्दू मंदिरों के अवशेषों का उपयोग किया गया बताया गया है। मंदिर के सामने की दीवार के बाहरी अंश में आधी ऊँचाई पर अनेक दिगम्बर जैन मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं।[6]

बड़नगर का पूर्व इतिहास

प्राचीन काल में इस नगर में तमेरों के तीन सौ घर थे। इसकी स्थापना भैंसासाह (पाणाशाह) ने की थी। वह तैल का व्यापारी था। एक दिन वह –पारसटोला' में ठहरा था। उसका एक भैंसा पास के एक तालाब में तैर गया। तालाब से बाहर आने पर भैंसे की लोहे की जंजीर सोने में बदली हुई देखकर उसने तालाब में पारस पत्थर की खोज की ओर उसे प्राप्त कर उसने यह नगर बसाया था। कहा जाता है कि वह जैन था और उसने अनेक स्थानों पर सुंदर जिन–मंदिर बनवाये थे।[7]

प्राप्तिस्थल परिचय

बड़नगर पहुँचने के लिए बीना–भोपाल मध्यरेलवे की कुल्हार स्टेशन पर उतरना पड़ता है। यहाँ से सड़क मार्ग से अठारह किलोमीटर दूर पठारी ग्राम है जिसके उत्तर में तलहटी में एक तालाब है। बड़नगर इसी तालाब के तट पर स्थित है। यहाँ गडरमरमंदिर और जैन मंदिर समूह दर्शनीय स्थल हैं।

संदर्भ

1. *वही (अ) : कनिंघम रिपोर्ट, भाग–10, ईसवी 1880, पृष्ठ 74।*
   (ब) पं. विजयमूर्ति, जैन शिलालेख संग्रह, भाग 2, ले.सं. 129 पृष्ठ 151–152।
2. The date of this inecription Samvat 933 or A.D. 876 is earlier than the reign of Krishna Parmar, which whom the authentic genealogy of Parmar Raja Beeings. The mention of the Yadukultilaka, or "heir" of parent of the yadus" also shows that lord Paramount of east Malwa and that time was not a parmar. As the Tomaras, wo claim descent from yadu, certainly once reigned in Malwa, perhaps the hero of this recorad was one of the last Tomara princes, immediately preceding the establishment of the Parmar dynasty. The record is unfortunately imperfect at both ends. So that, I have been failed all to gather in marking out more then a few words here and there. Perhaps the words Upaneyam Navahattc, near the end, may refer to the establishment of a new market."
   कनिंघम रिपोर्ट : जिल्द 10 पृ0 74 ।

3. कनिंघम रिपोर्ट, भाग 10, पृष्ठ 71-76।
4. वहीं।
5. वही
6. पं. बलभद्र जैन, भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ, भाग 3, पृष्ठ 239।
7. अ. कनिंघम: रिपोर्ट जिल्द 21, पृष्ठ 55।
ब. एपिग्राफिका इण्डिका जिल्द 1, पृ. 136।

अभिलेख - ७

खजुराहो पार्श्वनाथ–मंदिरद्वार लेख, संवत् १०११, भाषा–संस्कृत, लिपि–नागरी

मूलपाठ

१. ओं (।) संवत् १०११ समये (।।) निजकुलधवलोयं दि–
२. व्यमूर्ति (:) स्वसी (शी) ल (:) स (श) मदमगुण युक्त (:) सर्व–
३. सत्वा (त्त्वा) नुकंपी (।) स्वजन जनिततोषो धांगराजेन
४. मान्य (:) प्रणमति जिननाथोयं (ऽ यं) भव्यपाहिल (ल्ल)–
५. नामा । (।।) १।। पाहिलवाटिका १ चन्द्रवाटिका २
६. लघुचंद्रवाटिका ३ सं (शं) करवाटिका ४ पंचाई–
७. तलवाटिका ५ आम्रवाटिका ६ ध्र (धं?) गवाडी ७ (।।)
८. पाहिलवंसे (शे) तु क्षये क्षीणे अपरवंसो (शो) य (:) कोपि (ऽपि)
९. तिष्ठति (।) तस्य दासस्य दासोयं (ऽयं) मम दत्तिस्तु पाल–
१०. येत् ।। महाराज गुरुस्री (श्री) वासवचंद्र (:।।) वैसा (शा) ष (ख)
११. सुदि ७ सोमदिने ।।[1]

पाठ – टिप्पणी

पांचवीं पंक्ति में 'चन्द्रवाटिका' नाम में 'न' अनुनासिक के रूप में प्रयुक्त हुआ है। जबकि छठी पंक्ति में आये 'लघु चंद्रवाटिका' के नाम में 'न' अनुस्वार के रूप में आया है। इसी लेख की दसवीं पंक्ति में 'वासवचंद्र' नाम में चंद्र के साथ अनुसार व्यवहृत हुआ है अतः 'चन्द्रवाटिका' नाम के चन्द्र में भी अनुसार मूलपाठ में रहा प्रतीत होता है। अभिलेख में 'श' के लिए 'स' तथा 'ख' वर्ण के लिए 'ष' का प्रयोग हुआ है। प्रो. एफ कीलहोर्न ने इस लेख के श्लोक को निम्न रूप से शुद्ध किया है–

निजकुल धवलोयं दिव्यमूर्त्तिः सुशील:
शमदम गुणयुक्तः सर्वसत्त्वानुकम्पी।
सुजनजनिततोषो धङ्गराजेन मान्यः
प्रणमति जिननाथं भव्यपाहिल्लनामा।।[2]

भावार्थ

पंक्ति १–४ : पञ्च परमेष्ठी मंगल करें। संवत् १०११वें वर्ष में अपने कुल में यशस्वी, दिव्यमूर्ति शीलवान् शम दम आदि गुणों से युक्त, समस्त प्राणियों पर दया करने–वाला, सज्जनों को संतुष्ट करने वाला, धंग राजा से सम्मानित यह भव्य पाहिल जिननाथ को प्रणाम करता है।

पंक्ति ५–७ : १. पाहिलवाटिका २. चन्द्रवाटिका ३. लघुचन्द्रवाटिका ४. शंकरवाटिका ५. पंचाइतलवाटिका ६. आम्रवाटिका और ७. धंगवाटिका (इस मंदिर को दान में दी)।

पंक्ति ८–९ : पाहिल के वंश का क्षय अथवा क्षीण हो जाने पर दूसरा जो कोई भी वंश रहे और मेरे द्वारा (पाहिल द्वारा) दान में दी वाटिकाओं की रक्षा करे, यह (पाहिल) उसके दास का दास है।

पंक्ति १०–११ : महाराज गुरु श्री वासवचन्द्र के समय में वैशाख सुदी सप्तमी सोमवार के दिन (प्रतिष्ठा हुई)।

लेखन शैली

अभिलेख में 'रेफ' युक्त वर्ण द्वित्व रूप में व्यवहृत हुए हैं। अवग्रह का उपयोग नहीं किया गया है। 'श' के स्थान में 'स' और 'ख' वर्ण के लिए 'ष' का व्यवहार उल्लेखनीय है। 'श्री' के स्थान में 'सी' व्यवहृत हुआ है। अनुनासिक 'न' अनुस्वार के रूप में प्रयुक्त है।

लेख की आठवीं पंक्ति में विसर्ग युक्त 'यः' पद आया है। इस पद के सिवाय अन्यत्र विसर्गों का लेख में व्यवहार दिखाई न देने से लगता है यह पद भी मूलतः विसर्ग विहीन रहा होगा। इस काल में लेख उत्कीर्ण करने में संभवतः विसर्गों का व्यवहार नहीं हुआ है।

अभिलेख–परिचय

यह शिलालेख छतरपुर जिले में खजुराहो के पार्श्वनाथ जैन मंदिर के प्रवेश द्वार के ऊपर बायीं ओर उत्कीर्ण है। इसमें ग्यारह पंक्तियाँ हैं। लेख में भाषा–संस्कृत और लिपि नागरी व्यवहृत हुई है।

इसके चार अंश है। इनमें प्रथम अंश संवत् को छोड़कर पद्यमय है। इसमें मालिनी छन्द व्यवहृत हुआ है। भव्य पाहिल श्रावक के गुणों का उल्लेख इसी अंश में किया गया है। दूसरे अंश में दान दी गई वाटिकाओं के नाम हैं। तीसरे अंश में दान दाता पाहिल

ने अपनी लघुता प्रकट करते हुए दत्त वस्तुओं की रक्षा के भाव प्रकट किये हैं, और चौथे अंश में प्रतिमा–प्रतिष्ठा तिथि तथा गुरु वासवचन्द्र का नामोल्लेख किया गया है।

व्याख्या

पाहिल – अभिलेख में पाहिल को भव्य श्रावक बताकर उसके अन्य गुणों का उल्लेख किये जाने से ऐसा लगता है कि यह अभिलेख किसी प्राचीन लेख की प्रतिकृति है। पाहिल के किसी आत्मीय श्रद्धालु ने इसे उत्कीर्ण कराया है। दान में दी गई वाटिकाओं में प्रथम वाटिका का नामकरण पाहिल के नाम पर किये जाने से भी लेख बाद में उत्कीर्ण कराया गया प्रतीत होता है।

चन्द्रवाटिका–लघुचन्द्रवाटिका : चन्द्र नामान्त इन वाटिकाओं के नामों से ऐसा प्रतीत होता है कि पाहिल की दो पत्नियाँ थीं और उनके नाम चन्द्रा तथा लघुचन्द्रा थे। इन वाटिकाओं के नाम उनकी दोनों पत्नियों के नाम पर रखे गये प्रतीत होते हैं।

वासवचन्द्र – अभिलेख में इन्हें 'गुरु' और 'महाराज' कहा गया है। इन विशेषणों से ये निर्ग्रन्थ मुनि ज्ञात होते हैं। संभवतः जिननाथ की प्रतिष्ठा पाहिल ने इन्हीं के उपदेशों से प्रभावित होकर कराई थी।

जिननाथ – अभिलेख में 'जिननाथ' तीर्थंकर आदि नाथ के लिए कहा गया प्रतीत होता है। पं. परमानन्द शास्त्री का अभिमत है कि इस मंदिर में पहले आदिनाथ की मूर्ति स्थापित थी। यहाँ पार्श्वनाथ की प्रतिमा बाद में स्थापित की गई है।[3] मंदिर के गर्भालय में स्थित वृषभ की प्रतिमा से शास्त्री जी की मान्यता तर्क संगत प्रतीत होती है।

मंदिर की प्राचीनता

विद्वान परमानन्द शास्त्री की मान्यता है कि यह पार्श्वनाथ जैन मंदिर चन्देल राजा धंग के राज्यकाल से पूर्व का बना है।[4] इस लेख की लिपि की शैली से भी ऐसा ही ज्ञात होता है।[5] श्री धामा का भी ऐसा ही अभिमत है। वे इस लेख को किसी प्राचीन लेख की प्रतिलिपि मानते हैं।[6] इन उल्लेखों के परिप्रेक्ष्य में लगता है कि मंदिर का निर्माण राजा धंग के पूर्व हुआ था।

अभिलेख का महत्व

प्रस्तुत लेख से राजा धंग का शासन काल और शासित प्रदेश ज्ञात होता है। पाहिल को राजकीय सम्मान दिये जाने तथा मंदिर के लिए दान में दी गई 'धंगवाडी' से वे धार्मिक सहिष्णुता के आगार और जैन धर्म स्नेही ज्ञात होते है। इस प्रकार यह ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

अभिलेख–प्राप्ति स्थल

खजुराहो, मध्य प्रदेश के छतरपुर जिले में छतरपुर से सत्ताईस मील दूर पूर्व में

स्थित एक छोटा ग्राम है। मध्य रेलवे लाइन में सतना, महोबा और हरपालपुर स्टेशनों से यहाँ जाने के लिए बसें मिलती हैं। सतना से नौगांव जाने वाले मार्ग पर पन्ना के आगे बमीठा से यह केवल आठ मील दूर है। एपिग्राफिका इण्डिका जिल्द प्रथम में उल्लिखित प्रस्तुत लेख संबंधी विचार

This inscription is carved on the left door-

the inscription records a number of gifts made by one Pahilla, whose name is spelt Pahila, and who is described as held in honours by king Dhanga, and it is dated in line 1st in the year 1011 and in line 10 and 11 on the 7th of the bright half of Vaisasha on SomDin or monday. Regarding the figures of the year 1011 it must be stated that the artizan, in the place of cypher, first engraved the figure 1 which he sub sequently altered to 0; but the four figures actually are 1011 and cannot possibly be read in any otherway. The inscription then is dated the same year as the inscription of Yasovarman, and in apparently mentiones the same prince Dhanga, who is spoken of in that inscription as the ruling prince. Moreover, whatever may have been said to the contrary. The date undoubtedly works out satisfactorily for taking the figure 1011 to denote the southersi Vikrama Year 1011, Expired the corresponding day is April 2 A.D. 955, which was a monday as required. On the other hand the charactors in which the inscription is engraved are for more modern than these of the inscription of Yasoverman, and taking the date to be correct, and reference in both inscriptions to be the same. Dhang we must of necessity assume that inscription, as be now have it was similarly to the inscription of Dhang Dev. of the year 1059 been reengraved from a more ancient copy in the year 1011.

Line 1-He who bears the auspicious name Pahilla renders illustrious his family, possesses a divine body, a good disposition, is endowed which the qualities of tranquillity and self control takes compassion on all beings is pleased by goodpeople held in honour by king Dhang, he bows down here to the lord of the jains. The Pahillagarden these are gifts. Whetever family there is here, when the family of Pahilla is no more, I am the servant of its servant, may it guard my gifts. The maharaj Guru or high priest is the illustrious Vasav-chandra on the 7th day of the light half of Vaisasha on a monday.

संदर्भ

1. पं. विजयमूर्ति, जैन-शिलालेख-संग्रह, भाग 2, ले.सं. 147, पृष्ठ 190।

2. अ. वहीं पृष्ठ 191 ।

ब. एपिग्राफिका इण्डिका, जिल्द 1, पृष्ठ 136 ।

3. अनेकान्त, वर्ष 19, किरण 1-2, पृष्ठ 56 ।

4. वही

5. एपिग्राफिका इण्डिका, जिल्द-1, पृष्ठ 135-136।

6. श्री भॉरेलाल धामा, खजुराहो, भारतीय पुरातत्त्व विभाग नई दिल्ली, ईसवी 1962, पृष्ठ 25।

अभिलेख - ८

खजुराहो, पार्श्वनाथ–मंदिर–द्वार अभिलेख, संवत् १०११ भाषा–संस्कृत लिपि नागरी

मूलपाठ

१. आचार्य्य स्री (श्री) देवचंद्र (:) सिश्य (शिष्य) कुमुदचंद्र (:)।।
२. भट्टपुत्र स्री (श्री) गोलुम (।)
३. स्त्री (श्री) भट्टपुत्र स्री (श्री) महुल (।)
४. राजपुत्र स्री (श्री) जयसिंह (पिखन) (।)
५. भट्टपुत्र स्री (श्री) पिषन।
६. भट्टपुत्र स्री (श्री) देवसर्म्म (देवशर्म्म) चिरम जयतु (।)[1]

प्राप्ति–स्थान

अनुक्रमांक प्रथम से अनुक्रमांक पाँचवें तक के अभिलेख खजुराहों पार्श्वनाथ मंदिर के प्रवेशद्वार की चौखट पर उत्कीर्ण संवत् १०११ के अभिलेख के ऊपर बायीं ओर (चौंतीसा यंत्र के ऊपर) तथा अनुक्रमांक छह का अभिलेख प्रवेश द्वार के ऊपर दायीं ओर उत्कीर्ण है। ये लेख लिपि शास्त्र की दृष्टि से ईसवी ६५० को १००० ईसवी तक के मध्यवर्ती काल के बताये गये हैं।[2]

पाठ–टिप्पणी

श्री धन्यकुमार सुधेश ने अपनी एक रचना में गोलुम, महुल, पिखन और देवशर्मा भाईयों को मंदिर–निर्माता शिल्पी बताया है।[3] राजपुत्र जयसिंह के नामोल्लेख से ज्ञात होता है कि मंदिर राजपुत्र जयसिंह के समय में बना था। खजुराहो के संवत् १२१२ के चरणलेख में शिल्पी कुमार सिंह का[4] और खजुराहों के ही संवत् १२१५ के चरणलेख में रूपकार रामदेव का[5] नामोल्लेख प्राप्त होने से भट्टपुत्रों के शिल्पी होने का अनुमान लगाया जा सकता है किन्तु जयसिंह राजपुत्र के नामोल्लेख से मंदिर निर्माण और ये अभिलेख भी उसी के समय में उत्कीर्ण कराये ज्ञात होते हैं।

जयसिंह को महाराज पुत्र गया है। इस काल में महाराज, महाराजाधिराज, महासामन्त जैसी उपाधियाँ जागीरदारों को भी प्राप्त[6] होने से ज्ञात होता है कि जयसिंह किसी जागीदार का पुत्र था जिसे महाराज विरुद प्राप्त था।

इस मंदिर के प्रवेशद्वार पर अंकित चौंतीसा यंत्र तथा उसके ऊपर उत्कीर्ण आचार्य

श्री देवचन्द्र के शिष्य कुमुदचन्द्र राजपुत्र जयसिंह तथा भाट पुत्र श्री गोलुम, महुल, पिखन और देवशर्म के नामोल्लेखों को उत्कीर्ण किया गया है।

यहाँ प्रयुक्त 'भट्ट' शब्द का अर्थ भट्टारक ज्ञात होता है हो सकता है यहाँ कोई भट्टारकों की गद्दी रही हो तथा उस समय भट्टारक गद्दी पर विराजमान भट्टारक महाराज के ये गोलुम आदि चारों पुत्र हों। श्री देवशर्मा के नाम से ये भट्टारक ब्राह्मण जातीय ज्ञात होते हैं।

इस अनुमान के परिप्रेक्ष्य में कहा जा सकता है कि आचार्य देवचन्द्र के शिष्य कुमुदचन्द्र और राजपुत्र जयसिंह तथा भट्टारक पुत्र गोलुम आदि चारों भाई णमोकार मंत्र से बहुत प्रभावित रहे हैं। चौंतीसा यंत्र उनकी पंच नमस्कार मंत्र के प्रति श्रद्धाऽभिव्यक्ति का प्रतीक है।

संदर्भ

1. आर्कि0 सर्वे रिपोर्ट जि. 2, पृ 533–534।

2. श्री कृष्णदेव, एन्सिएन्ट इण्डिया : जिल्द 15, दि टेम्पिल ऑफ खजुराहो शीर्षक लेख, ई. 1959 प्रकाशन, पृ. 54।

3. जैन कलातीर्थ खजुराहो : दिगम्बर अतिशय क्षेत्र खुजराहो प्रकाशन, ई 1987 पृ0 25।

4 कनिघम रिपोर्ट · जिल्द 21, पृ0 68

5. वही, पृ0 69 ।

6 डॉ जी.सी चौधरी, पोलिटिकल हिस्ट्री ऑफ नार्दरन इण्डिया फ्राम जैन सोर्सेज . ई 1963 प्रकाशन, पृ0 358।

अभिलेख - ९

खजुराहो–पार्श्वनाथ मंदिर–सोपान अभिलेख, संवत् १०११,
भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

महाराजपुत्र सी (श्री) जय सिंहखित : (१)

पाठ–टिप्पणी

मूलपाठ में खितः शब्द का अर्थ है–प्रेरित'। अतः कहा जा सकता है कि महाराज पुत्र जयसिंह की प्रेरणा से पुत्रों द्वारा इस मंदिर का निर्माण किया गया था।

खित शब्द के पूर्व 'लि' वर्ण होने की यहां संभावना उदित होती है। यह वर्ण या तो उत्कीर्ण कर्ता की असावधानी से उत्कीर्ण ही नहीं किया गया है या इस वर्ण का

शिलाखण्ड भाग भग्न हो गया है। अनुमानतः 'खितः' शब्द न होकर 'लिखित होना चाहिए। अतः इस अनुमान के आलोक में संवत् १०११ का लेख पार्श्वनाथ मंदिर के प्रवेशद्वार पर इसी के द्वारा उत्कीर्ण कराया गया ज्ञात होता है। इस संदर्भ में निम्न तथ्य विचारणीय है—

(१) सामान्यतः कोई भी अपनी प्रशंसा स्वयं नहीं करता जबकि दानकर्ता पाहिल की प्रस्तुत लेख में बहुत प्रशंसा की गई है। अतः पाहिल का इस लेख से मंदिर को वाटिकाओं का दान में देना तो प्रमाणित होता है किन्तु उसे मंदिर निर्माता नहीं कहा जा सकता। ज्ञात होता है इस मंदिर के अभिलेख पाहिल की अनुपस्थिति में बाद में उत्कीर्ण कराये गये थे, मंदिर निर्माण काल के नहीं है।[2]

(२) मंदिर के गर्भगृह में अलंकृत सिंहासन पर वृषभांकन को देखकर पुरातत्त्व वेत्ताओं ने इस मंदिर में मूलतः तीर्थकर आदिनाथ की प्रतिमा के प्रतिष्ठित होने का अनुमान लगाया है तथा पार्श्वनाथ प्रतिमा सन् १८६० में स्थापित हुई बताई है।[3]

सदर्भ

1 प हरगोविन्ददास त्रिकम चद सेठ, पाइअ–सद्द–महण्णवो, सवत् 1985 प्रकाशन, पृ0 347।

2 श्री नीरज जैन एव श्री दशरथ जैन, जैन मानुमेट्स एट खजुराहो, सुषमा प्रेस सतना ई 1968 प्रकाशन, पृ0 32।

3 श्री भोरेलाल धामा एव श्री एस सी चन्द्र खजुराहो, भारतीय पुरातत्त्व विभाग, ई0 1952, प्रकाशन पृ0 25।

अभिलेख - १०

खजुराहो, पार्श्वनाथ–यंत्र लेख, संवत् १०११

णमोकार मंत्र के बढ़ते हुए माहात्म्य से प्रभावित होकर इस मंत्र का प्रयोग यंत्र के रूप में प्रचलित हुआ। सर्वप्रथम इसका प्रयोग खजुराहो (छतरपुर म.प्र.) के प्रसिद्ध श्री पाश्वनार्थ जैन मंदिर में हुआ है। यहाँ प्रवेशद्वार की चौखट पर एक चौंतीसा यंत्र अंकित है। यह यंत्र सोलह खण्डों में विभाजित है। इन खण्डों में इस प्रकार अंक संख्या उत्कीर्ण की गई है कि तिरछे, आड़े, खड़े चार अंकों का योग हर प्रकार से चौंतीस ही आता है। यंत्र निम्न प्रकार है—

७	१२	१	१४
२	१३	८	११
१६	३	१०	५
९	६	१५	४

श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर के प्रवेशद्वार की चौखट के ऊपरी भाग में उत्कीर्ण मिलने से यह सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि यह यंत्र कोई जैन यंत्र ही है।

णमोकार मंत्र में पांच पद तथा पैंतीस अक्षर है। वे निम्न प्रकार है–

पद	अक्षर	पद	अक्षर
१. णमो अरिहंताणं	७	४. णमो उवज्झायाणं	१०
२. णमो सिद्धाणं	५	५. णमो लोए सब्ब साहूणं	६
३. णमो आइरियाणं	७	६. कुल अक्षर	३५

मंत्र में व्यवहृत ये सभी वर्ण अजन्त हैं, एक भी वर्ण हलन्त नहीं है। अजन्त होने से प्रत्येक वर्ण में एक–एक स्वर समाहित है। इस प्रकार पैंतीस वर्णों में पैंतीस संख्यक स्वर हैं, किन्तु मंत्रशास्त्र में जैनसिद्धान्त कौमुदी के सूत्र संख्या १/२/२ सूत्र "स्वरयोर्व्यवधाने प्रकृतिभावो,लोपो वैकस्य" के अनुसार 'णमो अरिहंताणं' पद के 'अ' स्वर का विकल्प से लोप हो जाता है, अतः इस पद में सात स्वर के स्थान पर छह स्वर ही मंत्रशास्त्र के अनुसार माने जाते हैं। इस प्रकार णमोकार मंत्र में पैंतीस वर्ण होने पर भी चौंतीस ही स्वर है।[1]

चौंतीसा यंत्र में–चार अंकों का योग चौंतीस तथा उसका जैन मंदिर में उत्कीर्ण होना स्पष्टतः उसके णमोकार मंत्र की स्वर संख्या पर आधारित रचना की ओर संकेत करता है।

णमोकार मंत्र अपराजित मूलमंत्र, विघ्न विनाशक और मंगलों में प्रथम मंगल कहा गया है।[2] इसके संबंध में यहाँ तक गया है कि "हजारों पाप करके और सैकड़ों प्राणियों का वध करके भी इस मंत्र की आराधना से तिर्यंच भी स्वर्ग में देव हुए हैं।[3] भैया भगवती दास ने इसका माहात्म्य निम्न प्रकार बताया है–

जहाँ जपें णमोकार वहाँ अघ कैसे आवें।
जहाँ जपें णमोकार वहाँ वितर भग जावें।।
जहाँ जपें णमोकार वहाँ सुख सम्पति होई।
जहाँ जपें णमोकर वहाँ दुःख रहे न कोई।।
णमोकार जपत नवनिधि मिले सुख समूह आवे निकट।
भैया नित जपवो करो महामंत्र णमोकार है।।

इस प्रकार मंत्र की महिमा को जानकर मंत्रवादियों ने इस चौंतीसा यंत्र की रचना की। इसके सोलह खण्ड–षोडशाक्षरी विद्या– "अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यो नमः" के प्रतीक कहे जा सकते है। सोलह खण्डों में रखे गये अंकों में भी जैन दर्शन समाहित दिखाई देता है। अंक परिचय निम्न प्रकार है–

७. यंत्र के ऊपरी खण्ड में सप्त संख्यक अंक है। इस अंक से सप्त संख्यक व्यसनों

को हेय और सात तत्वों को उपादेय बताया गया है। जिनेन्द्र कथित सप्त तत्व का श्रद्धान ही सुखकारी है।

२. जैन धर्म में पाप–पुण्यकारी द्विविध क्रियाओं में पुण्यकारी क्रियाएँ उपादेय हैं और पापकारी क्रियाएँ हेय अथवा तत्वों के निश्चय और व्यवहार रूप दोनों भेद समझो।

१६ सोलह संख्या को तीर्थकार प्रकृति की सोलहकारण–भावनाएँ भाने का संकेत किया गया है।

६. इस संख्या को नौ पदार्थों का ज्ञान भी उच्च पद हेतु अपेक्षणीय है।

१२. द्वितीय पंक्ति के आरंभ में बारह संख्यक अंक है। ये बारह व्रतों और बारह भावनाओं के प्रतीक कहे जा सकते हैं। सप्त तत्व, पुण्य–पाप, सोलहकारण भावनाएँ और नौ पदार्थो को जानने के पश्चात् द्वादशांग वाणी में बारह व्रतों के वाणी में आचरण की गृहस्थ को आवश्यकता कही गयी है।

१३. महाव्रती को पंच महाव्रत, पंच समिति तथा तीन गुप्ति रूप तेरह प्रकार का चारित्र धारण करना चाहिए।

३. सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान आरैर सम्यकचारित्र से ही मोक्ष प्राप्ति संभव है। समरम्भ–समारम्भ–आरम्भ, मन–वचन–काय, कृत, कारित–अनुमोदना, इन तीन–तीन के तीनों समूहों से राग, द्वेष और मोह इन तीनों के त्याग से तीनों योग सम्हाले जा सकते हैं, जिनकी चारित्र धारण करने में महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। तीनोंमूढताओं का त्याग भी अपेक्षित है।

६. गृहस्थों के लिए देव पूजादि षट्कर्म तथा महाव्रती को इस संख्या से षडावश्यकों को पालने का संकेत किया गया है।

६. तीसरे खण्ड के आदि में एक संख्या दी गई है। यह जीव के अकेले जन्म–मरण करने तथा उपार्जिन कर्मफल अकेले भोगने का सूचक है। शाश्वत् सुखदाता एक मात्र मोक्ष है। उसे अकेले रहकर भी प्राप्त किये जा सकने की यह सूचना देता है।

८. इस अंक से दुखदाई अष्टकर्मो की ओर संकेत किया गया है। गृहस्थ अष्टमूलगुण धारण कर अष्टमद और शंकादि आठों दोष त्याग कर, निःकांक्षादि आठ अंग धारण कर सम्यक्त्व पा सकता है।

१०. अष्टकर्मों की शक्ति नशाने के लिए दस धर्म उपादेय हैं।

१५. पन्द्रह प्रकार के योग को सम्हाले बिना सुख नहीं।

१४. यह अंक चौदह पूर्व रूप श्रुत का बोधक है। महाव्रती इनका पाठ करे। चौदह गुणस्थान और मार्गणाश्रों को जाने।

११. इस संख्या से ग्यारह अंग सूचित किये गये हैं। महाव्रती इनका अध्ययन करे।

५. इस संख्या से व्रती को पंचेन्द्रिय–विषयों से सावधान रहने का संकेत किया गया है। गृहस्थ को पांच अणुव्रत और मुनि को पांच महाव्रत पांच समिति और पंचाचार पालन का संकेत है।

४. यह अंक चार कषाय और चार गति का बोधक है। चतुर्विध पुरुषार्थ और दान की

ओर भी ध्यानाकृष्ट किया गया है। कषाय चारों गतियों में जीव को भ्रमाता है अतः उन्हें सम्हालो और गार्हस्थित जीवन में, चतुर्विध दान देकर अपना जीवन सफल करो। मोक्ष–अन्तिम पुरुषार्थ का जीव का ध्येय रहे।

यंत्र–संख्या विश्लेषण

यंत्र की ३४ संख्या को परस्पर में योग करने ने ३+४=७ सात संख्या प्राप्त होती है, जो यंत्र के प्रथम खण्ड में रखी गई है। इस संख्या की बायीं ओर दूसरे खण्ड में १२ संख्या अंकित है जो ३४ संख्या के परस्पर का ३x४=१२ गुणनफल है। चौंतीस संख्या में बड़ी संख्या से छोटी संख्या अलग करने पर ४–३=१ एक संख्या प्राप्त होती है, जो यंत्र के ऊपरी तीसरे खण्ड में दर्शाये गयी है। णमोकार मंत्र की व्यंजन संख्या ३० है। इसकी गणना मंत्र के पदो के अनुसार निम्न प्रकार है–

णमो अरिहंताणं	=	६	णमो उवज्झायाणं	=	६
णमो सिद्धाणं	=	५	णमो लोए सधसाहूणं	=	८
णमो आइरियाणं	=	५	कुल व्यंजन		३०

यंत्र के पहले, दूसरे और तीसरे खण्डों में दर्शाए अंकों का योग ७+१२+१=२० बीस आता है। इस योग संख्या को चौंतीस संख्या से कम करने पर यंत्र के चतुर्थ खण्ड में दर्शाई गई १४ संख्या प्राप्त होती है।

यंत्र के दूसरे भाग में प्रथम खण्ड में २ संख्या दी गई है। णमोकार मंत्र के ऊपर दर्शाए गये ३४ स्वर और ३० व्यंजनों के योग से चौसठ संख्या प्राप्त होती है। इसमें छह संख्या से चार संख्या घटाई जावे तो दो संख्या प्राप्त होगी, जो यंत्र के दूसरे भाग के प्रथम खण्ड की संख्या है।

इस खण्ड की बायीं ओर दूसरे खण्ड में १३ संख्या दी गई है। यह संख्या णमोकार मंत्र की मात्रा संख्या से ली गई हैं मात्राओं की गणना निम्न प्रकार है–

णमो अरिहंताणं	=	११	णमो उवज्झायणं	=	१२
णमो सिद्धाणं	=	८	णमो लोए सब्ब साहूणं	=	१६
णमो आहरियाणं	=	११	कुल मात्रा योग		५८

यहाँ दूसरे पद में संयुक्त वर्ण के पूर्व वर्ण पर स्वराघात नहीं होने को उसे मंत्र माना गया है। (मंगल मंत्र णमोकार : पृ० १३६)। इस प्रकार मंत्र की मात्रा संख्या का पारस्परिक योग ५+८=१३ तेरह–प्राप्त होता है। जो संख्या दूसरे भाग के दूसरे खण्ड में दर्शाई गई है।

दूसरे भाग के तीसरे खण्ड में ८ संख्या दी गई है। यह संख्या मंत्र की ऊपर दर्शाई अक्षर संख्या ३५ अंकों के परस्पर योग ३+५=८ से प्राप्त की गई है।

पहले दूसरे और तीसरे खण्ड की क्रमशः संख्या २+१३+८ का योग २३ होता है। इस योग संख्या को मंत्र की स्वर संख्या ३४ से कम करने पर चौथे खण्ड में अंकित ११

संख्या प्राप्त हो जाती है।

यंत्र के तीसरे भाग के प्रथम खण्ड में दर्शाई गई १६ संख्या मंत्र के "णमो लोए सब्ब साहूणं" पाँचवें पद की मात्रा संख्या से अथवा मंत्र के प्रथम तीन पदों की व्यंजन संख्या से ली गई है। तीसरे भाग के दूसरे खण्ड में ३ संख्या अंकित है। यह संख्या मंत्र की मात्रा योग संख्या ५८ से (८—५=३) निकाली गयी है। इसी प्रकार तीसरे खण्ड में दर्शाई गई दस संख्या मंत्र के द्वितीय तृतीय पदों की व्यंजन संख्या की योग संख्या की परिचायक है। इन तीनों की क्रमश संख्या १६+३+१० की योग संख्या २९ को स्वर संख्या ३४ से घटाकर अंकित ५ संख्या प्राप्त की गई है।

चौथे भाग के प्रथम खण्ड में ६ का अंक अंकित है। यह संख्या मंत्र के पांचवें पद– 'णमो लाए सव्व साहूणं' की अक्षर संख्या से अथवा स्वर और अक्षर संख्या के इकाई अंकों के योग से ली गई प्रतीत होती है। दूसरे खण्ड में ६ का अंक है। यह संख्या णमो अरिहंताणं तथा णमो उवज्झायाणं पद की व्यंजन संख्या की बोधक है। अथवा स्वर और व्यंजन के इकाई अंकों का योग है। तीसरे खण्ड में १५ संख्या है। यह संख्या मंत्र की अक्षर संख्या की योग संख्या ३५ के अंकों को परस्पर में गुणित करने ३x५=१५ से प्राप्त होती है, तथा प्रथम दूसरे और तीसरे खण्ड के अंक क्रमश। ६+६+१५ का योग ३० मंत्र स्वर संख्या ३४ से घटाने पर ४ अंक प्राप्त होते हैं।

यहाँ चौंतीस अंक दर्शाता है कि ३+४=७ जीवादि तत्वों पर श्रद्धान करो। चौंतीस का ३ अंक श्रद्धान पूर्वक सम्यग्दर्शत् सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र की प्राप्ति का संकेत करता है। ३४ में ४ अंक चार कषायों वश विभिन्न पाप करके चारों गतियों में भ्रमने का परिचायक है और ३x४=१२ संख्या १२ व्रत और तप साधना तथा १२ भावना– भाने का संकेत करती है। इसी प्रकार ४—३=१ संख्या जीव को साध्य मोक्ष की याद दिलाता है।

इस प्रकार यह यंत्र भी मंत्र के समान अभीष्ट फलप्रद है। विघ्न विनाशक और मंगलकारी है। संख्या विवेचना से यह सिद्ध है कि यह जैन यंत्र है। यही कारण है कि यह पार्श्वनाथ दि. जैन मंदिर में स्थान पा सका है। यह मंदिर–प्रवेशद्वार की चौखट पर उत्कीर्ण संवत् १०११ के अभिलेख के ऊपर बायीं ओर उत्कीर्ण है। अभिलेख से इसका समय ईसवी ६५४ प्रमाणित होता है। यह यत्र खजुराहो में परकोटे के भीतर विद्यमान ३४ जैन मंदिरों का ही प्रतीक नहीं कहा जा सकता।[४]

यन्त्र के संबंध में पं. परमानन्द शास्त्री का अनुभव है कि प्रसव–वेदना के समय इस यंत्र को केशर से कांसे की थाली में लिखकर शुद्धजल से निर्मित उसके घोल को गर्भवती को पिलाने से प्रसव वेदना शान्त हो जाती है और प्रसव शीघ्र हो जाता है।[५]

यह यंत्र निबद्ध मंगल का प्रतीक है। कर्म मल को गलानेवाला है। पाप विनाशक है। सुख लानेवाला है। पंच परमेष्ठी रूप है। मंगलकारी बुद्धि से ही मंगलदायी इस यंत्र को इस मंदिर के प्रवेश द्वार पर संभवतः मंगल के रूप में उत्कीर्ण किया गया था।

बड़ा मलहरा जिला छतरपुर म.प्र. के रोड पर स्थित जैन मंदिर में एक धातु यंत्र विराजमान है। यंत्र के ऊपरी भाग में श्री पार्श्वनाथाय नमः लिखा है। यंत्र के नीचे णमोकार मंत्र के पांचों पद अंकित हैं। सोलह खण्डों में विभाजित इस यंत्र में अंक संख्या ऐसे क्रम

में संयोजित की गई है कि हर प्रकार से चार खण्डों की योग संख्या चौंतीस ही आती है। अंक वही हैं जिनका व्यवहार खजुराहो यंत्र लेख में हुआ है। यंत्र निम्न प्रकार है –

९	१६	२	७
६	३	१३	१२
१५	१०	८	१
४	५	११	१४

इस यंत्र में खजुराहों यंत्र की अंक स्थिति जो ऊपर से नीचे की ओर है उसे दायें से बायीं ओर खण्डों के अनुसार लिखा गया है। पार्श्वनाथ के नामोल्लेख से यह संकट निवारक ज्ञात होता है।

श्री पूर्णचंद नाहर ने जैन लेख संग्रह भाग २, ले.सं. १४४५ में आगरा से प्राप्त संवत् १८१८ का एक चौंतीसा यंत्र दिया है। इसमें भी अंकों की स्थिति परिवर्तित की गई है। अंक समान हैं। यंत्र निम्न प्रकार है–

१५	४	५	१०
६	९	१६	३
१२	७	२	१३
१	१४	११	८

एक महालक्ष्मी चौंतीसा यंत्र भी देखने में आया है। इसके सोलह खण्ड हैं तथा उन खण्डों में खजुराहों यंत्र में अंकित अंक संख्या ही अंकित है। अंकों के स्थान परिवर्तित हैं किन्तु वे इस प्रकार संयोजित है कि हर प्रकार से चार खण्डों की अंक संख्या का योग चौंतीस ही आता है। यंत्र निम्न प्रकार हैं–

१	१४	४	१५
८	११	५	१०
१३	२	१६	३
१२	७	९	६

जैन दर्शन में "कर्माष्टक विनिर्मुक्तं मोक्षलक्ष्मी निकेतनं कहकर मोक्षलक्ष्मी की प्राप्ति अष्टकर्म रहित अवस्था में बताई गई हैं। इस प्रकार कर्म विमुक्त होने पर निज गुणों का प्रकट होना आभ्यन्तर लक्ष्मी है। लौकिक सुख बाह्य लक्ष्मी की देन है। वह सुख–समृद्धि

तथा शांति की अधिष्ठात्री देवी है। वह कमलासीन रहती है। लाल वस्त्र धारण करती है। गजेन्द्र अभिषेक करते हैं। हाथ में धान की बालियाँ होती हैं। इसकी पृष्ठभूमि में चौंतीसा यंत्र रहता है। यह चतुर्भुजी कही है।

इसके चार हाथ चतुर्विध संघ को चतुर्विध दान के प्रतीक हैं। कमलासन जल में रहकर जल से उसकी भिन्नता/अलिप्पता इस तथ्य की सूचक है कि राग–द्वेष–मोह–रूपी कीचड़ से उसकी प्राप्ति नहीं होती। कमल–ज्ञान रूप सूर्य के प्रकाश में विकसित होता है। अतः कहा जा सकता है कि ज्ञान से लक्ष्मी का विस्तार होता है। लाल रंग कर्मठता का प्रतीक है। वह कर्मठ लोगों को ही प्राप्त होती है। हाथ में शस्य–धान की बालियाँ उत्पादकता और समृद्धि की प्रतीक हैं।

संदर्भ

1. *डॉ. नेमिचन्द्र जैन, मंगल मंत्र णमोकार एक अनुचिन्तन, भारतीय, ज्ञानपीठ प्रकाशन, ई. 1984, पृष्ठ 75।*
2. *अपराजित मन्त्रोऽय सर्वविघ्न विनाशन।*
   मंगलेषु च सर्वेषु प्रथमं मंगलं मतः।।
   वहीं, पृ0 66।
3. *कृत्वा पाप सहस्राणि हत्वा जन्तु शतान्यपि।*
   अमुं मंत्रं समाराध्य तिर्यञ्चोऽपि दिवं गताः।।
   (आचार्य शुभचन्द्र, ज्ञानार्णव) वहीं पृ0 68
4. *श्री नीरज जैन, खजुराहो के जैन मंदिर . ई0 1967 प्रकाशन, पृ 44।*
5. *अनेकान्त . बाबू छोटे लाल स्मृति अंक : पृ0 57।*

अभिलेख - ९९

अहार मानस्तम्भ लेख, संवत् १०११, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् १०११ वैसाष (वैशाख) वदि १३।[1]

अभिलेख परिचय

अहार अतिशय क्षेत्र के बाहुबली–मंदिर के सामने उत्तर की ओर लाल पाषाण के एक ही शिलाखण्ड से निर्मित जिस मानस्तम्भ पर अंकित हैं, वह मानस्तम्भ जिस चबूतरे पर खड़ा है, उस चबूतरे का प्रथम भाग भूमि से ४४ इंच ऊँचा और ११७ इंच लम्बा और इतना ही चौड़ा है। इस चबूतरे के ऊपर निर्मित दूसरे चबूतरे की ऊँचाई १४ इंच, तथा लम्बाई–चौड़ाई ६०–६४ इंच है। दूसरे चबूतरे पर निर्मित तीसरे चबूतरे की ऊँचाई साढ़े

११ इंच तथा लम्बाई चौड़ाई ६६–६६ इंच है। इसी प्रकार तीसरे चबूतरे पर निर्मित चौथे चबूतरे की ऊँचाई ८ इंच तथा लम्बाई ४५ इंच और चौड़ाई भी ४५ इंच है। इस प्रकार मानस्तम्भ की चौकी की ऊँचाई ७८ इंच है।

मानस्तम्भ इसी चौकी पर खड़ा है। नीचे से ऊपर की ओर मान स्तम्भ की ऊँचाई ३७ इंच तक का भाग चौकोर है। इस भाग की मुटाई ४७ इंच है। इसी भाग में चारों ओर देवियों की प्रतिमाएँ निर्मित हैं।

पूर्व की ओर मानस्तम्भ में खड्गासन मुद्रा में मुकुटबद्ध देवी १४ इंच चौड़ाई में अंकित है। इसके गले में हार, हाथों में कांगन, कटि प्रदेश में मेखला और पैरों में भी आभूषण हैं। यह देवी चतुर्भुजी है। दायें ऊपरी हाथ में समवतः गदा तथा नीचे के हाथ में कोई अपरिचित वस्तु लिए हैं। बायें ऊपरी हाथ में चक्र होने से यह देवी चक्रेश्वरी ज्ञात होती है। इसका मुख और वक्षस्थल छिल गया है।

दक्षिण की ओर भी १४ इंच ऊँची खड्गासन मुद्रा में एक चतुर्भुजी देवी है। इसके सिर पर सात सर्प फण दर्शाये गये है। मुकुट बद्ध इस देवी के कानों में कुण्डल, गले में हार, हाथों में कंगन, कमर में करधन और पैरों में पायल आभूषण हैं। इसके निचले बायें हाथ में कमंडल और ऊपरी हाथ में तथा दायें निचले हाथ में कोई अपरिचित वस्तुएँ हैं। दायाँ ऊपरी हाथ टूटा हुआ हैं। सर्प फणावलि के होने के यह देवी पद्मावती ज्ञात होती है। उक्त एक पंक्ति का लेख इसी देवी के निचले भाग में उत्कीर्ण हैं।

पश्चिम की खडगासन मुद्रा में निर्मित चतुर्भुजी देवी की ऊँचाई १५ इंच है। इसका मुख छिल गया है। ऊपरी दोनों हाथ खण्डित हैं। बायें निचले हाथ में कमंडल और दायें निचले हाथ में पुस्तकाकृति जैसी है। सभी आभूषण पूर्व कथित देवी के समान हैं। यह सिद्धायिका देवी ज्ञात होती हैं।

उत्तर की ओर १४ इंच ऊँची खड्गासन मुद्रा में निर्मित इस देवी के बायें हाथ में एक बालक है। दायाँ हाथ टूटा हुआ है। यह अम्बिका देवी ज्ञात होती है। आभूषण पूर्व देवियों के समान हैं।

इन देवियों के ऊपरी मानस्तम्भ का भाग अष्टकोणी है। इसकी मुटाई ३८ इंच तथा ऊँचाई २७ इंच हैं। इस भाग के ऊपर स्तम्भ चौकोर हो गया है। पूर्व की ओर इस भाग में एक पंक्ति का एक अपठनीय लेख है। इसी भाग में उत्तर की ओर ३ इंच की कायोत्सर्ग मुद्रा में एक अर्हन्त प्रतिमा है।

इसके ऊपर सात इंच की ऊँचाई तक मानस्तम्भ गोलाई लिए है। गुलाई ३७ इंच हैं। इसके ऊपर चौकोर चौकी है जिस में चतुर्दिक पद्मासन रूप देशी लाल ललुए पाषाण से निर्मित अर्हन्त प्रतिमाएँ हैं। पूर्व दिशा में मूलतः आदिनाथ प्रतिमा रही हैं। उसके खण्डित हो जाने पर १० इंच ऊँचाई में निर्मित सफेद संगमरमर की नयी आदिनाथ प्रतिमा स्थापित की गयी है। इसके नीचे एक पंक्ति का निम्न लेख हैं–

सं. (संवत्) १८२६ वैसा (शा) ख. सुदि ६ उदिदंत भट्टारक सूर्य कीर्ति। इस प्रतिमा से दक्षिण की ओर पार्श्वनाथ, पश्चिम की ओर महावीर, और उत्तर की ओर नेमिनाथ प्रतिमा

ज्ञात होती है। मान स्तम्भ की कुल ऊँचाई १२.६ फुट ज्ञात होती है। प्रतिष्ठा संवत् १०११ और प्राप्ति स्थान ककरवाहा है। वहाँ से यह आहार लाया गया है।

संदर्भ

1. डॉ कस्तूरचन्द्र जैन सुमन सम्पादित, श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र अहार (टीकमगढ़) म.प्र. प्रकाशन ई. 1995, अहार क्षेत्र के अभिलेख : ले.सं. 9/239 पृष्ठ 92 ।

अभिलेख - १२

अहार मानस्तम्भलेख, संवत् १०११, भाषा संस्कृत लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् १०११ वैसाष (वैशाख) वदि १३।

अभिलेख परिचय

इसकी रचना अभिलेख ११ के मानस्तम्भ के समान है। उक्त लेख दक्षिण की ओर निर्मित देवी प्रतिमा के नीचे उत्कीर्ण है। पूर्व की ओर भी लेख है जो सफेदी के कारण अपठनीय हो गया है। पूर्व दिशावर्ती प्रतिमा खण्डित हो जाने से जो संभवतः पूर्व मानस्तम्भ के समान आदिनाथ प्रतिमा रही है, उसके स्थान पर नयी सफेद संगमरमर से निर्मित पद्मासन मुद्रा में मुनिसुव्रतनाथ की प्रतिमा स्थापित की गई है। इसकी आसन पर चिन्ह स्वरूप कछुआ उत्कीर्ण है। अन्य अर्हन्त प्रतिमाएँ उत्तरी मानस्तम्भ के समान है।

प्रस्तुत लेख दक्षिणी मानस्तम्भ पर उत्कीर्ण है। यह मानस्तम्भ भी मूलतः ककरवाहा ग्राम से अहार लाया गया था। इसकी कुल ऊँचाई उत्तरी मानस्तम्भ की उपेक्षा कम है।[1] दोनों मानस्तम्भों की स्थापना यहाँ सवंत् १६५३ में की गयी थी।[2]

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख : ले.सं 10/240 पृष्ठ 94 ।

2. पं. बलभद्र जैन, भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ भाग 3, पृष्ठ 125।

अभिलेख - 13

सिहोंनिया शान्तिनाथ प्रतिमालेख, संवत् १०१३, भाषा—संस्कृत, लिपि—नगरी

मूलपाठ

संवत् १०१३ माधवसुतेन महिन्द्रचन्द्रकेनकभा (खो) दिता।[1]

पाठ—टिप्पणी

पं. विजयमूर्ति ने 'खोदिता' पद को 'प्रतिष्ठिता' का अपभ्रंश बताया है।[2] दुर्जनपुर से प्राप्त गुप्तकालीन एक प्रतिमा—लेख में 'कारिता' पद इस अर्थ में व्यहृत हुआ है।[3] अतः प्रस्तुत लेख में 'कारिता' पद रहा प्रतीत होता है।

अभिलेखों में 'कारिता' या 'खोदिता' पद प्रतिमा—निर्माण के अर्थ में आये हैं तथा इन पदों के पूर्व प्रतिमाओं के नाम बताये गये हैं। दुर्जनपुर प्रतिमा लेख में 'कारिता' पद के पूर्व प्रतिमा का नाम चन्द्रप्रम बताया गया है।[4] अतः प्रस्तुत लेख में भी 'खोदिता' पद के पहले प्रतिमा का नाम उत्कीर्ण रहा प्रतीत होता है।

इस लेख में खोदिता पद के पूर्व 'कभा' में अनुमानतः 'प्र' वर्ण को 'क' पढ़ लिया गया है, तथा 'केन' पद लेख उत्कीर्ण करने वाले की भूल से चन्द्र के पूर्व महिन्द्र के साथ संयोजित होना चाहिए था जो नहीं हो सका। इस भूल सुधार से प्रस्तुत प्रतिमा—लेख में महिन्द्र के साथ संयोजित 'चन्द्र' पद चन्द्रप्रम तीर्थंकर का प्रतीक ज्ञात होता है।

भावार्थ

संवत् १०१३ में माधव के पुत्र महेन्द्र ने चन्द्रप्रम तीर्थंकर की प्रतिमा प्रतिष्ठित कराई।

प्रतिमा—परिचय

प्रस्तुत लेख जिस प्रतिमा की आसन पर उत्कीर्ण रहा है, वह प्रतिमा सम्प्रति यहाँ के मंदिर में नहीं है। जो मुख्य तीन प्रतिमाएँ हैं, उनकी आसनें भूगर्भ में होने से यदि यह लेख उनमें किस प्रतिमा की आसन पर उत्कीर्ण है, तो यह नहीं कहा जा सकता कि यह लेख किस तीर्थंकर प्रतिमा की आसन पर है।

व्याख्या

माधव — यह यहाँ का आरम्भिक शासक ज्ञात होता है। उसके पुत्र का नाम महेन्द्र था।

महेन्द्र– यह सिहोनियाँ के महाराज माधव का पुत्र था। डॉ. ज्योतिप्रसाद ने बताया है कि यह अर्ध स्वतन्त्र राजा था। इसने ६५६ ईसवी में ग्वालियर के निकट सिहोनियाँ में विपुल द्रव्य व्यय करके एक जैन मंदिर बनवाया था।[५] भूगर्भ से प्राप्त प्रतिमाओं से यह स्पष्ट है कि यहाँ का मंदिर ध्वस्त हो गया और प्रतिमाएँ कालांतर में मिट्टी के भीतर लुप्त हो गई थीं।

अभिलेख का महत्व

प्रस्तुत लेख एक ही पंक्ति का होने पर भी बहुत महत्वपूर्ण है। राजा माधव और उसके पुत्र महेन्द्र का नाम इसी लेख से ज्ञात हुआ है।

प्राप्तिस्थल–परिचय

सिहोंनिया, ग्वालियर से २४ मील उत्तर की ओर तथा मुरैना से ३० किलोमीटर और कोतवाल से १४ मील उत्तर पूर्व में अहसिन (आसन) नदी के उत्तरी तट पर स्थित है। यह नगर प्राचीन काल में समृद्ध था। कहा जाता है कि यह बारह कोस विस्तृत मैदान में बसा था। इसके चार फाटक थे। यहाँ से एक कोस दूर बिलौनी ग्राम में खम्भे, पश्चिम में एक कोस दूर पौरीपुरा ग्राम में एक द्वार अंश, पूर्व में दो कोस दूर पुरावस ग्राम में तथा दक्षिण में बाटा ग्राम में दरवाजों के अवशेष इसके प्रतीक हैं।[६]

डा. नेमिचन्द्र शास्त्री ने अपने एक लेख में बताया है कि यहाँ प्राचीन काल में विभिन्न सम्प्रदायों के मंदिरों में ग्यारह जैन मंदिर थे, जिनका निर्माण जैसवाल जैनों ने कराया था।[७] मुरैना के जैसवाल जैन श्रावकों की समृद्धि को देखकर लगता है कि वे मूलतः सिहोनिया या उसके निकट बसे ग्रामों के निवासी रहे होंगे।

कनिंघम को विक्रम संवत् १०१३, १०३४ और १४६७ के ये तीन प्रतिमा–लेख प्राप्त हुए थे। उन्हें यहाँ पांचवीं–छठी शताब्दी का एक लेख ऐसा भी मिला था जो चौदह पंक्ति में उत्कीर्ण था। यह शिलाखण्ड उन्होंने लंदन भेज दिया बताया है।[८] इस उल्लेख से नगर की धार्मिक–समृद्धि का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है।

नगर के नामकरण का इतिहास

जनश्रुति है कि ग्वालियर के संस्थापक सूरजसेन के पूर्वजों ने आज से लगभग दो हजार वर्ष पूर्व इस नगर को बसाया था। कहा जाता है कि राजा सूरजसेन को कुष्ट रोग हो गया था जो यहाँ अम्बिका देवी के पार्श्व में स्थित तालाब में स्नान करने से नष्ट हुआ था। इस घटना से वे बहुत प्रभावित हुए थे। उन्होंने अपना नाम शुद्धनपाल तथा नगर का नाम सुद्धनपुर या सुधियानपुर रखा था[९] जो कालान्तर में सुहानिया या 'सिहोनिया' हो गया प्रतीत होता है।

इस नगर पर ईसवी ११६५ से ११७५ के मध्य कन्नौज के राजा अजयचन्द्र द्वारा आक्रमण किया गया था। इस समय नगर का शासन एक राव ठाकुर के आधीन था, जो

ग्वालियर के अन्तर्गत था। युद्ध में राव ठाकुर पराजित हुआ। कन्नौज के शासक भी अधिक दिन तक न रह सके। फलस्वरूप नगर का ह्रास होने लगा।[10]

संदर्भ

1. पूर्ण चन्द नाहर, जैन शिलालेख संग्रह भाग 2, लेख संख्या 1430।
2 जैनशिलालेख संग्रह, भाग 2, ले. सं. 148 पृष्ठ 191।
3 प्रस्तुत कृति का प्रथम लेख।
4 वही, प्रथम पंक्ति ।
5. डॉ. ज्योति प्रसाद, भारतीय इतिहास, एक दृष्टि : भारतीय ज्ञानपीठ, 1961 ईसवी, पृष्ठ 175–178।
6 डॉ नेमिचन्द्र शास्त्री, जैनसिद्धान्त भास्कर, भाग 15, किरण–1।
7. जैन सिद्धान्त भास्कर, भाग 15, किरण–प्रथम।
8 आर्किलॉजिकल सर्वे रिपोर्ट, जिल्द 2, ईसवी 1864–65, पृष्ठ 399–409
9. वही,
10. जैन सिद्धान्त भास्कर, भाग 15, किरण–प्रथम।

अभिलेख - ९४

छतरपुर पार्श्वनाथ प्रतिमा–लेख संवत् १०२५

मूलपाठ

सं. (संवत्) १०२५

अभिलेख–परिचय

प्रस्तुत लेख में केवल संवत् ही पठनीय है। यह लेख धातु से निर्मित दो इंच ऊँची और सवा इंच चौड़ी पार्श्वनाथ तीर्थंकर की पद्मासन मुद्रा में अंकित प्रतिमा की आसन पर उत्कीर्ण है। प्रतिमा वर्तमान में छतरपुर के दिगम्बर जैन चौधरी मंदिर में विराजमान है।[1]

अभिलेख का महत्व

धातु–प्रतिमाओं की प्राचीनता की दृष्टि से लेख महत्वपूर्ण है।

संदर्भ

1. पं. कमलकुमार जैन, जिन मूर्ति–प्रशस्ति लेख, श्री दिगम्बर जैन बड़ा मंदिर छतरपुर, प्रकाशन ईसवी 1982, लेख संख्या 168, पृष्ठ 48।

अभिलेख - १५

सिहोंनिया अर्हत् प्रतिमालेख, संवत् १०३४, भाषा–संस्कृत, लिपि–नागरी

मूलपाठ

संवत् १०३४ श्री वजदाम महाराजाधिराज वइसाख वदि पाचमी.....[1]

पाठ–टिप्पणी

पं. विजयमूर्ति ने जनरल एसिपाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल जिल्द ३१ का संदर्भ देते हुए 'संवत' को 'सम्वतः' तथा 'पाचमी' को 'पाचमि' बताया है।[2] लेख का अंतिम अंश अपूर्ण है। इस अंश में प्रतिमा का नाम तथा 'कारिता' पद उत्कीर्ण रहा प्रतीत होता है।

भावार्थ

संवत् १०३४ के वैशाख वदि पंचमी (तिथि) में महाराजाधिराज श्री वजदाम ने (प्रतिष्ठा कराई)।

अभिलेख–परिचय

यह अभिलेख कनिंघम को एक जैन प्रतिमा पर अंकित मिला था। पं. परमानन्द शास्त्री ने इसे सिहोंनिया के शान्तिनाथ तीर्थंकर की प्रतिमा के पृष्ठ भाग में उत्कीर्ण बताया है।[3] वर्तमान में प्रतिमा के पीछे एक दीवाल खड़ी कर दी गई है। यदि लेख होगा तो वह दीवाल में दब गया है। पं. बलभद्र जैन ने प्रतिमा के दायें कंधे के निकट संवत् १४६ पढ़ा है।[4]

प्रतिमा–परिचय

मंदिर में तीन मनोज्ञ प्रतिमाएँ हैं। इनमें शान्तिनाथ तीर्थंकर की खड्गासनस्थ मूलनायक प्रतिमा है। इस प्रतिमा की केश–राशि, नासाग्र–दृष्टि, मन्दस्मितमुख, कपोल, चिबुक, कर्ण और नाभि का अंकन मूर्तिकार के शिल्प ज्ञान और सुंदर हस्त–कौशल का परिचायक है।

प्रतिमा के हाथों के नीचे चँवरधारी सौधर्म और ईशान इन्द्रों को खड्गासन मुद्रा में अंकित बताया गया है। पीछे भामण्डल भी अंकित है।

यह प्रतिमा कायोत्सर्ग मुद्रा में हल्के कत्थई वर्ण के पत्थर से निर्मित है। चरण से नीचे का अंश भूगर्भ में है। इसकी अवगाहना लगभग १६ फुट ५ इंच बताई गई है।

इस प्रतिमा की दाईं ओर सत्रहवें तीर्थंकर 'कुन्थुनाथ की प्रतिमा है। इनकी आसन पर मध्य में अर्ध चन्द्राकृति के बीच चिन्ह स्वरूप बकरे की आकृति अंकित है। चिन्ह के नीचे धर्मचक्र तथा धर्मचक्र के दोनों ओर आमने सामने मुख किये एक–एक बैठा हुआ सिंह अंकित है। आसन पर कोई लेख उत्कीर्ण नहीं है।

मूल नायक शान्तिनाथ–प्रतिमा की बाईं ओर अठारहवें तीर्थंकर अरहनाथ की प्रतिमा है। इस प्रतिमा के हाथों के नीचे चँवरवाही इन्द्र, आसन के मध्य में एक अर्ध चन्द्राकृति के बीच मच्छ और इसके नीचे आमने सामने एक–एक सिंह अंकित है। इस प्रतिमा की बाईं ओर पद्मासन मुद्रा में छोटी–छोटी कुछ प्रतिमाओं का अंकन भी किया गया है।

शान्तिनाथ–प्रतिमा के समान कुन्थुनाथ और अरहनाथ की प्रतिमाएँ भी कायोत्सर्ग मुद्रा में कत्थई रंग के बलुए पाषाण से निर्मित हैं। गुच्छकों के रूप में दर्शाई गई केश राशि, उन्नत नासिका, नासाग्र दृष्टि मन्द स्मित मुख, भरे हुए कपोल, ओंठ, चिबुक और कर्ण दोनों प्रतिमाओं में विन्यास की दृष्टि से समान हैं। अभिलेख तीनों प्रतिमाओं की आसनों पर नहीं है। इन दोनों प्रतिमाओं की अवगाहना सवा नौ फुट बताई गयी है।

इन प्रतिमाओं से संबंधित शान्ति, कुन्थु और अरह तीनों कामदेव, चक्रवर्ती और हस्तिनापुर के निवासी तथा तीर्थंकर थे। इन तीनों प्रतिमाओं में शांतिनाथ प्रतिमा अन्य प्रतिमाओं की अपेक्षा अधिक ऊँची है। संभवत यही कारण है कि जो कि यह मंदिर 'शान्तिनाथ मंदिर' के नाम से विश्रुत हुआ। प्रस्तुत मंदिर में विराजमान ये तीनों प्रतिमाएँ एक टीले को खोदकर भूगर्भ से निकाली गई हैं।

व्याख्या

वज्रदाम– प्रस्तुत लेख में इन्हें 'महाराजधिराज' कहा गया है। 'महाराजाधिराज' इस पद से यह स्पष्ट है कि ये अन्य नरेशों को पराजित कर स्वतंत्र हो गये थे। यहाँ प्राप्त संवत् १०१३ के प्रतिमा–लेख से ज्ञात होता है कि इन्होंने सिहोंनिया के शासक माधव के पुत्र महेन्द्र से सिहोंनिया का शासन प्राप्त किया था तथा यहाँ संवत् १०३४ में एक जैन प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई थी।

कच्छपघात राजवंश की ग्वालियर शाखा के संवत् ११५० के प्रशस्ति लेख में भी इस नाम के एक नृप का नाम आया है।[५] इतिहासकार गांगुली ने सिहोंनिया के इस प्रतिमा लेख और ग्वालियर के संवत् ११५० के प्रशस्ति–लेख में उल्लिखित वज्रदाम नामक दोनों शासकों को एक ही माना है तथा इसका शासनकाल ९७७ ईस्वी से ९९९ ईस्वी तक की अवधि का बताया है।[६] डॉ. रे. ने इसका शासन काल ९७५ ईस्वी से ९९५ ईसवी माना है।[७]

ग्वालियर के संवत् ११५० के इस प्रशस्ति लेख से ज्ञात होता है कि इसने कन्नौज राजा को पराजित कर ग्वालियर पर अधिकार किया था। संभवतः ग्वालियर पर अधिकार हो जाने के पश्चात इसने सिहोंनिया पर अधिकार किया होगा।

अन्य प्राचीन कलावशेष

सिहोंनिया के जैन मंदिर में खण्डित और अखण्डित कुल बाईस प्रतिमाएँ हैं। इनमें एक प्रतिमा तीर्थंकर कुन्थुनाथ के पार्श्व में खड्गासन मुद्रा में स्थित है। इसके शीर्ष भाग पर जटाजूट, मुख पर दाढ़ी, गले में हार, सिर के पीछे प्रभावर्तुल, कटि में मेखला, कलाई में दस्तबन्द, बाहों में भुजबन्ध और दायाँ हाथ जाँघ पर रखा हुआ अंकित है। चरणों के पास खड्गासन मुद्रा में इसके सेवकों की प्रतिमाएँ भी अंकित की गई हैं।

तीर्थंकर प्रतिमाओं में यहाँ तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ और तीर्थंकर महावीर की प्रतिमाएँ उल्लेखनीय हैं। सुपार्श्वनाथ की प्रतिमा के सिर पर पाँच सर्पफण अंकित हैं। तीर्थंकर महावीर की प्रतिमा के शीर्ष भाग पर दुन्दुभिवादक है प्रतिमा के दोनों पार्श्व में सूंड उठाये एक–एक हाथी अंकित है। बाई ओर का हाथी खण्डित हो गया है। इन हाथियों के नीचे कायोत्सर्ग मुद्रा में दोनों ओर एक–एक तीर्थंकर प्रतिमा उत्कीर्ण है। इनके नीचे चँवरवाही इन्द्र चँवर ढोरते हुए अंकित हैं। प्रतिमा के पीछे सुंदर प्रभामण्डल है।

आसन पर मध्य में धर्मचक्र तथा दोनों ओर एक–एक सिंहाकृति अंकित है। नीचे दाईं ओर उपासक तथा बाईं ओर उपासिका की प्रतिमाएँ भी निर्मित हैं। चिन्ह स्वरूप सिंह अंकित है। यह प्रतिमा 'सिद्ध बाबा' के नाम पर घी, गुण, दूध चढ़ाकर पूजी जाती थी।

अन्य तीर्थंकर प्रतिमाओं में यहाँ एक तीर्थंकर चन्द्रप्रभ और एक तीर्थंकर पार्श्वनाथ की प्रतिमा भी है। सभी प्रतिमाएँ भू–गर्भ से प्राप्त बताई जाती हैं।

भीमलाट

इस ग्राम के निकट एक टीले पर प्राचीन पाषाण–स्तम्भ है, जिसे आजकल 'भीमलाट' कहा जाता है। यह स्तम्भ जैनों का मानस्तम्भ ज्ञात होता है। इस पर यद्यपि आज कोई मूर्ति उत्कीर्ण नहीं है, किन्तु यहाँ उपलब्ध प्रतिमाओं से यह स्पष्ट है कि यहाँ कोई विशाल जैन मंदिर था। संभव है यह किसी जैन मंदिर में स्थापित किया गया हो। यह भी संभावना है कि इस स्तम्भ के शीर्ष भाग पर प्रतिमाएँ विराजमान की गई होगी जो कालान्तर में स्तम्भ के शीर्षभाग से अलग हो गई और यह जिन–प्रतिमा विहीन हो गया। दमोह जिले के कुंअरपुर ग्राम में ऐसे आज भी स्तम्भ हैं जिनमें एक पर चारों दिशाओं में प्रतिमाओं का अंकन भी उपलब्ध है।[८]

सिहोंनिया ग्राम से दो मील दूर उत्तर–पश्चिम में 'ककनमठ' नाम से प्रसिद्ध एक प्राचीन मंदिर है। इसके निर्माण में बड़े–बड़े शिलाखण्ड व्यवहृत हुए है। यह मंदिर संभवतः कीर्तिराज ने अपनी पत्नी 'काकनवती' की स्मृति में बनवाया था। यह अब चारों ओर से ध्वस्त होने लगा है। इसका निर्माण एक चौकोर चबूतरे पर किया गया है। मंदिर में मूर्ति नहीं है। मण्डल के ऊपर शिखर है।

ग्वालियर के संवत् ११५० के सास–बहू मंदिर प्रशस्ति लेख में राजा कीर्तिराज के द्वारा 'सिंहपानीयनगर' में शंकर का मंदिर बनवाये जाने का उल्लेख है।[९] इस लेख के परिप्रेक्ष्य में लगता है कि 'सिंहपानीयनगर' यह सिंहोनिया है तथा सिंहोनिया का

'ककनमठ' कीर्तिराज द्वारा बनवाया गया 'शिवमंदिर' है। मूलतः यह मंदिर 'काकनमठ' के नाम से प्रसिद्ध रहा प्रतीत होता है। यहाँ अम्बिका देवी का मंदिर तथा हनुमान की मूर्ति भी दृष्टव्य हैं।

सिहोंनिया अपर नाम सिंहपानीयनगर

ग्वालियर के संवत् ११५० के प्रशस्ति लेख में उल्लिखित 'सिंहपानीयनगर' और 'सिहोंनिया' एक ही नगर के दो नाम ज्ञात होते हैं। इस प्रशस्तिलेख में उल्लिखित राजा कीर्तिराज और उसके पूर्वज वज्रदाम, दोनों राजाओं ने इस नगर में पुनीत कार्य किये थे। वज्रदाम ने यहाँ जैन प्रतिमा स्थापित कराई थी और कीर्तिराज ने 'ककन मठ' नाम से प्रसिद्ध शिव मंदिर बनवाया था। अतः इन अभिलेखों के परिप्रेक्ष्य में कहा जा सकता है कि ये एक ही नगर के दोनों नाम हैं। इनमें 'सिंहपानीयनगर' नाम प्राचीन है।

जनश्रुति के अनुसार यह नगर राजा सूरजसेन ने बसाया था। कहा जाता है कि उसका यहाँ कुष्ट रोग दूर हो गया था। अतः उसने इस घटना से प्रभावित होकर अपना नाम शोधनपालन और नगर का नाम सुद्धनपुर या सुविधयानपुर रखा था। कालान्तर में किसी घटना विशेष के कारण पुनः नाम में परिवर्तन हुआ और इसे 'सिंहपानीयनगर' कहा जाने लगा।

इस नाम के संबंध में हमारा अनुमान है कि नगर के इस नाम में अम्बिका देवी की कोई अद्भुत घटना समाहित है। इस नाम में पूर्व पद 'सिंह' है जो अम्बिका का वाहन होने से अम्बिका देवी का प्रतीक है। तथा नाम का उत्तर पद 'पानीय' है। इससे प्रतीत होता है कि कभी यहाँ पानी का संकट रहा है, जो अम्बिका देवी की आराधना से दूर हुआ होगा। अतः देवी की स्मृति में यहाँ 'अम्बिका देवी' का मंदिर बनवाया गया तथा नगर का नाम 'सिंहपानीयनगर' रखा गया।

दूसरी संभावना यह है कि लेख पढ़ने में भ्रांति हुई है। 'सिंहपानीय' पद में 'प' वर्ण के स्थान में 'य' वर्ण रहा होगा जिसे 'प' समझा गया है। यदि 'प' वर्ण को 'य' वर्ण मान लिया जाय तो नगर का नाम सिहयानीयनगर होगा।

संदर्भ

1. *श्री पूर्णचन्द नाहर, जैनशिलालेख संग्रह भाग 2, ले.सं. 1431। दी जरनल एसियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल, भाग 30, पृष्ठ 383।*
2. *जैनशिलालेख संग्रह–भाग 2, ले.सं. 153, पृ0 186 ।*
3. *अनेकान्त, वर्ष 19, अंक 1–2 पृष्ठ 64।*
4. *मध्य प्रदेश के दिगम्बर जैन तीर्थ : भाग 3, पृ0 31।*
5. *तस्माद्वज्रधरोपमः क्षितिपति श्री वज्रदामाभवद्*
   दुर्वारोर्ज्जित बाहुदण्ड विजिते गोपाद्रिदुर्गे युधा।
   निर्व्याज परिभूयवैरि नगराधीशप्रतापोदय
   यद्वीर व्रतसूचकः समभवत् प्रोद्घोषणाकिंकमः ।।8।।
   –पूर्णचन्द नाहर, जैनशिलालेख संग्रह, भाग 2, ले.सं. 1426।
6. *श्री डी.सी. गांगुली, हिस्ट्री ऑफ दि परमार डायनस्टी, ढाका विश्वविद्यालय 1933 ईसवी, प्रकाशन पृष्ठ 106*

7. डॉ. एच.सी.रे. डायनस्टिक हिस्ट्री ऑफ नार्दर्न इण्डिया, भाग 2, पृष्ठ 835।
8. जैन सिद्धान्त भास्कर, भाग 38 किरण–1।
9. अद्भुतः सिंहपानीय नगरे येन कारितः
कीर्तिस्तम्भ इवाभाति प्रासादः पार्वतीपतेः ।।11।।
पूर्णचन्द्र नाहर, जैनशिलालेख संग्रह भाग 2, ले.सं. 1426।

अभिलेख - १६

सोनागिरि मंदिर–भित्ति–अभिलेख, संवत् १०३५, भाषा हिन्दी लिपि–नागरी

मूलपाठ–प्रथम भाग

१. ।।श्री।। दोहरा – (दोहा)।। मंदिर सह रा–
२. जत भए चंद्रनाथ जिन ई –
३. स (।) पौष सुदी पूनिम दिना ती –
४. न सतक (शतक) पैंतीस ।।१।। मू –
५. ल संघ अर गण कहो वलात् –
६. कार समुझाइ (।) श्रवणसेन अ –
७. र दूसरे कनकसेन दुइ भाई
८. ।।२।। बीजक अच्छिर बाचिकै ज
९. (न ज) सदुए रचाइ (।) और लिखो तौ व –
१०. हुत सौ सो नहि परौ लषाई ।।३।।
११. द्वादस ससक (शतक) वरुत्तरा पुनि नि–
१२. मपिन सार (।) पार्श्वनाथ चरण–
१३. नितरै तासौ विदी विचार ।।४।।

मूलपाठ–द्वितीय भाग

१. श्रीमण चिरु
२. चंद्रनाथोय नम
३. वंस (श) बुंदेल......
४. पारीछत महाराज
५. तिया पति वाढैस दारि
६. फलफलै (फूले फलै) मन किम (,)

७. मनीराम जी सँगि (।)
८. पितु की आज्ञा पाइमं
६. चंपाराम – (ब) सेरु करि या–
१०. त्रा सुषु (खु)दाइकर ।।२।। संवत
११. अष्टादस कहे (,) तेरा –
१२. सी की साल (१) लाला
१३. लक्षिमीचंद नै पै–
१४. री श्री ज्रिनमाल ।।३।।
१५. प्रथम कियौ प्रारंभ
१६. उनि (,) मंदिर जीर्णो –
१७. द्वार (।) श्रावक हिय–
१८. हरषित भए सब मि –
१६. लि कारी समार ।।४।।
२०. विजयकीर्ति जिन सूरि के (,) सि (शि)
२१. ष्य करै मतु सेषु (।) परम सि (शि)ष्य –
२२. ....फाल्गुन सुदि १३ (।)

मूलपाठ टिप्पणी

१ अनुनासिक 'न' और 'म' को अनुस्वार के रूप में बदला गया है। जैसे–मंदिर। चन्द्रनाथ–चदनाथ।
चम्पाराम–चंपाराम। प्रारम्भ–प्रारंभ। सम्वत–संवत्।
२. 'श' के स्थान में 'स' का व्यवहार हुआ है। जैसे– ईस–ईश। सतक–शतक। वंस–वंश। सिष्य–शिष्य।
३. 'ख' 'वर्ण' के लिए 'ष' का प्रयोग हुआ है। जैसे–
लषाइ–लखाइ। सुषुदाइ–सुखुदाइ।
४. 'और' शब्द के अर्थ में 'अर' का प्रयोग भी द्रष्टव्य है।

भाषा

संस्कृत मिश्रित हिन्दी है। द्वादस, सतक, अष्टादस जैसे संस्कृत भाषा के शब्द भी प्रयुक्त हुए हैं। और लिखो तो बहुत सौ सो नहि परो लखाय, चरणनि तरै तासों, पारीछत, साल, पैरी, उनि, हरषित, समार आदि बुंदेली भाषा के लोक व्यवहार में प्रचलित शब्द भी इस लेख में द्रष्टव्य हैं।

अभिलेख–परिचय

यह अभिलेख सोनागिरि के प्रमुख जैन मंदिर में चन्द्रप्रभ–प्रतिमा के सामने प्रवेशद्वार की भित्ति में आमने–सामने दीवाल में खचित शिलाखण्डों पर उत्कीर्ण है। लेख के पास ही लेख के निचले भाग में दो–दो सीढ़ियाँ भी निर्मित हैं।

अभिलेख का प्रथम भाग प्रतिमा की दाईं ओर तेरह पंक्तियों में हिन्दी भाषा और नागरी लिपि में उत्कीर्ण है। इसमें चार दोहे हैं। दोहों में प्रथम और तीसरे चरण में १३ मात्राएँ तथा दूसरे और चौथे में ११ मात्राएँ हैं। विराम सूचक चिन्ह नहीं दिया गया है।

तीसरे दोहे के द्वितीय चरण को विद्वानों ने 'कियो सुनिश्चय राय' पढ़ा है। यह चरण अब अपठनीय है। चतुर्थ दोहे के दूसरे चरण को श्री पं. बलभद्र जैन ने 'पुन्यी जीवन सार' पढ़ा है जो अशुद्ध प्रतीत होता है।[1]

अभिलेख का द्वितीय भाग प्रतिमा की बायीं ओर प्रवेशद्वार की भित्ति में खचित शिलाखण्ड पर हिन्दी भाषा और नागरी लिपि में बाईस पंक्तियों में उत्कीर्ण है। इसमें पाँच पद्य हैं। प्रथम दो पद्यों में प्रथम और तीसरे चरण में ग्यारह तथा दूसरे और चौथे चरण में तेरह मात्राएँ हैं। अंतिम तीन पद्यों में प्रथम और तीसरे चरण में तेरह तथा दूसरे और चौथे चरण में ग्यारह मात्राएँ हैं। अल्पविराम एवं पूर्ण विराम सूचक चिन्ह प्रयुक्त नहीं हुए हैं। आरम्भिक दो पद्यों में सोरठा और शेष में दोहा छन्द ज्ञात होता है। अन्त में मंदिर जीर्णोद्वार के मास और तिथि– 'फाल्गुन सुदि १३' का उल्लेख किया गया है।

भावार्थ

मूलपाठ–प्रथम भाग के प्रथम पद्य में मंदिर में विराजमान चन्दप्रभ जिनेन्द्र की प्रतिमा–प्रतिष्ठा का समय वि. संवत् ३३५ बताया गया है। दूसरे दोहे में मूलसंघ और वलात्कारगण के श्रवणसेन और कनकसेन दो भाइयों का नामोल्लेख है। ये दोनों प्रतिमा–प्रतिष्ठा कराने वाले गृहस्थ ज्ञात होते हैं। तीसरे पद्य में–बीजक के अक्षरों को बांचकर यशवंत लोगों के इन उक्त दो पद्यों की रचना करने तथा बीजक में और भी बहुत कुछ लिखा हुआ था किन्तु वह समझ में नहीं आया यह कथन किया गया है। चौथे पद्य में संवत् १२१२ में हुए पुनर्निर्माण के समय श्री पार्श्वनाथ–प्रतिमा के चरण मूल में ये विचार किये जाने कर उल्लेख है।

मूलपाठ के द्वितीय भाग में पति को बाड़ और द्वार सदृश माननेवाली बुंदेले छत्रसाल पारीछत महाराज की रानी ने फूल फल युक्त होकर मनीराम सहित चन्द्रप्रभ स्वामी की वंदना का मन किया (इच्छा की)। पिता की आज्ञा पाकर चंपाराम और सेरू ने (भी) सुखदाई तीर्थयात्रा की।

संवत् १८८३ फाल्गुन सुदी त्रयोदशी के दिन लाला लक्ष्मीचंद ने यहाँ जिनेन्द्र माल ली और सर्वप्रथम उन्होंने मंदिर–जीर्णोद्धार प्रारंभ किया। सभी श्रावक हर्षित हुए और सभी ने इस कार्य की सम्हाल की (सहयोग दिया)।

आचार्य विजयकीर्ति के परम शिष्य ने संभवतः यह प्रतिष्ठा सम्पन्न कराई। शिष्य का नाम अपठनीय है।

लाला लक्ष्मीचंद–परिचय

मूलपाठ में लाला लक्ष्मीचंद का विशेष परिचय नहीं दिया गया है। पं. बलभद्र जैन ने लाला जी को मथुरा का निवासी बताया है।[2] श्री रूपचंद जैन कटारिया के अनुसार लाला जी मूलतः ग्वालियर के निवासी थे। किसी साधु की सम्पत्ति उन्हें प्राप्त हुई थी। वे ग्वालियर नरेश के कुपित होने पर मथुरा चले आये थे। यहाँ इनके पिता ने द्वारिकाधीश का मंदिर बनवाया था। इस पर जैनों द्वारा उनकी निन्दा की गई जिसके फलस्वरूप सोनागिरि में लाला लक्ष्मीचंद ने चन्द्रप्रभ मंदिर का जीर्णोद्धार कराया था। मूलपाठ में उल्लिखित श्री मनीराम लाला जी के पिताजी थे। मनीराम के पोते का नाम सेठ विजय कुमार जैन बताया गया है।[3]

मनीराम

श्री मनीराम और फतहचन्द ये दो भाई थे। इनके पिता जिनदास जी मूलत–जयपुर राज्य में मालपुरे के निवासी थे। पिता की आर्थिक स्थिति ठीक न होने से ये दोनों भाई जयपुर आ गये थे। वे जिस धर्मशाला में थे वहाँ सेठ राधामोहन पारिख मरणासन्न थे। मनीराम ने मानव कर्तव्य बस उनकी सेवा की। परिख जी स्वस्थ हो गये। वे उन्हें ग्वालियर ले गये। पारिख जी गुजराती वैश्य वल्लभ सम्प्रदायी थे। महारानी वैजावाई ग्वालियर के वे कृपा पात्र थे। उन्हीं दिनों सिंधिया फौज उज्जैन को लूटकर १४ करोड़ रुपये लाई। वैजावाई ने वह रुपया राजकोश में रखना ठीक न समझकर पारिखजी को मथुरा में मंदिर बनवाने को दे दिया। मनीराम और पारिख दोनों मथुरा आये और यहाँ उन्होंने द्वारकाधीश का मंदिर बनवाया।

पारिख जी ने अपना समस्त कारोबार मनीराम को सौंप दिया था। वे निःसंतान थे। मनीराम के यहाँ जब पुत्र हुआ तो वे बहुत प्रसन्न हुए। बालक का नाम लक्ष्मीचंद रखा और गोद ले लिया।

मनीराम मारवाड़ी खण्डेवाल जैन थे। इन्होंने संवत् १८८३ में सोनागिरि की यात्रा की थी। इन्हीं के पुत्र लक्ष्मीचंद ने फूलमाल ली थी तथा वहाँ के मंदिर का जीर्णोद्वार कराया था।

सेठ लक्ष्मीचंद वैष्णव कुल में गोद गये किन्तु जैन धर्म पर उनकी श्रद्धा बनी रही। संघ सहित उन्होंने शिखर जी की यात्रा की थी। राधा किशन और गोविन्द दास इनके वैष्णवी भाई थे। शिखर जी की यात्रा के समय लक्ष्मी चंद की अनुपस्थिति में इन दोनों भाइयों ने वृन्दावन में रंग जी मंदिर बनवाना आरंभ कर दिया था जिसमें ३० लाख रुपये व्यय हो चुकने से लक्ष्मीचंद ने वह काम पूरा कराया।

एक बार जिस पत्थर को १०–१२ आदमी भी नहीं उठा सके उसे कमर में रस्साबांध ये अकेले घसीट ले गये थे। हाथी के बिगड़जाने पर इन्होंने उसका दांत पकड़ लिया था और तब तक वश में किये रहे जब तक कार्य नहीं हो गया। लक्ष्मीचंद के पुत्र का नाम सेठ रघुनाथ दास था। सेठ मनीराम ने चौरासी मथुरा में वृहद मंदिर बनवाया था। उसमें विराजमान अजितनाथ प्रतिमा ग्वालियर में भूगर्भ से निकली थी। मनीराम के स्वप्न

के अनुसार सेठ रघुनाथ ने उक्त प्रतिमा उठाकर गाड़ी में रखी थी और वह ग्वालियर से मथुरा ले जाय गई थी।[3] सेठ राधकिशन के पुत्र राजा लक्ष्मणदास हुए। इनकी वंश परम्परा में क्रमशः सेठ द्वारकाप्रसाद जी उनके पुत्र सेठ गोपालदास जी, इनके पुत्र सेठ भगवानदास जी और इनके पुत्र हुए सेठ विजयकुमार जी। आप अपने रवि और राहुल पुत्रों के साथ मथुरा में रहते हैं। चौरासी–मथुरा के आप अध्यक्ष हैं।

श्रवणसेन–कनकसेन

अभिलेख के मूलपाठ प्रथम भाग–तीसरे पद्य में इन्हें सहोदर कहकर मूलसंघ बलात्कार गण का होना लिखा गया है। जोहरापुरकर ने बलात्कारगण में सेनान्त नाम प्राप्त नहीं होने से इन दोनों भाइयों को गृहस्थ होने की संभावना व्यक्त की है।[4] चन्द्रप्रभ–प्रतिमा प्रतिष्ठा में अन्य श्रावकों के नामोल्लेख के अभाव में, इन दोनों भाइयों का विशेष आर्थिक सहयोग रहना या इनकी प्रेरणा से प्रतिष्ठा कार्य का होना ज्ञात होता है।

मूल–अभिलेख स्रोत

अभिलेख के मूलपाठ प्रथम भाग में प्राप्त विवरण से प्रस्तुत लेख किसी इतर प्रतिमालेख के उस भाग का सारांश ज्ञात होता है। अभिलेख भाग सरलता पूर्वक वि.सं. १२१२ में मंदिर–पुनर्निर्माण (जीर्णोद्धार) के समय पढ़ा जा सकता था। यहाँ मूलपाठ–प्रथम के चौथे दोहे की निम्न पंक्ति विचारणीय है–'पार्श्वनाथ चरणानि तरै तासों विदी विचार'। इस पंक्ति में व्यवहृत 'तरै' शब्द का अर्थ नीचे 'विदी' का अर्थ विज्ञ अथवा विद्वान है। इस अर्थ के परिप्रेक्ष्य में ज्ञात होता है कि प्रस्तुत लेख जिस प्रतिमालेख का सार है, वह लेख किसी अन्य प्रतिमा के चरणों के नीचे संभवतः आसन पर उत्कीर्ण था। विज्ञजनों ने पार्श्वनाथ प्रतिमा के चरणों में विचार किया और उस अभिलेख के समझे गये अंश का सारांश प्रस्तुत मूलपाठ के प्रथम भाग में संजोया। प्रतिमा का चिह्न और यदि लेख उत्कीर्ण रहा है तो वह चन्द्रनाथ–पार्श्वनाथ प्रतिमा रही है।

प्रस्तुत मूलपाठ–प्रथम भाग के प्रथम पद्य में– मंदिर सह राजत भए चन्द्रनाथ जिन ईस। पौष सुदी पूनिम दिना तीन सतक पैंतीस।।" इस उल्लेख से यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि संवत् ३३५ पौष सुदी पूर्णिमा के दिन यहाँ चन्द्रप्रभ प्रतिमा की प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई थी। तथा उस समय जिनालय में चन्द्रप्रभ प्रतिमा विराजमान की गई थी।

प्रथम भाग के चतुर्थ पद्य से विदित होता है कि वि.सं. १२१२ में मंदिर का पुनर्निर्माण हुआ था। उस समय मंदिर में पार्श्वनाथ–प्रतिमा विराजमान थी। संभवतः चन्द्रप्रभ–प्रतिमा अपूज्य हो गई और उसके स्थान पर पार्श्वनाथ–प्रतिमा विराजमान की गई। पार्श्वनाथ–प्रतिमा के सिर पर रहने वाली फणावली होने के संकेत आज भी द्रष्टव्य हैं।

वर्तमान में जो प्रतिमा विराजमान है, उसके स्कन्ध भाग पर प्रतिमा की केशराशि दर्शाई गई है। ऐसी केशराशि का अंकन कुण्डलपुर (दमोह) के 'बड़े बाबा' प्रतिमा के स्कन्धों पर भी हुआ है। इस लक्षण से मनीषियों ने कुण्डलपुर में महावीर के नाम से विश्रुत प्रतिमा

को आदिनाथ–प्रतिमा बताया है। अतः इस साक्ष्य के परिप्रेक्ष्य में वर्तमान में स्थापित प्रतिमा आदिनाथ की ज्ञात होती है। प्रतिमा की आसन नहीं चिह्न आसन पर अंकित रहा होगा।

संवत् १८८३ में इस मंदिर का जीर्णोद्धार कराया गया था। संभवतः पार्श्वनाथ प्रतिमा के अपूज्य होने पर उसे वहाँ से हटाया गया और प्रस्तुत प्रतिमा प्रतिष्ठापित की गई। पार्श्वनाथ–प्रतिमा के हटाने के बाद भी फणावली बनी रही जिसे अनावश्यक समझकर तोड़ा गया। यह सब होने पर भी फणावली का अस्तित्व नहीं मिटाया जा सका।

इस प्रकार इस मंदिर में समय समय पर परिस्थितियों वश विराजमान प्रतिमाओं में परिवर्तन होता रहा किन्तु चन्द्रप्रभ तीर्थंकरका नाम यथावत् विश्रुत रहा। आज भी भक्त इस मंदिर में पहुंचकर चन्द्रप्रभ की भक्ति में उनकी जय बोलते है और भक्ति भाव से उनकी ही पूजा करते हैं। प्रस्तुत प्रतिमा चन्द्रप्रभ के नाम से उसी प्रकार विख्यात है, जैसे कुण्डलकपुर (दमोह म.प्र.) की आदिनाथ प्रतिमा 'बड़े बाबा' और महावीर के नाम से विश्रुत है।

काल–निर्णय

अभिलेख मूलपाठ प्रथम भाग पद्य प्रथम में अंकित तीन सौ पैंतीस को स्वर्गीय पं. नाथूराम 'प्रेमी' १३३५ संवत् मानते थे। उनका अनुमान था कि मूलपाठ में संवत सूचक अको के पढ़ने मे भूल हुई है। हजार सूचक एक का अंक मूलपाठ में इतना अस्पष्ट हो गया होगा कि विज्ञजन भी उसे पढ़ नहीं सके।[६]

डॉ नेमिचन्द्र ज्योतिषाचार्य आरा ने "तीन सतक पैंतीस" के स्थान में एक सहस पैंतीस होना बताया है। उन्होंने अपने लेख में लिखा है कि प्रस्तुत लेख में जिस बलात्कार गण का उल्लेख है उसका दसवीं शताब्दी के पूर्ववर्ती वाङ्मय में कहीं उल्लेख नहीं मिलता।

प्रथम भाग के प्रथम पद्य में व्यवहृत –दिन का अर्थ डॉ. ज्योतिषाचार्य के अनुसार दिवस और रविवार है। काल गणना के अनुसार दिन का अर्थ ज्योतिषाचार्य जी ने रविवार माना है। वारेश के आधार से भी दिन का व्यवहार रविवार के अर्थ में हुआ बताया है। काल गणना के अनुसार संवत् १०३५ की पौष पूर्णिमा भी रविवार के दिन पड़ने का उन्होंने उल्लेख किया है।[७]

अभिलेख प्राप्ति स्थल–परिचय

यह पहले ही कहा जा चुका है कि लेख सोनागिरि–चन्दप्रभ मंदिर में फाटक की दोनों ओर की दीवालों में खचित शिलाखण्डों पर उत्कीर्ण है।

सोनागिर रेलवे स्टेशन है। यह झांसी–दतिया रेल मार्ग के मध्य में है। स्टेशन से क्षेत्र पाँच किलोमीटर दूर है। पक्का रोड़ है। जाने आने के लिए क्षेत्र की ओर से मिनी बस की व्यवस्था की गई है। ग्वालियर से यहाँ आने के लिए राजकीय बसें भी मिलती हैं। क्षेत्र में भोजन आवासादि की सुन्दर व्यवस्था है।

संदर्भ

1. डॉ. जोहरापुरकर, भट्टारक सम्प्रदाय : जैन संस्कृति संरक्षक संघ सोलापुर ईसवी 1958 प्रकाशन, लेखांक 94, पृ0 41। श्री पं. बलभद्र जैन, दिगम्बर जैन तीर्थ: भाग 3, भारतवर्षीय दि. जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी, हीराबाग बम्बई–4 प्रकाशन ईसवी 1976, पृष्ठ 69।
2. भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ : भाग 3, वही, पृष्ठ 69।
3. श्री रूपचन्द जैन कटारिया, 37 राजपुर रोड सिविल लाइन–54।
4. जैन जागरण के अग्रदूत, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, पृ. 478–482।
5. भट्टारक सम्प्रदाय: पृ 45।
6. जैन साहित्य और इतिहास : संशोधित, साहित्यमाला बम्बई ईसवी 1956 प्रकाशन, पृष्ठ 435।
7. सोनागिर सिद्धक्षेत्र और तत्संबंधी साहित्य शीर्षक लेख, अनेकान्त: वर्ष 21, किरण 1, अप्रैल 1968, पृष्ठ 10।

अभिलेख - १७

लखनादौन–मंदिर–द्वार–अभिलेख, १०वीं शती, भाषा सस्कृत लिपि नागरी

मूलपाठ

अमृतसेन शिष्य त्रिविक्रमसेन.......

अभिलेख अभिमत

बताया गया है कि यह लेख जिस शिलाखण्ड पर उत्कीर्ण है, वह मध्य प्रदेश के सिवनी जिले में जबलपुर से ५२ मील दूर जबलपुर गोदिया रोड पर स्थित लखनादौन से एक मील दूर सोनटोरिया नामक पहाड़ी से प्राप्त हुआ था।[1] वर्तमान में यह नागपुर के संग्रहालय में संग्रहालय क्रमांक २४ से संगृहीत है। लेख अपठनीय हो गया है।

स्वर्गीय रायबहादुर हीरालाल जी ने लखनादौन से प्राप्त अभिलिखित इस द्वार शिलाखण्ड का उल्लेख करते हुए लिखा है कि प्रस्तुत अभिलेख की लिपि अनुमानतः दसवीं शताब्दी की है। इस समय लखनादौन में कोई जैन मंदिर रहा है। अमृतसेन के प्रशिष्य और त्रिविक्रम सेन के शिष्य इस मंदिर के निर्माता थे। उनका नाम पढ़ा नहीं जा सका।[2]

लखनादौन से ईसवी १९७१ में अष्ट प्रातिहार्य युक्त महावीर प्रतिमा तथा ईस्वी १९८५ में फुल्लू मेहरा के कुएँ से प्राप्त सिद्धेश्वर बाहुवली की अष्ट प्रातिहार्य युक्त प्रतिमा के मिलने से स्वर्गीय रायबहादुर हीरालाल जी का लखनादौन में १०वीं शती में जैन मंदिर होने का अनुमान साकार हो गया है।

शिल्प विन्यास से ये प्रतिमाएँ भी उसी काल की ज्ञात होती हैं। अतः सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि भव्य कला पूर्ण ये प्रतिमाएँ अतीत में इसी मंदिर में

विराजमान रही हैं, जिस मंदिर के द्वार का शिलाखण्ड आज नागपूर संग्रहालय में है।

संदर्भ

1. *अनेकान्त: वर्ष 25, किरण 4–5*
2. *No. 45 stone door sill inscription.*
   This inscription belongs to a jain temple and records the name of the builder who was a disciple of Trivikramsena, a disciple of Amritsena. The builders own name is indistenct. The charactors of the record belong to the 10th century A.D.
   Inscriptions in C.P. & Berar: Nagpur Govt. Press Publication, year 1922, page 69.

अभिलेख - १८

रदेव, शान्तिनाथ–प्रतिमालेख, संवत् १०७८, भाषा हिन्दी, लिपि नागरी

यह अभिलेख शान्तिनाथ–प्रतिमा की आसन पर एक पंक्ति में उत्कीर्ण है। इसके सम्वत् सूचक अंतिम अंकों को ७८ पढ़ा गया है। आदि के दोनों अंक अपठनीय हो गये हैं। प्रतिमा के शिल्प विन्यास से संवत् सूचक प्रथम दो अंक में १० संख्या अनुमानित की गई है। इस प्रकार यह प्रतिमा संवत् १०७८ में प्रतिष्ठित हुई ज्ञात होती है।

रदेव ग्राम श्योपुर के निकट स्थित है।[1]

संदर्भ

1 *ग्वालियर पुरातत्व रिपोर्ट : संवत् 1992 प्रकाशन, लेख संख्या 39।*

अभिलेख - १९

खजुराहो शान्तिनाथ प्रतिमालेख संवत् १०८५, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् १०८५। स्रीमत् (श्रीमत्) आचार्य्य पुत्र स्री (श्री) चंद्रयदेवः स्री (श्री) सां (शां) तिनाथस्य प्रतिमा कारी।[1]

पाठ टिप्पणी

१. सरेफ वर्ण द्वित्व रूप में प्रयुक्त हुआ है।

२. अनुनासिक न का अनुस्वर किया गया है। चंद्रयदेव और शांतिनाथ शब्द इसके उदाहरण हैं।
३. 'श' के स्थान में 'स' वर्ण प्रयुक्त हुआ है। यथा शिवि के स्थान में सिवि और शांतिनाथ को सांतिनाथ लिखा गया है।
४. जैन विद्वान पं. परमनन्द शास्त्री ने इसमें कुछ संशोधन किया है।[२]

भावार्थ

संवत् १०८५ में श्रीमान् आचार्य-पुत्र श्री ठाकुर तथा श्री देवधर के पुत्र श्री शिवि एवं श्री चन्द्रयदेव ने श्री शान्तिनाथ-प्रतिमा का निर्माण (प्रतिष्ठा) कराया।

अभिलेख-परिचय

यह प्रतिमालेख शन्तिनाथ प्रतिमा की आसन पर संस्कृत भाषा और नागरी लिपि में एक ही पंक्ति में उत्कीर्ण है। ईसवी १६६८ में सतना में आयोजित वर्णी स्नातक परिषद सम्मेलन के अवसर पर इस प्रतिमा के दर्शन किये थे। उस समय सीमेंट की छाप और सफेदी के कारण यह लेख अपठनीय हो गया था।

कनिघम ने सर्व प्रथम यह लेख ईसवी १८५२ में मूलाधार से छाया लेकर पढ़ा था। इसके पश्चात वे ईसवी १८६५ में पुनः यहाँ आये थे। इस समय उन्हें एक अक्षर पठनीय नहीं मिला था। तीसरी बार वे ईसवी १८८४ में यहाँ आये। उन्होंने लेख का संवत् १०८५ ईसवी १०२८ पढ़ा। प्रतिमा की अवगाहना उन्होंने १४ फुट होने का उल्लेख किया है।[३]

प्रतिभा परिचय

प्रस्तुत शन्तिनाथ प्रतिमा मंदिर नम्बर प्रथम में विराजमान है। आसन के मध्य में चिन्ह स्वरूप हरिण अंकित हैं। पीछे भामंडल है और उसकी दोनों ओर हाथों में कलश लिए इन्द्र हाथियों पर सवार दर्शाए गये हैं। सिरोपरि तीन छत्र हैं। मुख कुण्डलपुर के बड़े बाबा के समान हैं। गले में त्रिवली और श्रीवत्स से सहित हैं। चरणों के पास दोनों ओर एक-एक चँवरधारी इन्द्र प्रतिमा है। इन्द्रों के नीचे उपासक और उपासिका की प्रतिमाएँ हैं जो खण्डित हो गई हैं। जैन शिलालेख संग्रह भाग-२ में लेख क्रमांक ३७६ से इस प्रतिमा लेख की तीन पंक्तियाँ बताई हैं जबकि लेख एक ही पंक्ति में उत्कीर्ण है। प्रतिमा के निर्माण में व्यवहृत शिलाखण्ड वादामी वर्ण का है।

प्राप्ति स्थल परिचय

खजुराहो भारत का प्रसिद्ध पर्यटन स्थल हैं। छतरपुर से केवल २७ मील दूर है। सतना, महोबा, हरपाल पुर आदि से बसें जाती हैं। पन्ना के आगे वमीठा से यह आठ मील दूर है।

संदर्भ

1. *कनिघम रिपोर्ट : जिल्द 21, पृष्ठ 61।*
2. *अनेकान्त : बाबू छोटेलाल स्मृति अंक, पृष्ठ 57।*
3. *clossel statue of santinath samvat 1085*

This Large statue is inshrived in a commen looking building made of old fragments and covered with white wash and vary dark inside, I got a copy of its inscription at the time of my first visit in 1852, at my second visit in 1865 not a signgle letter of the inscription was visible, as the whole statue had been recently white was shed. In the present year 1884 however, I have managed to get a fair impression after a long time spent in cleaning the pedestal. The great figure is 14 high. I read the date as samvat 1085 or A.D. 1028. In the accompanying plate XX. I have given the portions of this inscriptions which include the date and the name of the statue.

कनिघम रिपोर्ट : जिल्द 21 पृ. 61।

अभिलेख - 20

ग्वालियर, पार्श्वनाथ–प्रतिमालेख, संवत् ११०८ भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् ११०८..........

अभिलेख – परिचय

यह लेख संस्कृत भाषा और नागरी लिपि में ग्वालियर के गोकुलचन्द्र दिगम्बर जैन मंदिर में विराजमान २ इंच ऊँची और एक इंच चौड़ी पीतल धातु से निर्मित पार्श्वनाथ–प्रतिमा की आसन पर अंकित है। लेख इतना अधिक घिस गया है कि मात्र संवत् ही पढ़ा जा सका है।[1]

संदर्भ

1 *प. परमानन्द शास्त्री ग्वालियर के कुछ मूर्ति–यंत्र लेख, अनेकान्त : वर्ष 22 पृष्ठ 122।*

अभिलेख - 29

अहार, रत्नत्रय प्रतिमालेख, संवत ११०६, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. सवन्तं (संवत्) ११०६
२. राउ वीहिनु देहिनु पोलु उजेण
३. कालू रोदी

भावार्थ

इस शान्ति कुंथु अर तीर्थकर प्रतिमा की प्रतिष्ठा संवत् ११०६ में राउ, वीहिनु, देहिनु पोलु, उजेण कालू और रोदी ने कराई ज्ञात होती है।

प्रतिमा-परिचय

पीतल के एक फलक पर शान्ति कुंथु और अरनाथ तीनों तीर्थकारों की प्रतिमाएँ हैं। ये तीनों कायोत्सर्ग मुद्रा में हैं। मध्य में शांतिनाथ उनकी दायीं ओर कुंथुनाथ एवं बायीं ओर अरनाथ की प्रतिमा है। यहाँ के मंदिर नम्बर एक में शांतिनाथ प्रतिमा की दायीं ओर अरनाथ और बायीं ओर कुन्थुनाथ प्रतिमाएँ हैं। कुंथुनाथ की शासनदेवी कुंथुनाथ प्रतिमा की दायीं ओर, अरनाथ प्रतिमा की बायीं ओर और शान्तिनाथ की उनकी आसन के नीचे अंकित है। शासन देवियाँ खड्गासन मुद्रा में हैं। शान्तिनाथ का चिन्ह हरिण कुन्थुनाथ का चिन्ह बकरा और अरनाथ का चिह्न मच्छ उनकी आसनों के नीचे अंकित हैं। लेख फलक के पृष्ठ भाग में उत्कीर्ण है। वह घिस जाने से अपठनीय हो गया है। अहार की धातु प्रतिमाओं में यह फलक सर्वाधिक प्राचीन है। प्रतिमाओं का फलक एक होने से इन्हें रत्नत्रय नाम दिया गया है। सम्प्रति यह प्रतिमा-फलक मोयरे में (मंदिर क्रमांक दो) वेदिका की दूसरी कटनी पर विराजमान है।[1]

प्राप्ति स्थल परिचय

अहार एक दिगम्बर सिद्ध क्षेत्र है। यह स्थान टीकमगढ़ (म.प्र.) से २२ किलो मीटर दूर है। यहाँ टीकमगढ़ से बसें जाती-आती हैं। पक्की सड़क बनी हुई है।

संदर्भ

1. आहार क्षेत्र के अभिलेख : ले.सं. 2/159 पृष्ठ 52।

अभिलेख - २२

कंठाल, अभिनन्दननाथ–प्रतिमालेख संवत् ११११, भाषा–संस्कृत, लिपि–नगरी

मूलपाठ

संवत् ११११............

अभिलेख परिचय

यह लेख एक प्रतिमा की आसन पर अंकित है। उसमें चिह्न स्वरूप बंदर उत्कीर्ण किया गया है। चिह्न से प्रतिमा तीर्थकर अभिनन्दननाथ की ज्ञात होती है। इस आसन पर चरण भी हैं जिनसे प्रतिमा के खड्गासन मुद्रा में होने का संकेत मिलता है। यह अवशेष ऊँचाई में २ फुट ५ इंच तथा चौड़ाई में १ फुट ४ इंच है। इसके निर्माण में संगमरमर सफेद पाषण व्यवहत हुआ है। आसन पर लेख भी उत्कीर्ण हुआ है किन्तु वह इतना अधिक अपठनीय है कि केवल सवत् सूचक अंक मात्र पढ़े जा सके हैं।

यह अवशेष उज्जैन के पास कंठाल नामक स्थान से प्राप्त हुआ था। वर्तमान में उज्जैन के जयसिहपुरा दिगम्बर जैन पुरातत्व संग्रहालय में संग्रहालय क्रमांक १७६ से सगृहीत है।

अभिलेख - 23

सिद्धवरकूट, आदिनाथ–प्रतिमालेख

मूलपाठ

१. संवत् ११ एक पे एक वपे (वर्षे) वेसाष (वैशाख) मासे शुक्ल) पक्षे तथी (तिथि) ६ गुरुवासरे

२. पलसेघे (मूलसंघे) घसे (गणे) बलात्कार श्री कुंदकुंदयारचारीय (कुंदकुंदाचार्य) आमना

३. यमत् उपदेसात् श्री हेमचंद असा (चा) रीय नग्र सीदपुर पाटशाह (हू)

४. वडग्यातिलग साषा (खा) साभसे–रज गोत्र साह जिमचंदजी भीरी

५.

भावार्थ

संवत् ११११वें वर्ष के वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की नौवीं तिथि गुरूवार के दिन मूलसंघ वलात्कारगण श्री कुंदकुंदाचार्य आम्नाय के श्री हेमचंद्राचार्य के उपदेश से सीदपुर पाटन नगर के हूवड़ जाति के शाखा साभसेरज गोत्र के श्री जिमचंदजी भीरी (आदि ने प्रतिष्ठा कराई)

व्याख्या

संवत् – इस लेख में प्रतिष्ठा का समय संवत् ११ एक पे एक कहा गया है। ११ अंक के साथ एक पे एक लिखने से ग्यरहवें संवत् का अनुमान नहीं लगाया जा सकता है। प्रतिमा इतनी प्राचीन नहीं है। प्रतिमा विन्यास से और अंकों तथा शब्दों में दो बार ग्यारह का प्रयोग होने से यह संवत् ११११ प्रतीत होता है। यदि यह संवत् ११ होता तो मूलपाठ नागरी लिपि में नहीं होता। अवश्य वह ब्राह्मी लिपि में लिखा जाता।

सीदपुर – संभवतः नगर का नाम लेख में सीदवर रहा है। जिसे भ्रांति से सीदरपुर पढ़ा गया है। वर्तमान नगर का नाम सिद्धवरकूट अतीत में सीदवर–पाटन के नाम से विख्यात रहा ज्ञात होता है। क्षेत्र पर्वत पर होने से सिद्धवरकूट कहा गया है।

अभिलेख–परिचय

यह प्रतिमालेख मंदिर की दूसरी मंजिल पर निर्मित वेदी पर विराजमान पद्मासनस्थ कृष्ण पाषाण की आदिनाथ प्रतिमा की आसन पर उत्कीर्ण है।

दिनांक ६/४/६७ ईसवी को लाला शिखरचंद जी डी–३०२, विवेक विहार, दिल्ली के सौजन्य से आचार्य विद्यासागर जी द्वारा ज्ञानकथाकुंज का विमोचन कराने के अवसर पर इस प्रतिमा के दर्शन करने के पश्चात् यह लेख लिपिवद्ध किया गया था। समयाभाव वश प्रतिमा का सम्पूर्ण विवरण नहीं लिखा जा सका। इस लेख में संवत् व्यक्त करने की पद्धति अनूठी है। मध्यप्रदेश में यह एकमात्र ऐसा प्रतिमालेख है।

स्थान–माहात्म्यः रेवा नदी के तट पर स्थित सिद्धवरकूट नाम से प्रसिद्ध एक दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र है। यहीं से दो चक्रवर्ती, दस कामदेव और साढे तीन करोड़ मुनि निर्वाण को प्राप्त हुए। पाँच करोड़ मुनियों सहित रेवा नदी के दोनों तटों से रावण के पुत्रों को निर्वाण लाभ होने का निर्वाणकाण्ड में उल्लेख भी मिलता है।

कामदेव

कुल कामदेव चौबीस हुए हैं। उनके नाम हैं – बाहुबली, अमिततेज, श्रीधर, दशभद्र, प्रसेनजित्, चन्द्रवर्ण, अग्निमुक्ति, सनत्कुमार, वत्सराज, कनकप्रभ, मेघवर्ण, शांतिनाथ, कुन्थुनाथ, अरनाथ, विजयराज, श्रीचन्द्र, राजा नल, हनुमान, बलराज, वसुदेव, प्रद्युमन, नागकुमार, श्रीपाल और जीवंधर।

इनमें जिन दस ने इस सिद्धक्षेत्र से निर्वाण प्राप्त किया उनके नाम हैं–सनत्कुमार, वत्सराज, कनकप्रभ, मेघप्रभ, विजयराज, श्रीचन्द्र, नलराज, बलराज, वसुदेव और जीवंधर।[1]

प्राप्ति स्थल परिचय

यह रेवा वर्तमान नर्मदा नदी के तट पर स्थित है। सिद्धक्षेत्र है। इन्दौर से ओकारेश्वर बसें जाती हैं। मान्धता से सिद्धवरकूट नाव द्वारा नर्मदा–कबेरी संगम को पार कर पहुँचना पडता है। क्षेत्र में सुविधापूर्ण धर्मशाला है। इन्दौर–खडवा रेलवे लाइन पर बड़वाह स्टेशन से १६ कि.मी. दूर है।

सदर्भ

1 प वलभद्र जैन, भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ, भाग–3, पृष्ठ 316–326।

अभिलेख - २४

बडोह, मदिर–द्वारलेख, संवत् १११३, भाषा–सस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. ओ स्वस्ति।।
२. स्री (श्री) द्वादस (श) क्क
३. मंडले आचार्य्य केवलि (र्ददिजै)
४. भूपचंद्रस्य ।। स. (संवत्).....(११) १३–(सो) मे।[1]

अभिलेख–परिचय

यह लेख बडोह के एक जैन मदिर द्वार के शिलाखण्ड पर चार पंक्तियों में अंकित है। संवत् सूचक आरम्भिक दो अंक नहीं पढे जा सकने से प्रतिमालेख विदों ने वहाँ ११ अंक होने का अनुमान किया है। यहाँ तीन मंदिर रहे हैं। यह लेख उनमें एक मंदिर की चौखट पर अंकित है।

तत्कालीन शासक

यहाँ एक लाल चिकने पत्थर से निर्मित गरुडध्वज स्तम्भ पर स्रग्धरा, शार्दूलविक्रीडित, शिखरणी आदि छन्दों से बतीस श्लोकों में निर्मित अड़तीस पंक्तियों का एक लेख उत्कीर्ण है। इस लेख से यहाँ का शासक नरवर्मन रहा ज्ञात होता है।[2]

प्राप्ति स्थल—परिचय

बडोह विदिशा जिले का एक ग्राम है। वह बीना विदिशा रेलवे लाइन के मध्य कुल्हार रेलवे स्टेशन से १३ मील दूर है। स्टेशन से यहाँ बस जाती है। पठारी होकर जाना पड़ता हैं।

संदर्भ

1. *ग्वालियर पुरातत्व रिपोर्ट : ईसवी 1980, ले.सं. 3 पृ. 4–5।*
2. *ए डिस्क्रिप्टिव एण्ड क्लासीफाइड लिस्ट ऑफ एन्सिएन्ट मानुमेन्ट्स इन मध्यभारत : क्रम संख्या 95।*

अभिलेख - २५

ग्वालियर, चौबीसी प्रतिमा लेख, संवत् ११२०, भाषा संस्कृत, लिपिनागरी

मूलपाठ

सं. (संवत्) ११२० वैसाष (वैशाख) सुदि २ गोपाल रूओ गोल्ह पौत्र पूना.........

भावार्थ

संवत् ११२० वैशाख सुदि द्वितीया तिथि में गोपाल के पुत्र गोल्ह और पौत्र पूना आदि ने प्रतिष्ठा कराई। यहाँ गोपाल रूओं का पुत्र ज्ञात होता है।

प्राप्ति स्थान

यह लेख ग्वालियर के गोकुलचंद दिगम्बर जैन मंदिर में विराजमान पीतल धातु से निर्मित एक चौबीसी प्रतिमा की आसन पर अंकित है।[1]

संदर्भ

1. *पं. परमानन्द शास्त्री, ग्वालियर के कुछ मूर्तियत्र लेख, अनेकान्त · वर्ष 22 पृष्ठ 122।*

अभिलेख - २६

बदनावर अर्हत् प्रतिमालेख, संवत् ११२२, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् ११२२ माघ शुक्ल (सुदि) ६ हरा (गुरौ) दिनैश्च (दिनेच) अद्येह वर्द्धनपुरे श्री (स्री) सियापुरवास्तव्य पुत्र सलनदेआसेवा प्रणमति नित्यं (।)

पाठान्तर

मूलपाठ के शुद्ध रूप अनुमान से कोष्टक में दर्शाये गये हैं। इस अभिलेख में पाठक के द्वारा मूलपाठ यथावत् नहीं लिया गया है।

भावार्थ

सवत् ११२२ के माघ सुदी नवमी गुरुवार के दिन सियापुर के निवासी सलनदे का पुत्र आसेवा आज यहाँ वर्द्धमानपुर में इस मूर्ति की प्रतिष्ठा कराकर नित्य उसे प्रणाम करता है।

व्याख्या

वर्द्धनपुर नाम वदनावर का प्राचीन नाम ज्ञात होता है।

प्राप्ति स्थल परिचय

गदनावर स्थान इदौर से ६० किलो मीटर दूर नीमच रोड पर वलवन्ती नदी के तट पर स्थित धार जिले की एक तहसील है। इस लेख की प्रतिमा इसी स्थान से लेकर उज्जैन के जयसिंह पुरा जैन पुरातत्व संग्रहालय में संगृहीत है।[1]

सदर्भ

1 अनेकान्त वर्ष 25 किरण 4–5 पृ 169।

अभिलेख - २७

पचराई, शान्तिनाथ प्रतिमालेख, संवत् ११२२, भाषा संस्कृत लिपि नागरी

मूलपाठ

१. ओं (।।) श्री सां (शां) तिनाथो इति मुक्तिनाथः। यस्चक्रवर्ती भुवनांश्चधत्ते।। सौभाग्य रासिख्वरभाग्यरासिस्नानो

२. भृत्यै न सो विभूत्यै।। स्री (श्री) कूं (कुं) द (कूं) कुं द स (सं) ताने गणे देसि (शि) क संज्ञिके। सु (शु) भनंदिगुराः (रोः) सि (शि) ष्यः सूरिः स्री (श्री) ली–

३. ल चंद्रकः (चन्द्रकः)।। हरीव भूत्या हरिराजदेवो वभूव भीमेव हि तस्य भीमः। सुतस्तदीयो रणपाल नाम एतद्धि रा

४. ज्ये कृतिराज नस्य।। परपाटान्वये सु (शु) द्धे साधुनम्नि महेस (श) वरः महेस (श) वदेव विख्यातस्तत्सुतो वो (बो) ध

५. संज्ञकः ।। सत्पुत्रो राजनोज्ञेयः कीर्तिस्तस्येय मद्भुता जिनेंदुवत्सुभाल्यं तं राजते भुवनत्र–

६. ये ।। तस्मिन्नेवान्वये दिव्ये गोष्ठिकावपरौ सु (शु) भौ। पंचमासे (शे) स्थितो ह्येकी द्वितीय द

७. स (श) मासके ।।आद्यो जसहडो ज्ञेयः समस्त जससां निधिः (।) भक्तो जिनवरस्याद्यो विख्यातो

८. जिनसा (शा) सने।। मंगलं महाश्रीः ।। भद्रमस्तु जिनसा (शा) सनाय

९. संवत् ११२२[१]

पाठ टिप्पणी

इस लेख में 'श' के लिए 'स' का प्रयोग हुआ है। इसी प्रकार अनुनासिक न् का अनुस्वार रूप में व्यवहार हुआ है। प्रथम श्लोक का अंतिम चरण में अशुद्ध प्रतीत होता है। पांचवीं पंक्ति में 'सत्पुत्र' के स्थान में मूलपाठ में 'तत्पुत्र' रहा ज्ञात होता है।

भावार्थ

ओं। सुन्दर स्वरूप और सौभाग्य राशि, संसार के धारी (स्वामी), मुक्ति के नाथ चक्रवर्ती शान्तिनाथ की विभूति सेवकों के द्वारा......वह विभूति के लिए नहीं था।

श्री (आचार्य) कुन्दकुन्द की वंश परम्परा के देशीय नामक गण में शुभनन्दि गुरु के शिष्य आचार्य लीलचन्द्र (हुए)। विभूति से नारायण के समान हरिराज देव हुए। उनके

भीम समान भीम (पुत्र) हुआ और उसका रणपाल नाम का पुत्र हुआ। इसी के राज्य में राजन की यह कृति (मंदिर) है।

शुद्ध परपाट (परवार) अन्वय में विख्यात महेश्वर नाम के साहू हुए। महेश्वर के समान ही इनका बोध नाम का पुत्र हुआ। वह जिन चन्द्र के समान तीनों लोगों में शोभता था। उसी दिव्य अन्वय में सुंदर दो शुभ गोष्ठिक हुए। इनमें एक पाँच महिने रहा और दूसरा दस महिने। इनमें समस्त यश की निधि, जिनेन्द्र शासन में विख्यात प्रथम जिनेन्द्र भक्त, जसहड जानने योग्य है।। मंगल महाश्री।। जिन शासन के लिए कल्याण हो।। संवत् ११२२।। संभवतः इसी जसहड ने संवत् ११२२ में इस प्रतिभा की प्रतिष्ठा कराई थी।

प्राप्ति स्थल

शिवपुरी जिले मे खनियाधाना से पचरई १६ किलोमीटर दूर है। कोटा बीना लाइन पर टकनेरी स्टेशन से ईशागढ़ होकर यह ५६ किलोमीटर है।

संदर्भ

1 ए डिस्क्रिप्टिव एण्ड क्लासीफाइड लिस्ट ऑफ एन्सिएन्ट मानुमेन्ट्स इन मध्यभारत सीरियल नम्बर 1251 पृ 106
और
सिद्धान्ताचार्य प फूलचन्द्र शास्त्री, परवार जैन समाज का इतिहास ईस्वी 1992 प्रकाशन, पृष्ठ 114–115।

अभिलेख - २८

ग्वालियर पार्श्वनाथ प्रतिमालेख, संवत् ११२४ भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

सं. (सवत्) ११२४ मिति जेस्ट (ज्येष्ठ) सुदि ५।

अभिलेख परिचय

यह लेख गोकुलचन्द दिगम्बर जैन मदिर ग्वालियर में स्थित काले चिकने पालिश से सहित पाषाण से निर्मित पद्मासनस्थ पार्श्वनाथ प्रतिमा की आसन पर अंकित है। इसमें 'मिति' शब्द का व्यवहार उल्लेखनीय है। यहाँ से प्राप्त अन्य लेखों में इसका व्यदहार नहीं हुआ है। अभिलेख में अंकित समय प्रतिमा प्रतिष्ठा का समय है।[1]

संदर्भ

1. पं परमानन्द शास्त्री, ग्वालियर के कुछ मुर्तियंत्र लेख, अनेकान्त. साहित्य–इतिहास अंक, वर्ष 22 पृ. 122।

अभिलेख - २९

ग्वालियर, सुपार्श्वनाथ प्रतिमालेख, संवत् ११२५

मूलपाठ

सं. (संवत्) ११२५...........

अभिलेख परिचय

यह लेख गोकुलचन्द दिगम्बर जैन मंदिर में विराजमान सुपार्श्वनाथ प्रतिमा की आसन पर अंकित है। आसन पर चिह्न स्वरूप स्वस्तिक उत्कीर्ण है। प्रतिमा की अवगाहना २ इंच तथा चौडाई १ इंच है। इस लेख में केवल सवत् सूचक अक ही पठनीय रह गये है।[1]

सदर्भ

1 स्व प परमानद शास्त्री, अनेकान्त साहित्य–इतिहास अक, वर्ष 22, पृष्ठ 122।

अभिलेख - 30

अहार, महावीर प्रतिमालेख, संवत् ११३१, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

सहु (साहु) सो (स्त्री) नवल पुत्र नल संमतु (सवत्) ११३१ म. (मगसिर) सु. (सुदि) ३।

पाठ टिप्पणी

मूलपाठ में संवत् सूचक अंकों के पश्चात 'मसु' ३ उत्कीर्ण है। संवत् सूचक अंकों के बाद अभिलेखों में मास और पक्ष का उल्लेख रहता है। अतः प्रतीत होता है मास और

पक्ष का प्रथम अक्षर देकर संक्षेप में उनका यहाँ उल्लेख किया गया है। इस अनुमान के परिप्रेक्ष्य में मसु का 'म'– मगसिर मास का और 'सु' सुदि पक्ष का बोधक कहा जा सकता है।

प्रतिमा–परिचय

यह प्रतिमा २१ इंच ऊँचे और १० इंच चौड़े देशी पाषाण खण्ड से पद्मासन मुद्रा में निर्मित है। इसके शीर्ष भाग में ढोलक वाद्य के साथ दुन्दुभिवादक अंकित है। दोनों ओर सूंड ऊपर किये हुए एक एक हाथी दर्शाया गया है। इन गजाकृतियों के पार्श्व में दोनों ओर एक अर्हन्त प्रतिमा खड्गासन मुद्रा में विराजमान है। दोनों ओर मालाधारी उडते हुए देव तथा उनके नीचे खड्गासनस्थ चँमरवाही देव अंकित हैं। परिकर के मध्य में मूल नायक प्रतिमा है। इसकी आसन पर चिह्न स्वरूप सिंह अंकित होने से यह प्रतिमा महावीर की ज्ञात होती है। सम्पूर्ण शिलाखण्ड पर अर्हन्त प्रतिमाओं की संख्या ५ होने से वे पञ्चबाल यतियो की सूचक प्रतिमाएँ ज्ञात होती हैं। आसन पर विपरीत दिशाओं में मुख किये सिंह भी दर्शाये गये हैं। यह अवशेष सम्प्रति आहार क्षेत्र के भोयरे में वेदी पर विराजमान है।[1]

संदर्भ

1 अहार क्षेत्र के अभिलेख ले स 2/100 पृष्ठ 29

अभिलेख - 39

बडोह, मन्दिरद्वार लेख, संवत् ११३४ भाषा संस्कृत लिपि नागरी

मूलपाठ

१. ।।स्वस्ति।।

२. स्री (श्री) देवचंद्र आचार्य्य मंत्रवादिन

३ संवत् ११३४ (।।)[1]

पाठान्तर

आचार्य मन्त्रवादिन् सं. ११३४

करदेव वासल प्रणमति............।[2]

मूलपाठ टिप्पणी

पंण्डित फूलचंद शास्त्री के पाठान्तर मूलपाठ में ''करदेव वासल प्रणमति' पाठ

ग्वालियर पुरातत्व रिपोर्ट में दर्शाये मूलपाठ से अधिक है तथा 'स्वस्ति स्री देवचन्द्र' मूलपाठ का उल्लेख ही नहीं है। अतः शास्त्री जी का मूलपाठ ग्वालियर पुरातत्व रिपोर्ट संवत् १९८० के परिप्रेक्ष्य में संदेहास्प्रद प्रतीत होता है।

अभिलेख परिचय

यह लेख गडरमर मंदिर के पश्चिमी परकोटे के भीतर शिखर युक्त तीन मंदिरों में एक मंदिर के द्वार पर सस्कृत भाषा और प्राचीन नागरी लिपि में तीन पंक्तियों में उत्कीर्ण है।

सदर्भ

1 *(अ) ए डिस्क्रिप्टिव एण्ड क्लासी फाइड लिस्ट ऑफ एन्सिएन्ट मानुमेट्स इन मध्यभारत, सीरियल नम्बर 95।*
(ब) on another door james of a cell in jain temple. Scnpt old Nagari Language sanskrit, lines 3, v.s 1134.
ग्वालियर पुरातत्व रिपोर्ट, सवत[1] 1980 प्रकाशन, स 41

2 *सिद्धान्ताचार्य प फूलचद शास्त्री, परवार जैन समाज का इतिहास, ईसवी 1992 प्रकाशन, पृष्ठ 115।*

अभिलेख - 32

खजुराहो, आदिनाथ प्रतिमालेख, सवत् ११४२, भाषा सस्कृत, लिपि नगर

मूलपाठ

स. (सवत्) ११४२ स्री आदिनाथाय प्रतिष्ठाकारक श्रेष्ठी वीवतसाह (शाह) भार्य्या सेठानी पद्मावती (१)

पाठ टिप्पणी

भाषा और लिपि से यह मूल पाठ का मूलरूप नहीं ज्ञात होता है। यह लेख खण्डित आदिनाथ प्रतिमा की आसन पर अकित बताया गया है।[1] यह प्रतिमा घण्टई जैन मदिर में देखी गई थी।[2] कनिघम ने केवल प्रतिष्ठा कालतथा प्रतिमा के नाम का उल्लेख किया है। उन्होंने इसे बौद्ध मंदिर माना था। उनकी यह धारणा तब निरस्त हुई जब उन्हें यहाँ दिगम्बर जैन मूर्तियाँ अंकित प्राप्त हुई।[3]

मंदिर के द्वार पर गरुडारूढ अष्टभुजी जैन देवी है। इसके हाथों में आयुध और सिर पर जैन तीर्थंकर विराजमान हैं। यह देवी आदिनाथ की यक्षिणी चक्रेश्वरी होने से

इस लेख की प्रतिमा के इस मंदिर में विराजमान रहने तथा मंदिर (घंटाई मंदिर) मूलतः आदिनाथ मंदिर होने का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। इस मंदिर में नवग्रह और सोलह स्वप्न भी दर्शाए गये हैं।[4]

संदर्भ

1 पं. परमानन्द शास्त्री, मध्यभारत का जैन पुरातत्व, अनेकान्त बाबू छोटे लाल स्मृति अंक, वर्ष 19, अंक 1–2, पृ. 57।

2 प्राचीन जैन स्मारक: सूरत प्रकाशन, ई. 1926, पृ० 115।

3 कनिंघम रिपोर्ट : जिल्द 2, पृष्ठ 492, 431।

4. श्री मोरे लाल धामा, खजुराहो: भारतीय पुरातत्व विभाग दिल्ली प्रकाशन, ई. 1982, पृ. 22।

´अभिलेख - 33

दूबकुण्ड मंदिर, प्रशस्ति, सम्वत् ११४५ भाषा–संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. ओं ।। न (मो) वीतरागाय ।। आ......द्र दि–ट.....टना...... (द्यत्या) दपीठं लुठन्मं (दा) रस्रगमं (द) गुंज (द) लि (म) निष्ठ्यूत सांराविणम। (त)

२. (त्या).....वद्ध (च):........रमु......(तां) सं–कि–ोद्रे (ग) मिवाकरोत्स ऋषभस्वामी श्रियेस्तात्सता (म) ।।(१) वि भ्रा

३. (णे) गुण (सं) ह(तिं) हततमस्तापो निजज्योतिषा (यु) क्तात्मापि जगंति संगत जय (श्चक्रे) सरागाणि यः। उन्माद्यन्म

४. कर (ध्व) जोर्जित गज ग्रासोल्लसत्केसरी संसारोग्रगदच्छिदेस्तु स मम श्री सां (शां) तिनाथो जिनः ।।(२) जाड्यं सस्वदखंडित–

५. क्षयमपि क्षीणाखिलोपक्ष (यं) साक्षादीक्षितमक्षि मिर्दधदपि प्रौढ़ कलंकं तथा। चिह्नत्वाद्य दुपांतमा प्य सततं जात

६. स्तथा नंदकृच्चन्द्रः सर्व्वजनस्य पातु विपदश्चंद्र–प्रभोर्हसेनः ।। (३).....सो (शो) कानोकहसंकुलं रतितृणश्रेणी प्रणस्य (श्य) द्धु व (दभ्रम)

७. (येनात्मा) ध्वगपूगमुद्गतमहामिथ्यात्व वातध्वनि। यो रागादिमृगोपघात कृतधी र्ध्यानाग्निना भस्मात् भावंकर्म्म–

८. वनं निनाय जयतात्सोयं जिनः सन्मतिः ।। (४)
प्रसाधितार्थगुर्भव्य पंकजाकर (भा)स्करः। अंतस्त मोपहो वोस्तु गो।

९. तमो मुनि स (सो)त्तमः ।। (५) श्रीमज्जिनाधिपति सद्वदनारविंद–मुद्गच्छदच्छतरवो धसमृद्धगंधं (म) अध्यास्य या जगति पंकजवासिनी–

१०. ति ख्या (तिं) जगाम जयतु सु (श्रु) त देवता सा ।।०।। (६) आसीत्कच्छपघातवंस (श) तिलकस्त्रैलोक्य निर्य्यद्यसः (शः) पांडु श्री युवराज सुनुर–

११. समद्युद्भीम सेनानुगः श्रीमा (न) ज्र्जुन भूपतिः पतिरपायप्याप यत्तुल्यतां नो गांभीर्यगुणेन निर्ज्जित जग (द्व)न्वी धनु–

१२. र्विद्यया।।(७) श्री विद्याधरदेव कार्य्यनिरतः श्री राज्यपालं हठात्कं–ठास्थिच्छिदेनकवाण निवहैर्हत्वा महत्याहवे।

१३. (डिंडीरा) वलिचंद्रमंडल (भि)लन्मुक्ता कलापोज्जवलैस्त्रैलोक्यं सकलं यशोभिरचलैर्य्यो जस्रमापूरयत् ।। (८) यस्य–

१४. प्रस्थान कालोत्थित जलधिरवाकार वादित्र स (श) व्दा (ब्दा) वेगान्निर्ग्गच्छदद्रिप्रतिम गजघटा कोटि घंटारवाश्च। संस

१५. पंतः समंतादहमहमिकयापूरयंतो विरेमुर्नो रोदोरंघ्रभागं गिरिविवर गुरुद्यत्प्रतिध्वानमिश्राः ।। (६) दिक्च

१६. क्राक्रमयो (ग्य) मार्ग्गण गणाधाराननेकान् गुणानाच्छि न्नाननिसं (शं) दधद्विधुकला संस्पर्द्धमानद्युतीन (न्) (सू) (नु)

१७. (च्छि)न्नधनुर्ग्गुणं विजयिनोप्याजौ विजित्यो(र्ज्जि) तं जातोस्मा दभिमन्युरन्यनृपतीनामन्यमानस्तृण (१०) यस्यात्य (द्भुत)

१८. वाहवाहन महासस्त्र (शस्त्र) प्रयोगादिसु प्रावीण्य प्रविकत्थित प्रथुमति श्री भोजपृथ्वी भुजा/च्छत्रालोकनमात्रजात–

१६ भयतो दृप्तारि भग प्रदस्यास्याद्गुणवर्ण्णने त्रिभुव (ने) को लब्ध (ब्ध) वर्ण्णः प्रभुः ।।११।। तुरगखरखुराग्रोत्खात (धात्री)–

२०. समुत्थं रथगयदहिमरस्से (श्मे) र्म्मडलंयत्प्रयाणे। प्रचुरतर रजोन्याशेष तेजस्वितेजोहतमचिरत–

२१. एवा (शं) सतीवानिवारम् (१२) शरदमृतमयूखप्रैखदंसु (शु) प्रकाश (श) प्रसरदमितकीर्तिव्याप्तदिकचक्रवाल। अजनि विजय–

२२. पालः श्रीमतोस्मान्महीस (शः) स (श)मित सकल धात्रीमंडल–क्लेस (श) लेस(शः) ।।(१३) भयं यच्छचूणां त्रिदस (श) तरुणीवीक्षितरणो

२३. क्रमेणा से (शे) सा (षा)णां व्यतरदसदाप्यात्मनि सदा। सतोप्यं सन्नादादव (नि) वल यस्याधिक मतो वु (बु) धानामाश्चर्य्यं व्यतनुत–

२४. नरेन्द्रो हृदि च यः ।।(१४) तस्माद्विक (म) कारिविक्रमभर प्रारंभनि र्भ्भेदित प्रोत्तुंगाखिल वैरिवारणाघटोद्यन्मांस) कुंभ–

२५. स्थलः । श्रीमान्विक्रमसिंह भूपतिरभूदन्वर्थ नामा समं सर्व्वासा (शा) प्रसरद्विभासुरयस (शः) स्फारस्फुरत्केसर (:)।। (१५)

२६. वालस्यापि विलोक्य यस्य परिघाकारं भुजं दक्षिणं क्षीणासेस (शेष) पराश्रयास्थितिधिया वीराश्रिया संश्रितम (म्) सर्वांगेष्व (व्व)

२७. वगूहनाग्रह महंकारादडंपूर्व्विका राज्यश्रीकृ (ता)थिमस्य विमुखी सर्व्वान्यपुंकर्गत (:) ।।(१६) अत्यंतोद्दृप्तविद्विद्तिमि

२८. रमरभिदिच्छादितानी (ति) ताराचक्रे विस्वक (विश्वक) प्रकासं (शं) सकल जगद मंदावकासं (शं) दधाने। निःपर्य्यायं दिगास्यप्रसरदुरुक (राक्रां)

२६. तधात्रीधरेंद्रे यस्मिन (न्) राजांसु (शु) मालिन्यह हसति मृथैवेस (ष) कोन्त्यौंसु (शु) माली।। (१७) यद्दिग्जयेवर तुरंगखुरप्रसं–

३०. गक्षुणणावनीवलय जन्म रजोभिसर्प्पत् (त्)। विद्वेसि (षि)णां पुखरेसु (षु) तिरोहितान्यवस्तुत्करंप्रलयकालमिवादिदे–

३१. स (श)।। (१८) तस्य क्षितीस्व (श्व)रवरस्यपुरं समस्ति विस्तीर्ण्णा सो (शो) भमभितोपि (ऽपि) चडोमसंज्ञम (म्)। प्राप्तेप्सितक्रय समग्रदिगागतांगि–

३२. व्यावर्ण्यमान विपणि व्यवहारसारम (म्) ।।०।। (१६) आसीज्जायसपूर्व्विनिर्ग्गतवणिग्वंसा (शा) व (ब) राभीसु (शु) मान (न्) जासूकर (:) प्रक (टाक्षता)

३३. र्थ्यनिकर (:) श्रेस्टी (श्रेष्ठी) प्रमाधिस्टि (ष्ठि) त (तः)। सम्यग्दृस्टि (ष्टि) रभीस्ट (ष्ट) जैन (च) वणा द्वंद्वार्च्चन यो ददौ पात्री धाय (चतु) र्व्विधं (त्रि)विवु (बु) –

३४. धो दानं युत (:) श्रद्धया ।। (२०) श्रीमज्जिनेस्व (श्व)रपदांवु (बु) रुहद्विरेफो विस्फारकीर्ति (ध) वलीकृतदिग्विभाग (:)। पुत्रोस्य (ऽस्य) वैभवपदं–

३५. जयदेवनामा सीमायमान चरितोजनि सज्जनानाम (म्)।। २१ रूपेणा सी (शी) लेन कुलेन सर्व्वस्त्रीणांगुणैरप्यपरै–

३६. स्सि (श्शि) रस्सु। पदं दधानस्य वभूव भार्य्या यसो (शो) मतीति प्रथिता पृथिव्यां (याम) ११(२२) तस्यामजीजनदसावृसि (षि) दाहडाख्यौ पुत्रौप

३७. वित्र वसुराजितचारुमूर्ती। प्राच्यामिवार्क्कस (श) सि (शि) नौ समय (:) समस्त संपत्प्रसाधक जनव्यवहार हे (तू)।। (२३) प्रोन्माद्यत सकला

३८. रि कुंजरसिसिरोनिदर्दारणोद्यघसो (शो) मुक्ताभूसि (मि)तभूरभूरपिभियान्नोमार्ग्गगामी चय (:)। सोदाद्विक्रम सिंहभूप

३६. तिरतिप्रीतोयकाभ्यां युग श्रेस्ट (ष्ठः) श्रेस्टि (ष्ठि) पदं पुरेत्र परमे प्राकार सौधापणे ।।०।। (२४) आसीद्विसु (शु) द्धतरवो (बो)धचरित्र द्र

४०. स्टि (ष्टिः) नि (सेसः) (शेष) सूरिनतमस्तक धारि (ता) ज्ञ (:)। श्री लाटवागट गणोन्नत रोहणाद्रिमाणिक्यभूत चरितो गुरु देवसे–

४१ न (:) ।।(२५) सिद्धान्तो द्विविधोप्यवाधितधिया येन प्रमाणाध्व (नि) ग्रंथेसु (षु) प्रभव (:) श्रियामवगतो हस्तस्थमुक्तोपम (:)।

४२. जात (:) श्रीकुलभूस (ष) णो खिलवियद्वासोगणग्रामणी (:) सम्यग्दर्स (र्श) न सु (शु) द्ध वो (बो) ध चरणालंकारधारी ततः (:) ।।(२६) रत्नत्रया (म) रण–

४३. धारण जातसोभ (शोभ)स्तस्माद जायत स दुर्ल्लभसेन सूरि (:) सर्व्वश्रुतं समधिगम्य सहैव सम्यगात्मस्वरूप निरतो भवदिद्ध–

४४. (धी)र्य्यं (:) ।।(२७) आस्थानाधिपतौ वु (बु) धा (दवि) गुण्गो श्रीभोजदेवे नृपे सम्येस्वं (ष्वं) व (ब) रसेनपंडितसिरा (शिरो) रत्नादिसु (षु) द्यन्मदान (न्) योने–

४५. कान (न्) सतसो (शतशो) व्यजेस्ट (ष्ट) पटुतामीस्टो (ष्टो) द्यमेवादिन (:) सा (शा) स्त्रांभोनिधिपारगोभवदत (:) श्री सां (शां) ति से (षे) गुरु (:) ।।(२८) गुरुचर–

४६. णसरोजाराधनावाप्तपुण्य प्रभवदमलवु (बु) द्धि (:) सु (शु)द्धरत्नत्रयोस्मात (त्)। अप्रजनि विजयकीर्ति (:) सूक्तरत्नाव–

४७. कीर्ण्णां ज (लधि) भुवमिवैतां य (:) प्रस (श) स्तिंव्यधत्त ।।(२६) तस्मादवाप्य परमागमसारभूतं धर्म्मोपदेस (श) मधिकाधिगत–

४८. प्रवो (बो) धा (:)। लक्ष्म्यास्य (स्य) वं (बं) धुसुहृदां च समागमस्य मत्वायुस (ष) स्च (श्च) वपुसस्च (षश्च) विनस्व (श्व) रत्वं ।।(३०) प्रारब्धा (ब्धा) धर्माकांतारविदाह्र (:)–

४९. साधु दाहड (:)। सद्विवेकस्च (श्च) कूके (:) सूर्प्पट (:) सुकृते पटु (:) ।।(३१) तथा देवधरः सु (शु) द्ध (:) धर्म्मकर्म्म धुरंधर (:)। चं (द्रा) लिखि–

५०. तनाकस्व (श्च) महीचन्द्र (:) सु (शु) भार्जनात (त्) ।।(३२) गुणिन (:) क्षणनासि (शि) श्री कलादानविचक्षणा (:) अन्येपि (ऽपि) श्रावका (:) केचिद–

५१. कृतें (धन) पावका (:) ।।(३३) किं च लक्ष्मण संज्ञोमू (द) हरेवस्य (हरदेवस्य) मातुल (:)। गोस्टि (ष्ठि) को जिनभक्तस्च (श्च) सर्व्वशा (शा) स्त्र–

५२. विचक्षंणा (:) ।।(३४) श्रंगाग्रोल्लिखितांव (ब)रं वरसुधा सांद्रद्रवा पांडुरं सार्थ श्रीजिनमंदिरंभिजगदानंदप्रदं सुं–

५३. दरम (म्)। संभूयेदमकारयन्गुरुसि (शि) र (:) संचारिकेत्वं– व (ब) र प्रातेनोच्छलतेववायुविहतेर्घामादिस (श) (त्पश्य)

५४. ताम (म्) ।।०।। (३५) अथैतस्य जिनेस्व (श्व)रमंदिरस्य निस्पादन पूजन संस्काराय कालांतरस्फुटित त्रुटितप्रतीका–

५५. रार्थं च महाराजाधिराज श्री विक्रमसिंह (:) स्वपुण्यरासे (शे) रप्रतिहतप्रसरं परमोपचयं चेतसि (नि) धाय–

५६. गोर्णी प्रति विंसो (शो) पकं गोधूमगोणी चतुस्ट (ष्ट) य– वापयोग्यक्षेत्रं च महा (चक्र ग्रामभूमौ रजकद्रह पू–

५७. र्व्वदिग्भाग वाटिका वापी समन्वितां। प्रदीपमुनिजन शरीराभ्यंजनार्थं करघटि का द्वयं च दत्तवान (न्) तच्चं–

५८. द्रार्कं महाराजाधिराज श्री विक्रमसिंहोपरोधेन। व (ब) हुभिर्व्वसुधा भुजा राजभि (:) सगरादिर्भि (:)। यस्यं य–

५९. स्य पदाभूमिस्तस्य तस्य तदा फलमिति स्मृति वचनान्निमपि श्रेय (:) प्रयोजनं मन्यमानै· सकलैरपि–

६०. भाविभिर्भूमिपालै (:) प्रतिपालनीयमिति ।।०।। लिलेखो–दयराजो यां प्रस (श) स्तिं सु (शु) द्धधीरियां (माम्)। उत्कीर्ण्णवा–

६१. न (नृ) सि (शि) लाञ्छन स्तीर्ल्हणारतां सदक्षरां (राम्) ।।संवत् ११४५ भाद्रपदसुदि ३ सोमदिने।। मंगलं महाश्री(:)।।

भावार्थ

श्लोक १ पंक्ति १-२ : इस मंदिर प्रशस्ति के प्रथम श्लोक की इन पंक्तियों का अंश टूट जाने से पूरा अर्थ स्पष्ट नहीं होता है। इस श्लोक में ऋषभदेव सज्जनों का कल्याण करें कहा गया है।

श्लोक २ पंक्ति २-४ : गुण--समूह के धारी, ज्ञान--ज्योति से निज तिमिरताप के नाशक, जिन्होंने संसार में रहकर रागदि चक्र पर विजय प्राप्त की थी अथवा चक्र से जिन्होंने संसार के समस्त रागियों को (राजाओं को जीता था, जो कामोन्मत्त हाथी को भी पराजित करने के लिए सिंह थे, वे तीर्थंकर अर्थात् कामदेव शान्तिनाथ मेरे संसार--रोग--(जन्म--मरण) का नाश करें।

श्लोक ३, पं. ४-६ : हे अर्हन्त चन्द्रप्रभ! आपका चन्द्र लाञ्छन--नेत्रों से प्रौढ़ कलंक धारण किये हुए प्रत्यक्ष दिखाई देता है, जो निरंतर जड़ता को लिए हुए है और क्षीण होता है, वह चिन्ह भी आपका सामीप्य प्राप्त कर निरंतर सबको आनन्ददाता है, आप विपदाओं से हमारी रक्षा करें।

श्लोक ४, पं. ६-८ : जिसने शोक रूपी वृक्षों से व्याप्त आनन्द को तृण सम निस्सार, समझा, जिसने अपने मिथ्यात्व महाअंधकार का निवारण किया, रागादि रूपी मृगों के उपघात की जिसने वृद्धि की थी, ध्यान रूपी अग्नि से जिसने कर्म रूपी वन को भस्म कर दिया था, सन्मति जिन जयवन्त हो।

श्लोक ५, पं. ८-९ : भव्य जीव रूप कमल समूह के लिए सूर्य स्वरूप, श्रुत का अनुकूल अर्थ बताने वाले मुनि श्रेष्ठ गौतम गणधर श्री गुरु हमारे अन्तःकरण के अज्ञान--अंध ।कार को दूर करें।

श्लोक ६, पं. ९-१० : अंतरंग एवं बहिरंग लक्ष्मी से सम्पन्न जिनेन्द्र तीर्थंकर के मुख--कमल से उद्‌भूत निर्मल बोध रूप से समृद्ध सुगन्ध को पाकर जो संसार में 'पंकजवासिनी' इस नाम से विख्यात है वह श्रुतदेवता जयवन्त हो।

श्लोक ७, पं. १०-१२ : निर्मल यश से शुभ्र शिरोमणि श्री पाण्डु युवराज कच्छपघात वंश के श्रेष्ठ नृप थे। उनका यश तीनों लोकों में व्याप्त था। इनके पुत्र का नाम अर्जुन था। यह एक भयंकर, विशाल और शक्तिशाली सेना का सेनापति था, गाम्भीर्य गुण समुद्र भी इसके समान नहीं था। धनुष विद्या के चातुर्य से इसने पृथिवी को आश्चर्य में डाल दिया था।

श्लोक ८ पं. १२-१३ : यह विद्याधरदेव के कार्य का साधक था। इसने विद्याध ।देव के निमित्त एक महान युद्ध में बाण समूह से श्री राज्यपाल के कंठ की अस्थियों को छेदकर और बलपूर्वक उसे मारकर समुद्र फेन, चन्द्र मण्डल तथा मौक्तिक आभा के समान उज्जवल एवं अचल यश से समस्त तीनों लोकों को भर दिया था।

श्लोक ६, पं. १३-१५ : इसके (युद्ध के लिए) प्रस्थान करते समय उत्पन्न वाद्य-ध्वनि ऐसी प्रतीत होती थी मानो समुद्र की गर्जना हो रही है। पर्वतों के समान ऊँचे हाथियों के वेग पूर्वक निकलने, चारों ओर फैलने से (हाथियों के गले में बंधे) करोड़ों घंटों की ध्वनि और पर्वतों की गुहाओं से उत्पन्न प्रति ध्वनि में मिश्रित होकर पृथिवी और स्वर्ग के बीच सर्वत्र गूंज गई थी।

श्लोक १० पं. १५-१७ : इनसे अभिमन्यु का जन्म हुआ था। चन्द्रकान्ति से स्पर्धा करनेवाले, चारों दिशाओं में भटकनेवाले अनेक गुणों का यह निरंतर आश्रयदाता था। इसका धनुष खण्डित नहीं हुआ। इसने युद्ध में विजयी राजाओं को भी जीता था दूसरे राजाओं को वह तृण तुल्य मानता था।

श्लोक ११, पं. १७-१६ : इसके अद्भुत सैन्य संचालन और शस्त्र तथा वाहन प्रयोग की प्रवीणता की बुद्धिमान भोज राजा ने प्रशंसा की थी। इसके छत्र के अवलोकन मात्र से उत्पन्न भय से ही वैरियों का मान भंग हो जाता था। ऐसे इस राजा का पूर्ण वर्णन करने में तीनों लोकों में कौन समर्थ है?

श्लोक १२, पं. १६-२१ : इस राजा के प्रस्थान काल में घोडों के चलने से उनके तीक्ष्ण खुरों से खनित पृथिवी से उठी धूलि सूर्य मण्डल को आच्छादित कर लेती थी। इससे ऐसा प्रतिभासित होता था मानो यह भविष्यवाणी की जा रही हो कि तेजस्वियों का तेज भी अनिवार्य रूप से मन्द पड़ जानेवाला है।

श्लोक १३, पं. २१-२२ : इससे विजयपाल महान राजा का जन्म हुआ था। इसने शरद्काल से चन्द्र की किरणों के समान उज्जवल अपना यश समस्त दिशाओं में फैलाया था। इसने सम्पूर्ण पृथिवी मण्डल के दुःख दूर कर दिये थे।

श्लोक १४, पं. २२-२४ : स्वर्ग की युवतियों को देखकर सम्पूर्ण वैरियों के हृदयों में क्रमशः इसने भय भर दिया था। शत्रुओं से इसने यद्यपि कोई भूखण्ड नहीं लिया था किन्तु जिस भू-खण्ड को जीतकर इसने प्राप्त किया था वह भी इसने उन्हें कभी नहीं दिया था। विद्वान भी इसके क्रियाकलापों से आश्चर्य में पड़ गये थे।

श्लोक १५, पं. २४-२५ : इससे प्रसिद्ध राजा विक्रमसिंह हुए थे। समस्त शत्रुओं के ऊँचे गज-कुम्भस्थलों का मांस विदीर्ण करने में सिंह स्वरूप होने से महान पराक्रमी यह राजा सार्थक नामधारी था। इसका दैदीप्यमान यश समस्त दिशाओं में फैल गया था।

श्लोक १६, पं. २६-२७ : वाल्यावस्था के होने पर भी वीरश्री ने अन्य आश्रयस्थलों को क्षीण समझकर इसकी परिघाकार दाईं भुजा का आश्रय लिया था। इसी प्रकार राज्यश्री ने अन्य सर्व पुरुषों से विमुख होकर सगर्व इसके सर्वाङ्ग को अपनाया था।

श्लोक १७, पं. २७-२६ : अत्यंत अभिमानी शत्रुरूपी आच्छादित अन्धकार का भेदन करनेवाला, तारावली के समान अनीतिमार्ग से चलनेवालों का आच्छादक, सम्पूर्ण जगत का प्रकाशक और सम्पूर्ण पृथिवी तथा पर्वत रूपी राजाओं तक अपनी सर्वोच्चता की सूचक यश रूप किरणों को फैलाने से यह सूर्य स्वरूप था। यह दूसरा कौन सूर्य है? सूर्य इस प्रकार व्यर्थ इस पर हँसता है।

श्लोक १८, पं. २६-३१ : दिग्विजय के समय घोड़ों के तीक्ष्ण खुरों के अग्रभाग से खनित पृथिवी से उद्भूत धूलि के वैरियो के नगरों में फैलकर वस्तुओं को आच्छादित करने से प्रलयकाल की निकटता प्रतीत होती थी।

श्लोक १९, पं. ३१-३२ : इस राजा का चडोभ संज्ञक नगर था। इस नगर की शोभा चारों ओर फैली थी। यहाँ के बाजार में समस्त दिशाओं से अपनी इच्छित वस्तुएँ खरीदने और बेचने के लिए मनुष्य आते थे।

श्लोक २०, पं. ३३-३४ : इस नगर में जायसपुर से निकला वणिक वंश का सूर्य, धन का भण्डार, जासूक नामक सेठ रहता था। वह सम्यग्द्रष्टि था। उसने श्रद्धा पूर्वक अपने अभीष्ट जैन देव शास्त्र और गुरु के चरण युगल की अर्चा में साधु–समुदाय के लिए चतुर्विध दान दिया था।

श्लोक २१ पं. ३४-३५ : इसका जयदेव नामक पुत्र था। वह श्री जिनेन्द्र के चरणकमलों के लिए भ्रमर स्वरूप था। उसकी निर्मल कीर्ति से दिशाएँ शुभ्र हो रही थीं। वह वैभवशाली था। उसने सज्जनों का उत्तम चरित्र धारण किया था।

श्लोक २२, पं. ३५-३६ : पृथिवी में प्रसिद्ध उसकी यशोमती नाम की पत्नी हुई। वह रूप, शील, कुल और अन्य गुणों से समस्त स्त्रियों में प्रधान थी।

श्लोक २३, पं. ३६-३७ : इसने पूर्व दिशा में उदित हुए सूर्य–चन्द्र तुल्य, धन से विभूषित, सुंदर मूर्ति, समस्त लौकिक व्यवहार के कारण स्वरूप ऋषि और दाहड नाम के दो पुत्र उत्पन्न किये थे।

श्लोक २४, पं. ३७-३९ : समस्त शत्रु रूपी हाथियों के सिर दलन से उत्पन्न यशरूपी मोतियों से विभूषित, नीति मार्गगामी विक्रमसिंह राजा ने अति प्रेम वश दोनों भाइयों को नगर के परकोटे के भीतर राजमहल में संसार में श्रेष्ठ श्रेष्ठी पद दिया था।

श्लोक २५, पं. ३९-४१ : देवसेन लाटवागट गण के उन्नत अद्रि स्वरूप गुरु थे। माणिक्य के समान उनका उत्तम चारित्र था। निर्मल दर्शन–ज्ञान और चारित्र के धारी समस्त आचार्य नतमस्तक होकर उनकी आज्ञा मानते थे।

श्लोक २६, पं. ४१-४२ : इनके शिष्य कुलभूषण थे। इन्होंने आगम में कहे गये निश्चय–व्यवहार रूप से दोनों सिद्धांतों को प्रमाण और नय से जाना था। मुक्ति लक्ष्मी तो मानो इन्हें हस्तगत थी। अखिल निर्ग्रन्थ साधू समूह के नेता और सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक् चारित्र रूपी अलंकारधारी थे।

श्लोक २७, पं. ४२-४४ : इनके शिष्य दुर्लभसेन सूरि थे। ये रत्नलय रूपी अलंकार धारण करने से हुई शोभा से उत्पन्न, सम्पूर्ण श्रुत के पारगामी, आत्मस्वरूप में मग्न और महान् धैर्यवन्त थे।

श्लोक २८, पं. ४४-४५ : इनके शिष्य मुनि शान्तिषेण थे। इन्होंने विद्वानों के स्वामी गुणी राजा भोज की सभा में पटुता से सैकड़ों वादियों को पराजित करनेवाले पंडित रत्न अम्बरसेन से वाद–विवाद कर वादियों का मद चूर–चूर किया था। ये शास्त्र रूपी सागर की निधियों के पारगामी हुए थे।

श्लोक २९, पं. ४५-४७ : इनके शिष्य विजयकीर्ति थे। ये इस संसार में उसी प्रकार उत्पन्न हुए थे, जैसे समुद्र की सीप से मोती उत्पन्न होता है। गुरु के चरणकमलों की आराधना से प्राप्त पुण्य के प्रभाव से ये निर्मलबुद्धि और शुद्ध रत्नत्रयधारी थे। इस प्रशस्ति का निर्माण इन्हीं मुनि ने किया था।

श्लोक ३०, पं. ४७-४८ : इनसे आगम का सारभूत धर्मोपदेश सुनकर प्रबोध को प्राप्त हुए (इस मंदिर के निर्माताओं) ने लक्ष्मी, बन्धु, मित्र, आयु और शरीर को नाशवान् मानकर–

श्लोक ३१-३२ पं. ४८-५० : धर्म रूपी वन के रक्षक शाह दाहड़, सज्जन,–विवेकी कूकेक, धार्मिक कार्य करने में चतुर सूर्पट तथा निर्मल धार्मिक कार्य करने में धुरन्धर देवधर और न्यायोपार्जित धन से महीचन्द्र ने इस मंदिर के निर्माण कार्य का शुभारंभ किया था ।।३१–३२।।

श्लोक ३३ पं. ५०-५१ : अन्य गुणी विद्वान श्रावकों ने अग्नि में ईंधन के समान अपनी क्षणभंगुर लक्ष्मी और कलाओं को दान में देकर इस कार्य को बढ़ाया था।

श्लोक ३४, पं. ५१-५२ : हरदेव के मामा, सर्व शास्त्रों के ज्ञाता, जिनेन्द्र के परमभक्त और नगर सभा के सभासद लक्ष्मण ने भी सहयोग किया था।

श्लोक ३५, पं. ५२-५४ : इन सबने मिलकर देखो ऐसा जिन मन्दिर बनवाया था जिसका अग्रभाग–शिखर गगनचुम्बी था, सफेदी से अतिशुभ्र किया गया था तीनों लोकों को आनन्दकारी और सुंदर तथा श्रेष्ठ था। आकाश में वायु से उड़ती हुई मंदिर की ध्वजा ऐसी प्रतीत होती थी कि मानो विजय पताका फहरा रही हो।

गद्यभाग- पं. ५४-६१ : इस जिनमन्दिर की पूजन व्यवस्था तथा कालान्तर मे इसके टूटने फूटने की मरम्मत के लिए महाराजाधिराज विक्रमसिंह ने (द्रौणमाप के समकक्ष) एक गोणी (अनाज) पर विंशोपक नामक कर लगाया था, महाचक्र ग्राम में चार गोणी गेहूं बोये जा सकने योग्य खेत और रजकद्रह सरोवर की पूर्व दिशा में बावली से युक्त एक उद्यान तथा दीपक जलाने और मुनिजनों को शरीर में लगाने दो करघटिका माप का तैल दिया था। राजा विक्रमसिंह के अनुरोध से– "सगर आदि अनेक राजाओं के द्वारा इस पृथिवी का उपभोग किया गया। जिस जिसकी जैसी भूमिका रही वैसा वैसा उसे फल प्राप्त होता है" इस स्मृति के वचन से अपने कल्याण का प्रयोजन मानते हुए भविष्य में होने वाले सभी राजा जब तक सूर्य–चन्द्र हैं तब तक इस दान की रक्षा करें। यह प्रशस्ति शुद्धबुद्धि उदयराज ने लिखी और तील्हण ने सुंदर अक्षरों में शिलाखण्ड पर सम्वत् ११४५ भाद्रपाद सुदि तृतीया सोमवार के दिन उत्कीर्ण की थी। प्रशस्ति का अंत मंगलं महाश्री (:) से हुआ है।

पाठ टिप्पणी

१. प्रशस्ति में 'ब' वर्ण के स्थान में 'व' वर्ण का व्यवहार हुआ है।

२. अवग्रह कहीं नहीं दर्शाया गया है।

३. प्रशस्ति के विषय वर्णन में एक विषय की समाप्ति पर दो–दो पूर्ण विराम चिह्नों के मध्य एक शून्य दर्शाया गया है।

४. अनुस्वार और रेफ युक्त संयुक्त अक्षर अन्य अभिलेखों के समान व्यवहृत हुए हैं।

अभिलेख परिचय

ग्वालियर संग्रहालय में संगृहीत, संस्कृत भाषा और नागरी लिपि में इकसठ पंक्तियों में निबद्ध यह अभिलेख ग्वालियर से दक्षिण–पश्चिम में सत्तर मील दूर घनघोर जंगल में कुनु नामक नदी के किनारे एक फुट साढ़े तीन इंच चौड़े और तीन फुट ऊँचे शिलाखण्ड पर मिला था। इसे प्रशस्ति कहा गया।[1]

यह प्रशास्ति पद्य और गद्य दोनों साहित्यिक विधाओं में निर्मित है। पहली से त्रेपनवीं पंक्ति तक पद्य भाग और चौवन से इकसठवीं पंक्ति तक गद्य भाग है। पद्य भाग में पैंतीस श्लोक हैं। इन श्लोक में सात छन्द व्यवहृत हुए हैं। १, २, ३, ४, ७, ८, १०, ११, १५, १६, २०, २४, २६, २८ और ३५ में शार्दूलविक्रीडित, ५, ३१, ३२, ३३, ३४ में अनुष्टुप ६, १८, १६, २१, २३, २५, २७, ३० में वसन्ततिलका, ६ और १७ में स्त्रग्धरा, १२, १३, २६ में मालिनी, १४ में शिखरिणी तथा २२वें पद्य में उपजाति छन्द हैं। यह अभिलेख चम्पूकाव्य का सुंदर उदाहरण है।

यहाँ से प्राप्त जैन प्रतिमाओं में एक चन्द्रप्रभ तीर्थंकर की प्रतिमा का भी उल्लेख है जिस पर चन्द्रप्रभ नाम अंकित है।[2]

इस उल्लेख से ऐसा प्रतीत होता है कि यह प्रतिमा इस मंदिर में विराजमान रही है। प्रशस्ति में ऋषभदेव, शान्तिनाथ, चन्द्रप्रभ और महावीर तीर्थंकरों के स्तवन किये जाने से इन प्रतिमाओं के मंदिर में प्रतिष्ठित होने का स्पष्ट संकेत किया गया है।

प्रशस्ति में जिस जैन मंदिर का उल्लेख आया है वह 'चडोभ' नामक नगर में निर्मित हुआ था। राजा विक्रमसिंह यहाँ के राजा थे। पं. विजमूर्ति का अनुमान है कि यह चडोभ वर्तमान दूबकुण्ड ही होना चाहिए।[3] कहा जाता है कि किसी राजा ने इस मंदिर को तोड़ डाला था तथा मन्दिर में विराजमान प्रतिमाओं को तालाब में डुबा दिया था। मूर्तियों को डुबाये जाने के कारण ग्रामवासी इस सरोवर और ग्राम को 'डूबकुण्ड' कहने लगे थे। यह मंदिर भी यहीं होना चाहिए। कहा जाता है कि यह मंदिर दोवाशाह और भीमशाह जैन श्रावकों ने बनवाया था।[4]

इन किंवदन्तियों के परिप्रेक्ष्य में यह संभावना उदित होती है कि डूबकुण्ड कालान्तर में दूबकुण्ड हो गया जो 'ड' और 'द' के कारण ऐसा संभव है। तथा मंदिर नष्ट हो गया। चडोभ का यह नाम कब से आरंभ हुआ तथा नगर का चडोभ नाम क्यों रखा गया, यह अन्वेषणीय है। दोवाशाह को इस प्रशस्ति में उल्लिखित इस मंदिर के निर्माता साधु दाहड से समीकृत किया जा सकता है। दोवा और भीमा की भांति दाहड और ऋषि भी दो भाई थे और दोनों शाह थे। अभिलेख में आया 'साधु' पद शाह के अर्थ में व्यवहृत हुआ प्रतीत होता है। दाहड श्रावक था। दाहड ही दोवा नाम से उत्तर काल में प्रसिद्ध हुआ है तथा

दाहड द्वारा प्रतिष्ठापित मूर्तियों के कुण्ड में डुबाये जाने से दोबाकुण्ड या दूबकुण्ड कहा गया होगा।

संदर्भ

1 एपिग्राफिका इण्डिका जिल्द 2, ले.स 18, पृ 232–240।

2 डॉ नेमीचन्द्र शास्त्री, जैनसिद्धान्त भास्कर भाग 15, कि 1 पृ 60।

3 जैनशिलालेख सग्रह, भाग 2, पृ 347।

4 डॉ नेमिचन्द्र शास्त्री जैनसिद्धात भास्कर, भाग 15, किरण, 1 पृ 60।

अभिलेख - 38

छतरपुर, चन्द्रप्रभ प्रतिमालेख, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

स (सवत्) ११४७ कलश वर्ष एक सर ३ वायाराज।[1]

पाठ टिप्पणी

कलश वर्ष

प्रस्तुत लेख मे कलश वर्ष का उल्लेख विचारणीय है। इसकी स्थापना कब, किसके द्वारा हुई आदि प्रश्न इससे जुडे हैं। अभिलेख वाचक विद्वान, ने प्रतिमा–प्रतिष्ठा के समय होने वाले मदिर कलशारोहण महोत्सव वर्ष को कलशवर्ष के रूप मे उल्लेख किये जाने का अनुमान लगाया है।[2]

जैन इतिहास मे 'कलश' नाम के एक श्वेताम्बर साधु का नामोल्लेख मिलता है। दर्शनसार के कर्ता श्री देवसेन सूरि के कथनानुसार उन्होंने वि. स. २०५ मे यापनीय सघ की स्थापना की थी। यह समय प. कैलाशचन्द्र शास्त्री ने दिगम्बर श्वेताम्बर भेद की उत्पत्ति से लगभग ७० वर्ष बाद का अनुमानित किया है।[3]

इस उल्लेख के परिप्रेक्ष्य में 'कलश वर्ष' यापनीय सघ की स्थापना वर्ष की स्मृति मे चलाया गया सवत् ज्ञात होता है। कलश वर्ष के ठीक पश्चात एक सर ३ वायाराज दर्शाये गये मूलपाठ से प्रतीत होता कि एक और सर के मध्य कुछ वर्ण और रहे हैं। मेरे अनुमान से 'एक सर' न होकर वह सक (शक) सवत्सर होना चाहिए। यह भी संभावना है कि 'सर ३ वायाराज' मूलपाठ के स्थान मे मास मूलपाठ पक्ष और तिथि तथा दिन का या बइसाष का उल्लेख रहा हो। "सर ३ वायाराज" के स्थान में सुदि ३ वयसाष या वइसाब (विशाख) गुरौ या खौ मूलपाठ मे होने की अधिक संभावना है। वर्ष के स्थान में वर्षे या बरसे रहा होगा, इसी प्रकार कलश के स्थान में कलस।

समय-गणना

लेख में उल्लिखित सक शब्द संभवतः शक संमत् का सूचक है। यहाँ विक्रम संवत् का व्यवहार नहीं हुआ है। शक संवत्-विक्रम संवत् के १३५ वर्ष पश्चात आरंभ हुआ था। अतः यह लेख वि.सं. १२८२ का ज्ञात होता है।

भावार्थ

पाठ टिप्पणी के पश्चात् निष्कर्ष रूप में यही अर्थ निकलता है कि शक संवत् ११४७वें कलश वर्ष में वैशाख सुदि ३ गुरुवार या रविवार के दिन इस चन्द्रप्रभ प्रतिमा की प्रतिष्ठा हुई।

प्रतिष्ठात्मक प्रश्न

यह प्रतिष्ठा 'कलश' नामक यापनीय साधु के किसी शिष्य द्वारा या शिष्य के आदेश से सम्पन्न हुई ज्ञात होती हैं। छतरपुर में उस समय इस संघ का संभवतः प्रभाव रहा हैं। दिगम्बर साधुओं के समान नग्न रहने, मयूर पिच्छी रखने, हाथ में ग्रास लेकर भोजन करने, नग्न मूर्तियों को पूजने आदि से[4] दिगम्बर आम्नाय में उन्हें उस समय दिगम्बर साधुओं के समान ही संभवतः सम्मान मिला है। इस प्रतिष्ठा में इन साधुओं के योगदान में भी यही कारण रहा ज्ञात होता हैं।

संदर्भ

1. *श्री कमलकुमार जैन, जिनमूर्ति प्रशस्तिलेख. श्री दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर, छतरपुर म.प्र. ईसवी 1982 प्रकाशन, लेख 169, पृष्ठ 48।*
2. *वहीं, जैन इतिहास के रचित मूर्तिलेख, पृष्ठ 11।*
3. *स्व प. कैलाशचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री, दक्षिण भारत में जैन धर्म: भारतीय ज्ञानपीठ ईसवी 1967 प्रकाशन, पृ. 178।*
4. *वहीं, पृ 178।*

अभिलेख - ३५

बहोरीवन्द, शान्तिनाथ प्रतिमालेख, ईसवी ११२५, भाषा-संस्कृत, लिपि-नगरी

मूलपाठ

(श्री कनिंघम द्वारा पठित)

१. संवत् १०......फाल्गुन वदि ६ सोमे, श्रीमद् गयाकर्ण्णदेव विजय रा-

२. ज्य (ज्ये) राष्ट्रकूट कुलोद्भव महासामंताधिपति श्रीमद् गोल्हणदेवस्य प्रवर्द्धमानस्य
३. श्रीमद् गोल्लपृथी......माया (आगे अपठनीय)[1]

(श्री मिराशी द्वारा पठित पाठ)

१. स्वस्ति......(व) दि ६ (भौ) मे श्रीमद् गयाकर्ण्णदेव विजय रा–
२. ज्ये राष्ट्रकूट कुलोद्भव महासामंताधिपति श्रीमद् गोल्हणदेवस्य प्रवर्द्धमानस्य।।
३. श्रीमद् गोल्लापूर्व्वाम्नाये वेल्लप्रभाटिकाया मुरुकृताम्नाये तर्क तार्किर्कि चूणामणि श्रीमान्
४. माधव नंदिनानुगृहीतः तस्साधु श्री सर्व्वधरः तस्य पुत्र (त्रो) महा– (भो) ज (जो) धर्म्मदानाध्ययन(ने)रतः तेनेदं का–
५. रितं रम्यं सां (शां) तिनाथस्य मंदिरं (रम्)।। स्वलात्यम् संज्ञक (सर्ज्जक) सूत्रधारः स्रेष्टि (श्रेष्ठि) नामा वि–(ता) नं च महास्वे (श्वे)–
६. तं निर्मित मतिसुंदरं (रम्) ।।१।। श्रीमच्चन्द्रकराचार्य्यामनाय देसी (शी)–ग– (णा)न्वये समस्त विद्या विनये (या) नंदित
७. विद्व – (ज्ज) नाः प्रतिस्टा (ष्ठा) चार्य्य श्रीमत् सुभद्राश्चिरं जयंतु।।[2]

भावार्थ

संवत् १०..... फाल्गुन वदी ६ सोम या भौम को–विख्यात गयाकर्णदेव के विजयराज्य में राष्ट्रकूट वंश में उत्पन्न जब महासमन्ताधिपति श्रीमान गोल्हणदेव का अधिक प्रभाव बढ़ रहा था तब बेल्लप्रभाटिका नाम की नगरी में गुरु कृत विस्तृत आम्नाय में तार्किकों में श्रेष्ठ श्रीमान माधवनन्दि से अनुगृहीत (उपकृत) साधु श्री सर्वधर के पुत्र–धर्म, दान और अध्ययन में रत महाभोज के द्वारा शान्तिनाथ मंदिर का निर्माण कराया गया। श्रेष्ठी नामक निर्माण कार्य करनेवाले सुजाति के सूत्रधार (मिस्त्री) ने अति श्वेत और अति सुन्दर, इस मंदिर का निर्माण किया। श्रीमान् आचार्य चन्द्रकर की आम्नाय और देशीगण अन्वय में होनेवाले सभी विद्याओं और विनय से विभूषित, विद्वज्जनों को आनन्दित करनेवाले इस मंदिर की प्रतिष्ठा करानेवाले प्रतिष्ठाचार्य श्री सुभद्र चिरकाल तक जयवंत हों।

व्याख्या

महासामन्त

कलचुरी शासन में जैसे अपनी महानता प्रदर्शन करने हेतु पदाधिकारियों के पदों के आगे महा उपसर्ग का प्रयोग होता रहा है। पदाधिकारियों में महादेवी, महाराज, महामंत्री, महामात्य, महासामन्त, महापुरोहित, महाप्रतिहार, महाक्षपटलिक, महाप्रभाग, महाश्वसाधनिक, महाभाण्डारिक जैसे नाम विख्यात रहे है।[1] राष्ट्रकूट कुल में ऐसा ही महासामन्ताधिपति पद रहा है। महासामन्त–सेना के अधिपति होते थे और महासामन्तों का अधिपति महासान्ताधिपति।

गोल्हणदेव

श्रवणवेलगोल की चन्द्रगिरि से उपलब्ध एक लेख में मूलसंघ नन्दिगण के प्रभेद रूप देशीगण के गोल्लदेशाधिप किन्हीं गोल्लाचार्य मुनि का नामोल्लेख हुआ है।[४]

प्रस्तुत लेख में उल्लिखित महासामंताधिपति गोल्हणदेव को गोल्लदेशाधिप गोल्लाचार्य होने का अनुमान भी लगाया गया है किन्तु गोल्लाचार्य को नूत्नचंदिल नरेश भी लेख में कहा गया है।[५] अतः गोल्हणदेव राष्ट्रकूट कुलोद्भव होने का उनका गोल्लदेशाधिप होने का अनुमान करना तर्कसंगत नहीं प्रतीत होता है।

गुरुकृताम्नाय

इस पद के संबंध में स्व. फूलचंद सिद्धान्तशास्त्री का अभिमत है कि 'मुरु' शब्द अर्थ गर्भ हो सकता है। मौर्यवंश के राजा चन्द्रगुप्त जैन थे। वे मुनि होकर अंतिम श्रुतकेवली भद्रबाहु के साथ दक्षिण चले गये थे। उनके साथ मौर्यवंश के कुछ सद्गृहस्थ भी गये हों और उन्हीं की संतानों के नाम पर वहाँ मुरुवंश की स्थापना हुई हो तो कोई आश्चर्य नहीं।[६]

प्रस्तुत लेख में इस पद के पहले गोलापूर्वामान्य और उसके बाद यह पद आया है। संभवतः अधिक घिस जाने से वर्ण समझने में भ्रान्ति हुई है। मुरु के म वर्ण के स्थान में संभवतः ग वर्ण रहा है और यह पूरा पद गुरुकृताम्नाय, जिसका अर्थ है गुरु द्वारा अंगीकृत आम्नाय। इस पद के पूर्व गोलापूर्व आम्नाय का नामोल्लेख हुआ है तथा पश्चात् माधवनन्दि और उनसे उपकृत साधु सर्वधर एवं उसके पुत्र महाभोज का नाम आया है। इससे स्पष्ट है कि माधवनन्दि महाभोज के पिता साधु सर्वधर के गुरु थे तथा वे गोलापूर्व आम्नाय के थे। संभवतः मुरुकृताम्नाय का शुद्ध पाठ गुरुकृताम्नाय है। लेख संख्या १६६ में गुरुवर्यवरान्वय मूलपाठ में प्राप्त होता है।

स्वलात्यम

श्री मिराशी ने इस शब्द का अर्थ करने में अपनी असमर्थता प्रकट की है।[७] पं. फूलचन्द्र सिद्धान्त शास्त्री ने स्वलात्य को स्वलास्य समझा है और उसे संजक सूत्रधार का नाम होने का अनुमान लगाया है[८] किन्तु आगे श्रेष्ठि के पश्चात् नाम शब्द आने से सिद्धान्तशास्त्री का अनुमान तर्कसंगत प्रतीत नहीं होता।

संभवतः स्वलात्यम् के स्थान में स्वजात्यम् शब्द रहा है, जिसका एक अर्थ है अपनी जाति। अर्थात् मंदिर निर्माता महाभोज की जाति गोलापूर्वाम्नाय। दूसरा अर्थ है सुजाति। वर्ण विभाजन के अंतर्गत चौथा वर्ण है शूद्र। ये दो प्रकार के होते हैं स्पृश्य और अस्पृश्य। मंदिर और मूर्तियों के निर्माण में आदि से अंत तक पवित्रता का विचार किया जाता रहा है। इस दृष्टि को ध्यान में रखते हुए मंदिर निर्माण करने वाला श्रेष्ठी नाम का सूत्रधार (मिस्त्री) संभवतः स्पृश्य—सुजाति का था।

संज्जक

प्रतिमा लेखों में वर्ण का द्वित्व रूप रेफ के संयोग में मिलता है। इस शब्द में संभवतः रेफ रही है। पत्थर घिस जाने से वह अपठनीय हो गई। शुद्ध रूप से 'सज्जर्क' रहा प्रतीत

होता है, जिसका यहा अर्थ है निर्माण कार्य करने वाला। इस प्रकार "स्वजात्यम् सर्ज्जक सूत्रधार: श्रेष्ठि नाम' का अर्थ निकलता है– 'निर्माण कार्य करने वाला श्रेष्ठी नाम का सूत्रधार (मिस्त्री) सुजाति का था।

वेल्लप्रभाटिका

प्रस्तुत प्रतिमालेख में गोलापूर्व आम्नाय में हुए महान तार्किक माधवनन्दि परम भक्त साधु सर्वधर के पुत्र महाभोज के द्वारा यहाँ शान्तिनाथ मंदिर बनवाया गया था। यह नगरी थी या उद्यान लेख में स्पष्ट नहीं किया गया है। इस नाम का आज बहोरीबन्द के निकट कोई ग्राम नहीं है। अतः अनुमानतः यह स्थल विल्ववृक्षोवाली कोई वाटिका थी। वेल्लप्रभाटिका में संभवतः भ के स्थान में 'व' रहा है।

यह शब्द स्थान सूचक न होकर काल सूचक प्रतीत होता है। अंग्रेजी से हिन्दी रूपान्तरण में यह शब्द वेल्लप्रभातिकायां रहा है जिसे संपादकों ने वेल्लप्रभाटिकायां समझा है। इसकी प्रतिष्ठा बहोरीबन्द में प्रभातवेला में सम्पन्न हुई ज्ञात होती है। संभवतः स्थान का नाम नहीं बताया है। अपितु इस शब्द से प्रतिष्ठा–वेला दर्शाई गई है।

प्रतिमा-परिचय

यह प्रतिमा कायोत्सर्ग मुद्रा में स्लेटी पाषाण से उत्कीर्णित है पाषाण फलक १३ फुट ६ इंच ऊँचा और ६ फुट १० इंच चौड़ा है। नख से सिर तक प्रतिमा की अवगाहना कनिंघम के अनुसार १२ फुट २ इंच और चौड़ाई ३ फुट १० इंच है। प्रतिमा के केश घुघराले और वर्तुलाकार पाँच हिस्सों में ऊपर की ओर उठे हुए (बंधे) दर्शाये गये हैं। वक्षस्थल पर श्रीवत्स चिह्न अंकित है।

परिकर का ऊपरी भाग नहीं है। शेष अंश में प्रतिमा की दोनों ओर एक–एक उडते हुए मालाधारी देव और हाथों के नीचे चमरवाही देव सेवारत खड़े अंकित किये गये हैं। इनके नीचे दोनों ओर एक–एक उपासक हाथ जोड़े दर्शाये गये हैं। इनके एक–एक पैर के घुटने भूमि पर टिके हुए हैं और दूसरे पैर कुछ मुड़े हुए हैं ये आभूषण धारण किये हैं। इनके नीचे आसन पर ७ पंक्ति का लेख उत्कीर्ण है। लेख के नीचे मध्य भाग में चिह्न स्वरूप दो हरिण पास पास ऐसे अंकित किये गये हैं मानो वे परस्पर कुछ कह रहे हो। हरिणों की दोनों सामने की ओर मुख किये एक–एक सिंह अलंकरण स्वरूप अंकित किया गया है।

समय

सर्वप्रथम यह प्रतिमालेख श्री कनिंघम द्वारा पढ़ा गया था। उन्होंने संवत् सूचक दो अंकों में १०.....पढ़ा था। उनके पश्चात् डॉ. भण्डारकर और श्री गिराशी ने पढ़ा किन्तु वे संवत् सूचक अंक ज्ञात नहीं कर सके। वह अंश खण्डित हो गया।

लेख में गयाकर्णदेव राजा का नामोल्लेख मिलता है। वे कलचुरि राजा यशःकर्णदेव के पुत्र थे। इस संबंध में तेवर से प्राप्त कलचुरि संवत् ६०२ का अभिलेख उल्लेखनीय है। इसमें न केवल गयाकर्णदेव के पिता यशःकर्णदेव का नाम आया है। अपितु यशःकर्णदेव के पिता कर्णदेव का भी नामोल्लेख किया गया है।[10] गयाकर्ण्णदेव के इस शिलालेख से

ज्ञात होता है कि वे ईसवी ११५१ में राज्य संचालन कर रहे थे।

इसकी रानी का नाम अल्हणदेवी और इसके पुत्र का नाम नरसिंहदेव था। इस रानी ने अपनी वैधव्यावस्था में भेड़ाघाट में एक शिव मंदिर, मठ और व्याख्यान शाला निर्मित कराई थी। भेड़ा घाट से प्राप्त कलचुरि संवत् ६०७ के सिलालेख, से प्रकट होता है कि ईसवी ११५६ के पूर्व गयाकर्णदेव का देहान्त हो गया था और नरसिंह राज्य करने लगे थे।[11]

गयाकर्ण्देव के कलचुरि संवत् ६०२ के तेवर शिलालेख से यह भी ज्ञात होता है कि उसका युवराज पुत्र नरसिंह देव राजकाज में गयाकर्णदेव का सहयोग करने लगा था।[12] श्री यशःकर्णदेव का ईसवी ११२२ का एक अभिलेख जबलपुर से भी मिला है जिसमें दिन का नाम सोमवार बताया गया है। यह दिन काल गणना करने पर ईसवी ११२२ के २५ दिसम्बर को प्राप्त होता है।[13] अतः ज्ञात होता है कि ईसवी ११२२ में गयाकर्ण्णदेव ने राज्यभार सम्हाल लिया था।

इन उल्लेखों के परिप्रेक्ष्य में कहा जा सकता है कि गोल्हणदेव को उत्तराधिकार के रूप में राज्य बारहवीं शताब्दी के प्रथम चरण मे प्राप्त हो गया था और ईस्वी ११५१ तक वे निरावाध शासन करते रहे। ईसवी ११५६ के उसकी विधवा पत्नी अल्हणदेवी के भेडाघाट शिलालेख से ज्ञात होता है कि ईसवी ११५६ के पूर्व वह काल कवलित हो गया था। कहते है एक अभियान के समय यह राजा हाथी पर सवार था। उसका हार एक वृक्ष की शाखा में ऐसा उलझ गया था कि वह जब तक सुलझाया गया उसके पूर्व राजा का गला घुट गया और उसकी मृत्यु हो गई।[14]

इस प्रकार गयाकर्ण्णदेव का अंतिम शिलालेख चेदि संवत् ६०२ ई. ११५१ का प्राप्त होने से शातिनाथ प्रतिमालेख का समय शक संवत् मे उत्कीर्ण किया गया प्रतीत होता है, जिसका आरम्भ ईसवी से ७७ वर्ष ५ माह बाद आरंभ हुआ था।[15] अत. कनिघम के अनुसार इस प्रतिमालेख का समय शक संवत् १०२० से १०४७ के मध्य का निर्णय किया जाना तर्क संगत प्रतीत होता है।[16]

प्राप्तिस्थल बहोरीबन्द

यह कैमूर पहाड़ी के तले समतल भूमि पर जबलपुर से उत्तर की ओर ३२ मील दूर है। सेण्ट्रल रेलवे लाइन पर कटनी जबलपुर के बीच सिहोरा रेलवे स्टेशन से २४ किलोमीटर दूर सिहोरा दमोह रोड पर है।

कनिंघम ने बहुरीबन्द का अर्थ बहुबांध निकाला था। उन्हे इस क्षेत्र में ऐसे ४५ जलाशय नक्शे में प्राप्त हुए थे जिनमें जल संगृहीत होता था। प्रसिद्ध ग्रीक इतिहासकार पटौलमी ने इसका नाम 'थोलवन' लिखा है। जनश्रुति के अनुसार यह एक बड़ा नगर था। इस नगर का कोई आकार नहीं था और न कोई प्रवेशद्वार थे।[17]

इस नगर के चारों ओर जैन, बौद्ध और वैद्विक संस्कृति के अवशेष विद्यमान हैं। इस ग्राम से उत्तर की ओर दो मील दूर तिगवां ग्राम में गुप्तकालीन एक मंदिर है। समीप ही रूपनाथ नामक स्थान है जहाँ राम, लक्ष्मण और सीताकुण्ड, महादेव का मंदिर तथा

प्रसिद्ध अशोक का शिलालेख संरक्षित है। ग्राम के पास तालाब के किनारे उपलब्ध पुरातात्विक सामग्री से नगर की विशालता का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है।

नगरों के नाम किन्हीं घटनाओं या नगर की विशेषताओं पर आश्रित रहे हैं। ग्रीक इतिहासकार टौलमी (पटौलमी) द्वारा बताया गया इस नगर का थोलवन नाम इस संबंध में विचारणीय है। इस नाम में थोल पूर्वपद और वन उत्तरपद है। थोल का अर्थ थोड़ा (अपर्याप्त) होता है और वन का अर्थ जल। नगर में कभी पानी का संकट रहा है। जब तक यह संकट बना रहा नगर का नाम थोलवन रहा किन्तु जब नगर के चारों ओर बांध बांधे गये। पानी बांधों में संगृहीत किया गया और जब पानी बहुरकर (लौटकर) बांधों में बन्द होने लगा तब नगर का नाम परिवर्तित हुआ। 'थोलवन' कोही 'बहुरिबन्द' कहा जाने लगा।

नगर के नामकरण में एक संभावना यह भी प्रतीत होती है कि कभी यहाँ सघन वन था। थोल का अर्थ स्थूल–सघन रहा है। वन की सघनता के कारण इसे 'थोलवन' कहा गया होगा। कालांतर में इस वन के बहेड़ वृक्षों की बहुलता रही होगी। और इसे 'बहेरवन' कहा जाता रहा है। बहेरवन के अपभ्रंश रूप ही 'बहोरीवन' या बहोरीबन्द नाम ज्ञात होते हैं।

प्रतिमा की पूर्वमान्यताएँ

अशिक्षा के कारण ग्रामीण जन रूढियों और अन्धविश्वासों के श्रद्धालु रहे हैं। बहोरीबन्द क्षेत्र भी संभवत: इससे अछूता नहीं रहा है। यहाँ के निवासी इस प्रतिमा को 'खनुवादेव' के नाम से पूजते थे। जब कभी इकतरा, तिजारी, चौथिया आदि ज्वर या सिर दर्द जैसी बीमारियाँ होती लोग आकर इस प्रतिमा को जूते और झाडू मारते थे। उन्हें विश्वास था कि ऐसा करने से रोग मिट जाते हैं।[५]

कहा जाता है कि गयाकर्णदेव के पुत्र का नाम 'कुनुआदेव' था। यहाँ एक समाधि स्तम्भ पर– "महाराज पुत्र श्री कनुआदेव" लेख भी उत्कीर्ण बताया गया है।[६] यह समाधि स्थल एक तालाब के किनारे निर्मित है। इससे प्रतीत होता है कि प्रतिमा का निर्माण राजकुमार कुनुआदेव के जन्मोत्सव के समय में हुआ और इसके पश्चात मंदिर का निर्माण गोलापूर्व श्रावकों ने कराया। कुनुआदेव के जन्मोत्सव पर निर्मित होने से प्रतिमा कालान्तर में इसी नाम से विश्रुत हुई राजकुमार कुनुआदेव को लोग भूल गये।

ऐसा प्रतीत होता है इस प्रतिमा का निर्माण राजकुमार कुनुआदेव के जन्मोत्सव के समय गोल्हणदेव द्वारा कराया गया होगा किन्तु कुछ ही समय बाद राजकुमार कुनुआदेव की संभवतः मृत्यु हो गयी जिससे महासामंत गोल्हणदेव ने दुःखी होकर मंदिर–निर्माणादि नहीं करवाया, जिसे अविनय बचाने की दृष्टि से महाभोज श्रावक को कराना पड़ा। प्रतिमा के बुहारी आदि से पूजे जाने में संभवतः यही कारण रहा है।

इस प्रतिमा को खनुआदेव नाम से भी कहा जाता रहा है संभवतः यह कुनुआदेव का अपभ्रंश नाम है अथवा इस प्रतिमा का निर्माण यह कुनुआदेव का अपभ्रंश नाम है अथवा इस प्रतिमा का निर्माण मझगवां थाने के 'खनवानी' ग्राम के निकट किया गया हो। वहीं

निर्मित होने से इसे लोग खनवादेव कहने लगे होंगे जिसे कलाकार में 'खनुआदेव' कहा जाने लगा।

जो भी हो, प्रतिमा की वीतरागता आज भी अक्षुण्ण है। स्तुत्य हैं ये देव। अतिशय है प्रतिमा का जो कि लोगों की मनोकामनाएँ पूर्ण होती रहीं। आपदाएँ टलती गईं। व्याधियाँ नशती गयीं।

जैन पुरातत्त्व

वहोरीवद--तिगवां मार्ग पर वृक्ष तले पंच फणावली से युक्त ८ फुट लम्बे शिलाफलक पर उत्कीर्ण एक देवी प्रतिमा है जो फणावली से पद्मावती ज्ञात होती है। एक बावली में एक सुपार्श्वनाथ प्रतिमा विद्यमान है। खितौला के एंजिन तालाब के चबूतरे पर ऋषभनाथ प्रतिमा विराजमान है। खितौला के कृष्णमंदिर में शांति कुन्थु अरह प्रतिमाएँ उपलब्ध हैं। कूड़ा गांव और दर्शनी में भी प्राचीन प्रतिमाएँ प्राप्त हैं।[१०]

संदर्भ

1. *The small town of Bahuribarid is situated near the edge of the table land of the kaimur range of hills, 32 miles to the north of Jabalpur. The Name seems to have been derived from the great number of ambanked sheets of water which surround it on all sides, as Bahuriband means simply many dames on the accompanying map. I marked by the consecutive numbers the position of forty five of these dames. Without which the whole of the rainfall on this platean would run off in a few hours and leave the land utterly dry and barren.*
   According to the traditions of the people, there was once a large city on the site of Bahuriband. This belief is amply confirmed by the quantities of broken bricks and pottery which still cover all the high ground it was not a walled town. And no names of gates have been preserved. I think it is not imprubable that Bahuriband may be the tholabana of ptolemy, as the greek the might esily be substituted for an ago.
   The only piece of antiquity of any interest is a naked colossal Jain figure 12 feets 2 inches high and 3 feet 10 inches broad which is standing under a pipal tree near the town, It is a stiff, clumsy figure on the pedestal there is an inscription of seven lines, opening with the date. This is unfortunately injured in the third and fourth figures but the century is certain. I read the beginning of the record as follows:
   Line I — samvat 10 - Phalgun badi 9 some.
   Srimad Gayakarndeva Vijaja ra -
   Line II — Jye Rastrikuta Kulotbhava Mahasamantadhipati srimad Golhana Devasya Pravarddh manasya
   Line III — Srimad Golla Priti - maya
   "In the Samvat 10 -, on monday, the 9th of the waning moon of Phalgun, during the victoricres reign of the fortunate Gayakama Dava, and the commander in chief ship of the prosperous Golhana Deva, of the exalted race of Rashtrakuta, the fortunate Goll prithi"
   The remaining lines are so imperfact that I am unable to decipher any continuous portion of them. But the main fact of the inscription was doult less to record the erection of the statue. At the same time we learn that the country belonged to the Rashtrakuta chief Golhana deva as a tributary under the great kulachuri king Gayakarna dev as suzerain. The inscription is valuable on another account, as proving that the samavat used in other kulachuri inscription must be dated from a much latter period than the inatial point of the vikrmaditya era. The date in the present inscription of Gayakarna Deva is clearly one thousand old. Which the Bheraghat inscription of his son Narsingudev is dated in 907, and the Bharhut inscription of the same king in 909 his own inscription from Tewar being dated in samvat 902. We know also that Gayakarna's father yarokarna must have been living within 30 years of A.D. 1120, so that Gayakarna him self was no doubt reigning in that year.

According to my reckoning of the genealogy of the kalachuri dynasty the reign of this Bahurib and inscription must therefore be in the sakera which would range from 1022 to 1047.

कनिंघम रिपोर्ट, जिल्द ६, पृष्ठ ३८–४१।

2. *Bahoriband is now a small village situated on a plateau at a distance of about 20 miles from sihora in Jabalpur. Not for from Bahoribadnd lie the village of Tigowa and Rupnath, the former of which is known for its Gupa temple, still in a state of perfect preservation and the letter for its Asoken Rockedict Bahuriband contains some old ruins, the most conspicuous of which is a colossal standing nude statue of the Jain. Tirthankar Shantinath it is near the village and stands upon its original site portions of the foundation of the wall of the shrine, in which it stood being stiff around it. It stands 12 feet 2½" high from the sole of the feet to the crown of the head. There is an attendent holding a chauri on eather side of it. The chhatra over it is now broken away and lies behind the emage.*

The present inscription is inscrived on the pedestal of the status of shantinath. It falls in it three parts. Part A.B. each consisting of three lines, are engraved on the top of the pedestal to the left and right respectively of the feet of the image (These were not noticed by the previous writers). Part C. which has seven lines is incised on the front face of the padestal. Before it is a small kunda intended to receive the water of tirthankaras bath, the inscription was first braught to notice by general cunningham who gave his reading of the first two lines and a portion of the third of part c it was next noticed by Dr. Bhandarkar who published a short abstract of its contents. It is being effected here for the first time from the original stone as wall as its inked estam pages which were kindly supplied by the supdt. of Arch. survey central circle patna.

A first line of part c have been broken away. The characters belong to the Nagri Alphabet it may be noticied that the appears to the fully developed as in the modern Nagri see e.g. dharam (सुत्रधारम्) Language is sanskrit.

The object of the inscription is to record that during the victorious reign of the illustrious Gayakarndeve while the Maha samant adhipali Godhandeva of the Rashtrakta family was flourishing one Mahabhoja,the son of sadhu sarvadhar who had been favoured by the Madhavnandi the for most Logicious erected the temple of shanitinath we are further told that the white canopy over it was built by a sutradhar. The image of shantinatn was consecreated by the Acharya Subhadra who belonged to the line of the deshigan in the Amnaya oof the signs in the first line, where cunningham read the date in first line as samvat 10- Phalgun badi 9 some, Dr. Bhandarkar was on the other hand remarked that the date of the inscription is too indistinct to be read. Many of the signs in the first line, where cunningham read the date are now broken away. It is not therefore possable to varify his reading completely. But the extent Aksharas seem to read (va) di 9 Bhaume (not some). Even in cunningham's time all the figures of the year were not preserved what he took to be the figure appears to be remnout of some Akshara like Pa or Sa. Again cunningham's reading of the first two figures if correct would religate the present record to the end of the tenth or the first half of the eleventh century A.C. for samvat 10 - - - would have to be reffered to vikramera, but from the Tewar inscription dated K. 902 we know figures of the date if it was recorded in the Vikram era must therefore have been either 11 or 12.

Translation of the incription

Haill on Tuesdy the 9th tithi of the date fortnight (The name of the month and the figures of the year have been broken away) - - - - during the victorious reign of the illustrious Gayakarnadeva while the Mahasamantadhipati the illustrious Golhanadeva, born in the Rashtrakuta family, is flourishing (Therewas) the pious layman, The illustrious sarvadhara (born) in the Gollapurva Amnaya the sacred traditions of which were amplified at vellaprabhatika, who was blessed by the illustrious Maghavnandi the crest jewel of logicians. His son is maha (bho) ja (who is) devoted to (the performance of) religious duty, charity and study by him had been caused to be crected this beautiful temple of shantinath. The Sajjaka sutradhar is named sreshthi (I am unable to explain saviatyam prefixed to sajjak) By them has been constructed (here) a very white and extremely beautiful canopy. Line-6. May the holly Acharya Subhadra who was consecrated (This image of Shantinath)

be long glorious - (The) who belongs to line (Anvaya) of the Desigana in the Amanay of the holy chandrakara Acharya and who was delighted barrned man by his perfect learning and humility.

—वासुदेव विष्णु मिराशी, दि कल्चुरि चेदि एरा

जिल्द 4, भाग 1, पृ. 309—311

3. रायबहादुर डॉ. हीरालाल, मध्यप्रदेश का इतिहास, काशी नागरी प्रचारिणी सभा प्रकाशन, पृ. 42।

4. इत्याद्युद्ध मुनीन्द्र सन्ततिनिधौ श्रीमूलसंघे ततो
जाते नन्दिगण प्रभेद विलसद्देशीगणे विश्रुते।
गोल्लाचार्य इति प्रसिद्ध मुनिपोऽभूद गोल्लदेशाधिपः
पूर्व्वं केन च हेतुना भवभिया दीक्षां गृहीतस्सुधीः।।
जैनशिलालेख संग्रह, भाग 1, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, लेख संख्या 40, पृष्ठ 26।

5. जिनमूर्ति प्रशस्तिलेख, श्री दि. जैन बड़ा मंदिर छतरपुर प्रकाशन, प्रस्तावना पृष्ठ 44।

6. वीरनन्दि विबुधेन्द्र सन्ततौ नूत्न चन्दिल नरेन्द्र वंशचूडामणिः प्रथित गोल्लदेश भूपालकः किमपि कारणेन सः।
जैनशिलालेख संग्रहः भाग 1, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, लेख संख्या 47, पृष्ठ 60।

7. जिन मूर्ति प्रशस्तिलेखः प्रस्तावना पृष्ठ 43।

8. देखें टिप्पणी प्रथम में लेख—अनुवाद अंश।

9. आत्रेयगोत्रेऽखिल राजचन्द्र जिगीषु राजोजति कर्ण्णदेवः।
तस्माद्यशः कर्ण्ण नरेश्व येऽभूतस्यात्मजोयं गयकर्ण्णदेवः।।
दि. कलचुरि चेदि एरा, भाग 1 पृ. 306।

11. एपिग्राफिका इण्डिका, भाग 2, पृ. 7।

12. आकल्पं पृथिवीं शास्तु श्री गयाकर्ण्ण पार्थिवः।
संगतो नरसिंहेन युवराजेन सूनुना।।
दि कलचुरि चेदि एरा, भाग 1, पृ. 306।

13. According to Dr. kielhorn, The details workout to monday 25th december 1122 A.D.
पं. प्रयागदत्त शुक्ल, मध्य प्रदेश का इतिहास और नागपुर के भोंसले, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय हीराबाग, बम्बई ईसवी 1930 प्रकाशन, पृ. 22।

14. भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ : भाग 3, पृ0 228

15. मुख्तार जुगल किशोर, जैन साहित्य और इतिहास पर विशद प्रकाश खण्ड 1, पृ. 26—44

16. टिप्पणी—प्रथम।

17. वहीं,

18. मुनि कांतिसागर, खण्डहरों का वैभव भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, वर्ष ईसवी 1953, पृष्ठ 17।

19. भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ : भाग 3, पृ. 229।

20. डॉ. कस्तूरचन्द 'सुमन', बहोरीबन्द जैन तीर्थः एक अध्ययन शीर्षक लेख, महावीर जयंती स्मारिका, राजस्थान जैन सभा जयपुर, ई. 1983।

अभिलेख - ३६

छतरपुर, पार्श्वनाथ प्रतिमालेख, संवत् ११४६, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

साधु भालू पुत्री सुप्पा रूपा विदे श्री पार्श्वनाथ (थं) प्रणम (मं)ति सदा। सं. (संवत्) ११४६[1]

भावार्थ

शाह भालू और उनकी सुप्पा, रुपा तथा विदे (नाम की) पुत्रियाँ सदैव पार्श्वनाथ को प्रणाम करती हैं। प्रतिमा की प्रतिष्ठा सम्वत् ११४६ में हुई।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा देशी पाषाण से कायोत्सर्ग मुद्रा में निर्मित है। इसकी अवगाहना ५ फुट है। सम्प्रति यह श्री दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र डेरा पहाड़ी छतरपुर म.प्र. में विराजमान है। यह प्रतिमा उर्दमऊ नामक स्थान से प्राप्त हुई थी।[2] उक्त मूलपाठ संभवतः एक पंक्ति में आसान पर उत्कीर्ण है।

संदर्भ

1. प. कमल कुमार जैन, जिनमूर्ति प्रशस्ति लेख. वही, लेख सख्या 320।

2 वही, पृ0 16

अभिलेख - ३७

त्रिपुरी, अर्हत् प्रतिमालेख, संवत् ११४६, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी।

मूलपाठ

माथुरान्वय साधु धौलु सुत देवचंद्र संवत् ६००।

भावार्थ

माथुर वंश के शाह धौलु के पुत्र देवचन्द्र ने कलचुरि संवत् ११४६ में इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा तेवर (जबलपूर म. प्र.) से प्राप्त हुई थी। सम्प्रति यह नागपुर संग्रहालय में संगृहीत है। इसका निर्माण देशी पाषाण से हुआ है। पालिस काला, चिकना और चमकदार है। सिर नहीं है। आसन पर एक पंक्ति में उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण है। मूलपाठ का संवत् ६०० कलचुरि संवत बताया गया है। यह संवत् ईसवीं २४६ वर्ष बाद आरम्भ हुआ था।[1] अतः यह प्रतिमा ईसवी ११४६ की ज्ञात होती है।[2]

संदर्भ

1 भारत के दिगम्बर जैन तीर्थः भाग 3, पृष्ठ 28।

2 रेवा पत्रिका, प्रकाशन वर्ष संवत् 2023, अंक 2, पृष्ठ 27।

अभिलेख - ३८

उर्दमऊ (छतरपुर), शान्तिनाथ प्रतिमालेख, संवत् ११४६, भाषा संस्कृत लिपि नागरी

मूलपाठ

गोल्लापूर्व्वान्वये सोढं भार्य्याभ्यां २ छुल पुत्र नीने श्री शांतिनाथ (थं) प्रणमतिः सदा (।) सं. (संवत्) ११४६।

भावार्थ

गोलापूर्व अन्वय के शाह सोढ और उनकी पत्नी के दो पुत्रों में छुल के पुत्र नीने सदा श्री शान्तिनाथ प्रतिमा को प्रणाम करता है। इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा सम्वत् ११४६ में हुई।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा देशी पाषाण से कार्योत्सर्ग मुद्रा में निर्मित है। इसकी अवगाहना ५ फुट है। आसन पर पंक्ति में उक्त लेख उत्कीर्ण है। डेरा पहाड़ी मंदिर छतरपुर में विराजमान यह प्रतिमा सुपार्श्वनाथ तीर्थंकर की उल्लिखित की गई है जबकि लेख में इसे शान्तिनाथ प्रतिमा कहा गया है। यह प्रतिमा भी उर्दमऊ नामक स्थान से प्राप्त हुई थी।[1]

संदर्भ

1. पं. कमलकुमार जैन, जिनमूर्ति प्रशस्तिलेख: वहीं, ले. सं. 321।

अभिलेख - ३९

दूब कुण्ड प्रतिमालेख, संवत् ११५१, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. संवत् ११५१ स्री (श्री) देव

२. स – (सेन।)

अभिलेख परिचय

यह अभिलेख एक भग्न प्रतिमा की आसन पर अंकित मिला है। श्री कनिघम के अनुसार दूबकुण्ड में प्राप्त इस प्रतिमालेख का संवत् ११५१ है, जिससे प्रकट है कि प्रतिमा की प्रतिष्ठा संवत् ११५१ में सम्पन्न हुई है। लेख की पहली पंक्ति में संवत् ११५१ के साथ श्री देव का और दूसरी पंक्ति में मात्र 'स' का उल्लेख बताया गया है।[1] इसके बाद लेख समाप्त हो गया है। इससे ज्ञात होता है कि इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा श्री देव स (सेन) के उपदेश से हुई है। संभव है कि ये आचार्य देवसेन प्रसिद्ध ग्रन्थकार रहे हों।

यह भग्नमूर्ति दूबकुण्ड के एक स्तूप के निचले भाग में अंकित बताई गई है। सं. ११५२ का चरणलेख इसी स्तूप से मिला है जिसकी प्रथम पंक्ति का अंत श्री देव से और दूसरी पंक्ति का प्रारंभ 'सेन' पद से हुआ है। अतः इस संवत् ११५१ के प्रतिमालेख की दूसरी पंक्ति में अंकित 'से' वर्ण सेन का बोधक ज्ञात होता है और पूरा नाम देवसेन प्रमाणित होता है जैसा ऊपर अनुमानित किया भी किया गया है।

संदर्भ

1. on of the padestal of one of the broken figures there is a nearly obliterated inscription dated in "Samvat 1151 srideva" and of s. 1151
कनिघम रिपोर्ट : जिल्द 20, पृष्ठ 102 ।

अभिलेख - ४०

दूबकुण्ड, चरणलेख, संवत् ११५२, भाषा–संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. संवत् ११५२ वैसाष (वैशाख) सुदि पंचम्यां स्री (श्री) कास्टा (काष्ठा) संघ महाचार्य्यवर्य्य स्री (श्री) देव–

२. सेन पादुका युगलं (म्)।[1]

भावार्थ

संवत् ११५२ वैशाख सुदी पंचमी के दिन काष्ठासंघी महाचार्य श्री देवसेन के चरण–युगल की प्रतिष्ठा हुई थी।

अभिलेख–परिचय

यह लेख दूबकुण्ड के एक स्तूप–स्तम्भ पर अंकित चरणों के नीचे उत्कीर्ण बताया गया है। अभिलेख से प्रकट है कि देवसेन आचार्य ही नहीं आचार्यों के श्रेष्ठ आचार्य थे। उनके चरणों की प्रतिष्ठा से उनके तत्कालीन माहात्म्य का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है।

संदर्भ

1. एपीग्राफिका इण्डिका : जिल्द 5, ले.सं. 74 पृ. 12 और कनिंघम रिपोर्ट : जिल्द 20, पृ. 102।

अभिलेख - ४१

दूबकुण्ड वासुपूज्य प्रतिमालेख, तिथि रहित, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. लघु से (श्रे) स्टि (ष्ठि) नी कार्ति (कीर्ति)।।

२. श्रीमान वसु (वासुपूज्य) प्रतिमा स्रेस्टिनी (श्रेष्ठिनी) लक्ष्मी।।

अभिलेख परिचय

यह प्रतिमा लेख एक खड्गासनस्थ प्रतिमा की आसन पर अंकित है। लेख से यह प्रतिमा तीर्थंकर वासुपूज्य की ज्ञात होती है। श्रेष्ठ शब्द के व्यवहार से यह लेख संवत् ११४५ से संवत् ११५२ के मध्यकाल का प्रतीत होता है। प्रतिमा दूबकुण्ड में प्राप्त बताई गई है।[1] इसमें लाखू सेठ कार्ति (पुत्र) और लक्ष्मी का उल्लेख होने से ज्ञात होता है कि ये तीनों इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा करानेवाले हैं।

संदर्भ

1. कनिंघम रिपोर्ट. जिल्द 20, पृ0 102।

अभिलेख - ४२

भोजपुर, सुपार्श्वनाथ प्रतिमालेख, संवत् ११५७, भाषा संस्कृत लिपि नागरी

मूलपाठ

१. संवत् ११५७ स्री (श्री) नरवर्म्म स्वा (सा) म्राज्ये वेम–
२. कान्वय (ये) नेमिचंधु (दु) स (सु) त स्रेस्टी (श्रेष्ठी) रामाख्यो नू–
३. णि सुतिया तत्पुत्र चिल्लणाख्येन जिन
४. युग्मं प्रतिष्ठितं (तम्)

भावार्थ

संवत् ११५७ में श्री नरवर्मदेव के साम्राज्य में वेमकान्वय के नेमिचंद के पुत्र श्रेष्ठी राम और उनकी पत्नी नूणी के चिल्लण नामक पुत्र ने यह प्रतिमा युगल प्रतिष्ठित करायी।

अभिलेख परिचय

यह लेख मध्य प्रदेश में रायसेन जिले के भोजपुर नामक स्थान में एक सुपार्श्वनाथ–खडगासन प्रतिमा के पादपीठ पर अंकित है। प्रतिमा के सिर पर पाँच फण दर्शाये गये हैं। यह प्रतिमा शांतिनाथ प्रतिमा की बायीं ओर है। लेख में आये युग्मं पद से प्रतीत होता है कि शांतिनाथ प्रतिमा की दायीं ओर विराजमान खड़गासन में अंकित प्रतिमा भी चिल्लण ने ही प्रतिष्ठत कराई थी। ईसवी १९९८ में भोपाल पर्यूषण पर्व के समय इस प्रतिमा के दर्शन करने का सौभाग्य मिला। इस समय लेख बड़ी कठिनाई से पढ़ा

जा सका। अक्षर घिस गये हैं। लेख का मूलपाठ यथावत् है।[1] शान्तिनाथ प्रतिमा की आसन पर भी लेख है जो अब अपठनीय हो गया है।

संदर्भ

1 जैन शिलालेख संग्रह : भाग 5, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, लेख संख्या 59, पृष्ठ 36।

अभिलेख - ४३

ऊन–मंदिर–भित्ति लेख, समय ११वीं शताब्दी

मूलपाठ–परिचय

ऊन ग्राम से उत्तर की ओर एक टीला है। वर्तमान में यह "चौबारा डेरा क्रमांक एक' के नाम से विश्रुत है। इस टीले पर पूर्वाभिमुख एक मंदिर है। इस मंदिर के अंतराल की उत्तरी दीवाल पर कुण्डलाकार एक सर्वाकृति अंकित है। जिसे सर्पबन्ध कहा जाता है। इसमें क से म तक के पच्चीस स्पर्श वर्ण तथा पूंछ में धातुओं के परस्मैपद और आत्मनेपद के प्रत्यय अंकित हैं। यह सर्पबन्ध तत्कालीन शिक्षण पद्धति का सूचक है। इसी सर्पबन्ध के पास दो छोटे लेख भी हैं। इनमें एक लेख में मालवा के परमारवंशी राजा उदयादित्य का नामोल्लेख तथा दूसरे लेख में संस्कृत व्याकरण का नामोल्लेख तथा संस्कृत व्याकरण के कुछ नियम बताये गये हैं।[1]

सर्पबन्ध और ऊन नामकरण किंवदन्ती

इस ग्राम का नाम ऊन क्यों रखा गया इस संदर्भ में कहा जाता है कि यहाँ के राजा बल्लाल पेट दर्द से बहुत दुखी थे। वेदना न सह सकने से उन्होंने गंगा में डूबकर मर जाने का निश्चय कर लिया था। वे मरने के उद्देश्य से बनारस की ओर चल दिये। उनकी रानी उनके साथ थी। कहते हैं राजा के पेट में नागिन थी, जो कभी–कभी राजा के सो जाने पर बाहर भी निकल आती थी। एक दिन किसी नाग से वार्तालाप करती हुई नागिन रानी के द्वारा देखी गई। रानी ने सर्प को नागिन से यह कहते हुए सुना कि 'अगर राजा को यह ज्ञात हो जाये कि बुझा हुआ चूना खाने से तेरा अंत हो सकता है तो तेरा जीना कठिन हो जायेगा। उत्तर में नागिन को यह कहते हुए भी सुना कि अगर राजा को यह ज्ञात हो गया कि वामी में गर्म तैल डालकर तेरा अंत करके वामी में संगृहीत धन प्राप्त किया जा सकता है, तो तेरा जीवन जीना कठिन हो जायेगा।

नाग–नागिन का वार्तालाप सुनकर प्रातः होते ही रानी ने राजा से कहा। राजा प्रसन्न हुआ। उसने बुझा हुआ चूना खाया। फलस्वरूप पेट में रहने वाली नागिन मर गई और राजा स्वस्थ हो गया। उसने गरम तेल वामी में डालकर सर्प को भी मार डाला और

बहुत धन प्राप्त किया।

इस प्राप्त धन को राजा ने परोपकार में लगाने का निश्चय किया। उसने १०० मंदिर, १०० सरोवर और १०० कुओं के निर्माण की प्रतिज्ञा की किन्तु वह कोई कार्य पूर्ण न कर सका। तीनों कार्यो में एक–एक कम रहे। इस न्यूनता से इस ग्राम का नाम 'ऊन' पड़ गया।[2]

डॉ. हीरालाल जैन ने संभावना व्यक्त करते हुए लिखा है कि हो सकता है 'ऊन' नाम की सार्थकता सिद्ध करने के लिए यह आख्यान गढा गया हो'।[3] नाग–नागिन के वार्तालाप तथा नागिन पेट से बाहर निकल कर आने और पुनः पेट में जाने की बात से गढ़ा हुआ आख्यान ही प्रतीत होता है।

ऊन–महिमा

भट्टारक ज्ञान सागर ने 'सर्वतीर्थ वन्दन' नामक अपनी एक रचना में ऊन की प्रशंसा करते हुए लिखा है–

ऊन नयर श्रीराम देश नमिआउ मनोहर।
शिखरवद्ध प्रासाद भविक जीवन मन सुखकर।।
देखत परमानन्द (कि) पूजत पाप विनासे।
मन चिंते जो कोय तास शुभ ज्ञान प्रकासे।।
दर्शन देखत जे निपुन पाप–ताप दूरे पले।
ब्रह्म ज्ञानसागर वदति मनचिंतित फल सब फले।।८४।।[3]

प्राप्ति स्थल परिचय

निमाड़ जिले में यह एक छोटा नगर है। खरगौन से यह १८ किलोमीटर दूर जुलवान्या जानेवाली सड़क के किनारे स्थित है। यहाँ सेपावागिरि सिद्धक्षेत्र दो फरलांग दूर है।

संदर्भ

1. *एन्युवल रिपोर्ट ऑफ दि आर्कियालॉजिकल सर्वे आर्फ इण्डिया : ईसवी 1918–1919, भाग 1, पृष्ठ 17*
2. *एल.सी. धारीवाल, दी इन्दौर स्टेट गजेटियर : जिल्द 1, पृष्ठ 669।*
3. *डा. हीरालाल जैन, भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान : पृ. 332।*
4. *भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ : भाग 3, पृष्ठ 300।*

अभिलेख - ४४

गोदलमऊ, पार्श्वनाथ प्रतिमालेख, संवत् ११६०, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. ॐ ह्रां (ह्रीं) अर्हमसिआ उ सा नमः।

२. श्री श्रीसेन आचार्य्येन देवास्सुतस्य भार्य्या करमदे श्रीनंदी समादेदियन दीसना (देसना) वीरादिनाथ पीलाचार्यान्वय पद्मप्रभदेव प्रणमति (प्रतिष्ठिता)। संवत् ११६० वैसाष (वैशाख) सुदि ६ स्थितिकेन।

भावार्थ

श्री श्रीषेण आचार्य के द्वारा देवा और उनकी पत्नी करमदे के पुत्र श्री नन्दी के आशीर्वाद से पीलाचार्य अन्वय (परम्परा) में हुए पद्मप्रभदेव ने आदिनाथ से महावीर पर्यन्त शासन में संवत् ११६० वैशाख सुदी ६ में प्रतिष्ठा कराई।

प्रतिमा—परिचय

यह प्रतिमा नलखेडा के पास गोंदलमऊ तालाब से प्राप्त हुई थी। वर्तमान में दिगम्बर जैन पुरातत्व संग्रहालय जयसिंहपुरा उज्जैन में प्रतिमा क्रमांक ४५ से संगृहीत है। यह कृष्ण वर्ण की है। इसका निर्माण पद्मासन मुद्रा में हुआ है। इसके परिसर में ऊपर दोनों ओर एक—एक उड़ते हुए देव तथा उनके नीचे एक—एक चँमरवाही देव दर्शाये गये हैं। पं. बलभद्र जैन ने यह प्रतिमा तीर्थंकर पार्श्वनाथ की बताई है। उन्होंने इसका सर्प फण कलापूर्ण होना लिखा है।[1]

संदर्भ

1. भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ: भाग 3, पृ0 270।

अभिलेख - ४५

ऊन अर्हन्त प्रतिमालेख, संवत् ११६७ भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. संवत् ११६७ श्रीमद्देसीगणे श्री सगुणचंद्रो महामुना (नी) श्रीवर्द्धित

२. दान (ज्ञान) चंद्र विसारदः तस्य सिस्य श्रुतवर्द्धेंद्र संघाचार्य संघे सास्त्र विसारदः।। गुर्जरान्वये साधु तीकन तस्य पुत्र राजुल

३. तत्पुत्रो वीन प्रणमति नित्यं।।

भावार्थ

सम्वत् ११६७ में देशीगण के श्री सगुणचन्द्र महामुनि हुए हैं। इन आचार्य के संघ में जिनका श्रुत ज्ञान बढ़ रहा था ऐसा श्रुत पारगामी दानचन्द्र उनका शिष्य था। गुर्जर अन्वय में हुए साधु तीकम उनके पुत्र राजुल और राजुल का पुत्र वीन नित्य प्रणाम करता है।

प्रतिमा-परिचय

प्रतिमा खण्डित है। वह सिर और बाईं भुजा रहित है और हल्के हरे रंग के पाषाण से निर्मित है। इसकी ऊँचाई ५५ सेंटीमीटर तथा चौड़ाई ५० सेंटीमीटर है। श्रीवत्स चिन्ह यथास्थान अंकित है। आसन पर तीन पंक्तियों में संस्कृत भाषा एवं प्राचीन नागरी लिपि में लेख भी उत्कीर्ण है। वर्तमान में यह प्रतिमा इंदौर संग्रहालय में क्रमांक ८-२७ पर संरक्षित है। लेख में प्रतिमा किस तीर्थंकर की है इसका उल्लेख नहीं है। प्रतिष्ठा तिथि का भी पूर्ण उल्लेख नहीं है, मात्र संवत् दिया गया है।

अभिलेख - ४६अ

उर्दमऊ पद्मप्रभ प्रतिमा लेख, संवत् ११७१ भाषा, संस्कृत लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् ११७१ गोल्लापूर्व्वान्वये साह महसेन......

भावार्थ

गोलापूर्व अन्वय में हुए शाह महसेन ने सम्वत् ११७१ में इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई।

अभिलेख परिचय

यह मूर्तिलेख पद्मप्रभ तीर्थंकर प्रतिमा की आसन पर अंकित है।[1] संवत् ११४६ में प्रतिष्ठित हुई डेरा पहाड़ी जैन मंदिर छतरपुर में विराजमान प्रतिमाएँ इसी नगर से लाई गईं थीं।[2] छतरपुर जिले में गोलापूर्व जैनों का निवास उर्दमऊ में विशेष रहा है।

अभिलेख संख्या – 46ब

छतरपुर पार्श्वनाथ प्रतिमालेख, संवत् ११८० भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

सं. (संवत) ११८० फागुन (फाल्गुन) सुदी (सुदि) १५ शुक्र (सुक्रे)।

भावार्थ

सम्वत् ११८०, फाल्गुन सुदी १५, शुक्रवार को इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा हुई।

प्रतिमा–परिचय

तीर्थंकर पार्श्वनाथ की यह प्रतिमा श्याम पाषाण से निर्मित पद्मासन मुद्रा में ७.५" ऊँची तथा ४.५" चौड़ी है। वर्तमान में यह श्री दिगम्बर जैन बड़ा मंदिर, छतरपुर में विराजमान है।[3]

संदर्भ

1. *श्री नीरज जैन, अहिंसा वाणी, अलीगंज (एटा) प्रकाशन, वर्ष 13, अंक 8–9।*
2. *कमल कुमार जैन, जिनमूर्ति–प्रशस्तिलेख : पृ. 16, 67।*
3. *वही, पृष्ठ 26, लेख क्रमांक प्रथम।*

अभिलेख - ४७

चैत (ग्वालियर) स्तम्भलेख, संवत् ११८२, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ–परिचय

यह अभिलेख स्थानीय जैन मंदिर के भग्नावशेषों में धराशायी एक स्तम्भ पर ६ पंक्तियों में संस्कृत भाषा और प्राचीन नागरी लिपि में उत्कीर्ण है। इसमें शासक का

नामोल्लेख नहीं है। तिथि विक्रम संवत् ११८२ दी गई है। एक गुरु–शिष्य परम्परा का भी उल्लेख किया गया है जिसमें केवल विजयसेन का नाम पठनीय रह गया है।

प्राप्ति स्थल

करैया नामक ग्राम से यह स्थान लगभग ५ मील दूर स्थित है। करैया के दक्षिण–पश्चिम में २ फर्लांग दूर एक पहाड़ी पर जैन मंदिरों के भग्नावशेष विद्यमान हैं। ये अवशेष ११वीं शताब्दी के अनुमानित किये गये हैं।[1]

संदर्भ

1. *on a pillar lying loose on the ground in the ruins of the jain temple, line 6, script old Nagari, language sanskait, name of king nil, Date V.S. 1182.*
   Records the name of certain Jains Pandits and their disciples. The only legible name is Vijaysen.
   Chait: it is a hamlet situated about five miles to the north of Karhaia. About two furlongs to the South-West of the village on the slope of a hill are the ruins of Jain temples of about the 11th century A.D.
   ग्वालियर पुरातत्व रिपोर्ट . सवत् 1990 लेख संख्या 4, पृ. 11।

अभिलेख - ४८

चैत (ग्वालियर) स्तम्भलेख संवत् ११८३, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

यह अभिलेख जैन मंदिर के भग्नावशेषों में एक खड़े स्तम्भ पर अंकित है। इसकी भाषा संस्कृत, लिपि–प्राचीन नागरी है। छह पंक्तियों में उत्कीर्ण यह लेख इतना खण्डित और अस्पष्ट हो गया है कि अब पढा नहीं जा सकता। लेख की तिथि "संवत् ११८३ माघ सुदी ५" बताई गई है।[1]

संदर्भ

1. *on a pillar standing in the ruins of Jain temple. Line 6, old Nagari script, language sanskrit, Name of the King Nil. Date Magh sudi 5 vikram samvat 1183. The record is fragmentary and is too much obliterated to be made out.*
   ग्वालियर पुरातत्व रिपोर्ट, सवत् 1990, लेख सख्या 3।

अभिलेख - ४९

ग्वालियर अर्हत् प्रतिमालेख, संवत् ११८७, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् ११८७ फागुण (फाल्गुण) सुदि ६ सालिगदे (सनिवारे) लूणावति ला. (लाकृति) कारिता।

पाठ टिप्पणी

सालिगदे मूलपाठ के स्थान में शनिवार दिन का नामोल्लेख होना ज्ञात होता है। नवमी रिक्ता तिथि मानी गयी है। प्रतिष्ठादि शुभ कार्य रिक्ता तिथियों में सम्पन्न नहीं किये जाते। शनिवार के योग में रिक्ता तिथियाँ पूर्णा तिथियाँ कहलाती हैं। अतः प्रतीत होता है कि तिथि के बाद शनिवार दिन का उल्लेख रहा है जिसे भ्रान्ति से सालिगदे पढ़ा गया है। प्रतिमा पार्श्वनाथ मंदिर में विराजमान है।

भावार्थ

यह प्रतिमा लूणवती ने बनवाकर संवत् ११८७ में फाल्गुन सुदी नवमी शनिवार को प्रतिष्ठित कराई।

संदर्भ

1. पूर्णचन्द नाहर, जैन लेख सग्रह, भाग 2, ले. सं. 1392 पृ. 78

अभिलेख - ५०

ग्वालियर, अर्हन्त प्रतिमालेख, संवत् ११९० भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

ॐ।। सं. (संवत्) ११९० ज्येस्ट (ज्येष्ठ) सुदि १२ देवम सुतया वीटिकया कारितेयं प्रतिमा।

भावार्थ

संवत् ११६० जेठ सुदी द्वादशी तिथि में देवम की पुत्री वीटिका के द्वारा इस प्रतिमा का निर्माण कराया जाकर प्रतिष्ठा कराई गई।

प्राप्ति स्थल

यह प्रतिमा ग्वालियर के पंचायती मंदिर में विराजमान बताई गई है।

संदर्भ

1. पूर्णचन्द 'नाहर.') जैन लेख सग्रह भाग 2, ले. स 1363

अभिलेख - ५९

अहार, शान्तिनाथ प्रतिमालेख, संवत् ११६३, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. ....

२. .... समत् (संवत्) ११६३ (।)

प्रतिमा परिचय

देशी पाषाण से खड्गासन मुद्रा में निर्मित इस प्रतिमा के घुटनों से नीचे के पैर मात्र शेष रह गये है। आसन पर चिह्न स्वरूप हरिण और उक्त दो पंक्ति का लेख उत्कीर्ण है। आसन की चौडाई ५ इच है।

इस अवशेष की दोनो ओर एक--एक प्रतिमा के चरण बने हुए हैं। चरणों से प्रतिमाओं के रहने का अनुमान लगाया जा सकता है। चरणों के नीचे कोई चिह्न नहीं हैं। अतः वे प्रतिमाएँ किस तीर्थंकर की रही है प्रामाणिक रूप से नहीं कहा जा सकता है किन्तु शान्तिनाथ प्रतिमा मध्य में होने से तथा अन्य (शान्ति कुन्थु अर) प्रतिमाओं के एक साथ यहाँ प्राप्त होने से प्रस्तुत फलक भी शान्तिनाथ कुन्थुनाथ और अरहनाथ रत्नत्रय प्रतिमाओं का रहा प्रतीत होता है। त्रिमूर्ति के रूप में यह फलक इस क्षेत्र का सर्वाधिक प्राचीन है।

अभिलेख बहुत घिस गया है केवल संवत् सूचक अंक ही पठनीय हैं। यह अवशेष संग्रहालय संख्या १२४ से संग्रहालय में संगृहीत है।[1]

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख : अहार क्षेत्र (टीकमगढ़) प्रकाशन, 11/241 पृष्ठ 84।

अभिलेख-५२

कुडीला, आदिनाथ प्रतिमालेख, संवत् ११६६, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. संवत् ११६६ परवाडान्वये साधु सोमएल भाया (भार्य्या) जसहाणि तत्सुतो देल्हत साल्हे एते प्रणमंति नित्यं।

२. फाल्गुन वदि ७।।

भावार्थ

संवत् ११६६ फाल्गुन वदि सप्तमी तिथि में परवाड अन्वय के शाह सोमएल और उनकी पत्नी यशहानि के पुत्र देल्हत और साल्हे ने इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई। वे नित्य वन्दना करते हैं।

प्रतिमा–परिचय

यह प्रतिमा देशी पाषाण से पद्मासन मुद्रा में निर्मित की गई है। इसका पालिश काला चमकदार है। इस अवशेष की मात्र आसन रह गई है। चिह्न स्वरूप आसन पर बैल अंकित है। उक्त लेख भी दो पंक्तियों में उत्कीर्ण किया गया है। आसन फलक की लम्बाई १५ इंच तथा चौड़ाई ४ इंच है। संग्रहालय संख्या १२२८ अ से संग्रहालय में संगृहीत है।

प्राप्ति–स्थान

श्री पं. घनश्यामदास कोठिया अहार से ज्ञात हुआ है कि यह प्रतिमा निकटवर्ती कुडीला ग्राम के सेठ भरोसेलाल के सौजन्य से आहार में संगृहीत हुई है। कुडीला ग्रामवासी श्री गोकुलचंद जैन ने यह प्रतिमा एक खण्डहर की खुदाई में प्राप्त होना बताया है। कुडीला–टीकमगढ़–खरगापुर रोड पर खरगापुर से १० किलोमीटर दूर स्थित है।[1]

संदर्भ

1 अहार क्षेत्र के अभिलेख : अहार क्षेत्र (टीकमगढ़) प्रकाशन, ले.सं. 11/242 पृष्ठ 85।

अभिलेख - ५३

मंडला—ऋषभ प्रतिमालेख, संवत् ११६८, भाषा संस्कृत, लिपि—नागरी

मूल पाठ

१. सं. (संवत्) ११ (६)८ माघ सु—(दि) ३
२. .... प्रणमति ।[1]

भावार्थ

यह प्रतिमा संवत् ११६८ माघ सुदी तृतीया को प्रतिष्ठापित हुई। प्रतिष्ठा कराने वाला श्रावक प्रतिमा को नित्य प्रणाम करता है।

प्रतिमा परिचय

प्रतिमा का निर्माण पद्मासन मुद्रा में काले संगमरमर पाषाण से हुआ है। प्रतिमा की केवल आसन मात्र प्राप्त हुई है। चिह्न भी संभवतः नहीं है।

परिकर

प्रतिमा जिस गंधकुटी में विराजमान रही है, उसके ऊपरी भाग के ठीक मध्य में एक चक्र निर्मित है जिसकी दोनों ओर एक—एक चौकोर स्तम्भ अंकित है। इन स्तम्भों पर खड़े हुए हाथी दर्शाए गये हैं। उनके मुख सामने की ओर हैं।

आमने सामने दो मानवाकृतियाँ अंकित हैं। इनमें एक पुरुषाकृति है और एक किसी देवी की प्रतिमा। देव स्थूलकाय, लीलासन मुद्रा में है। दायें हाथ में प्याला और बायें हाथ में संभवतः पर्स धारण किये है। विविध अलंकारों से अलंकृत है। जनेऊ भी दिखाई देता है। देवी को सिंह पर सवार बताया गया है। वह अपने दो बच्चों को स्तनपान कराती हुई दर्शाई गई है। देव प्रतिमा कुबेर की और देवी प्रतिमा अम्बिका की ज्ञात होती है। कुबेर तीर्थकर मल्लिनाथ का शासन देव है और अम्बिका तीर्थकर नेमिनाथ की शासनदेवी। इससे स्पष्ट है कि प्रतिमा न तीर्थकर मल्लिनाथ की है और न नेमिनाथ की। शासन देवताओं का ऐसा विलक्षण अंकन आदिनाथ प्रतिमा के साथ मिलता है।[2] अतः प्रतिमा तीर्थंकर आदिनाथ की ज्ञात होती है।

प्राप्ति स्थल

यह प्रतिमा सम्प्रति नागपुर संग्रहालय में संग्रहालय क्रमांक ब—१२—सी—७४ से संगृहीत है। यह यहाँ मंडला म.प्र. से लायी गयी थी।

संदर्भ

1. *Descriptive list of exhibits in the archaeological section of the Nagpur museum. P. 47.*
2. *मुनि कान्तिसागर, खंडहरों का वैभव, ई. 1953, पृ. 40–42।*

अभिलेख - ५४

अहार, धर्मनाथ प्रतिमालेख, संवत् ११९९, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

संमत् (संवत्) ११९९ चैत्र सुदि १३ गर्गराटान्वये साहु वाछ तस्य सुत साहु लाल साहुणि नायव्व तस्य सुत साहु, मालुराजू आमदेव (कामदेव) एते प्रणमंति नित्यं।

भावार्थ

सम्वत् ११९९ चैत सुदी त्रयोदशी महावीर जयन्ति के दिन गर्गराट अन्वय के शाह वाछ के पौत्र और शाह लाल तथा साहुणी नायव्व के पुत्र शाह मालुराज और आमदेव ये (प्रतिमा प्रतिष्ठा कराकर) प्रतिमा की नित्य वन्दना करते हैं।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा पद्मासन मुद्रा में देशी पाषाण से निर्मित हुई है। इसका पालिश काला, चिकना और चमकदार है। इसका सिर नहीं है। गले तक की अवगाहना १५ इंच है। अंगुलियाँ जगह–जगह से जोड़ी गई हैं। आसन की लम्बाई १६ इंच है। आसन पर चिह्न स्वरूप वज्रदण्ड तथा उक्त एक पंक्ति का लेख उत्कीर्ण है। संग्रहालय में यह प्रतिमा संग्रहालय संख्या ८५ से संगृहीत है।[1]

संदर्भ

1. *अहार क्षेत्र के अभिलेख : अहार क्षेत्र (टीकमगढ़) प्रकाशन ले.सं. 11/243 पृष्ठ 96।*

अभिलेख - ५५

अहार, धर्मनाथ प्रतिमालेख, संवत् ११६६, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् ११६६ चैत्र सुदि १३ गर्गराटान्वये साधु वाछ सुत साहु लाल साहुणि नायव्व तस्य सुत साहु माल्हण... (प्रणमति नित्यं।।)

भावार्थ

संवत् ११६६ चैत सुदी त्रयोदशी महावीर जयंती के दिन गर्गराट अन्वय के शाह वाछ के पौत्र और शाह लाल तथा साहुणी नायव्य के पुत्र शाह माल्हण (प्रतिमा प्रतिष्ठा कराकर) प्रतिमा की नित्य वन्दना करता है।

प्रतिमा–परिचय

यह प्रतिमा पद्मासन मुद्रा में देशी पाषाण से निर्मित हुई है। इसकी पालिश काली, चिकनी, चमकदार है। प्रतिमा के कुहनी के नीचे के हाथ तथा आसन मात्र शेष है। आसन पर चिह्न स्वरूप वज्रदण्ड तथा उक्त एक पंक्ति का लेख उत्कीर्ण है। प्रतिमा स्थानीय संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ५७ से संगृहीत है।

विशेष

संवत् ११६६ की ये दोनो प्रतिमाएँ सहोदर भाइयों ने प्रतिष्ठित कराई थी। पहली प्रतिमा की प्रतिष्ठा करानेवाले दो भाई थे– मालू राजू और आमदेव। संभवतः दोनों भाइयों का सम्मिलित परिवार था। दोनों साथ–साथ रहते थे। माल्हण इनके साथ न रहकर अपने परिवार के साथ अलग रहता था। इसके द्वारा पृथक, प्रतिमा प्रतिष्ठा कराये जाने से यही अर्थ निष्पन्न होता है।[1]

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख : अहार क्षेत्र (टीकमगढ म.प्र) प्रकाशन, ले सं 11/244 पृष्ठ 96।

अभिलेख - ५८

अहार, आदिनाथ प्रतिमालेख संवत् ११६६, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

.......(संवत् ११) ६६ महिषणपुर (रे) पु (प) रवाडान्वये साधु सी (श्री) लाषण (लाखण) सुत वीट्ठइ भार्या (र्य्या) साहु (णि) जसकरि सुत सादू प्रणमति (नित्यं)।

भावार्थ

संवत् ११६६ में संभवतः चैत सुदी त्रयोदशी महावीर जयंती के दिन महिषणपुर में पुरवाड संभवतः परवाड अन्वय के शाह श्री लाखन के पौत्र और वीठई तथा उसकी पत्नी साहुनी जशकरी का पुत्र सोदू (प्रतिमा प्रतिष्ठा कराकर) नित्य वन्दना करता है।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा देशी पाषाण से पद्मासन मुद्रा में निर्मित की गई है। इसका पालिश काला, चिकना और चमकदार है। प्रतिमा का सिर नहीं है। गले तक की अवगाहना २१ इंच है। पाषाण फलक की चौड़ाई २५ इंच है। आसन की दायीं ओर का भाग खण्डित है। चिह्न स्वरूप आसन पर वृषभ तथा उक्त एक पंक्ति का लेख उत्कीर्ण है। लेख के आरम्भिक संवत् सूचक दो अंकों का पाषाण अंश छिल गया है। स्थानीय संग्रहालय में यह प्रतिमा संग्रहालय संख्या ७५ से संगृहीत है।

महिषणपुर

यह अहार क्षेत्र [illegible] निकटवर्ती ग्राम है। सम्प्रति इस नाम का कोई स्थान नहीं है। भैंसा नामक [illegible]क ग्राम अवश्य है। महिष का अर्थ भैंसा होने से प्रतीत होता है कि अतीत में भैंसा ही इस नाम से विश्रुत रहा है।[1] पाणाशाह संभवतः इसी ग्राम के निवासी थे। महिष, पाणा और भैंसा तीनों शब्द समानार्थी हैं।

संदर्भ

1. *अहार क्षेत्र के अभिलेख : अहार क्षेत्र (टीकमगढ़ [illegible]) प्रकाशन, ले सं. 11/245, पृष्ठ 97।*

अभिलेख - ५७

मऊ (छतरपुर) नेमिनाथ प्रतिमालेख, संवत् ११६६, भाषा संस्कृत लिपि नागरी

मूलपाठ

१. गोल्लापूर्व कुले जातः साधुर्व्वा (ले) (गुणा) न्वितः। तस्य देवकरो पुत्रः पद्मावती प्रियाप्रियः।। (१।।) तयोर्जातो सुतौ सि (शि)—

२. स्तौ (ष्टौ) सी (शी) लव्रतविभूषितौ। धर्म्माचारतौ नित्य ख्यातौ म (ल्ह) णजल्ह (णौ) ।। (२।।) मल्हणस्य व (धूरासीत्स) त्यसी (शी) ला पतिव्रता। श्रेष्ठि वीवी—तनूजा च प्रबुद्धा बि (वि) नयान्विता।। (३।।) लष्म (क्ष्म) णाद्यास्तया जाताः पुत्राः गुणा (गुणान्विताः।)

३. .... द्या जिनचरणाराधनोद्यताः।। (४।।)
कारितश्च जगन्नाथ (नेमि) नाथो भवांतकः। त्रै (लो—क्यश) रणं देवो जगन्मंगलकारकः ।।(५)।। संवतु (त्) ११६६ वैशाख सुदि २ रवौ रो (हिण्याम्)।

पाठ—टिप्पणी

लेख में र् के बाद आने वाले व्यञ्जनाक्षर का द्वित्व तथा श और स के स्थान में स का प्रयोग किया गया है।

भावार्थ

गोलापूर्व कुल में उत्पन्न शाह वाले के पौत्र और देवकर तथा पुत्रवधू पद्मावती के शीलव्रत से विभूषित, धर्माचरण में मग्न मल्हण और जल्हण दो पुत्र हुए। इनमें मल्हण की शीलवान् विनयवान् प्रबुद्धा और पतिव्रता पत्नी सेठ बीबी की पुत्री थी। मल्हण के गुणान्वित तीन पुत्र, हुए जिनमें लक्ष्मण सबसे बड़ा पुत्र जिनेन्द्र चरणों की आराधना में उद्यत रहता था। उसने तीनों लोकों की शरण, जगत के मंगलकारी, संसार का अंत करनेवाले जगत के स्वामी देव नेमिनाथ की प्रतिमा का निर्माण कराया तथा संवत् ११६६ वैशाख सुदी द्वितीया रविवार रोहिणी नक्षत्र में उसकी प्रतिष्ठा कराई।

अभिलेख परिचय

इस लेख में पाँच श्लोक हैं। सभी में अनुष्टुप छन्द व्यवहृत हुआ है। केवल तिथि का उल्लेख करनेवाला भाग गद्य में है।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा मस्तक विहीन है। अवशिष्ट अंश चार टुकडों में खण्डित है। धुवेला से

एक मील दूर मऊ ग्राम से धुबेला संग्रहालय लाई गई है। संग्रहालय क्रमांक ७ से संगृहीत है।[1]

संदर्भ

1. श्री बालचंद जैन, उपसंचालक पुरातत्व संग्रहालय रायपुर के सौजन्य से प्राप्त।

अभिलेख - ५८

मऊ मुनिसुव्रत नाथ प्रतिमालेख, संवत् ११६६, भाषा संस्कृत लिपि नागरी

मूलपाठ

१. गोला (ल्ला) पूर्व्वकुले जातः साधु श्रीपाल संज्ञकः। तत्सुतोजनि जीण्हेकः समग्रगुणभूषितः ।। (१।।)

२. रुक्मिण्यां जनितस्तेन सत्पुत्रः सुल्हणाभिधः। श्री संज्ञिका प्रिया तस्य समग्रगुण धारिणी ।। (२।।) मुनिसुव्रतनाथस्य विंवं ।। (बिंब) त्रैलोक्य

३. पूजितः । कारितं सुल्हणेनेदमात्मश्रियेभिवृद्धये ।। (३।।) सम्वत् ११ (६६) वैशाख सुदि २ रवौ (।)

भावार्थ

गोलापूर्व कुल में उत्पन्न शाह श्रीपाल के सभी गुणों से विभूषित पुत्र जीण्हक तथा पुत्रवधू रुक्मिणी से उत्पन्न पौत्र सुल्हण तथा उसकी श्री नामा सकल गुणधारिणी प्रिया ने आत्मश्री अभिवृद्धि के लिए तीनों लोकों द्वारा पूजित तीर्थंकर मुनिसुव्रतनाथ की प्रतिमा का निर्माण कराया तथा संवत् ११६६ वैशाख सुदी द्वितीय रविवार के दिन उसकी प्रतिष्ठा कराई।

अभिलेख परिचय

यह प्रतिमा लेख प्रतिमा की आसन पर तीन पंक्तियों में उत्कीर्ण है। तिथि का उल्लेख करनेवाले अंश को छोड़कर शेष लेख पद्यवद्ध है। इसमें तीन श्लोक हैं, जिनमे अनुष्टुप छन्द व्यवहृत हुआ है। भाषा संस्कृत और लिपि नागरी है।

प्रतिमा-परिचय

काले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में निर्मित इस मुनिसुव्रतनाथ- प्रतिमा का ऊपरी भाग नहीं है। लेख पादपीठ पर उत्कीर्ण है। यह प्रतिमा २४x५६ से.मी. में निर्मित है। मध्य प्रदेश के छतरपुर जिले में नौगांव से ५ मील दूर स्थित राज्य संग्रहालय धुबेला में संग्रहालय

क्रमांक ४२ से संगृहीत है। इसका प्राप्ति स्थान मक ग्राम है जो संग्रहालय से मात्र एक मील दूर है।[1]

संदर्भ

1. श्री बालचन्द्र जैन, उपसंचालक पुरातत्व व संग्रहालय रायपुर मध्य प्रदेश के सौजन्य से प्राप्त।

अभिलेख - ५९

जतारा, शान्तिनाथ प्रतिमालेख, संवत् ११६६, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

सं. संवत् ११६६ चैत्र सुदि १३ सोमे गोल्लापूर्व्वान्वये साधु सिद्ध तस्य पुत्रो श्रीपाल भार्य्या लल्ली तयोः पुत्रोः श्रीचंद्र सुपरणरत्नः तयोः भार्याः ....सिद्धं इति।

भावार्थ

विक्रम संवत् ११६६ चैत्र सुदी त्रयोदशी सोमवार (महावीर–जयती) के दिन गोलापूर्व अन्वय के शाह सिद्ध के पुत्र श्रीपाल पुत्रवधू लल्ली के पुत्र श्रीचन्द्र और सुपरणरत्न तथा उन दोनों की पत्नियों ने इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई।

प्रतिमा–परिचय

तीर्थंकर शान्तिनाथ की यह प्रतिमा कम से कम पाँच फुट ऊँची है। आसन पर उत्कीर्ण शिलालेख का कुछ हिस्सा दीवाल में दबा सा प्रतीत होता है। शिलालेख भौंयरे में स्थित एक भग्न मूर्ति के सिंहासन का भाग है, जिस पर ४ इंच ऊँचे तथा ८ इंच चौड़े दो हरिणों के चिह्न उत्कीर्ण हैं।[1]

संदर्भ

1 श्री नीरज जैन, जैन सन्देश, 10 जनवरी 1963 ईसवी, पृ. 5 से साभार।

अभिलेख - ९०

बंधा, अजितनाथ प्रतिमालेख, संवत् ११६६, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

यहाँ भोयरे में विराजमान मूलनायक प्रतिमा अजितनाथ की आसन पर लेख उत्कीर्ण है जिससे प्रतिमा की प्रतिष्ठा संवत् ११६६ चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को सम्पन्न हुई ज्ञात होती है। इसकी दायी बायीं ओर क्रमशः ऋषभ, और सम्भवनाथ की प्रतिमाएँ हैं। इस प्रकार क्रमशः ऋषभ, अजित, संभवनाथ की एक साथ प्रतिमाओं के दर्शन अन्यत्र सुलभ नहीं हैं।[1]

प्राप्ति स्थल–परिचय

बधा टीकमगढ़ जिले में टीकमगढ से ५० किलोमीटर दूर निवाडी होते हुए झांसी जाते समय बम्होरी बराना उतरना पड़ता है। इस ग्राम से बन्धा दस किलोमीटर दूर दक्षिण की ओर पहाडियों के मध्य स्थित है। इसका पोस्ट आफिस बम्हौरी–बराना है।

संदर्भ

1 भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ भाग 3, पृष्ठ 128।

अभिलेख - ९1

अहार, आदिनाथ प्रतिमालेख, संवत् १२०० भाषा संस्कृत, लिपि–नागरी

मूलपाठ

१. संवत् १२००।। आषाढ वदि ८ जैसवाल अन्वय (ये) साहु षोने (खोने) भाया (भार्य्या) जाज (जी) सुत साहू तथ्वा (तथा) पाल्हा षील्हा

२. आल्हा पउमा...... प्रणमंति (।)

पाठ–टिप्पणी

इस लेख में 'ख' वर्ण के लिए 'ष' वर्ण तथा म एवं न अनुनासिकों के लिए अनुस्वार

का प्रयोग हुआ है। जैसवाल और अन्वय सन्धि रूप में नहीं हैं।

भावार्थ

संवत् १२०० अषाढ वदी अष्टमी तिथि में जैसवाल अन्वय के शाह खोने तथा उनकी पत्नी जाजी के पुत्र सादू और पाल्हा वील्हा आल्हा पद्मा (प्रतिमा प्रतिष्ठा कराकर) प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा–परिचय

यह प्रतिमा देशी काले–नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में निर्मित की गई है। इसका पालिश काला और चिकना–चमकदार है। प्रतिमा का सिर, वायाँ हाथ और दोनों हाथों की हथेलियाँ नहीं हैं। आसन से गले तक की अवगाहना १६ इंच है। आसन पर चिह्न स्वरूप वृषभ तथा दो पंक्ति में उक्त लेख उत्कीर्ण है। सम्प्रति यह प्रतिमा स्थानीय संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ६७ से संगृहीत है।[1]

संदर्भ

1 अहार क्षेत्र के अभिलेख अहार क्षेत्र (टीमकगढ़ म.प्र) प्रकाशन, ले.सं 11/246 पृष्ठ 96।

अभिलेख - ६२

आहार मुनिसुव्रतनाथ प्रतिमालेख, संवत १२००, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१ संवत् १२०० महिषण .... (पुरे पुरवाडा) न्वये साधु श्री हारसेण (हरिषेण) भार्या रुद्री सुत सोमदेव माल्ह

२ साहुणि सिरि .... एते प्रणमंती (ति) नित्यं।

पाठ टिप्पणी

इस मूलपाठ में श्री के लिए सिरि और 'ष' के स्थान में 'स' का प्रयोग हुआ है।

भावार्थ

संवत् १२०० में महिषणपुर में पुरवाड या परवाड अन्वय के शाह हरिषेण और भार्या रुद्री तथा पुत्र सोमदेव, माल्ह ये (प्रतिमा प्रतिष्ठा कराकर) नित्य वन्दना करते हैं।

प्रतिमा–परिचय

यह प्रतिमा देशी काले नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में निर्मित की गयी है। इसका पालिश काला चिकना और चमकदार है। इस प्रतिमा का सिर और कंधे से दायाँ हाथ नहीं है। हथेलियाँ और बायाँ पैर छिला हुआ है। लेख के मध्य का पाषाण भी यथावत् नहीं है। आसन से गले तक की अवगाहना ११ इंच है। आसन की लम्बाई साढ़े तेरह इंच है। चिह्न स्वरूप आसन पर कछुआ तथा दो पंक्ति का उक्त लेख उत्कीर्ण है। सम्प्रति यह प्रतिमा स्थानीय संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ५१ से संगृहीत है।[1]

महिष्णपुर

इस नाम का सम्प्रति कोई ग्राम ज्ञात नहीं है। भैंसा नामक ग्राम अवश्य टीकमगढ़ जिले में है। महिष का अर्थ भैंसा होने से अनुमानतः कालान्तर में महिषणपुर ही भैंसा नाम से जाना पहिचाना गया ज्ञात होता है।

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेखः अहार क्षेत्र (टीकमगढ़ म.प्र.) प्रकाशन, ले.सं. 11/247 पृष्ठ 96।

अभिलेख - ६३

अहार, आदिनाथ प्रतिमालेख, संवत् १२०० भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. ....(संवत्) १२०० आषाढ वदि अष्टम्यां सुक्रे (शुक्रे).........

२. ....साहु आल्ह........(भार्या) जस (श)......(करी)

३. ....मे.........

पाठ टिप्पणी

इस पाठ में श के लिए स वर्ण का व्यवहार हुआ है।

भावार्थ

संवत् १२०० असाढ वदी अष्टमी शुक्रवार के दिन शाह आल्ह और उनकी पत्नी यशकारी (ने प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई)।

प्रतिमा–परिचय

यह प्रतिमा देशी काले–नीले पाषाण से खड्गासन मुद्रा में निर्मित की गई है। पालिश काला, चिकना और चमकीला है। प्रतिमा का सिर नहीं है। हथेलियों में कमल दर्शाये गये हैं। सेवारत दोनों ओर एक एक चँमरबाही इन्द्र खड्गासन मुद्रा में अंकित हैं। आसन से गले तक की अवगाहना २१ इंच और शिलाफलक की चौडाई ८ इंच है। आसन पर चिह्न स्वरूप वृषभ तथा उक्त तीन पंक्ति का लेख उत्कीर्ण है। सम्प्रति यह प्रतिमा स्थानीय संग्रहालय में संग्रहालय संख्या १०५ से संगृहीत है।

व्याख्या

आल्ह : यह वही श्रवक ज्ञात होता है जिसका संवत् १२०० के एक लेख में पाल्हा–वील्हा के बाद नामोल्लेख हुआ है। यह प्रतिमा प्रतिष्ठा परिजनों से मिलकर इसके द्वारा स्वतंत्र रूप से करायी गयी ज्ञात होती है।[1]

संदर्भ

1 अहार क्षेत्र के अभिलेख अहार क्षेत्र (टीकमगढ म.प्र.) प्रकाशन ले.स. 11/248 पृष्ठ 99–100।

अभिलेख - ६४

कुडीला, चन्दप्रभ प्रतिमालेख, संवत् १२०० भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

सं. (संवत्) १२०० परौत (पौर) पाटान्वये साधु सोम साहुनी भार्या जसरा प्रणमति सदा ।। आषाढ सुक्ल (शुक्ल) पक्ष (क्षे) सुक्रे (शुक्रे) अष्टम्यां प्रतिष्ठिता।।

पाठ टिप्पणी

• प्रस्तुत मूलपाठ में मास आषाढ, पक्ष–शुक्ल, दिन शुक्र तथा तिथि अष्टमी का उल्लेख है जबकि संवत् १२०० के अन्य प्रतिमालेखों में दिन शुक्रवार और तिथि अष्टमी आषाढ़ मास के वदी पक्ष में दर्शाई गई है। कौन लेख सदोष है यह निर्णय विचाराधीन है। इस पाठ में संवत् के लिए स. संक्षिप्त रूप तथा श के स्थान में 'स' व्यवहृत हुआ है।

भावार्थ

संवत् १२०० के आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि दिन शुक्रवार में पौरपाट अन्वय के शाह सोम और उनकी पत्नी साहुनी जसरा इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराकर उसे सदा प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा –परिचय

अहार क्षेत्र से ३० किलोमीटर दूर स्थित कुड़ीला (टीकमगढ़) से प्राप्त यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या १२२८ ब से संगृहीत है। इसका निर्माण देशी काले–नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में हुआ है। इसकी अवगाहना ७ इंच है। आसन फलक की लम्बाई २२ इच है। आसन के मध्य में चिन्ह स्वरूप अर्द्धचन्द्राकृति उत्कीर्ण है। यह सम्पूर्ण लेख एक पक्ति में आसन पर दर्शाया गया है।[1]

संदर्भ

1 अहार क्षेत्र के अभिलेख आहार क्षेत्र (टीकमगढ़ म.प्र.) प्रकाशन, ले. स 11/249 पृष्ठ 100।

अभिलेख - ६५

अहार, सुमतिनाथ प्रतिमालेख, संवत् १२०२, भाषा संस्कृत लिपि नागरी

मूलपाठ

१. संवतु (संवत्) १२०२ चैत्र सुदी (सुदि) १३ लंमकंचुक अन्वए (ये) साहु भाने सुते (सुता) पद्मा सुत हरसेल (ण) न (ना)यक कदलसिंह पाल्हु उदय

२. साधु पतकल प्रणमंती (ति) नी (नि)त्यं।

पाठ टिप्पणी

इस लेख में 'ये' के लिए ए स्वर का उल्लेखनीय प्रयोग हुआ है। हलन्त का चिह्न संवत् में विपरीत दिशा में मोड़ा गया है। सन्धि का व्यवहार भी नहीं हुआ है।

भावार्थ

संवत् १२०२ चैत सुदी त्रयोदशी के दिन लमेचु अन्वय के शाह भाने की पुत्री पद्मा के पुत्र हरसेंण, नायक कदलसिंह, पाल्हु उदय और शाह पतकल प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराकर नित्य प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा–परिचय

यह प्रतिमा देशी काले–नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में निर्मित है। इसका पालिश कमला, चिकना, चमकदार है। प्रतिमा के हाथ पैर खण्डित हैं। सिर नहीं है। आसन पर हथेलियाँ भी नहीं है। चिह्न स्वरूप आसन पर चकवा पक्षी तथा उक्त दो पंक्ति का लेख उत्कीर्ण है। यह प्रतिमा स्थानीय संग्रहालय में संग्रहालय संख्या १५ से संगृहीत है।[1]

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख : अहार क्षेत्र (टीकमगढ म.प्र.) प्रकाशन, ले.सं. 11/250 पृष्ठ 100

अभिलेख - ९९

अहार, आदिनाथ प्रतिमालेख, संवत् १२०२ भाषा संस्कृत लिपि नागरी

मूलपाठ

संवतु (संवत्) १२०२ चैत्र सुदि १३ गोलापर (पूर्व) अन्वय (ये) नायक तील्हे सुत रतन तस्य सुत आल्हु जील्हु आमदेव भामदेव प्रणमंति नित्यं।

भावार्थ

सवत् १२०२ चैत सुदी त्रयोदशी तिथि में गोलापूर्व अन्वय के नायक तील्ह के पौत्र और रतन के पुत्र आल्हु जील्हु आमदेव भावदेव (प्रतिमा प्रतिष्ठा कराकर) नित्य प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा देशी काले नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में निर्मित है। इसकी पालिश काली चिकनी और चमकदार है। सिर, वाहुदण्ड और हथेलियाँ नहीं हैं। आसन से गले तक की अवगाहना १३ इंच और आसन फलक की चौड़ाई १७ इंच है। आसन के मध्य में चिह्न स्वरूप वृषभ तथा उसकी दोनों ओर एक पंक्ति में उक्त लेख उत्कीर्ण है। सम्प्रति प्रतिमा स्थानीय संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ३२ से संगृहीत है।[1]

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख: अहार क्षेत्र (टीकमगढ़ म.प्र.) प्रकाशन, ले.सं. 11/251 पृष्ठ 101।

अभिलेख - ६७

कुडीला, आदिनाथ प्रतिमालेख, संवत् १२०२ भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

सांवतु (संवत्) १२०२ चैत्र सुदी (सुदि) १३ परवर अन्वए (अन्वये) सबु (साहु) तील्हुणेतः भ्राता (भार्या) जेजाहीणि सुत व ....

पाठ–टिप्पणी

इस पाठ में 'ये' के स्थान में 'ए' स्वर का प्रयोग हुआ है। परवर और अन्वय में सन्धि नहीं की गयी है।

भावार्थ

संवत् १२०२ चैत सुदी त्रयोदशी तिथि में परवर (परवार) अन्वय के शाह तील्हुण और उसकी पत्नी जेजाहीणि के पुत्र (ने प्रतिमा प्रतिष्ठा कराई। वे नित्य प्रणाम करते हैं।)

प्रतिमा परिचय

कुड़ीला (टीकमगढ़) म.प्र. से प्राप्त यह प्रतिमा देशी काले नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में निर्मित है। शरीर का ऊपरी आधा भाग नहीं है। आसन भी आधी है। आधे भाग की अवगाहना साढ़े नौ इंच और चौड़ाई एक फुट है। आसन पर चिह्न स्वरूप वृषभ तथा उक्त एक पंक्ति का लेख उत्कीर्ण है। यह प्रतिमा स्थानीय संग्रहालय में संग्रहालय संख्या १२२८ स से संगृहीत है। यह प्रथम प्रतिमालेख है जिसमें परवर अन्वय का उल्लेख हुआ है। यहाँ के अन्य प्रतिमालेखों में व्यवहृत पुरवाड, परवाड और पौरपाट तीनों, अन्वय परवर अन्वय के अपर नाम ज्ञात होते हैं।[1]

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख : अहार क्षेत्र (टीकमगढ़ म.प्र.) प्रकाशन, ले.सं. 11/252 पृष्ठ 102।

अभिलेख - ९८

छतरपुर, नेमिनाथ प्रतिमालेख, संवत् १२०२, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

श्रीमद् गोल्लापूर्व्वान्वये श्रेष्ठि कूकात्मज श्रेष्ठि श्री वीसल सादनुज साधु श्री सोढस्तत्प्रिया जाहणिास्तत्सुतः श्रेष्ठि श्री विक्रमादित्य तद्भार्या श्रीमती तत्सुतौ साधु श्री लक्ष्मादित्य कुलादित्यौ नित्य नेमिनाथ प्रणमतः श्रेयसे भक्त्या संवत् १२०२ चैत्र सुदी १३ वुद्धे (धे) श्रीमन्मदनवर्म्भ राज्ये।[1]

भावार्थ

गोलापूर्व अन्वय में हुए श्रेष्ठी कूका के पुत्र श्रेष्ठी श्री वीसल, उनके छोटे भाई शाह सोढ्स् और उनकी पत्नी जाहणी के पौत्र और श्रेष्ठी विक्रमादित्य तथा उनकी पत्नी श्रीमती के पुत्र शाह लक्ष्मादित्य और कुलादित्य भक्ति पूर्वक कल्याणार्थ संवत् १२०२ चैत्र सुदी १३ बुधवार को श्रीमान मदनवर्मदेव के राज्य में प्रतिष्ठा कराकर नेमिनाथ प्रतिमा को नित्य प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा–परिचय

यह प्रतिमा पद्मासन मुद्रा में काले चिकने पालिश से सहित देशी पाषण से निर्मित है। इसके केश गुच्छकों में प्रदर्शित हैं। गले में तीन रेखाएँ अंकित की गई हैं। कर्ण स्कन्ध भाग का स्पर्श कर रहे हैं। श्रीवत्स चिह्न यथास्थान अंकित है। आसन के मध्य चिह्न स्वरूप शंख तथा उक्त लेख उत्कीर्ण है। इसकी अवगाहना ५६ इंच और चौड़ाई ५२ इंच है। यह प्रतिमा छतरपुर नगर से ७ किलोमीटर दूर जगतसागर नामक तालाब के तट पर निर्मित जैन मंदिर से लाकर छतरपुर के चौधरी दिगम्बर जैन मंदिर में विराजमान की गई है।[2]

संदर्भ

1 जिन मूर्ति प्रशस्ति लेख, ले सं. 170, पृष्ठ 48।
2 जैन इतिहास सस्कृति के स्रोत मूर्तिलेख, वही, पृ. 9।

अभिलेख - ६१

पपौरा, आदिनाथ प्रतिमालेख, संवत् १२०२, भाषा संस्कृत लिपि नागरी

मूलपाठ

१. संवत् १२०२ आषाढ वदि १० बुधे दिन।।
गोल्लापूर्व्वान्वे साधु गल्ले तस्य सुतायणा इति

२. नित्यं प्रणमं – (ति।)

पुनश्च

१. सवत् १२०२ आषाढ वदि १० बुध दिने ।।गोल्लापूर्व्वान्वे साधु गल्ले तस्य सुतायणा इति

२. नित्यं.........(प्रणमंति।।)

भावार्थ

संवत् १२०२ आषाढ वदी १० बुधवार को प्रतिष्ठा कराकर गोलापूर्व अन्वय के शाह गल्ले तथ उनकी पुत्रियाँ नित्य प्रणाम करती हैं।

प्रतिमा–परिचय

पपौरा क्षेत्र के मदिर क्रमाक २३ में (भोंयरे में) विराजमान तीन पद्मासनस्थ प्रतिमाएँ हैं। ये देशी काले–नीले पाषाण से निर्मित हैं। पालिश काला, चिकना, चमकदार है। मध्यवर्ती प्रतिमा लगभग ३ फुट ऊँची है। इसकी आसन पर न कोई लेख उत्कीर्ण है और न कोई चिह्न अन्य दोनों प्रतिमाएँ लगभग २) फुट अवगाहना की हैं। चिह्न स्वरूप इन प्रतिमाओं की आसनों पर वृषभ तथा लेख उत्कीर्ण है। प्रस्तुत लेख मध्यवर्ती प्रतिमा की दायीं ओर विराजमान प्रतिमा की आसन पर अंकित है।

अभिलेख परिचय

प्रस्तुत अभिलेख दो बार उत्कीर्ण किया गया है। इस प्रतिमालेख की छाया पं. कमलकुमार शास्त्री के सौजन्य से उनके पत्र क्रमांक ५३१ दि. ११/२/७१ ईसवी द्वारा प्राप्त हुई है। दिनांक १२।६।६७ को दर्शन कर उक्त लेख शुद्ध करते हुए प्रसन्नता हुई।

विशेष

अब तक ण को ल वर्ण समझा जाता रहा है और इसलिए य को अ तथा ण को

ल पढकर अल और उसका अलकन अर्थ बैठाया जाता रहा है किन्तु मूलतः वह यण शब्द प्रतीत होता है जिसका पूर्व पद सुता होने से सुताजन (पुत्रियाँ) अर्थ निकलता है। (सम्पादक द्वारा पठित)

अभिलेख - ७०

पपौरा, आदिनाथ प्रतिमा संवत् १२०२ भाषा संस्कृत, लिपि–नागरी

मूलपाठ

१. सं. (संवत्) १२०२ आषाढ़ वदि १० वुधे स्री (श्री) मन्मदनवर्म्मदेव राजे (राज्ये) भोपालनगरदाम्नीक गोलापूव्वन्वे साहु टुड़ा सुत
२. साहु गोपाल भार्या माहिणि सुत साबू सान्हू प्रणमंति नित्यं जिनेस्वर वरिंद परं प्रतिष्ठा (।।)

पुनश्च

१. सं. (संवत्) १२०२ आषाढ़ वदि १० वुधे श्रीमद्मदनवर्म्मदेव राजे (ज्ये) – (भो) पाल नगरदाम्नीक गोल्लापूव्वन्वे साहु टुडा सुत
२. साबू गोपाल भार्य्या माहिणि सुत साबू सान्हू प्रणमंति नित्यं जिनेश्वर वरिंद परं प्रतिष्टा (ष्ठा) (।।)

भावार्थ

संवत् १२०२ आषाढ वदि १० बुधवार को श्री मदनवर्मदेव के राज्य में भोपालनगर के निवासी गोलापूर्व अन्वय के शाह टुड़ा के पुत्र शाह गोपाल और उनकी पत्नी माहिणी तथा पुत्र शाह सान्हू ये सभी जिनेश्वर वरिंद की प्रतिमा प्रतिष्ठा कराकर नित्य प्रणाम करते हैं।

व्याख्या–भोपालनगर

इस प्रतिमा प्रतिष्ठा करानेवाला श्रावक भोपाल नगर का निवासी था। वर्तमान में यह नगर मध्य प्रदेश की राजधानी है।

प्रतिमा–परिचय

यह प्रतिमा पद्मासन मुद्रा में देशी काले नीले पाषाण से निर्मित है। पालिश काला, चिकना और चमकदार है। आसन पर चिहन स्वरूप वृषभ तथा उक्त लेख उत्कीर्ण है।

यह प्रतिमा मध्यवर्ती प्रतिमा की बायीं ओर विराजमान है। पपौरा में यह मंदिर क्रमांक २३ है। इस लेख की छाया भी पं. कमलकुमार जी शास्त्री के सौजन्य से प्राप्त हुई थी।

(तीसरी पुत्री भारती के परिणयोत्सव पर दि० १२/६/६७ संपादक द्वारा पठित)

अभिलेख - 07

मऊ, शान्तिनाथ प्रतिमालेख, संवत् १२०३, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. सिद्धं (।।) गोला (ल्ला) पूर्व्वान्वये साधुः स्वयंभूधर्म्मवत्सलः। तत्सुतौ स्वामिनामा च देवस्वामि गुणान्वितः ।।(१।।) देवस्वामि–

२. सुतौ श्रेष्ठौ सु (शु) भचंद्रोदयचंद्रकः (कौ) कारितं च जगन्नाथं शांतिनाथो जिनोत्तमः ।।(२।।) धर्म्मासे (शे) पि १४

३. तथा दुम्वरान्वये साधु जिनचंद तत्पुत्र हरिश्चं (न्द्र) तत्सुत लक्ष्मीधर श्री सा (शां) तिनाथं प्रणमति सदाः (दा)

४. लक्ष्मीधरस्य धर्म्म संधिज श्रीमन्मदनवर्म्मदेवराज्ये सम्वत् १२०३ फाः (फाल्गुन) सुदि ६ सोमे (।)

पाठ टिप्पणी

इस पाठ में श के स्थान में स का प्रयोग हुआ है और र के बाद आनेवाले व्यञ्जन को द्वित्व किया गया है।

भावार्थ

सिद्धों को (नमस्कार हो)। गोलापूर्व अन्वय के धर्मप्रेमी शाह स्वयंभू के गुणीस्वामी और देवस्वामी नामक दोनों पुत्रों में देवस्वामी के श्रेष्ठ शुभचन्द्र और उदयचन्द्र ने जगत के स्वामी जिनोत्तम शांतिनाथ तीर्थंकर की प्रतिमा निर्मित कराकर श्रीमान् मदनवर्मदेव के राज्य में संवत् १२०३ फाल्गुन सुदी ६ सोमवार के दिन प्रतिष्ठित कराई। दुम्बरान्वय के शाह जिनचन्द्र का पौत्र और हरिशचन्द्र का पुत्र लक्ष्मीधर शांतिनाथ–प्रतिमा को सदा प्रणाम करता है।

प्रतिमा–परिचय

यह शान्तिनाथ प्रतिमा काले पाषाण से खड्गासन मुद्रा १६० x ५६ से.मी. में निर्मित

है। मध्यप्रदेश के छतरपुर जिले में नौगांव से ५ मील दूर धुबेला राज्य संग्रहालय में संग्रहालय क्रमांक २४ से संगृहीत है। प्राप्ति स्थल मऊ ग्राम संग्रहालय से एक मील दूर स्थित है।[1]

अभिलेख परिचय

लेख का आधा भाग पद्य में और आधा भाग गद्य में है। पूर्व पद्य–भाग में दो अनुष्टुभ श्लोक हैं। चार पंक्तियों में उत्कीर्ण यह लेख संस्कृत भाषा और नागरी लिपि से लिखा गया है।

सदर्भ

1 श्री बालचन्द्र जैन, उपसचालक–पुरातत्व व सग्रहालय, रायपुर मध्य प्रदेश के सौजन्य से प्राप्त।

अभिलेख - ७२

मऊ, आदिनाथ प्रतिमालेख संवत् १२०३, भाषा संस्कृत, लिपि–नागरी

मूलपाठ

१. सिद्ध (।।) सवत् (त्) १२०३ कोचे जाहुल तस्य सुत कोचे आल्हण नित्य प्रणमति (।)

२. रूपानी (नि)त्य प्रणमति (ति।।)

भावार्थ

सिद्धो को नमस्कार हो। संवत् १२०३ मे कोचे संभवत. गोत्र के जहुल (जाल्हण) के पुत्र कोचे आल्हण तथा संभवतः उसकी पत्नी रूपा इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराकर नित्य प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा–परिचय

यह प्रतिमा ५१ x ४७ से.मी. काले पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित है। सम्प्रति मध्यप्रदेश के छतरपुर जिले में नौगांव से पाँच मील दूर स्थित राज्य संग्रहालय धुबेला में संगृहीत है। संग्रहालय में यह प्रतिमा संग्रहालय से एक मील दूर स्थित मउ ग्राम से लायी गयी थी। उक्त दो पंक्ति का लेख पादपीठ पर उत्कीर्ण है।[1]

संदर्भ

1. श्री बालचन्द्र जैन, उपसचालक–पुरातत्व व संग्रहालय रायपुर म.प्र. के सौजन्य से प्राप्त।

अभिलेख - ०३

मऊ, अर्हन्त प्रतिमालेख, काल रहित भाषा संस्कृत लिपि नागरी

मूलपाठ

सिद्धं (।।) परवाडकुले जातः साधु श्री ती.......

अभिलेख परिचय

परवाड कुल का उल्लेख होने से यह प्रतिमालेख महत्वपूर्ण है। पादपीठ खण्डित हो जाने से लेख पूरा नहीं है। चिह्न स्थल भी खंडित है। सम्प्रति प्रतिमा धुवेला राज्य संग्रहालय में संगृहीत है। यहाँ यह संग्रहालय से एक मील दूर स्थित मउ नामक ग्राम से लायी गयी थी। लेखनी एवं प्रतिमा विन्यास तथा उपलब्ध अन्य जैन प्रतिमाओं की समानता से संवत् १२०३ की ज्ञात होती है।[1]

संदर्भ

1 श्री बालचन्द्र जैन, उपसंचालक–पुरातत्व व संग्रहालय रायपुर म.प्र. के सौजन्य से प्राप्त।

अभिलेख - ०४

अहार, अर्हन्त प्रतिमालेख, संवत् १२०३, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. संवत् १२०३ माघ सुदि १३
२. साधु जठावन पुत्र सुएचंद(।)

भावार्थ

सम्वत् १२०३ माघ सुदी त्रयोदशी तिथि में शाह जठावन के पुत्र सुएचन्द्र ने इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई।

प्रतिमा परिचय

प्रतिमा देशी काले नीले पाषाण से कायोत्सर्ग मुद्रा में निर्मित हैं। इसका पालिश काला, चिकना और चमकदार है। नासिका, दाढ़ी, उपस्थ और हाथ की अगुलियाँ खण्डित हैं। हथेलियों में पुष्प अंकित हैं। हथेलियों के नीचे दोनों ओर एक–एक चँमरवाही देव सेवारत खड़े हैं। चिह्न नहीं है। आसन से सिर तक की अवगाहना ५५ इंच है। सिर के पृष्ठभाग में प्रभामण्डल भी अंकित है। आसन पर उक्त दो पंक्ति का लेख उत्कीर्ण है। यह प्रतिमा स्थानीय संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ६१ से संगृहीत है।[1]

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख . अहार क्षेत्र (टीकमगढ़ म.प्र.) प्रकाशन ले.स. 11/253, पृ. 102।

अभिलेख - ७५

अहार, आदिनाथ प्रतिमालेख संवत् १२०३, भाषा संस्कृत लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् १२०३ माघ सुदि १३ गोल्हेपर्व (गोल्लापूर्व) अन्ये (अन्वये) सावु (साहु) भावदेव (भार्या) जसमति तस्य पुत्र लपभावन प्रणमति नित्यं।

भावार्थ

सम्वत् १२०३ माघ सुदी त्रयोदशी दिन में गोलापूर्व अन्वय के शाह भावदेव और उनकी पत्नी जसमति का पुत्र लपभावन (प्रतिमा–प्रतिष्ठा कराकर) नित्य प्रणाम करता है।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा देशी काले पाषण से पद्मासन मुद्रा में निर्मित है। इसका सिर भग्न हो जाने से पुनः जोड़ा गया है। हाथों की हथेलियाँ और पैरों की अंगुलियाँ छिली हुई हैं। गले तक की अवगाहना १४½ इंच और पाषण फलक की चौड़ाई १६ इंच है। आसन पर चिह्न स्वरूप वृषभ तथा उक्त एक पंक्ति का लेख उत्कीर्ण है। वर्तमान में यह प्रतिमा स्थानीय संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ८ से संगृहीत है।[1]

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख, वही, ले.स. 11/254 पृष्ठ 103।

अभिलेख - ७६

अहार, अजितनाथ प्रतिमालेख, संवत् १२०३, भाषा संस्कृत, लिपि–नागरी

मूलपाठ

ओं।।............(गर्गराटान्वये) साहु स्री मल्हण तस्य सुत वाछु तस्य सुत लाले तस्य भार्या नायव्व (नाधर) तयोर्सुताः साहु वील्हु राजू आमदेशः अजितनाथं प्रणमंति नित्यं। संवत् १२०३ माघ सुदि १३।

भावार्थ

गर्गराट अन्वय के शाह मल्हण के प्रपौत्र और वाछु शाह के पौत्र तथा शाह लाले और उनकी पत्नी नायव्व के पुत्र शाह वील्हु राजू आमदेव संवत् १२०३ माघ सुदी त्रयोदशी के दिन अजितनाथ प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराकर नित्य प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा–परिचय

यह प्रतिमा देशी काले–नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में निर्मित है। इसका पालिश काला, चिकना और चमकदार है। सिर भग्न हो जाने से पुनः जोड़ा गया है। अंगुलियाँ खण्डित हैं। इसकी अवगाहना १६ इंच और फलक की चौड़ाई ३२ इंच है। आसन पर चिह्न स्वरूप हाथी तथा एक पंक्ति में उक्त लेख का मूलपाठ उत्कीर्ण है। लेख के आरंभिक अंश का पाषाण छिल गया है। संवत् ११६६ के प्रतिमालेखों से लेख के आरंभ में गर्गराटान्यय का उत्कीर्ण रहना प्रतीत होता है। यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ६४ से संगृहीत है।[1]

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख : अहार क्षेत्र (टीकमगढ़ म.प्र.) प्रकाशन ले.सं. 11/255 पृष्ठ 103।

अभिलेख - ७७

अहार, अर्हन्त प्रतिमालेख, संवत् १२०३ भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

आसन की दायीं ओ उत्कीर्ण

१. ।।संवतु (संवत्) १२०३ माघ सुदि १३
२. जैसवालान्वये साहु षोने (खोने)।।भार्या।।
३. जसकरी ।। सुत नायक सादू ।। त–
४. स्य भ्रातृ पाल्हा ।।वील्हा।। जाल्हा।। पद्–
५ मा ।।महिचंद्र ।।छ।। सुत वीने प्रणमति (प्रणमंति नित्यं)।।

आसन की वायीं ओर उत्कीर्ण

१. ।।संवतु (संवत्) १२०३ माघ सुदि १३ जैस–
२. वालान्वये साहु वाहड ।।भार्या ति–
३. नोवि ।।सुत साहु सोमनी ।। भ्राता–
४. साहु वाल्ह ।। सुत जाहड।। लाषू (खू)।।
५. लोह प्रणमति (प्रणमंति) नित्यं ।।[1]

भावार्थ

संवत् १२०३ माघ सुदी त्रयोदशी के दिन जैसवाल अन्वय के शाह खोने, उनकी पत्नी यशकरी के पुत्र नायक सादू और उसके भाई पाल्हा वील्हा जाल्ह, पद्मा तथा महीचन्द्र ये छहों तथा महीचन्द्र का पुत्र वीने ये नित्य वंदना करते है। संवत् १२०० के एक प्रतिमा लेख से विदित होता है कि इस परिवार ने आदिनाथ प्रतिमा की प्रतिष्ठा भी कराई थी।.

आसन की वायीं ओर के मूलपाठ में संवत् १२०३ माघ सुदि १३ में जैसवाल अन्वय के शाह वाहड उनकी पत्नी तिनोवि पुत्र शाह सोमनी, तथा उसके भाई शाह वाल्ह और उसके पुत्र जाहड, लाखू, लोह (ल) के द्वारा प्रतिमा प्रतिष्ठा कराकर नित्य प्रणाम किये जाने का उल्लेख है।

इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा एक ही अन्वय के दो विभिन्न परिवारों ने मिलकर कराई ज्ञात होती है। भ्रातृ स्नेह भी इस लेख से प्रकट होता है।

प्रतिमा परिचय

अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या २ से संगृहीत यह प्रतिमा संग्रहालय के बाहर बरामदे में मंदिर की ओर वाली दीवाल से टिकी हुई है। इसके केश घुंघराले हैं। कान, नाक, मुख दाढ़ी दायाँ हाथ, उपस्थ, अंगूठे और घुटनों ने भग्न है। घुटनों के पास दोनों हिस्से जोड़े गये हैं। इसका निर्माण देशी काले नीले पाषाण से कार्योत्सर्ग मुद्रा में हुआ है। आसन सहित इसकी अवगाहना ७५ इंच है। फलक की चौड़ाई २५ इंच है। आसन ११½ इंच लम्बी और ३ इंच चौडी है। मूलपाठ उत्कीर्ण करने के लिए आसन को दो भागों में विभाजित किया गया है। प्रत्येक भाग में पाँच पंक्ति का उक्त लेख उत्कीर्ण है। चिह्न नहीं है। प्रतिमा की दायीं बायीं दोनों ओर एक–एक चमरवाही इन्द्र खड्गासन मुद्रा में अंकित हैं। इन देवों के आभूषण मंदिर नम्बर एक में विराजमान शान्तिनाथ प्रतिमा के चँमरवाही इन्द्रों के आभूषणों के समान हैं। पूर्ण परिकर नहीं है। सिरोपरि संभवतः फणावली रही ६। उसके रहने से ही संभवतः आसन पर चिह्न नहीं दिया गया है। ऐसी उस सम्वत् की तीन प्रतिमाएँ रही हैं जिनका ऊपरी परिकार संभवतः भग्न हो गया है।

संदर्भ

1 अहार क्षेत्र के अभिलेख अहार क्षेत्र (टीकमगढ म.प्र) प्रकाशन ले.स. 11/256 पृष्ठ 104।

अभिलेख - ७८

अहार, आदिनाथ प्रतिमालेख, संवत् १२०३ भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् १२०३ माघ सुदि १३ गुरौ वैस्यान्वये साहु सुपट भार्या गागा तस्य सुतः साहु रासल पाल्ह रिंसि प्रणमंति नित्यंः (इति)।।

पाठ टिप्पणी

नित्यं के बाद दर्शाये गये विसर्ग इति शब्द के बोधक हैं।

ऋ के लिए रि और ष के लिए स का प्रयोग हुआ है।

भावार्थ

सम्वत् १२०३ माघ सुदि १३ गुरुवार के दिन वैश्य अन्वय के शाह सुपट, उसकी पत्नी गागा तथा उसके पुत्र शाह रासल, पाल्ह, ऋषि (प्रतिमा प्रतिष्ठा कराकर) नित्य प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा–परिचय

यह प्रतिमा देशी काले–नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में निर्मित है। इसकी पालिश काली, चिकनी और चमकदार है। सिर और हथेलियाँ नहीं हैं। आसन से गले तक की अवगाहना १५ इंच है। आसन की चौड़ाई २० इंच है। आसन पर चिह्न स्वरूप वृषभ और एक पंक्ति में उक्त लेख उत्कीर्ण है। वर्तमान में यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ८१ से संगृहीत है।[1]

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख: वही, ले. सं. 11/257 पृष्ठ 105।

अभिलेख - ७९

अहार शान्तिनाथ प्रतिमालेख, संवत् १२०३ भाषा संस्कृत लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् १२०३ सवु (साहु) सांतन (शांतन) तस्य पुत्र लछू तस्य भार्या मलगा प्रणमति।

भावार्थ

संवत् १२०३ में शाह शान्तन की पुत्रवधू और लछू की पत्नी मलगा (प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराकर) प्रणाम करती है।

प्रतिमा–परिचय

अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ५२ से संगृहीत यह प्रतिमा देशी और काले–नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में निर्मित है। इसका पालिश काला, चिकना, चमकदार है। इसकी दोनों हाथों की हथेलियाँ और आसन मात्र शेष है। अन्य अंग नहीं है। आसन पर चिह्न स्वरूप हरिण तथा एक पंक्ति में उक्त लेख उत्कीर्ण है।[1]

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख, अहार क्षेत्र (टीकमगढ़ म.प्र.) प्रकाशन, ले.सं. 11/258 पृष्ठ 106।

अभिलेख - ८०

अहार, अर्हन्त प्रतिमालेख, संवत् १२०३ भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

आसन की दायीं ओर उत्कीर्ण

१. संवत् १२०३ माघ

२. सुदि १३ जैसवालान्वये

३. साहु षोना (खोने)। भार्या जसक–

४. री। सुत नायक साढु।।

५. भ्राता पाल्हा। वील्हा। मा–

६. ल्हा............

आसन की बायीं ओर उत्कीर्ण

१. संवत् १२०३ माघ सुदि

२. १३ जैसवालान्वये साहु

३. वाहड।.............सु

४. त ....।। ....त

५. लाष (लाखू) वाहड भार्या

६. सोहदे ।।प्रणमंति नित्यं।।

भावार्थ

संवत् १२०३ माघ सुदी त्रयोदशी तिथि में जैसवाल अन्वय के साहु खोने, उनकी पत्नी जसकरी तथा पुत्र साढू पाल्ह वील्ह माल्ह आदि ने तथा इसी अन्वय के शाह बाहड के पुत्रों ने मिलकर इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई। वे नित्य प्रणाम करते हैं। इन दोनों परिवारों की यह दूसरी प्रतिमा–प्रतिष्ठा है।

प्रतिमा–परिचय

अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ६२ से संगृहीत यह प्रतिमा देशी काले–नीले

पाषाण से खड्गासन मुद्रा में निर्मित है। पालिश काला, चिकना, चमकदार है। यह प्रतिमा तीन जगह से खंडित है। तीनों स्थलों को जोड़ा गया है। बायें स्कन्ध से दायीं जाँघ तक एक भाग है। दायीं कुहनी नहीं है। उपस्थ भग्नावस्था में है। हथेलियों में पुष्पाकृति अंकित है। नीचे दोनों ओर एक चँमरवाही देव खड्गासन मुद्रा में सेवारत है। आसन सहित इस प्रतिमा की अवगाहना ५५ इंच है। आंखों की पुतलियों और नाखूनों का अंकन बहुत सुंदर हुआ है। आसन पर चिह्न नहीं है। आसन को दो भागों में विभाजित किया गया है। प्रत्येक भाग में छह–छह पंक्तियों में लेख उत्कीर्ण है। परिकर पूरा नहीं है।[1]

संदर्भ

1 अहार क्षेत्र के अभिलेख वही, ले सं 259 पृष्ठ 106

अभिलेख - ८१

अहार, अर्हन्त प्रतिमालेख, संवत् १२०३, भाषा संस्कृत लिपि नागरी

मूलपाठ

आसन की दायीं ओर उत्कीर्ण

१. संवत् १२०३ माघ सुदि १३

२. जैसवालान्वये साहु षोने (खोने)।। भा–

३. र्या जसकरि। सुत नायक साढु।

४. भ्रातृ पाल्हा। वील्हे। माल्हा। पद

५. मे ।। महिणि।।छ।। सुत स्रीरा (वीने) प्र–

६. णमंति नित्यं।।

आसन की बायीं ओर उत्कीर्ण

१. संवत् १२०३ माघ सुदि

२. १३ जैसवालान्वये साधु

३. वाहड ।।भार्या सिरिदेवि।

४. सुत साहु सोनेस्री। भ्रा–

५. ता साहु माल्हू ।।जन।।

६. जाहड ।। लाषू (खू) ।। लाले।।

७. प्रणमंति नित्यं।।

भावार्थ

संवत् १२०३ माघ सुदी त्रयोदशी में जैसवाल अन्यय के शाह खोने उनकी पत्नी जसकरी तथा सादु पाल्हा वील्हे माल्हा पद्मे माहिणि छहों पुत्र और माहिणि पुत्र वीने तथा शाह वाहड उनकी पत्नी श्रीदेवी पुत्र शाह श्री सोने शाह माल्हू, जन, जाहड, लाखू और लाले ये छहो पुत्र (प्रतिष्ठा कराकर) नित्य प्रणाम करते हैं। दोनों परिवारों की यह तीसरी प्रतिमा–प्रतिष्ठा है। साहू खोने और साहू वाहड अपने अपने–परिवार के मुखिया हैं। दोनों के छह –छह पुत्र हैं।

प्रतिमा परिचय

अहार सग्रहालय में संग्रहालय संख्या ६० से संगृहीत यह प्रतिमा देशी काले नीले पाषाण से खड्गासन मुद्रा में निर्मित है। पालिश काला, चिकना, चमकदार है। नाभि के नीचे से खण्डित है। दोनों भाग एक साथ रखे हुए हैं। कुहनी से नीचे के हाथ नहीं हैं। हथेलियो में कमल पुष्प अंकित है। सिर के पीछे भामण्डल दर्शाया गया है। नीचे दोनों ओर एक–एक चॅमरवाही देव सेवारत खडा है। आसन सहित प्रतिमा की अवगाहना ५५ इच है। लेख ६½ इच लम्बे ओर ४ इच चौडे शिलाफलक पर दो भागों में उत्कीर्ण है। दायी ओर छह तथा वायीं ओर सात पक्तियॉ हैं। चिह्न नहीं है। इन श्रावको द्वारा प्रतिष्ठापित तीनों प्रतिमाएँ संभवत· पार्श्वनाथ तीर्थकर की रही हैं। सिरोपरि रहनेवाली फणावलि संभवत· टूट गई है। परिकर पूरा नहीं है।[1]

सदर्भ

1 अहार क्षेत्र के अभिलेख वही ले स 11/260 पृष्ठ 107–108।

अभिलेख - ८२

अहार, आदिनाथ प्रतिमालेख संवत् १२०३, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी–

मूलपाठ

।। सिरि (श्री) गोला (ल्ला) पूर्व्वान्वये साधु श्री साहुल साधु (णि) कूके एतयो सुतो साहु श्री देवचंद्र नालू तस्य भ्राता आल्हू प्रणमंति न्यतं (नित्यं) ।।सं. (संवत्) १२०३

भावार्थ

श्री गोलापूर्व अन्दय के शाह श्री साहुल साहुणी कूके के पुत्र शाह श्री देवचन्द्र और नालू तथा नालू का भाई आल्हू ये संवत् १२०३ में प्रतिष्ठा कराकर नित्य प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ८६ से संगृहीत है। इसका निर्माण काले नीले देशी पाषण से हुआ है। पालिश काला, चिकना और चमकदार है। प्रतिमा का सिर नहीं है। हाथ खण्डित हैं। आसन से गले तक की अवगाहना २२ इंच है। आसन के शिलाफलक की लम्बाई २८ इंच है। आसन पर चिह्न स्वरूप वृषभ तथा एक पंक्ति का उक्त लेख उत्कीर्ण है।[1]

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख : वही ले.सं. 11/261 पृष्ठ 108।

अभिलेख - ८3

अहार आदिनाथ प्रतिमालेख संवत १२०३ भाषा संस्कृत लिपि नागरी

मूलपाठ

१. प्रद्ध...................

२. ....श्रीमानि सूनु जितः । संः (संवत्) १२०३ सुदि १३ गुरौ मंगलं मगश्री (मगसिर)।।

३. ....माथुरान्वये श्री जसरस तस्य सुत श्री जसरा तस्य पुत्र नायक श्री जाल्हण... ....एते प्रणमंति नित्यं

भावार्थ

संवत् १२०३ माघ सुदी त्रयोदशी तिथि में माथुर अन्वय के श्री जसरस के पौत्र और श्री जसरा के पुत्र नायक श्री जाल्हण आदि (प्रतिमा–प्रतिष्ठा कराकर) नित्य प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा–परिचय

अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या १८ से संगृहीत यह प्रतिमा काले–नीले देशी पाषण से पद्मासन मुद्रा में निर्मित है। इसका पालिश काला, चिकना और चमकदार है। सिर नहीं है। आसन से गले तक की अवगाहना १६ इंच है। आसन फलक की लम्बाई २७ इंच है। कुहनी का ऊपरी भाग भी नहीं है। हथेलियाँ और बायाँ पैर खण्डित है। आसन पर चिह्न स्वरूप वृषभ तथा तीन पंक्ति में उक्त लेख उत्कीर्ण है।[1]

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख वही, ले. सं. 11/262 पृष्ठ 109

अभिलेख - ८४

अहार, आदिनाथ–प्रतिमालेख सवत् १२०३ भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् १२०३ माघ चं (सुदि) ८.........मडदेवालन्व (ये) सावु सेठ दामामारू (कमल पुष्प) तस्य सुत– (सु) नदमाल्हा केलाम सर्व्वे प्रतिमा कारापिता।

भावार्थ

मडदेवालान्वय के साहू दामामारू के पुत्र सुनद माल्ह और केलाम सभी ने प्रतिमा निर्माण कराकर संवत् १२०३ माघ सुदी अष्टमी तिथि में प्रतिष्ठा कराई।

प्रतिमा परिचय

देशी काले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में निर्मित चमकदार पालिश से सहित इस प्रतिमा की मात्र आशन शेष हैं। यह आसन २० इंच लम्बी और १ ।।इंच चौडी है। आसन पर लांछन स्वरूप वृषभ अंकित है। लांछन के नीचे एक पंक्ति में उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण है।

विशेष

इस लेख में शाह और सेठ दो सामाजिक पदों का उल्लेख है। सेठ पद श्रेष्ठी का हिन्दी भाषा का नाम है।[1]

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख : वही, ले स. 11/264 पृष्ठ 110

अभिलेख - ८५

अहार, महावीर प्रतिमालेख, संवत् १२०३, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

।।ओं।। स्री।। कसी सामि तस्य सुतः पडित (पण्डित) स्री गंगवर तस्य भार्या जोगुल तयोर्सुता सामलदेवी तस्याः पुत्री वीरनाथं प्रणमति। संवतु (त्) १२०३ माघ सुदि......(१३)।

भावार्थ

श्री कसी स्वामी के पुत्र पण्डित श्री गंगवार, उनकी पत्नी जोगुल उनकी पौत्री और सामलदेवी की पुत्री संवत् १२०३ माघ सुदी त्रयोदशी तिथि में (प्रतिमा प्रतिष्ठा कराकर) वीरनाथ को प्रणाम करती है।

व्याख्या

वीरनाथ– महावीर के पाँच नामों में वीर एक नाम था। सभी तीर्थकारों के नाम के साथ नाथ शब्द संयुक्त रहता है। अतः यहाँ वीरनाथ का अर्थ है तीर्थकर महावीर।

प्रतिमा–परिचय

अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ८८ से संगृहीत यह प्रतिमा देशी काले–नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा निर्मित है। पालिस काला, चिकना, चमकदार है। सिर और अंगुलियाँ नहीं हैं। आसन से गले तक की अवगाहना १६ इंच है। आसन का फलक २२ इंच लम्बाई में है। आसन के मध्य में चिह्न स्वरूप सिंह तथा उसकी दोनों ओर एक पंक्ति में उक्त लेख उत्कीर्ण है।[1]

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख : वही, ले.सं. 11/263 पृष्ठ 109–110।

अभिलेख - ८६

छतरपुर, नेमीनाथ प्रतिमालेख, संवत् १२०३ भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

सं. (संवत्) १२०३ माघ वदि ८ गुनावाला पण्डित त्रिकाली पण्डित देवकीर्तिनये प्राकृत चक्रवर्ती पण्डित श्री माणिक्यनन्दी देवनिष्ठ नेमि (देवरिष्ठनेमिं) प्रणमति। वलादेव लंदीष अवधीप वर्मचन्द श्री की सत्य श्री पद्म श्री।

पाठ–टिप्पणी

यह पाठ अशुद्ध प्रतीत होता है। गुनावाला पण्डित त्रिकाली पण्डित आदि पुनः पठनीय हैं। गुनावाला के स्थान में गुरूवासरे शब्द ज्ञात होता है।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा छतरपुर से श्री दिगम्बर जैन नया मंदिर में विराजमान है। काले नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में निर्मित इस प्रतिमा की अवगाहना ४१ इंच और चौड़ाई ३१ इंच बताई गई है।[1]

सदर्भ

1. जिनमूर्ति प्रशस्ति लेख . क्रमाक 290, पृष्ठ 63।

अभिलेख - ८७

छतरपुर, नेमिनाथ प्रतिमालेख, संवत १२०५, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी,

मूलपाठ

गोल्लापूर्व्वान्वय साधु रासलस्तद्भार्या लटकन तत्सुतौ सांतन–आल्हणौ अरिस्ट (ष्ट) नेमिजिन प्रणमतः श्रेयसे सदा। संवत् १२०५ माघ सुदि (दी) ५ रवौ।

भावार्थ

गोलापूर्व अन्वय के शाह रासल और उनकी पत्नी लट्कन के दोनों पुत्र--शान्तन तथा आल्हण अरिष्टनेमि जिनेन्द्र प्रतिमा की संवत् १२०५ माघ सुदी पंचमी रविवार को प्रतिष्ठा कराकर कल्याणार्थ सदा उसे प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा--परिचय

यह प्रतिमा श्याम पाषाण से पद्मासन मुद्रा मे निर्मित हुई है। इसकी अवगाहना ३६ इच और चौडाई ३५ इंच बताई गई है। सम्प्रति यह प्रतिमा श्री दिगम्बर जैन बडा मंदिर छतरपुर म.प्र. मे विराजमान है।[1]

सदर्भ

1 जिनमूर्ति--प्रशस्ति लेख ले.क्र 2 प्रशस्ति लेख पृ 26।

अभिलेख - ८८

खजुराहो, अर्हन्त प्रतिमालेख, सवत् १२०५, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

ॐ ।। गृहपत्यन्वये श्रेष्ठि पाणिधरस्तस्य सुत श्रेष्ठि ति (त्रि) विक्रम तथा आल्हण। लक्ष्मीधर।। संवत् १२०५। माघ वदि ५।।

भावार्थ

गृहपति अन्वय के श्रेष्ठी पाणिधर के पुत्र श्रेष्ठी त्रिविक्रम, आल्हण और लक्ष्मीध ार ने सवत् १२०५ माघ वदी पंचमी को इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई।

प्रतिमा परिचय

खजुराहो के जैन मदिर क्रमांक २७ मे विराजमान आदिनाथ प्रतिमा की एक ओर पद्मासनस्थ प्रतिमा भी विराजमान है। यह श्याम पाषाण से निर्मित है। आसन पर चिह्न नहीं है। एक पंक्ति में उक्त लेख उत्कीर्ण है। लेख के अक्षर आधा इंच आकार मे हैं।[1]

सदर्भ

1 एपि इण्डिका, जिल्द 1, पृष्ठ 153।

अभिलेख - ८९

खजुराहो, अर्हत् प्रतिमालेख, संवत् १२०५ भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

ग्र (गृ) हपत्यन्वये श्रेष्ठि श्री पाणिधर..........

अभिलेख परिचय

यह अपूर्ण लेख लगभग पाँच इंच लम्बी एक पंक्ति से आसन पर उत्कीर्ण है।[1] अभिलेख ८८ में आये श्रेष्ठी एवं अन्वय की समानता से इसका समय संवत् १२०५ ज्ञात होता है।

संदर्भ

1 एपि इण्डिका, जिल्द 1, पृष्ठ 152।

अभिलेख - ९०

खजुराहो मंदिर भित्ति लेख संवत् १२०५, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् १२०५ . . . .

अभिलेख परिचय

इस शिलालेख में केवल विक्रम संवत् १२०५ तिथि दी गई है। यह अभिलेख किस उपलक्ष्य में किसके द्वारा उत्कीर्ण कराया गया, इसका अभिलेख में उल्लेख नहीं किया गया है।[1]

संदर्भ

1. There are short inscriptions on the court of the Jain temples it is dated in Samvat 1205 or A.D. 1148.
कनिंघम आर्कि सर्वे रिपोर्ट, जिल्द 21, पृष्ठ 68।

अभिलेख - ९१

मदनपुर मंदिर भित्तिलेख, सवत् १२०६,

मूलपाठ

मदनपुर ग्राम की एक ओर एक प्राचीन जैन मंदिर है। इस मदिर मे सवत् १२०६ का ८ पक्ति का एक शिलालेख लगा हुआ है, जिसमें मदनपुर ग्राम का नामोल्लेख किया गया है तथा सवत् १२०६ वैशाख सुदी १० भौमवार प्रतिष्ठा तिथि भी दी गई है।

प्राप्तिस्थल–मदनपुर

सागर–ललितपुर वाया मालथौन रोड पर ललितपुर से २४ मील दूर दक्षिण–पूर्व मे तथा सागर से ३० मील दूर उत्तर मे स्थित है।[1]

सदर्भ

1 *The old and thriving village of Madanpur is situated at the mouth of the best and easiest pass leading from Sagar to the north The principal road runs by Malthon through the narhat pass, to Lalitpur Madanpur is 24 miles to the south east of Lalitpur and 30 miles to the north of Sagar*

On one side of the village there is a Jain Temple with an inscription dated in Samvat 1206 or A D 1149, which contains the name of Madanpur

कनिघम आर्कि० सर्वे रिपोर्ट, जिल्द 10 पृ 98।

अनेकात वर्ष 19, किरण 1–2, पृ 63।

अभिलेख - ९२

गुड़ार, शान्तिनाथ प्रतिमालेख, संवत् १२०६

मूलपाठ

गुड़ार मध्य प्रदेश के शिवपुरी जिले का एक ग्राम है। यहाँ शान्ति, कुन्थु अरह प्रतिमाएँ विराजमान है। ये प्रतिमाएँ देशी पाषाण से खड्गासन मुद्रा में अंकित हैं। मध्य में शान्तिनाथ प्रतिमा है, जिसकी अवगाहना ६ फुट है। इस प्रतिमा की एक ओर तीर्थकर कुन्थुनाथ की और दूसरी ओर तीर्थकर अरहनाथ की प्रतिमा है। कुन्थुनाथ और अरहनाथ

प्रतिमाओं की अवगाहना ६½ फुट है। शान्तिनाथ प्रतिमा की आसन पर चिह्न स्वरूप हरिण तथा प्रतिमा–प्रतिष्ठा संवत् १२०६ उत्कीर्ण है।[1]

संदर्भ

1 *The Deccriptive and classified list of Ancient monuments in Madhya Bharat, Pub. The department of arcihaeology Madhy-Bharat Government Gwalior S.No. 590. P. 46. Annual Administraction Report, Gwalior year 1929-1930 PP. 23, 61.*

अभिलेख संख्या ९३

अहार, चन्द्रप्रभ प्रतिमालेख, संवत् १२०७ भाषा संस्कृत लिपि, नागरी

मूलपाठ

सं. (संवत्) १२०७ माघ वदि् गुरौ ८ ग्र (गृ) पत्यन्वये् साधु सवधउस्तद्भार्या महनी तत्पुत्र उदचंद्रः प्रणमति श्रेयसे। कारिता देवे महिंद्रे इति ताभ्यां पुत्रम जत्ता।।

भावार्थ

संवत् १२०७ माघ वदी अष्टमी शुक्रवार के दिन गृहपत्यन्वय के शाह सवधऊ और उनकी पत्नी महनी का पुत्र उदयचन्द्र कल्याणार्थ प्रणाम करता है और देव तथा महेन्द्र इन दोनों पुत्रों ने यात्रा (तीर्थयात्रा) की। यात्रा उपलक्ष्य में ही यह प्रतिष्ठा कराई गई ज्ञात होती है।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ५५ से संगृहीत है। इसका निर्माण देशी काले–नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में हुआ है। पालिश काली, चिकनी और चमकदार है। इसकी केवल आसन शेष है। हथेलियाँ भी नहीं है। आसन की लम्बाई २४ इंच है। आसन पर आदि मध्य और अंत में चार दल के कमल अंकित हैं। चिह्न स्वरूप अर्द्ध चन्द्र तथा एक पंक्ति में उक्त मूलपाठ भी उत्कीर्ण किया गया है।[1]

संदर्भ

1. *अहार क्षेत्र के अभिलेख : वही, ले. स. 11/265 पृष्ठ 111*

अभिलेख - ९४

अहार, चन्द्रप्रभ प्रतिमालेख, संवत् १२०७ भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् १२०७ माघ वदि ८ ग्र (गृ)हपत्यन्वये साहु सोने तस्य भार्या होवा तत्सुत दिवचंद्र अष्ट कर्मारिजयनाय कारापितेयं प्रतिमा।।

भावार्थ

संवत् १२०७ माघ वदी अष्टमी तिथि में गृहपत्यन्वय के शाह सोने, उनकी पत्नी होवा और पुत्र दिवचन्द्र ने अष्टकर्म रूपी वैरियों को जीतने के लिये इस प्रतिमा का निर्माण कराया तथा प्रतिष्ठा कराई।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या २७ से संगृहीत है। इसका निर्माण देशी काले–नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में हुआ है। पालिश काली, चिकनी और चमकदार है। यह प्रतिमा सिर तथा हथेलियों से रहित है। आसन से गले तक की अवगाहना १७ इंच है। आसन फलक की लम्बाई २३ इंच है। चिह्न स्वरूप आसन पर अर्द्धचन्द्र तथा उसकी दोनों ओर एक पंक्ति में उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण है।[1]

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख : वही, ले. सं. 11/266 पृष्ठ 111–112

अभिलेख - ९५

अहार, पुष्पदन्त प्रतिमालेख संवत् १२०७, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. ....त् (संवत्) १२०७ माघ वदि ८ जयसिवालान्वये

२. (सा) धु रतन तत्सुताः सी (सी) दव (देव)।.........

३. नित्यं प्रणमंति ।।

भावार्थ

जैसवाल अन्वय के शाह रतन और उसके पुत्र श्री देवादि संवत् १२०७ माघ वदी अष्टमी तिथि में प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराकर उसे नित्य प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ७ से संगृहीत है। इसका निर्माण देशी काले–नीले पाषाण से कायोत्सर्ग मुद्रा में हुआ है। पालिश काली, चिकनी और चमकदार है। अवगाहना अनुमानतः २४ इंच है। इसकी दोनों ओर एक–एक चँमरवाही इन्द्र सेवारत खड़ा है। आसन पर मकर तथा उसकी दोनों ओर तीन पंक्तियों में उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण है।[1]

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख वही, ले. सं. 11/267 पृष्ठ 112

अभिलेख - ९६

अहार, सुमतिनाथ प्रतिमालेख, संवत् १२०७, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् १२०७ माघ वदि ८ षं (खं) डिलवालान्वये सावु (हु) माहदस्तत्सुत वाघप तस्य भार्या साविति तत्सुत वीकउं नित्यं प्रणमंति।

पाठ टिप्पणी

इस मूलपाठ में ख के लिए ष का व्यवहार हुआ है।

भावार्थ

संवत् १२०७ में माघ वदी अष्टमी तिथि में खण्डेलवाल अन्वय के शाह माहद, पौत्र वीकउं और पुत्र वाघप तथा पुत्रवधू सावित्री प्रतिष्ठा कराकर नित्य प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय क्रमांक १४ से संगृहीत है। इसका निर्माण देशी काले-नीले पाषण से हुआ है। पालिश काला और चिकना है। पद्मासन मुद्रा में अंकित इस प्रतिमा का सिर नहीं है। हाथ और पैरों की अंगुलियॉं खण्डित हैं। चिह्न स्वरूप आसन की वायीं ओर चकवा पक्षी तथा एक पंक्ति में उक्त लेख उत्कीर्ण है।[1]

सदर्भ

1 अहार क्षेत्र के अभिलेख - वही, ले सं 11/268 पृ 112

अभिलेख - ९७

अहार, पद्मप्रभ प्रतिमालेख, संवत् १२०७ भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. संवत् १२०७ माघ वदि ८ ग्र (गृ) हपत्यन्वये सावु जदुल
२. तस्य भार्या लष (ख) मा तत्सुत मातन
३. तस्य भार्या सा .... (हणा)।

भावार्थ

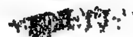
संवत् १२०७ माघ वदी अष्टमी तिथि में गृहपत्यन्वय के शाह जदुल उनकी पत्नी लखमा, पुत्र मातन और पुत्रवधू साहणा ने इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ७१ से संगृहीत है। इसका निर्माण देशी काले-नीले पाषाण से खड्गासन मुद्रा में हुआ है। पालिश काला चमकदार है। केवल चरण और आसन शेष है। चरणों की अवगाहना ३ इंच और शिला फलक की चौड़ाई ७½ इंच है। चिह्न स्वरूप आसन पर कमल पुष्प तथा तीन पंक्ति में उक्त लेख उत्कीर्ण है।[1]

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख वही, ले. सं. 11/269 पृष्ठ 113



अभिलेख - ९८

अहार, आदिनाथ प्रतिमालेख संवत् १२०७, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

सं. (संवत्) १२०७ माघ वदि ८ कोके–वर्य संगस्र प्रणमति नित्यं।

भावार्थ

संवत् १२०७ माघ वदी अष्टमी तिथि में कोके शाह और उसकी पत्नी संगश्री प्रतिमा प्रतिष्ठा कराकर नित्य प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ३१ से संगृहीत है। इसका निर्माण देशी काले नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में हुआ है। पालिश काला–चिकना और चमकदार है। कुहनी से नीचे का भाग शेष है। दायीं आंख के नीचे का भाग छिल गया है। अंगूठे खण्डित हैं। आसन से गले तक की अवगाहना १५ इंच और चौड़ाई १६ इंच है। चिह्न स्वरूप आसन पर वृषभ और एक पंक्ति में उक्त लेख उत्कीर्ण है।[1]

सदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख वही, ले. सं. 11/270 पृष्ठ 113

अभिलेख - ९९

अहार, अर्हन्त प्रतिमालेख संवत् १२०७, भाषा संस्कृत लिपि नागरी

मूलपाठ

१. संवत् १२०७ माघ वदि ८ वाणपुरे ग्र (गृ) हपत्यन्वये कोक्षिल गोत्रे साहु रुद्र.......ताभ्यां जिणे माल्हेर ताभ्यां साहु...... वैमाल्हे पुत्र हरिसेन जिणेसु (र)

२. तत्सुत..........कारापितेयं प्रतिमा नित्यं प्रणमंति।

भावार्थ

वाणपुर निवासी गृहपति अन्वय में कोछल गोत्र के शाहरुद्र, उनके पुत्र जिंणा और माल्हे तथा वैमाल्ह और उसके पुत्र हरिषेण एवं जिनेश्वर तथा जिनेश्वर के पुत्रों ने इस प्रतिमा का निर्माण कराया और संवत् १२०७ माघवदी अष्टमी तिथि में प्रतिष्ठा कराकर वे प्रतिमा को नित्य प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ५८ से संगृहीत है। इसका निर्माण देशी काले नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में हुआ है। पालिश काला, चिकना और चमकदार है। प्रतिमा की नाभि के ऊपर का भाग नहीं है। हथेलियाँ और आसन खण्डित हैं। चिह्न नहीं है। आसन फलक की लम्बाई २५ इंच है। आसन पर दो पंक्ति में उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण है। अभिलेख के मध्य का पाषाण छिल गया है अतः लेख अपूर्ण है।[1]

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख वही, ले. स. 11/271 पृष्ठ 114।

अभिलेख - १००

अहार, महावीर प्रतिमालेख, संवत् १२०७, भाषा संस्कृत लिपि नागरी

मूलपाठ

१. संवत् १२०७ आखा (षा) ढ वदि ६ सु (शु) के श्री वीरवर्द्धमानस्वामि प्रतिष्ठापितो ग्र (गृ) हपत्यन्वये साधु श्री राल्हणश्चतुर्विधदाने। म.......पठल विमुक्त सुखशीतल जलकंज प्रवर्द्धित कीर्तिलताव–गुण्ठित ब्रह्मांडंमहिमो भूत, तत्सुत श्री

२. अल्हण मूधा तत्सुत साधु मातनेन।। पौरपाटान्वये साधु वासलस्तस्य दुहिता मातिणि।। साधु श्री महीपतिस्तत्सुत साधु रल्हण तत्सुत सीढू एते नित्यं प्रणमंति ।।छ।। मंगलं महाश्री इति ।।छ।।

भावार्थ

गृहपति अन्वय के शाह श्री राल्हण की चतुर्विध दान से प्रवर्द्धित कीर्ति रूपी लता से ब्रह्माण्ड ऐसे आच्छादित हो गया जैसे (सरोवर का) सुखदाई शीतल जल कमलों से

आच्छादित रहता है। उनके पुत्र अल्हण और मूघा तथा मूघा के पुत्र शाह मातन के द्वारा एवं पौरपाट अन्वय में हुए शाह वासल, उनकी पुत्री मातिणी, शाह श्री महीपति, उसका पुत्र शाह रल्हण् तथा रल्हण का पुत्र सीदू ये सभी वीरवर्द्धमान स्वामी की संवत् १२०७ अषाढ वदी ६ शुक्रवार के दिन प्रतिमा प्रतिष्ठाकर नित्य प्रणाम करते हैं। महालक्ष्मी मंगल करे।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ३६ से संगृहीत है। इसका निर्माण देशी काले–नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में हुआ है। पालिश काला, चिकना, चमकदार है। इसकी केवल आसन शेष है। चिह्न स्वरूप आसन पर पूंछ उठाये हुए सिंह तथा दो पंक्तियों में उक्त लेख उत्कीर्ण है।

व्याख्या

चतुर्विध दान – आहार अभय औषधि और शास्त्र दान।

वीरवर्द्धमान– चौबीसवें तीर्थंकर महावीर। इनके पाँच नाम थे। जिनमें दो नाम वीर और वर्द्धमान संयुक्त रूप से यहाँ व्यवहृत हुए हैं।

विशेष

यह प्रतिमा–प्रतिष्ठा दो अन्वयों के श्रावकों द्वारा सम्पन्न हुई। वे अन्वय हैं– गृहपत्यन्वय और पौरपाटान्वय। प्रतिष्ठा करानेवाले तीन परिवार थे। इनमें एक राल्हण परिवार था जो गृहपत्यन्वय से विभूषित था। दूसरा परिवार था शाह वासल का और तीसरा शाह श्री महीपति का अंतिम दोनों परिवार पौरपाट अन्वय के थे। एक परिवार का उल्लेख समाप्त होने के बाद लेख में दो खड़ी रेखाएँ दी गई हैं। ये एक अंश के पूर्णत्व की बोधक हैं।[1]

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख : वही, ले. सं. 11/272 पृष्ठ 115।

अभिलेख - १०१

छतरपुर, नेमिनाथ प्रतिमालेख संवत् १२०८, भाषा संस्कृत लिपि नागरी

मूलपाठ

सं. (संवत्) १२०८ असाढ (अषाढ़) सुदि ५ गुरौ।[1]

भावार्थ

इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा संवत् १२०८ आषाढ सुदी पंचमी गुरुवार को सम्पन्न हुई।

प्रतिमा-परिचय

छतरपुर मध्यप्रदेश की तीन तीर्थंकर प्रतिमाएँ लखनऊ संग्रहालय में संग्रहीत हैं। इनमें एक पीतल की और दो पाषाण की हैं। पाषाण प्रतिमाओं में एक सुविधिनाथ और दूसरी नेमिनाथ तीर्थंकर की हैं। ये दोनों प्रतिमाएँ कायोत्सर्ग मुद्रा में चँमरधारी सेवकों से युक्त हैं। चिह्न स्वरूप केंकडा और शंख आसनों पर उत्कीर्ण हैं। नेमिनाथ तीर्थंकर प्रतिमा की आसन पर उक्त लेख अंकित हैं।

संदर्भ

1. मेमायर्स ऑफ दि आर्कि० सर्वे ऑफ इण्डिया ई-1922, पत्रिका 11 पृ 14।

अभिलेख - १०२

छतरपुर, आदिनाथ प्रतिमालेख, संवत् १२०८, भाषा संस्कृत लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् १२०८ वैसा (शा) ष (ख) वदि ६ बुधे धर्मकारी जाल्ह-पुहिला समस्त गोठि पुलक जोगदेवा ।।श्री।। हरि अवर्णः।[1]

पाठान्तर

संवत् १२०८ वैसाख सुदि ६ वर्मकारी आल्ह उदिला समस्त गोटी खुलकहो देवा।

(श्री अ.भा.दि. जैन गोलापूर्व डायरेक्टरी, पृष्ठ १६४)

भावार्थ

संवत् १२०८ वैशाख सुदि अथवा वदी ६ बुधवार को धर्म कार्य करने वाले जाल्ह–पुहिल अथवा आल्ह–ऊदल एवं समस्त सभा ने जिसमें अवर्ण हरि भी था ने पुलकित होकर इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई।

प्रतिमा–परिचय

छतरपुर मध्य प्रदेश के श्री चौधरी दिगम्बर जैन मंदिर में विराजमान इस प्रतिमा का निर्माण पद्मासन मुद्रा में ३३ इंच अवगाहना और २७ इंच चौड़ाई में श्याम पाषाण से हुआ है। अगुंलियॉं खण्डित हो जाने से पुनः निर्मित की गई है।

विशेष

इस लेख में हरि को अवर्ण कहे जाने से उसके अस्पृश्य अथवा असवर्ण जाति से सम्बन्धित होने का बोध होता है।

सदर्भ

1 जिनमूर्ति प्रशस्तिलेख, क्रमाक 171, पृष्ठ 48

अभिलेख - 903

अहार, नेमिनाथ प्रतिमालेख, संवत् १२०६, भाषा संस्कृत, लिपि–नागरी

मूलपाठ

संवत् १२०६ वैसाष (वैशाख) सुदि १३ श्री मदनसागरपुरे। मेडत्वालान्वये ताबु (साधु) कोका। सुत सवु (साधु) जाल्ल कन्या पतिमा कारापिता।।

भावार्थ

संवत् १२०६ वैशाख सुदी त्रयोदशी तिथि में मदनसागरपुर नगर में मेडत्वाल अन्वय के शाह कोका के पुत्र शाह जाल्ल की कन्या ने प्रतिमा निर्माण कराकर प्रतिष्ठा कराई।

प्रतिमा परिचय

अहार संग्रहालय में संग्रहालय प्रविष्टि संख्या ६२ से यह प्रतिमा संगृहीत है। इसका

निर्माण देशी फाले–नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में हुआ है। पालिश काला, चिकना और चमकदार है। प्रतिमा सिर विहीन है। अंगुलियाँ खण्डित हैं। आसन से गले तक की अवगाहना १४ इंच और आसन की लम्बाई १६ इंच है। चिह्न स्वरूप आसन के मध्य में शंख और उसके नीचे एक पंक्ति का उक्त लेख उत्कीर्ण है।

व्याख्या

मदनसागरपुर मदनवर्मा के नाम पर मदनसागरपुर रखे गये एक प्राचीन जैन केन्द्र–नगर का नाम। यह प्रतिमा वर्तमान अहार (टीकमगढ़ मध्य प्रदेश) स्थली से प्राप्त बताई गई है। अतः प्रतीत होता है कि यह अहार का ही अपर नाम है जिसका व्यवहार संवत् १२०६ में प्रचलित रहा है।

मेडत्वाल जैनों की ८४ जातियों में मेडतवाल में मेडता से निर्गत एक जैन जाति है।[1]

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख : वही ले.सं. 11/273 पृष्ठ 115

अभिलेख - १०४

अहार, अर्हत् प्रतिमालेख संवत् १२०६, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् १२०६ वैसाख सुदि १३ ग्र (गृ) पत्यन्वये साधु आल्हस्य पुत्र मातनस्तस्य भगिनी आल्ही एते नित्यं प्रणमंति।

भावार्थ

संवत् १२०६ वैशाख सुदी त्रयोदशी तिथि में गृहपत्यन्वय के शाह आल्ह के पुत्र मातन तथा पुत्री आल्ही ये प्रतिमा प्रतिष्ठा कराकर नित्य प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ६५ से संगृहीत है। इसका निर्माण देशी–काले–नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में निर्मित है। पालिश काला, चिकना और चमकीला है सिर नहीं है। आसन से गले तक की अवगाहना १३½ इंच है। आसन पर एक पंक्ति में उक्त लेख उत्कीर्ण है। चिह्न नहीं है। बहिन भाई ने मिलकर इस प्रतिमा

की प्रतिष्ठा कराई थी।[1]

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख : वही, ले.सं. 11/274, पृष्ठ 116

अभिलेख - १०५

अहार, अर्हन्त प्रतिमालेख, संवत् १२०६, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. संवत् १२०६ आखा (षा) ढ वदि ४ गुरौ जयसिवालान्वये साहु श्री वाहड तत्सुतौ सोमपति मल्हणौ। तथा साहु श्री नेमिचंद्रस्तत्सुतौ माहिल पंडित देल्हणौ।

२. तथा साहु श्रीरत तस्य सुताः सीढ–(ढू) भावू–कल्हण। एते नित्यं प्रणमंति।।

भावार्थ

संवत् १२०६ आषाढ़ वदि चतुर्थी गुरुवार के दिन जैसवाल अन्वय के शाह वाहड और उनके दोनों पुत्र माहिल और पंडित देल्हण तथा शाह श्रीरत और उसके तीनों पुत्र सीढू–भावू–कल्हण, प्रतिमा प्रतिष्ठा कराकर ये नित्य प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ७६ से संगृहीत है। इसका निर्माण देशी काले–नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में हुआ है। पालिश काला, चिकना और चमकदार है। सिर नहीं है। अंगुलियाँ खण्डित हैं। आसन के आदि मध्य और अन्त में पुष्पाकृतियाँ अलंकरण स्वरूप अंकित की गई हैं। चिह्न नहीं है।[1]

संदर्भ

1 आहार क्षेत्र के अभिलेख . वही, ले. सं. 11/275 पृष्ठ 116–117

अभिलेख - १०६

अहार, महावीर प्रतिमालेख, संवत् १२०६, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् १२०६ आसा (षा) ढ वदि ४ गुरौ जयसवालान्वये नायक स्त्री साहु कसम प्रतिमा गोठिता इति।।

पाठ टिप्पणी

पाठ में इति शब्द तीन बिन्दु '.' द्वारा दर्शाया गया है।

भावार्थ

संवत् १२०६ आषाढ वदि चतुर्थी गुरुवार के दिन जैसवाल अन्वय के नायक शाह कसम ने प्रतिमा प्रतिष्ठा कराई।

प्रतिमा–परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ८३ से संगृहीत है। प्रतिमा का निर्माण देशी काले–नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में हुआ है। इसका पालिश काला, चिकना, और चमकदार है। सिर नहीं है। आसन से गले तक की अवगाहना १६ इंच है। आसन फलक की लम्बाई २२ इंच है। अंगुलियाँ छिल गयी हैं। चिह्न स्वरूप आसन पर सिंह तथा एक पंक्ति में उक्त लेख उत्कीर्ण है।[1]

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख: वही, ले.सं. 11/276 पृष्ठ 117

अभिलेख - १०७

अहार, महावीर प्रतिमालेख, संवत् १२०६, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् १२०६ वैसा (शा) ख सुदि १३ माथुरान्वये साधु यस (श) देवस्य पुत्री। साहु यसहड तस्य भार्या माहिणि तयोः पुत्र स्यामदेव (श्यामदेव) एते नित्यं प्रणमंति।।

भावार्थ

संवत् १२०६ वैशाख सुदी त्रयोदशी में माथुर अन्वय के शाह यशदेव की पुत्री तथा शाह यशहड, उनकी पत्नी माहिणी तथा पुत्र श्यामदेव ये प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराकर नित्य प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या १०१ से संगृहीत है। प्रतिमा का निर्माण देशी काले-नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में हुआ है। पालिश काली, चिकनी और चमकदार है। सिर नहीं है। कुहनी से ऊपर के हाथ भी नहीं है। गले तक की अवगाहना १८ इंच है। आसन की लम्बाई २२ इंच है। आसन के मध्य में चिह्न स्वरूप सिंह तथा सिंह की दोनों ओर एक पंक्ति में उक्त लेख उत्कीर्ण है।[1]

संदर्भ

1 अहार क्षेत्र के अभिलेख, अहार प्रकाशन, ले0 सं0 11/277 पृष्ठ 118

अभिलेख - १०८

अहार, अरनाथ प्रतिमालेख, १२०६, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. संवत् (संवत्) १२०६ गोलपुव्वन्वए सा-

२. धु सुपट...... (तद् भार्या) अल्हु तस्य पुत्र सां (शां)

३. ति पुत्र देल्हण स्री अरुहनाथं प्रणमं
४. ति नित्यं इति।।

पाठ टिप्पणी

इस मूलपाठ में 'ये' के लिए 'ए' स्वर का प्रयोग हुआ है। इसी प्रकार इति के लिए विसर्ग प्रयुक्त हुए हैं।

भावार्थ

संवत् १२०६ में गोलापूर्व अन्वय के शाह सुपट और उनकी पत्नी अल्हु, पुत्र शान्ति तथा पौत्र देल्हण श्री अरहनाथ प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराकर नित्य प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ८६ से संगृहीत है। इसका निर्माण देशी काले-नीले पाषाण से खड्गासन मुद्रा में हुआ है। पालिश काली, चिकनी और चमकदार है। केवल घुटनों के नीचे का भाग शेष है। आसन से अवशिष्ट भाग तक की अवगाहना १० इंच है। आसन की लम्बाई १० इंच तथा चौड़ाई ३ इंच है। दोनों ओर एक चँमरवाही सेवारत इन्द्र खड़ा है। चिह्न नहीं है। आसन पर चार पंक्तियों में उक्त लेख उत्कीर्ण है।

व्याख्या

अरुहनाथ=अठारहवें तीर्थकर। इन्हें अरहनाथ और अरनाथ भी कहा जाता है।[1]

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख : वही ले.सं. 11/278, पृष्ठ 118

अभिलेख - १०९

अहार, शान्तिनाथ प्रतिमा लेख, संवत् १२०६, भाषा संस्कृत लिपि नागरी

मूलपाठ

१. सं. (संवत्) १२०६ गोलापुर्न्वएन्व सा-
२. धु महिदीलः तस्य पुत्र सुप-
३. ट सुत सांति (शांति) भार्ज्जा अर्हमामक प्रणमतः।।

भावार्थ

संवत् १२०६ में गोलापूर्व अन्वय के शाह महिदीत के पौत्र और सुपट के पुत्र शान्ति तथा पुत्रवधू अर्हमामक प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराकर प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ७८ से संगृहीत है। इसका निर्माण देशी काले–नीले पाषाण से खड्गासन मुद्रा में हुआ है। पालिश काली, चिकनी, चमकदार है। मात्र घुटनों तक के पैर हैं, ऊपरी भाग नहीं है। दोनों ओर खड्गासन मुद्रा में एक एक चँमरधारी देव है। आसन से शेष भाग तक की अवगाहना १५ इंच है। लेख का भाग ८ इंच लम्बा है। चिह्न स्वरूप आमने सामने मुख किए दो हरिण तथा तीन पंक्ति में उक्त लेख आसन पर उत्कीर्ण है।[1]

संदर्भ

1 आहार क्षेत्र के अभिलेख : वही, ले.सं. 11/279 पृष्ठ 118

अभिलेख - ११०

अहार, कुन्थुनाथ प्रतिमालेख, संवत् १२०६ भाषा संस्कृत लिपि नागरी

मूलपाठ

१. समत (सवत्) १२०६ गोलापूर्णन्वए साहु
२. सुपट तस्य पुत्र सांति तस्य पुत्र पा–
३. (पे) .... कुंथुनाथं प्रणमति मि. (नि)त्यं इति।।
४ .... साहु पाप वधू आल्हु प्रणम – (तः)।

पाठ टिप्पणी

चौथी पंक्ति लेख समाप्ति के बाद उत्कीर्ण की गयी है।

भावार्थ

संवत् १२०६ में गोलापूर्व अन्वय के शाह सुपट के पौत्र तथा शांति के पुत्र पापे कुंथुनाथ प्रतिमा की प्रतिमा प्रतिष्ठा कराकर नित्य प्रणाम करता है।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ३० से संगृहीत है। इसका निर्माण देशी काले–नीले पाषाण से खड्गासन मुद्रा में हुआ है। पालिश काला, चिकना औरचमकदार है, सिर नहीं है। आसन से गले तक की अवगाहना २७ इंच और शिलाफलक की चौड़ाई ११ इंच है। प्रतिमा के हाथों के दोनों ओर एक–एक चँमरवाही इन्द्र अंकित है। आसन पर चिह्न स्वरूप बकरा तथा उक्त ४ पंक्ति का लेख उत्कीर्ण है।

विशेष

संवत् १२०६ के अरह शांति कुन्थु तीनों प्रतिमा लेख गोलापूर्व अन्वय के शाह सुपट के पुत्र शांति, शांति पुत्र देल्हण और पापे के द्वारा प्रतिष्ठित हुई हैं। संभवतः इनकी प्रतिष्ठा रत्नत्रय प्रतिमाओं के रूप में हुई थी।[1]

संदर्भ

1 अहार क्षेत्र के अभिलेखः वही, ले. स 11/280, पृ. 120 .

अभिलेख - 999

अहार, धर्मनाथ प्रतिमालेख, संवत् १२०६ भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. संवत् १२०६ वैसा (शा) ख सुद (दि) १३ पौरपाटा–
२. न्वये मा (सा) वु कोके तद् भार्या मातिणि एतौ
३. साधु सीढस्य भार्या सलषा (खा) एतौ।

पाठ टिप्पणी

इसमें मात्राओं के लिए वर्ण के पूर्व एक खड़ी रेखा का प्रयोग हुआ है। श के लिए स तथा ख वर्ण के लिए ष का व्यवहार भी दिखाई देता है।

भावार्थ

संवत् १२०६ वैशाख सुदी त्रयोदशी तिथि में पौरपाट अन्वय के शाह कोका और उनकी पत्नी मातिणी तथा शाह सीढ और उनकी पत्नी सलखा दोनों परिवारों ने प्रतिष्ठा कराई।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या १०३ से संगृहीत है। इसका निर्माण देशी काले–नीले पाषाण से खड्गासन मुद्रा में हुआ है। पालिश काली, चिकनी, चमकदार है। सिर नहीं है। दोनों ओर प्रतिमा के हाथों के नीचे एक एक चँमरधारी मुकुटवद्ध देव सेवारत खड़ा अंकित है। आसन से गले तक की अवगाहना २३ इंच है। फलक की चौड़ाई ८½ इंच है। चिह्न स्वरूप आसन पर वज्रदण्ड तथा उक्त तीन पंक्ति का लेख उत्कीर्ण है।[1]

संदर्भ

1. आहार क्षेत्र के अभिलेख : वही, ले.सं. 11/281 पृष्ठ 121

अभिलेख - ११२

अहार, आदिनाथ प्रतिमालेख संवत् १२०६ भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. संवत् १२०६ वैसा (शा) ख सुदि १३......

२. पंडित विक्रमदित्येन । ठक्कुर ददे सुतेन पद्मसिंहेण
 पुण्याय कारि.........(तेयं प्रतिमा)।

भावार्थ

संवत् १२०६ वैशाख सुदि त्रयोदशी तिथि में पंडित विक्रमादित्य और ठाकुर ददे के पुत्र पद्मसिंह के द्वारा पुण्य हेतु इस प्रतिमा का निर्माण कराकर प्रतिष्ठा कराई गई।

प्रतिमा–परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ४३ से संगृहीत है। इसका निर्माण देशी काले–नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में हुआ है। पालिश काला, चिकना और चमकदार है। प्रतिमा का सिर और धण का दायाँ भाग नहीं है। आसन दायीं ओर की नहीं है। अतः अभिलेख भी अपूर्ण है। आसन से गले तक की अवगाहना १३ इंच और आसन फलक की चौड़ाई ९ इंच है। आसन पर चिह्न स्वरूप वृषभ तथा दो पंक्ति में उक्त मूर्तिलेख उत्कीर्ण है।

व्याख्या

ठक्कुर=ठाकुर पद के लिए व्यवहृत हुआ है। इस पद का व्यवहार आज भी होता है। राजपूत जाति के लोग स्वयं को ठाकुर लिखते हैं।[1]

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख, वही ले.सं. 11/282 पृ. 122

अभिलेख - 993

अहार, नेमिनाथ प्रतिमा लेख संवत् १२०६, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. संवत् १२०६ वैसा (शा) ख सुदि १३ ग्र (गृ)हपत्यन्वये
२. साधु मातनस्य पुत्री आल्ही पुत्र पापे एतौ
३. नित्यं प्रणमतः।।

भावार्थ

संवत् १२०६ वैशाख सुदी त्रयोदशी तिथि में गृहपत्यन्वय के शाह मातन की पुत्री आल्ही और पुत्र पापे दोनों प्रतिमा प्रतिष्ठा कराकर नित्य प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ६३ से संगृहीत है। इसका निर्माण देशी काले-नीले पाषाण से खड्गासन मुद्रा में हुआ है। पालिश काला, चिकना और चमकदार है। घुटनों का ऊपरी भाग नहीं है। दोनों ओर अलंकृत एक एक चँमरवाही देव प्रतिमा अंकित है। इन देवों के भी सिर नहीं हैं। इस अंश की अवगाहना ६ इंच है। चौड़ाई भी इतनी है। आसन की लम्बाई ६ इंच और चौड़ाई २ ½ इंच है। चिह्न स्वरूप आसन पर शंख और तीन पंक्ति का उक्त लेख उत्कीर्ण है।[1]

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के जैन अभिलेख : वही, ले. सं. 11/283 पृ. 122

अभिलेख - ११४

छतरपुर, अर्हत् प्रतिमालेख संवत् १२०६, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् १२०६ सकलकीर्ति महिका पंचप्रतिष्ठित।

भावार्थ

इस प्रतिमा की संवत् १२०६ में पंचों द्वारा प्रतिष्ठा कराई गई। सकलकीर्ति संभवतः प्रतिष्ठाचार्य थे।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा देशी पाषाण से पद्मासन में निर्मित है। इसकी अवगाहना ६ इंच और चौडाई ७ इंच दर्शाई गई है। सम्प्रति यह प्रतिमा छतरपुर मध्यप्रदेश के श्री दिगम्बर जैन बडा मंदिर में विराजमान है।[1]

संदर्भ

1 जिनमूर्ति–प्रशस्तिलेख क्रमांक 3, पृष्ठ 26

अभिलेख - ११५

बंधा, ऋषभदेव प्रतिमालेख, संवत् १२०६ भाषा–संस्कृत, लिपि–नागरी

मूलपाठ

यह अभिलेख बंधा के भोंयरे में विराजमान अजितनाथ–प्रतिमा की दायीं ओर विराजमान खड्गासनस्थ ऋषभदेव प्रतिमा की आसन पर उत्कीर्ण है जिसमें प्रतिमा–प्रतिष्ठा का समय संवत् १२०६ का उल्लेख किया गया है।[1]

संदर्भ

1 भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ : भाग 3, पृ. 128

अभिलेख - ११६

बंधा, संभवनाथ प्रतिमा लेख संवत् १२०६, भाषा–संस्कृत, लिपि–नागरी

मूलपाठ

यह अभिलेख भोयरे में विराजमान मूलनायक अजितनाथ प्रतिमा की बायीं ओर विराजमान खड्गासनस्थमुद्रा की आसन पर उत्कीर्ण है जिसमें प्रतिष्ठा संवत् १२०६ का उल्लेख किया गया है।[1]

संदर्भ

1. भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ : भाग 3, पृ. 128

अभिलेख - ११७

बंधा, संभवनाथ प्रतिमा लेख संवत् १२०६, भाषा–संस्कृत, लिपि–नागरी

मूलपाठ

यह अभिलेख एक अन्य संभवनाथ प्रतिमा की आसन पर उत्कीर्ण है। इसमें भी प्रतिमा–प्रतिष्ठा का संवत् १२०६ बताया गया है।[1]

संदर्भ

1. भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ : भाग 3, पृ. 128

अभिलेख - ११८

बंधा, नेमिनाथ प्रतिमालेख संवत् १२०६, भाषा–संस्कृत, लिपि–नागरी

मूलपाठ

यह अभिलेख नेमिनाथ प्रतिमा की आसन पर उत्कीर्ण है। इसमें भी प्रतिमा–प्रतिष्ठा का संवत् १२०६ बताया गया है।[1]

संदर्भ

1. भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ : भाग 3, पृ. 128

अभिलेख - ११९

बजरंग गढ़, अर्हत प्रतिमालेख, संवत् १२०६, भाषा–संस्कृत, लिपि–नागरी

मूलपाठ

संवत् १२०६ फाल्गुन ,सुदि ११ स पोरपाटिन्व सावुणा मालदोवाल सुत वालू भार्या, पल्ला यस्य सुत जयाजेरा वन्दहरि प्रणम (मं) ति के (श्रे) यसि ता भद्रा।

भावार्थ

सवत् १२०६ फाल्गुन सुदी एकादशी को पौरपाटान्वय के शाह मालदोवाल के पौत्र और बालू तथा उनकी पत्नी पल्ला के पुत्र जयाजेरा और वन्दहरि (इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराकर) कल्याणार्थ प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा बजरंग–गढ़ से ले जाकर दिगम्बर जैन पुरातत्त्व संग्रहालय उज्जैन में संग्रहालय क्रमांक १२२ से संगृहीत की गयी है। इसकी केवल आसन मात्र शेष है। हथेली में कमल अंकित है। इसकी अवगाहना १० फुट २ इंच तथा चौड़ाई १८ इंच है। पद्मासन मुद्रा में इसका निर्माण काले स्लेटी पाषण से हुआ है।[1]

संदर्भ

1 यह लेख डॉ. सुरेन्द्र कुमार 'आर्य' उज्जैन के निबन्ध से साभार लिया गया है।

अभिलेख - १२०

अहार, अभिनन्दननाथ प्रतिमा, संवत् १२१० भाषा संस्कृत लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् १२१० वैसा (शा) ख शुदि (सुदि) १३ पौरपाटान्वये साधु दूदु भार्या जसकरि तत्सुत सादू भार्या देल्हीजेलछि तत्सुत पोपतिएते प्रणमंति नित्यं से (श्रे) यसे ।। स्री (श्री।।

भावार्थ

संवत् १२१० वैशाख सुदी त्रयोदशी तिथि में पौरपाटान्वय के साधु दूदूं उनकी पत्नी यशकरी, पुत्र सादू पुत्रवधू देल्हीजे लक्ष्मी पौत्र पोपति ये सब प्रतिमा प्रतिष्ठा कराकर कल्याण और लक्ष्मी लाभार्थ नित्य प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ६ से संगृहीत है। इसका निर्माण देशी काले–नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में हुआ है। पालिस काला, चिकना और चमकदार है। यह प्रतिमा सिर रहित है। हथेलियाँ और अंगुलियाँ छिल गई हैं। आसन से गले तक की अवगाहना १६ इंच है। पाषाण फलक की चौड़ाई २० इंच है। आसन पर चिह्न स्वरूप बंदर तथा एक पंक्ति में उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण है।[1]

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख - वही, ले.सं. 11/284 पृ. 123

अभिलेख - १२१

अहार, चन्दप्रभ प्रतिमालेख, संवत् १२१०, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् १२१० वैसा (शा) ख सुदि १३ लमेचुकान्वये साधु क्षते तद् भार्या वप्रा तयो (:) सुत नायक कमलसिंह तत् भार्या जाल्ही सुत लघुदेव एते प्रणमंति नितं (नित्यं) (।।)

भावार्थ

संवत् १२१० वैशाख सुदी त्रयोदशी के दिन लमेचुकान्वय के शाह क्षते, उनकी पत्नी वप्रा, पुत्र नायक कमलसिंह पुत्रवधू जाल्ही पौत्र लघुदेव ये सब प्रतिष्ठा कराकर नित्य प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ११० से संगृहीत है। इसका पालिश काला, चिकना और चमकदार है। यह प्रतिमा देशी काले–नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में निर्मित हुई है। सिर तथा हथेलियाँ नहीं हैं। दाये पैर के टकनों से नीचे का हिस्सा तथा बायें पैर की जाँघ छिली हुई है। आसन से गले तक की अवगाहना २३ १/२ इंच है। लेख फलक २७ इच लम्बा है। आसन पर चिह्न स्वरूप अर्द्धचन्द्र तथा उसके नीचे एक पक्ति में उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण है।[1]

संदर्भ

1 अहार क्षेत्र के अभिलेख, वही, ले स 11/285, पृ. 123

अभिलेख - १२२

अहार, महावीर प्रतिमालेख संवत् १२१०, भाषा संस्कृत लिपि–नागरी

मूलपाठ

संवत् १२१० मइडतवालान्वये साधु स्री सेठो भार्या महिव तयोः
पुत्रास्तील्हा वर्द्धमान माल्हा एते स्रे (श्रे) यसे प्रणमंति नित्यं।।
वैसाख सुदि १३।। श्री (श्री)।।

भावार्थ

संवत् १२१० वैशाख सुदि त्रयोदशी तिथि में मइडतवालान्वय के शाह श्री सेठो उनकी पत्नी महिव, पुत्र–तील्हा, वर्द्धमान, माल्हा ये सब कल्याणार्थ प्रतिमा प्रतिष्ठा कराकर नित्य प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ५४ से संगृहीत है। इसका निर्माण

काले—नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में हुआ है। पालिश काला, चिकना और चमकदार है। केवल आसन शेष है। इसकी अवगाहना लगभग २ फुट रही ज्ञात होती है। आसन पर चिह्न स्वरूप सिंह तथा एक पंक्ति में उक्त लेख उत्कीर्ण है।[1]

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख : वही, ले.सं. 11/286, पृ. 124

अभिलेख - 923

अहार, महावीर प्रतिमालेख, संवत् १२१८, भाषा संस्कृत लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् १२१० वैसा (शा) सुदि १३ पंडित श्री (श्री) विसा (शा) लकीर्ति अर्यिका त्रिभुवन श्री (श्री) तयोः शिष्यणी पूर्ण्णश्री (श्री) तथा धनश्री (श्री) एताः प्रणमंति नित्यम (म्)।।

भावार्थ

संवत् १२१० वैशाख शुदि त्रयोदशी तिथि में प्रतिष्ठापित इस प्रतिमा को पंडित श्री विशालकीर्त्ति, आर्यिका त्रिभुवनश्री, इन दोनों की शिष्याएँ पूर्णश्री तथा धनश्री ये सभी नित्य प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ५३ से संगृहीत है। इसका निर्माण काले—नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में किया गया है। पालिश काला, चिकना और चमकदार है। केवल आसन शेष है। अवगाहना लगभग एक फुट रही है। चिह्न स्वरूप आसन पर सिंह तथा एक पंक्ति में उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण है।

व्याख्या

पंडित विशालकीर्ति— इनका नामोल्लेख आर्यिका के नाम के पहले किया गया है। सामान्यतः पंडित की अपेक्षा आर्यिका का पद ऊँचा होता है। अतः आर्यिका के नाम के पूर्व नामोल्लेख होने से विशालकीर्ति कोई मुनि ज्ञात होते है। मनीषी रहने से मुनि हो जाने पर भी जनसमूह के बीच पंडित पद से विभूषित बने रहे। पूर्ण श्री और धन श्री को आपकी शिष्याएँ कहे जाने से भी विशालकीर्ति मुनि ज्ञात होते हैं। पंडित पद से ये भट्टारक .... कहे जा सकते हैं क्योंकि संघ में आर्यिका विराजमान हैं जो भट्टारक ...... के अधीनस्थ नहीं रहती।

आर्यिका : जैन दीक्षा विधा में महिला–दीक्षा का सर्वोत्कृष्ट पद। ये अन्य इच्छुक महिलाओं को दीक्षा देती रही हैं।[1]

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख : वही, ले.सं. 11/287 पृष्ठ 124

अभिलेख - १२४

अहार, अर्हन्त प्रतिमालेख, संवत् १२१० भाषा संस्कृत लिपि–नागरी

मूलपाठ

संवत् १२१० वैसा (शा) ख सुदि १३ मेडतवाल वंसे (शे) साधु पयणरवा तत्सुत हरसू एतौ नित्यं प्रणमतः

पाठ टिप्पणी

इस मूलपाठ में वैसाख के वे वर्ण के पहले और एतौ के 'तो' वर्ण के पहले एक खड़ी रेखा देकर उनमें संयुक्त स्वर को और बढ़ाने अर्थात ए को ऐ और ओ को औ समझने का संकेत किया गया है। पाण्डुलिपियों में भी यह विधि प्रयुक्त मिलती है।

भावार्थ

संवत्: १२१० वैशाख सुदी त्रयोदशी तिथि में प्रतिष्ठा कराकर मेडतवाल वंश के शाह पयणरव और उनके पुत्र हरसू दोनों प्रतिमा की नित्य वंदना करते हैं।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या १३ से संगृहीत है। इसका निर्माण देशी काले–नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में हुआ है। पालिश काला, चिकना और चमकदार है। सिर नहीं है। आसन से गले तक की अवगाहना १२ इंच है। शिलाफलक १८ इंच चौड़ा है। अंगुलियाँ खण्डित हैं। आसन पर कोई चिह्न नहीं है। एक पंक्ति में उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण है।

व्याख्या

मेडतावाल वंश = एक जैन उपजाति। इसका उद्भव संभवतः मेड़ता स्थान से

हुआ था। यहाँ वंश का प्रयोग अन्वय अर्थ में हुआ है।[1]

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख, वही, ले. सं. 11/288 पृष्ठ 125

अभिलेख - १२५

अहार, आदिनाथ प्रतिमालेख, संवत् १२१०, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् १२१० वैसा (शा) ख सुदि १३ ग्र (गृ) हपत्यन्वये साधु कुलधरस्य सुत......
....

भावार्थ

संवत् १२१० वैशाख सुदी त्रयोदशी तिथि में गृहपत्यन्वय के शाह कुलधर का पुत्र (प्रतिष्ठा कराकर नित्य वंदना करता है)।

प्रतिमा-परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ३८ से संगृहीत है। इसका निर्माण काले नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में हुआ है। पालिश काला, चिकना और चमकदार है। इस प्रतिमा की आसन का दायाँ भाग मात्र शेष है, शेष भाग नहीं है। इसका चिह्न वृषभ और एक पंक्ति में उक्त मूलपाठ आसन पर उत्कीर्ण है। आसन का अर्ध भाग प्राप्त न होने से अभिलेख पूर्ण प्राप्त नहीं हुआ। इस टूटी हुई आसन में अन्य आसन का भाग जोड़ा गया है।[1]

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख, वही, ले.स. 11/289 पृष्ठ 125

अभिलेख - १२६

अहार, आदिनाथ प्रतिमालेख संवत् १२१०, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. ....(संवत् १)२१० । पौरपाटान्वये साधु स्री (श्री) ठापधर भार्या गांग (गंगे) सुत सोढू माहव एते सर्व्वे स्रे (श्रे) यसे प्रणम (मं) ति नित्यं

२. .... (वैसा) ख सुदि १३ वुध दिने।

पाठ टिप्पणी

वर्ण में ए स्वर संयुक्त करने के लिए वर्ण के पूर्व एक खड़ी रेखा दी गई है। गांग शब्द में यही विधि व्यवहृत हुई है। अतः गांग न पढ़कर उसे गंगे पढ़ना चाहिए।

भावार्थ

संवत् १२१० वैशाख सुदि १३ बुधवार के दिन प्रतिमा प्रतिष्ठा कराकर पौरपाट अन्वय के शाह श्री ठापधर, उनकी पत्नी गंगे, पुत्र सोढू और माधव ये सब कल्याणार्थ नित्य वन्दना करते हैं।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ४२ से संगृहीत है। निर्माण के लिए देशी काला–नीला पाषाण व्यवहृत हुआ है। पालिश काली चिकनी और चमकदार है। प्रतिमा का सिर और दायें हाथ की कुहनी के ऊपर का भाग नहीं है। कांख के नीचे का भाग छिला हुआ है। दायें हाथ की अंगुलियाँ खण्डित हैं। लेख में संवत् सूचक हजार का अंक भी नहीं है। आसन पर चिह्न स्वरूप वृषभ और दो पंक्ति में उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण है। आसन से गले तक की अवगाहना १४ इंच और आसन फलक की लम्बाई १६ इंच है। प्रतिमा का निर्माण पद्मासन मुद्रा में हुआ है।

काल–निर्णय

इस लेख में संवत् सूचक अंतिम तीन अंक में २१० अंक पढ़ने में आते हैं। अहार से संग्रहालय में संगृहीत संवत् १२१० की प्रतिमाओं में सर्वत्र वैशाख सुदी त्रयोदशी का उल्लेख है जो प्रस्तुत लेख में भी उपलब्ध है। अतः इस साक्ष्य के परिप्रेक्ष्य में तथा शिल्पांकन से उसका संवत् १२१० ज्ञात होता है।

विशेष

प्रस्तुत लेख में दिन का नामोल्लेख महत्वपूर्ण हैं। इस संवत् के अन्य किसी लेख में दिन का नामोल्लेख नहीं हुआ है।[1]

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख : वही, ले.सं. 11/290 पृष्ठ 126

अभिलेख - १२७

अहार, अजितनाथ प्रतिमालेख संवत् १२१० भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् १२१० वे (वै) सा (शा) ख शुदि (सुदि) १३ जायसवालान्वये साधु देल्हण भार्या पाल्ही तत्सुत पंडित राल्ह भार्या धुहणि तत्सुत वर्द्धमान आमदेव एते श्रे (श्रे) यसे प्रणमंति नित्यम्।। मंगलं महाश्री (महाश्री)।

पाठ टिप्पणी

इस लेख में आमदेव में 'द', एते में त और श्रेय में 'स' वर्णो के पूर्व एक खड़ी रेखा देकर उससे 'ए' स्वर का बोध कराया गया है। श के स्थान में जैसे वैसाख तथा अनुनासिक के स्थान में अनुस्वार हुआ है। जैसे प्रणमंति। श्री लेखन शैली भी उल्लेखनीय है।

भावार्थ

संवत् १२१० वैशाख सुदी तेरस तिथि में प्रतिष्ठापित इस प्रतिमा को जैसवाल अन्वय के शाह देल्हण उनकी पत्नी पाल्ही पुत्र पंडित राल्ह पुत्रवधू पौत्र वर्द्धमान और आमदेव ये सब कल्याणार्थ नित्य प्रणाम करते हैं। मंगलदायी लक्ष्मी (मोक्षलक्ष्मी) इन्हें प्राप्त हो।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या २० से संगृहीत है। इसका निर्माण देशी काले–नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में हुआ है। पालिश काला चिकना चमकदार है। इस प्रतिमा का नाभि के ऊपर का भाग नहीं है। आसन से प्राप्त भाग तक की अवगाहना १० इंच और फलक की चौड़ाई २६ इंच है। हाथों में कुहनी के नीचे का भाग शेष है। चिह्न स्वरूप आसन के मध्य हाथी अंकित है। चिह्न की दोनों ओर एक पंक्ति में उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण किया गया है।[1]

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख : वहीं ले.सं. 11/291 पृष्ठ 127

अभिलेख - १२८

अहार, आदिनाथ प्रतिमालेख, संवत् १२१० भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् १२१० वैसा (शा) ख शुदि (सुदि) १३ बुधे ग्र (गृ) पत्यन्वये साधु स्री (श्री) सढे भार्या गना तयोः सुत साधु सीले (शीले) भार्या रूपा तयोः सुत देवचंद एते प्रणमंति ।।श्री (श्री)।।

पाठ टिप्पणी

इस लेख में वैशाख के व के पूर्व तथा सढे में ढ के पूर्व ए स्वर के लिए एक खड़ी रेखा दी गयी है। सुदि में श और शीले में स के अशुद्ध प्रयोग हुए हैं। श्री को दो रूपों में लिखा गया है। स्री, श्री।

भावार्थ

संवत् १२१० वैशाख सुदी त्रयोदशी बुधवार के दिन गृहपत्यन्वय के शाह श्री सढे, उनकी पत्नी गना, इन दोनों के पुत्र शाह शीले पुत्रवधू रूपा, पौत्र देवचन्द्र ये प्रतिष्ठा कराकर प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ४७ से संगृहीत है। इसका निर्माण देशी काले--नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में हुआ है। प्रतिमा का सिर नहीं है। हाथ कुहनी से नीचे के हैं किन्तु उनकी हथेलियाँ नहीं हैं। आसन पर आदि अंत में कमल पुष्प तथा मध्य में चिह्न स्वरूप वृषभ अंकित है। इसके नीचे एक पंक्ति में उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण किया गया है। आसन की लम्बाई १७ इंच है।[1]

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख : वही, ले. सं. 11/292 पृ0 128

अभिलेख - ९२९

पचरई, अर्हन्त प्रतिमालेख, संवत् १२१० भाषा संस्कृत लिपि नागरी

मूलपाठ

ग्वालियर पुरातत्व विभाग से ईसवी १६१४–१६१५ में प्रकाशित मध्यभारत के प्राचीन अवशेष रिपोर्ट में क्रमांक १२५१ से एक ऐसी जैन प्रतिमा का उल्लेख किया गया है जो पचरई नामक ग्राम से लाकर ग्वालियर में संगृहीत की गई थी। इसकी आसन पर प्रतिमा –प्रतिष्ठा का संवत् १२१० उत्कीर्ण किया गया है।[1]

संदर्भ

1. ग्वालियर पुरातत्त्व रिपोर्ट, ईसवी 1914, क्रमांक 1251

अभिलेख - 930

पचरई, स्तम्भलेख, संवत् १२१०, भाषा संस्कृत, लिपि, नागरी

मूलपाठ

ग्वालियर पुरातत्व विभाग से प्रकाशित ईसवी १६१४–१६१५ की रिपोर्ट में मध्य भारत के अवशेषों में क्रमांक १२५१ से ही एक ऐसे स्तम्भ का भी उल्लेख किया गया है जिसमें संवत् १२१० उत्कीर्ण है। यह स्तम्भ पचरई नामक स्थल से ग्वालियर संग्रहालय में संगृहीत बताया गया है।[1]

संदर्भ

1. ग्वालियर पुरातत्त्व रिपोर्ट, ईसवी 1914–1915, क्रमांक 1251

अभिलेख - 131

अहर, आदिनाथ प्रतिमालेख संवत् १२११, भाषा संस्कृत लिपि नागरी

मूलपाठ

१. ....(संवत् १२११ फाल्) गुन सुदि ८ अद्येह श्री मदनसागरपुरे।। जैसवालान्वये साबु चांद।।...............

२. ....(भ्रा) तृ कैल ।।हरिश्चंद्र।। तथा जिणचंद्र।। प्रणम्यति (प्रणमंति) नित्यं।। मंग. ....(लं महाश्रीः।।)

काल निर्णय

इस लेख में संवत् सूचक अंक तथा प्रतिष्ठा मास का भाग टूट गया है। प्रतिष्ठा मास के नाम का उत्तर पद पर गुन बताया गया है जिससे पूर्व पद फालु होने का अनुमान लगाया जा सकता है। इस प्रकार फाल्गुन सुदि अष्टमी प्रतिष्ठा तिथि ज्ञात होती है। अन्य लेखों में यह मास तिथि संवत् १२११ में उपलब्ध है। अतः इस लेख का संवत् १२११ होना ज्ञात होता है।

भावार्थ

संवत् १२११ फाल्गुन सुदी अष्टमी तिथि में मदनसागरपुर में जैसवाल अन्वय के शाह चांद, अनेक कुटुम्बी हरिश्चन्द्र जिनचन्द्र प्रतिष्ठा कराकर मंगलप्रदायिनी मोक्षलक्ष्मी की कामना से नित्य वन्दना करते हैं।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ४४ से संगृहीत है। इसका निर्माण देशी काले–नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में हुआ है। इस प्रतिमा का सिर तथा स्कन्ध भाग से कुहनी तक के हाथ नहीं है। आसन भी बीच से खण्डित हो गयी है। चिह्न स्वरूप आसन पर वृषभ तथा दो पंक्ति में उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण है। यह लेख आदि मध्य और अंत में खण्डित है।

व्याख्या

मदनसागरपुर : इन नगर का नामोल्लेख संवत् १२०६ के एक प्रतिमालेख में भी हुआ है। देखें लेख संख्या १०३। इस लेख से ज्ञात होता है कि संवत् १२०६ संवत् १२११ के मध्य अहार का यही नाम प्रचलित रहा है।[1]

सदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख · वही, ले.स 11/293, पृष्ठ 128

अभिलेख - १३२

अहार, अर्हन्त प्रतिमालेख, संवत् १२११ भाषा संस्कृत लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् १२११ फाल......... ..(गुन सुदि ८)..... .....भार्या पापा सुत साधु सी (शी) लण ..... पाल्हा नित्यं प्रणमन्ति ।।१

भावार्थ

संवत् १२११ फाल्गुन सुदि अष्टमी तिथि में प्रतिष्ठा कराकर पत्नि पापा, पुत्र शाह शीलण, पुत्रवधू पाल्हा नित्य प्रणाम करते है।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय सख्या ७२ से सगृहीत है। इसका निर्माण देशी काले–नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में हुआ है। पालिश काला, चिकना और चमकदार है। सिर और वायाँ हाथ नहीं है। हथेलियाँ खण्डित है। आसन सहित गले तक की अवगाहना १६ इच और आसन फलक की चौडाई २० इंच है। आसन पर चिह्न नहीं है। सिर पर फणावली रहने के सकेत प्राप्त है। मूलपाठ आसन पर एक पक्ति में उत्कीर्ण किया गया है। लेख का कुछ भाग छिल गया है।

सदर्भ

1 अहार क्षेत्र के अभिलेख वही ले स 11/294 पृ 129

अभिलेख - 933

अहार, महावीर प्रतिमालेख, संवत् १२११, भाषा संस्कृत लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् १२११ फालग्न (फाल्गुन) सुदि ८ सुके (शुक्रे) श्री माथुरान्वये सावु जिणदेव सुत सावु त्रूजित भार्या जिणवठे सुत सावु वीवु नित्यं प्रणमन्ति लाहिलि मामी।[1]

भावार्थ

संवत् १२११ फाल्गुन सुदि अष्टमी शुक्रवार के दिन प्रतिष्ठा कराकर श्री माथुरान्वय के शाह जिनदेव के पुत्र शाह भूजित, उनकी भार्या जिनवठे, पुत्र शाह वीवु लाभार्थ इस प्रतिमा को नित्य प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ७२ से संगृहीत है। इसका निर्माण देशी काले नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में हुआ है। पालिश काला, चिकना और चमकदार है। सिर नहीं है। हाथ भी आधे ही रहे गये हैं। हथेलियों और तलवों पर शुभ लांछन अंकित हैं। आसन से गले तक की अवगाहना २१ इंच और आसन फलक की चौड़ाई २६ इंच है। आसन पर मध्य में चिह्न स्वरूप सिंह तथा उसकी दोनों ओर एक पंक्ति में उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण है।

विशेष

इस लेख में न अनुनासिक का प्रणमन्ति में अनुस्वार नहीं किया जाना उल्लेखनीय है। इसी प्रकार दिन के नामोल्लेख की द्रष्टि से भी महत्वपूर्ण है।

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख : वही, ले.सं. 11/295, पृ. 130

अभिलेख - १३४

अहार, अर्हन्त प्रतिमालेख संवत् १२१२

मूलपाठ

संवत् १२१२..........

प्रतिमा परिचय

देशी मटमैले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में निर्मित यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या १८६ से संगृहीत है। इसका सिर नहीं है। आसन से गले तक की अवगाहना ६ १/२ इंच है। शिलाफलक की चौड़ाई १३ इंच है। आसन पर चिह्न नहीं है। एक पंक्ति में उक्त मूलपाठ अवश्य उत्कीर्ण है। यह बहुत घिस जाने से अपठनीय हो गया है। केवल संवत् सूचक अंक ही कठिनाई से पढे जा सके हैं।

सदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख · वही, ले सं. 11/296 पृष्ठ 130

अभिलेख - १३५

अहार, अर्हन्त प्रतिमालेख संवत् १२१२,

मूलपाठ

संवत् १२१२..............

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ४६० से संगृहीत है। इस प्रतिमा का सिर नहीं है। श्रीवत्स चिह्न अंकित है। आसन पर कोई चिह्न नहीं है। एक पंक्ति का लेख अवश्य उत्कीर्ण है। यह इतना अधिक घिस गया है। कि केवल संवत् सूचक अंक कठिनाई से पठनीय रह गये हैं।

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख : वही, ले.सं. 11/297, पृ.131

अभिलेख - १३६

खजुराहो, महावीर प्रतिमलेख संवत् १२१२,

मूलपाठ

यह लेख कनिंघम सर्वे रिपोर्ट–२१ के पृष्ठ ६८ में वीरनाथ (महावीर) प्रतिमा के चरणांकित आसन पर उत्कीर्ण बताया गया है। लेख में केवल शिल्पी का नाम कुमारसिंह पढ़ा जा सका है। इससे सिद्ध है कि इस प्रतिमा का निर्माण कुमारसिंह शिल्पी ने किया था। प्रतिमा के केवल चरण रह गये है, शेष भाग नहीं है।[1]

संदर्भ

1. कनिंघम, आर्कि. सर्वे रिपोर्ट 21, पृष्ठ 68

अभिलेख - १३७

मदनपुर, अर्हन्त प्रतिमालेख, संवत् १२१३, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

मदनपुर के शान्तिनाथ मंदिर के गर्भालय के प्रवेश द्वार के ऊपर तीन प्रतिमाएँ विराजमान हैं। मध्यवर्ती प्रतिमा की बायीं ओर विराजमान प्रतिमा की आसन पर संवत् १२१३ का अभिलेख अंकित है।[1]

संदर्भ

1. अनेकान्त : वर्ष 19 अंक 1–2, पृ. 63, पं. परमानन्द शास्त्री का "मध्य भारत का जैन पुरातत्व" शीर्षक लेख

अभिलेख - १३८

अहार, आदिनाथ प्रतिमालेख, संवत् १२१३, भाषा संस्कृत लिपि नागरी

मूलपाठ

१. ....३ (संवत् १२१३) जषाढ (अषाढ) सुदि २ सोमे उत्ता भे साहु सेल्हे भार्या सहना तस्य पुत्र उद–

२. .... (य तस्य पुत्र) पाल्हण–राल्हण–माधव नित्यं प्रणमंति इति।।

पाठ–टिप्पणी

कुछ विद्वान इस लेख के संवत् में १२०३ अंक होने का अनुमान लगाते है, किन्तु संवत् १२०३ के अहार से प्राप्त प्रतिलेखों में माघ सुदी त्रयोदशी तिथि का उल्लेख है, अतः संवत् १२०३ का अनुमान लगाना तर्कसंगत प्रतीत नहीं होता। इस लेख में अषाढ सुदि २ का उल्लेख है जो संवत् १२१३ के सभी लेखों में अंकित है। अतः मास पक्ष, तिथि उल्लेख के परिप्रेक्ष्य में इस लेख का संवत् १२१३ होना उचित प्रतीत होता है। इति के लिए विसर्ग बिन्दुओं का व्यवहार हुआ है।

भावार्थ

सवत् १२१३ अषाढ़ सुदी द्वितीया सोमवार उतरा भाद्रपद नक्षत्र में प्रतिष्ठा कराकर शाह सेल्हे, उनकी पत्नी सहना, पुत्र उदय पौत्र पाल्हण, राल्हण और माधव उसे नित्य प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ४६ से संगृहीत है। इसका निर्माण देशी काले–नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में हुआ है। सिर और हथेलियाँ नहीं है। नाभि से नीचे का भाग मात्र शेष है। आसन पर चिह्न स्वरूप वृषभ अंकित है। इसके नीचे दो पंक्तियों में उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण किया गया है। लेख का संवत् पाषाण छिल गया है। आसन फलक की लम्बाई १६ १/२ इंच है।[1]

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख : वही, ले.सं. 11/298 पृ. 131

अभिलेख - १३९

अहार, अर्हन्त प्रतिमालेख संवत् १२१३, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. संवत् १२१३ अषढ (अषाढ़) सुदी (दि) २ साहु नागचंद........

२. प्रतष्ठीती।

भावार्थ

संवत् १२१३ अषाढ़ सुदी द्वितीया तिथि में शाह नागचंद्र ने प्रतिष्ठा कराई।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ५०७ से संगृहीत है। देशी पाषाण से पद्मासन मुद्रा में निर्मित इस प्रतिमा का पालिश मटियाले रंग का है। इसकी हथेलियाँ मात्र शेष रह गई हैं। इस प्रतिमा की दोनों ओर दो-दो खड्गासस्थ प्रतिमाओं के होने का भी अनुमान लगता है। आसन पर चिह्न नहीं है। अलंकरण स्वरूप सामने देखते हुए दो सिंह अंकित किये गये हैं। दो पंक्ति में उक्त मूलपाठ भी उत्कीर्ण किया गया है।

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख वही ले.सं. 11/299 पृ. 132

अभिलेख - १४०

अहार, आदिनाथ प्रतिमालेख, संवत् १२१३, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. ।।संसतु (संवत्) १२१३।। श्री माथुन्वए साधु स्री जसकर सुत साधु स्री जसरा तस्य पुत्र्यैना इति कजाल्क (कंजाल्क) जसोधरौ हाज्र्जाराजू

२. एते प्रणमन्ति नित्यं (।।)

पाठ टिप्पणी

इस मूलपाठ में इति शब्द के लिए ऊपर दो तथा दोनों के मध्य नीचे एक बिन्दु दी गई है। ये के लिए ए स्वर प्रयुक्त हुआ है। श्री के दो रूप व्यवहृत हुए हैं।

भावार्थ प्रतिमा

संवत् १२१३ में प्रतिष्ठापित इस प्रतिमा को माथुर अन्वय के शाह श्री यशकर के पुत्र शाह श्री जसरा तथा उसके तीन पुत्र–कमल, यशोधर और हार्ज्जाराजू ये सब नित्य प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या १११ से संगृहीत है। इसका निर्माण देशी काले नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में हुआ है। पालिश कालो, चिकना और चमकदार है। सिर नहीं है। आसन से गले तक की अवगाहना १८ इंच है। शिलाफलक की चौड़ाई २५ इंच है। चिह्न स्वरूप आसन पर वृषभ अंकित है। दो पंक्ति में उक्त लेख भी उत्कीर्ण किया गया है।[1]

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख वही, ले.स. 11/300 पृ 132

अभिलेख - १४१

अहार, महावीर प्रतिमालेख संवत् १२१३, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. कुटकान्वये पंडित स्री (श्री) लक्ष्मणदेवस्तस्य सिष्य (शिष्य) स्री (श्री) मदार्यदेवस्तथा कं (अं)तिका ज्ञानस्री

२. सहेल्लिका जाजमा मातिवि ये (ए) तयोर्ज्जिन विंवं प्रतिष्ठापित मिति ।।संवत् १२१३।।

भावार्थ

कुटकान्वय में हुए (मुनि) पंडित लक्ष्मणदेव के शिष्य श्रीमद् आर्यदेव तथा शिष्या आर्यिका ज्ञानश्री के साथ एल्लिका जाजमा और मातिवि इन दोनों ने संवत् १२१३ में इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या २५ से संगृहीत है। इसका निर्माण देशी काले–नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में हुआ है। पालिश काला–चिकना और चमकदार है। सिर नहीं है। आसन से गले तक की अवगाहना १३ इंच तथा शिलाफलक की चौड़ाई १८ इंच है। दो पंक्ति में उक्त मूलपाठ भी आसन पर उत्कीर्ण किया गया है।[1]

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख : वही, ले.सं. 11/301 पृ. 133

अभिलेख - १४२

अहार, महावीर प्रतिमालेख १२१३, भाषा संस्कृत लिपि, नागरी

मूलपाठ

मं(सं)वत् १२१३ गोल्लापूर्व्वान्वये साधु गल्हे भार्या मलषा (खा) तया (तयोः) सुत पोषन (पोखन) वामे (एते) प्रणमंति आषढ़ (आषाढ़) सुदि २ (।)

पाठ टिप्पणी

इस मूलपाठ में गल्हे के स्थान में गाल्ह पढ़ने में आता है। गाल्ह में ग के बाद की खड़ी रेखा आगामी वर्ण में संयुक्त होनेवाले ए स्वर की प्रतीक ज्ञात होती है। ष का प्रयोग ख के लिए भी हुआ है।

भावार्थ

संवत् १२१३ अषाढ़ सुदी द्वितीया तिथि में– गोलापूर्व शाह गल्हे उनकी पत्नी मलखा, पुत्र पोखन प्रतिष्ठा कराकर ये (नित्य) प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ६० से संगृहीत है। इसका निर्माण देशी काले–नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में हुआ है। पालिश काला, चिकना, चमकदार है। सिर और हथेलियाँ नहीं है। आसन से गले तक की अवगाहना १४ इंच है। आसन की लम्बाई २० इंच है। चिह्न स्वरूप आसन पर सिंह और एक पंक्ति में उक्त मूलपाठ

उत्कीर्ण है।[1]

सदर्भ

1 अहार क्षेत्र के अभिलेख . वही. ले स 11/302 पृ 133

अभिलेख - ९४३

अहार, आदिनाथ प्रतिमालेख, सवत् १२१३, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१ गोलापूर्व्वन्वये सावु रासल तस्य सुत सावु मामे प्रणमति। ग्र (गृ) पत्यन्वये सावु केसव भार्या सांतिणि (शातिणि)। सावु बावण सुत माल्हे प्रणमति।।

२ सवत् १२१३ गोल्लापूर्व्वान्वये साधु जाल्हू तस्य भार्या पल्हा तयो· पुत्र वछराजदेव राजजस वेवल प्रणमति आषढ सुदि २ सोमे (।)[1]

पाठ टिप्पणी

इस मूलपाठ में सवत् १२०३ पढने में आता है। किन्तु आषाढ सुदि २ का उल्लेख सवत् १२१३ के लेखो में हुआ है। अतः इस मूलपाठ में सवत् १२१३ ही स्वीकार किया गया है।

भावार्थ

गोलापूर्व शाह रासल का पुत्र सावु, शाह जाल्हू उनकी पत्नी पल्हा, पुत्र वछराजदेव राजजस और वेवल तथा गृहपत्यन्वय के शाह केशव की पत्नी शांतिणी एवं शाह वावण का पुत्र माल्हे संवत् १२१३ आषाढ़ सुदी द्वितीया सोमवार के दिन प्रतिष्ठा कराकर प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ७४ से संगृहीत है। इसका निर्माण देशी काले नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में हुआ हैं। पालिश काला, चिकना, चमकदार है। सिर नहीं है। कुहनी तक के दोनों हाथ भी नहीं है। आसन से गले तक की अवगाहना २२ इंच है।

शिलाफलक की चौडाई २७ इंच है। नाभि के नीचे इसके खण्डित हो जाने से दो भाग हो गये हैं। चिह्न स्वरूप आसन के मध्य वृषभ तथा उसकी दोनों ओर दो पंक्ति

में उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण किया गया है। लेख के आदि मध्य और अंत में पुष्पाकृतियाँ अंकित हैं।

विशेष

यह प्रतिष्ठा गोलापूर्व और गृहपत्यन्वय दो अन्वयों के दो–दो परिवारों के सहयोग से सम्पन्न हुई है।

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख : वही ले.स. 11/303 पृ. 134

अभिलेख - १४४

अहार सुमतिनाथ प्रतिमालेख संवत् १२१३, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

समवा (सम्वत्) १२१३ अषाढ सुदि २ सोमे। ग्र (गृ) पत्यन्वये साधु जसकरस्तस्य भार्या रा (रो) हेणि ए–(त) योः पुत्र वासलस्तस्य लघुभ्राता साधु नाने तस्य भार्या पल्हा तथा अल्हा नित्य प्रणमन्ति ।।

पाठ टिप्पणी

इस मूलपाठ में दिन का नाम भौमे पढने में आता है। गहराई से देखने पर उसे सोमे भी पढा जा सकता है। अन्य अभिलेख में सोमे पाठ होने से इस मूलपाठ में भी वही रखा गया है।

भावार्थ

संवत् १२१३ अषाढ सुदी द्वितीया सोमवार के दिन गृहपत्यन्वय के शाह जसकर (यशकर), उनकी पत्नी रोहिणी, पुत्र वासल तथा उसका लघुभ्राता शाह नाने और उसकी दोनों पत्नियाँ–पल्हा और अल्हा प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराकर सभी नित्य प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा–परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या १०० से संगृहीत है। इसका निर्माण देशी काले–नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में हुआ है। पालिश काला, चिकना और चमकदार है। सिर तथा कुहनी के ऊपरी हाथ नहीं है। आसन से गले तक की अवगाहना २० १/२

इंच और आसन की चौड़ाई २८ इंच है। चिह्न स्वरूप आसन के मध्य में चक्रवाक पक्षी तथा उसकी दोनों ओर एक पंक्ति में उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण है।

विशेष

इस लेख में एक व्यक्ति की दो पत्नियों के होने का उल्लेख तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था का उद्‌घोषक है।१

संदर्भ

1 अहार क्षेत्र के अभिलेख . वही ले.स. 11/304 पृ. 135

अभिलेख - १८५

अहार, महावीर प्रतिमालेख संवत् १२१३, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

(सं)वत् १२१३ गोलापूर्व्वान्वये साधु पद्मे साल्हु वाल्हु........

पाठान्तर

पं. गोविन्ददास कोठिया ने इस लेख का सवन १२०३ तथा चिह्न घोडा बताया है।

भावार्थ

संवत् १२१३ में गोलापूर्व अन्वय के शाह पद्मे साल्हु वाल्हु आदि ने प्रतिष्ठा कराई।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ३७ से संगृहीत है। इसका निर्माण देशी काले नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में हुआ है। पालिश काला, चिकना और चमकदार है। इस प्रतिमा के कुहनी से नीचे के दोनों हाथ तथा पद्मासनस्थ पैर, और आसन मात्र शेष है। आसन की लम्बाई ११ इंच और चौडाई एक इंच है। चिह्न स्वरूप आसन पर सिंह तथा एक पंक्ति में उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण है।

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख : वही, ले.स 11/305 पृ. 136

अभिलेख - १४६

अहार, सुमतिनाथ प्रतिमालेख, संवत् १२१३, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. संवत् १२१३ भट्टारक स्री (श्री) माणिक्यदेव
२. गुण्यदेवौ प्रणमति (तः) नित्यम्।।

भावार्थ

संवत् १२१३ में भट्टारक श्री माणिक्यदेव और गुण्यदेव प्रतिमा प्रतिष्ठा कराकर नित्य प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या २१६ से संगृहीत है। इसका निर्माण देशी काले–नीले पाषाण से खड्गासन मुद्रा में हुआ है। प्रतिमा के घुटनों से नीचे के पैर तथा आसन मात्र शेष है। दोनों ओर एक चँमरवाही खड्गासन मुद्रा में देव अंकित हैं। दायीं ओर के इन्द्र के पार्श्व में मालाधारी देव भी दर्शाया गया है। इस देव से बायीं ओर भी मालाधारी देव का अंकन होना ज्ञात होता है। आसन पर चिह्न स्वरूप बकरा तथा उसकी दोनों ओर दो पंक्ति में उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण है।

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख : वही, ले. सं 11/306 पृ. 136

अभिलेख -१४७

अहार, महावीर प्रतिमालेख, संवत् १२१३, भाषा संस्कृत लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् १२१३ पंडित स्री (श्री) मं (ह) वर्म्भ भग्नी अर्ज्जिका श्रामिणि सिद्धिणीलणा प्रणमति विक्तं (नित्यं)।।

भावार्थ

संवत् १२१३ मे पण्डित श्री मंहवर्म्भ की बहिन आर्यिका श्रमिणी

सिद्धिणीलणा (प्रतिष्ठाकराकर) नित्य प्रणाम करती है।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ३६ से संगृहीत है। इसका निर्माण देशी काले–नीले पाषाण से हुआ है। यह प्रतिमा पद्मासन मुद्रा में है। इसके कुहनी के नीचे के दोनो हाथ पैर और आसन मात्र शेष है। दायॉ घुटना और हथेलियाँ टूटी हुई है। आसन की लम्बाई १६ इंच और चौडाई एक इंच है। चिह्न अस्पष्ट है। सिंह समझ मे आता है। आसन पर एक पंक्ति में उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण है।

सदर्भ

1 अहार क्षेत्र के अभिलेख वही, ले स 11/307 पृ 137

अभिलेख - १४८

अहार, आदिनाथ प्रतिमालेख, सवत् १२१३, भाषा संस्कृत लिपि नागरी

मूलपाठ

संवतृ (तू) १२१३ सिद्धांतीदेवस्री सा.............

भावार्थ

सवत् १२१३ में सिद्धान्ती देवश्री ने संभवतः प्रतिष्ठा कराई।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या १७३ से संगृहीत है। इसका निर्माण देशी काले–नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में हुआ है। पालिश काला चिकना और चमकदार है। सिर नहीं है। आसन से गले तक की अवगाहना ६ इंच है। लेख फलक ७ १/२ इंच लम्बा है। आसन पर चिह्न स्वरूप वृषभ और एक पंक्ति में उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण है। बायाँ हाथ छिला हुआ है।

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख : वही, ले.सं. 11/308 पृ. 137

अभिलेख - १४९

अहार पाण्डुकशिला–लेख, संवत् १२१३, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. संवत् १२१३ आषाढ सुदि २ सोम दिने गहपत्यान्वये कोछिल
२. गोत्र वाणपुर वास्तव्य साधु ऊद। सुत माहव। पुत्र साहु माले।।
३. शरी (श्री) हरसेण। विजयसेण। उदद्‌ड्डु। सलखू विजदू पुत्र हंसणल।
४. गिसन।।मदन। एतान प्रणमंति नित्यं।।

इस मूलपाठ की दायीं ओर अंकित पाठ

१. हरसेण पुत्र ए प–
२. रुदेव ।।

प्रथम मूलपाठ की बायी ओर अंकित पाठ

१. सप्तस्तु पुत्र मही
२. पाल।।केसव।।

ऊपरी भाग में अंकित पाठ

१. कवचंद्र ।।लोहदेव। महिथनं।।
२. सहदेव एतान् प्रणमंति नित्यं।।

भावार्थ

संवत् १२१३ आषाढ सुदी द्वितीया सोमवार के दिन गृहपत्यन्वय में कोछल गोत्र के वाणपुर निवासी शाह ऊदे के पुत्र माधव, पौत्र शाह माले श्री हरषेण, विजयषेण, उदद्‌ड्डु, सलखू तथा विजदू का पुत्र हंसणल, किशन और मदन ये तथा हरिषेण के सातों पुत्र–परुदेव, केशव कवचन्द्र, लोहदेव, महिथन, सहदेव तथा सातवाँ पुत्र महीपाल ये सब (वेदी प्रतिष्ठा कराकर) नित्य प्रणाम करते हैं।

पाण्डुकशिला परिचय

यह वेदिका अहार संग्रहालय में संगृहीत है। इसका निर्माण कुछ पीत वर्ण के देशी पाषाण से १४ दल के कमल पुष्प की आकृति में हुआ है। यह तीन कटनियों में विभाजित है। प्रत्येक कटनी में कलाकृति अंकित है। चार पंक्ति का मूलपाठ ऊपरी भाग में पूर्व दिशाभिमुख उत्कीर्ण है। शेष तीनों लेख दूसरे खण्ड में उत्कीर्ण हैं।

ऊपरी भाग की रचना से यह पाण्डुकशिला प्रतीत होती है। ज्ञात होता है इसका निर्माण जिनाभिषेक के लिए किया गया होगा। इसके ऊपरी भाग में अभिषेक का जल निकालने के लिए दो निर्गमन द्वार बने हुए हैं। ये गन्धोदक द्वार कहे जा सकते हैं। इनसे गन्धोदक निकलकर बाहर संगृहीत होता होगा। इसे यद्यपि वेदिका कहा जाता है किन्तु कमलाकृति में यह एक जिनाभिषेक के लिए बनाई गयी पाण्डुकशिला है।

बताया जाता है कि यह अवशेष अहार क्षेत्र की पूर्वी धर्मशाला के सामने नये कुए के पास एक सहस्रकूट चैत्यालय था, उसमें मिला था।

सदर्भ

1 अहार क्षेत्र के अभिलेख वही ले.स 11/309 पृ. 138

अभिलेख - १५०

छतरपुर अर्हत् प्रतिमालेख संवत् १२१३ भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

स. (सवत्) १२१३ भरालु सुत देव मथे नित्यं प्रणमतः।

भावार्थ

सवत् १२१३ में भरालु के देव और मथे दोनों पुत्र प्रतिमा–प्रतिष्ठा कराकर नित्य प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा–परिचय

देशी पाषाण से निर्मित यह प्रतिमा छतरपुर के जोधाबाई श्री दिगम्र जैन मंदिर में विराजमान है।[1]

संदर्भ

1. जिनमूर्ति प्रशस्तिलेख : क्रमांक 266, पृ 59

अभिलेख - १५१

नरवर, अर्हत् प्रतिमालेख संवत् १२१३ भाषा संस्कृत लिपि, नागरी

मूलपाठ

सं. (संवत्) १२१३ असा (षा)ढ सुदि ६

भावार्थ

इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा संवत् १२१३ अषाढ़ सुदी नौवीं को सम्पन्न हुई।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा नरवर (शिवपुरी) किले में है। इसका निर्माण सफेद संगमरमर पाषाण से हुआ है। ग्वालियर पुरातत्व विभाग द्वारा ईसवी १६२५–१६२६ में प्रकाशित मध्यभारत के प्राचीन अवशेषों में इस प्रतिमा का क्र.सं. ३ से उल्लेख किया गया है।

संदर्भ

1. अनेकान्त, बाबू छोटेलाल स्मृति अंक, वर्ष 19, किरण 1–2, पृष्ठ 69

अभिलेख - १५२

पचराई, अर्हत् प्रतिमालेख संवत् १२१३

मूलपाठ

ग्वालियर वार्षिक रिपोर्ट ईसवी १८१४–१८१५ में इस प्रतिमा का उल्लेख है। इसकी प्रतिष्ठा का संवत् १२१३ बताया गया है।

संदर्भ

1. ग्वालियर मध्यप्रदेश पुरातत्त्व विभाग द्वारा प्रकाशित मध्यभारत के प्राचीन अवशेष सूची क्रमांक 1251

अभिलेख - १५३

सोनागिरि शीतलनाथ प्रतिमालेख, संवत् १२१३, भाषा संस्कृत लिपि, नागरी

मूलपाठ

१. संवत् १२१३ गोल्लापूर्व्वान्वये साधु सोढो तत्पुत्र साधु क्षीलूण भार्य्या जिणा तयोः सुत साधु वीलूण तद्‌भार्या पल्हासरु
२. जिननाथं नित्यं प्रणमति (प्रणमंति)।

भावार्थ

संवत् १२१३ में गोलापूर्व अन्वय के शाह सोढो के पुत्र क्षीलूण और उनकी पत्नी जिणा के पुत्र वीलूण तथा पुत्रवधू पल्कासरु या पल्हासरु ये सभी जिननाथ की प्रतिष्ठा कराकर नित्य प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा–परिचय

यह प्रतिमा देशी काले–नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में निर्मित है। पालिश काला, चिकना, चमकदार है। श्रीवत्स चिह्न यथास्थान अंकित है। नासिका खण्डित है। आसन पर कल्पवृक्ष उत्कीर्ण समझ में आता है। सम्प्रति तलहटी के मंदिर क्रमांक १६ में विराजमान है। मुनिसुव्रतनाथ प्रतिमा के नाम से जानी जाती है। अनेकान्तः वर्ष २१ किरण प्रथम में प्रकाशित अपने लेख में डॉ नेमीचन्द्र शास्त्री आरा ने इस लेख के मूलपाठ में गोल्लापूर्व्वान्वय को गोल्लापल्लीवसे बताया है। उन्होंने शाह सोढो और शाह लल्लू (श्रीलूण) के प्रथक परिवार बताये हैं तथा दोनों परिवारों द्वारा प्रतिमा प्रतिष्ठा का सम्पन्न होना बताया हैं। दिनांक १३/१०/८७ को प्रतिमा के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। लेख में गोलापूर्वान्वय का स्पष्ट उल्लेख है। पल्ली बसे भ्रान्ति से पढा गया समझ में आता है। लेख में दो परिवार भी नहीं हैं। केवल शाह सोढो के परिवार में उनके पुत्र, पुत्रवधू तथा पौत्र और पौत्र वधू का नामोल्लेख है। भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ, भाग ३, पृष्ठ ७० में इस प्रतिमा को इस क्षेत्र की सर्वाधिक प्राचीन प्रतिमा बताया गया है। इसका प्रतिष्ठा काल संवत् १२३३ दर्शाया गया है। जो संवत् १२१३ है।

संदर्भ

1. सम्पादक द्वारा पठित

अभिलेख - १५४

अहार, आदिनाथ प्रतिमालेख, संवत् १२१४, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. अवधपुरान्वये ठक्कुर स्री नम्भे सुत ठक्कुर नीनेकस्य भार्या पाल्हणि नित्यं प्रणमति कर्मक्षयाय।

२. स. (संवत्) १२१४ फाल्गुण वदि ४ सोमे।।

भावार्थ

अवधपुरान्वय के ठाकुर श्री नम्भे के पुत्र ठाकुर नीनेक उनकी पत्नी पाल्हणि संवत् १२१४ फाल्गुन वदि चतुर्थी सोमवार के दिन प्रतिष्ठा कराकर कर्मक्षय हेतु ये नित्य प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा संग्रहालय में संग्रहालय संख्या १६ से संगृहीत है। इसका निर्माण देशी काले–नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में हुआ। पालिश काला, चिकना, चमकदार है। सिर, हाथ और पैर नहीं है। आसन से सिर तक की अवगाहना १५ इंच और फलक की चौड़ाई १६ इंच है। आसन पर चिह्न स्वरूप वृषभ अंकित है। दो पंक्ति में उक्त मूलपाठ भी उत्कीर्ण है।

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख वही, ले. सं. 11/310 पृ. 139

अभिलेख - १५५

बजरंग गढ़, पद्मप्रभ प्रतिमालेख संवत् १२१५, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् १२१५ (।) सोमन्हापत्य मन्वति सर्वेदव वयास्त्रस्य (तस्य) महना तरिया (भार्या) सुत मल्लु सुता (सुत) सिवु पद्मप्रभदेव प्रणमति (प्रणमंति)।

भावार्थ

सोमन्ह के पुत्र मन्वति और मन्वति के पुत्र शाह दववस्य पुत्रवधू महना और पौत्र मल्लु तथा प्रपौत्र शिवु पद्‌मप्रम प्रतिमा की संवत् १२१५ में प्रतिष्ठा कराकर प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा जैन पुरातत्व संग्रहालय जयसिंहपुरा उज्जैन में मूर्ति क्रमांक १२१ से संगृहीत है। इसका निर्माण स्लेटी पाषाण से हुआ है। अब केवल आसन है जिस पर उक्त लेख अंकित है।

प्राप्तिस्थान

बजरंग गढ गुना से ८ किलो मीटर दूर है। जयसिंह राजा द्वारा बसाये जाने पर इसका प्राचीन नाम जयनगर था। जयसिंह हनुमान के भक्त थे। भक्तिवश उन्होंने दुर्ग का नाम बजरंग गढ़ रखा। कालांतर में ग्राम का भी नाम बजरंग गढ हो गया । यहाँ से प्राप्त एक मुद्रा पर श्री राघव प्रताप पवन पुत्र वल पाइके 'अंकित मिला है।

संदर्भ

1 सन्मति सन्देश, वर्ष 13, अक 6, जून 1998 पृष्ठ 25

अभिलेख - १५६

खजुराहो संभवनाथ प्रतिमालेख संवत् १२१५ भाषा संस्कृत लिपि नागरी

मूलपाठ

ॐ ।।संवत् १२१५ माघ सुदि ५ (।) श्रीमन्मदनवर्म्मदेव प्रबर्द्धमानविजयराज्ये।।

ग्र (गृ) हपतिवंसे (शे) श्रेष्ठि (ष्ठि) देदू तत्पुत्र पाहिल्लः पाहिल्लांगरुह साधु साल्हे (ते) नेदं प्रतिमा कारितेति ।।तत्पुत्राः महागण। महीचंद। सिरिचंद। जिनचंद उदयचंद प्रभृति संभवनाथं प्रणमंति। मंगलं महाश्री (:)। रूपकार रामदेव (:)।।

भावार्थ

पंच परमेष्ठियों का स्मरण करके श्रीमान मदनवर्मदेव के प्रवर्द्धमान विजय राज्य में ग्रहपति वंश के श्रेष्ठी देदू के पौत्र और पाहिल के पुत्र शाह साल्हे ने इस संभवनाथ प्रतिमा का रूपकार रामदेव द्वारा निर्माण कराया। संवत् १२१५ माघ सुदी पंचमी को इस

प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराकर साल्हे के पुत्र महागण, महीचन्द्र, श्रीचन्द्र, जिनचन्द्र और उदयचन्द्रआदि मंगलकारी महालक्ष्मी (मोक्षलक्ष्मी) के लिए प्रणाम करते हैं।

प्रतिभा-परिचय

दिनांक ४ जून १९६८ ईसवी में इस प्रतिभा के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। श्याम पाषण से निर्मित यह प्रतिमा खजुराहो के आदिनाथ मंदिर में विराजमान है। एक पंक्ति में यह लेख प्रतिमा की आसन पर उत्कीर्ण है।

संदर्भ

1. एपि. इण्डिका, जिल्द 1, पृ. 153, कनिघम रिपोर्ट-21, पृ 68

अभिलेख - १५७

खजुराहो, अभिनन्दननाथ प्रतिमालेख, संवत् १२१५, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

संवतु (त्) १२१५ माघ सुदि ५ रवौ देशी (शी) गणे पंडित स्री (श्री) राजनंदि तत्सिस्य (तत्शिष्य) पंडित स्री (श्री) भानुकीर्ति आर्यिका मेरुस्री (श्री) अभिनंदनस्वामिनं नित्यं प्रणमंति।

भावार्थ

सवत् १२१५ माघ सुदी पंचमी रविवार के दिन देशीगण के पंडित राजनन्दि उनके शिष्य पंडित श्री भानुकीर्ति तथा आर्यिका मेरुश्री अभिनन्दननाथ की नित्य वंदना करते हैं।

प्रतिमा-परिचय

यह प्रतिमा खजुराहो के शान्तिनाथ मंदिर में चन्द्रप्रभ मंदिर के नाम से प्रसिद्ध वेदी क्रमांक ८ पर विराजमान है। दि. ४ जून १९६८ को दर्शन करते समय लेख पढ़ने से प्रतिमा चौथे तीर्थकर अभिनन्दन नाथ की ज्ञात हुई। चिह्न सीमेंट की छाप से ढक दिया गया है। प्रतिमा का निर्माण देशी काले-नीले पाषण से हुआ है। श्री परमानन्द शास्त्री ने अनेकान्तः बाबू छोटे लाल जैन स्मृति अंक पृ. ५७ में प्रकाशित अपने लेख में पंडित श्री राजनंदि को पंडित श्री शाह (श) नन्दी कहा है। इसी प्रकार लेख के अंत में अभिनन्दन स्वामिनं नित्यं प्रणमंति के स्थान में प्रतिवन्दतु पढ़ा है। लेख का शेष भाग समान है। यह

लेख उन्होंने चतुर्थ वेदी पर विराजमान मुनिसुव्रतनाथ प्रतिमा की आसन पर उत्कीर्ण बताया है। प्रतिमा भिन्न होने से भिन्न–भिन्न दो लेख ज्ञात होते हैं।

संदर्भ

1. सम्पादक द्वारा पठित

अभिलेख - १५८

अहार, नेमिनाथ प्रतिमालेख, संवत १२१६, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

संवतु (त्) १२१६ माघ सुदि १३ षं (षं) डिलवालान्वये साह सुल्हरा तस्य भार्या मामतेन कर्म ख (क्ष) यार्थ प्रतिमा कारापिता। तस्य सुत महिपति प्रणमति नित्यं।

भावार्थ

संवंत् १२१६ माघ सुदी त्रयोदशी तिथि में खण्डेलवाल अन्वय के शाह सुल्हण, उनकी पत्नी मामतेन के द्वारा प्रतिमा का निर्माण कराकर प्रतिष्ठा कराई गई। उनका पुत्र महिपति उसे प्रतिदिन प्रणाम करता है।

प्रतिमा–परिचय

यंह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ४ से संगृहीत है। इसका निर्माण देशी काले नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में हुआ है। पालिश काला, चिकना और चमकदार है। इस प्रतिमा का सिर नहीं है। दायें हाथ की अगुलियाँ और बायें पैर का अंगूठा भी नहीं है। श्रीवत्स यथास्थान अंकित है। आसन से गले तक की अवगाहना १७ इंच और फलक की चौड़ाई २२ इंच है। आसन की वायीं ओर चिह्न स्वरूप शंख और उसके नीचे एक पंक्ति में मूलपाठ उत्कीर्ण है।

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख, वही, ले.सं. 11/311 पृष्ठ 139

अभिलेख - १५९

अहार, शान्तिनाथ प्रतिमालेख, संवत १२१६, भाषा संस्कृत लिपि नागरी

मूलपाठ

१. संवतु (त्) १२१६ माघ सुदि १३ सुक्रे जैसवालान्वये
२. सावु श्रीधर ।।–(तद्) भार्या सलषा (खा) तस्य पुत्र सावु
३. आमदेव ।। तथा कमदेव (कामदेव) ।। सुत लष (ख) मदेव ।। ता
४. ग।य देवचंद्र ।। वाल्हू ।। सांति (शांति) ।। हालू ।। प्रभुतयः प्रण
५. मंति नित्यं ।। मंगल महाश्री ।। भार्या लष (ख) मा (।)

भावार्थ

सवत १२१६ माघ सुदि १३ शुकवार को जैसवाल अन्वय के शाह श्रीधर, उनकी पत्नी सलखा, पुत्र शाह आमदेव और कामदेव, कामदेव की पत्नी लखमा और पुत्र लखमदेव तथा उसके पुत्र देवचद्र, काल्हू, शांति, हालू आदि मंगल और महाश्री के लिए सभी प्रतिष्ठा कराकर नित्य वंदना करते हैं।

प्रतिमा परिचय

यह–प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ३ से संगृहीत है। इसका निर्माण देशी काले–नीले पाषाण से खड्गासन मुद्रा में हुआ है। इसकी नेत्र, नासिका, मुँह उपस्थ और दायें हाथ की अंगुलियाँ खण्डित है। हाथों के नीचे चँमरवाही देव खड्गासन मुद्रा में अंकित है। इसकी अवगाहना ३३ इंच और फलक की चौड़ाई १२ इंच है। आसन ढ़ाई इंच चौड़ी और एक फुट लम्बी है।

आसन पर आमने–सामने मुख किये चिह्न स्वरूप दो हरिण अंकित है। पाँच पंक्ति का उक्त मूलपाठ भी उत्कीर्ण किया गया है। पालिश काला चिकना और चमकदार है।

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख, वही ले.सं. 11/312 पृ. 140

अभिलेख - १६०

अहार, शान्तिनाथ प्रतिमालेख, संवत् १२१६, भाषा संस्कृत, लिपि–नागरी

मूलपाठ

१. सम्वत् १२१६ माघ
२. सुदि १३ सु (शु) क्र दिने श्री
३. मत कुटकान्वये पंडित
४. श्री मंगलदेव तस्य सि (शि) स्यं (ष्य)
५. भट्टारक पद्मदेव....................
६. वस। तस्य ....
७. ....

पाठ टिप्पणी

इस मूलपाठ में श और ष के लिए स का व्यवहार हुआ है।

भावार्थ

संवत १२१६ माघ सुदी त्रयोदशी शुक्रवार के दिन कुटकान्वय के श्रीमान पंडित श्री मंगलदेव, उनके शिष्य भट्टारक पद्मदेव की शिष्य परम्परा द्वारा प्रतिष्ठा कराई गई।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या १ से सगृहीत है। इसका निर्माण देशी काले–नीले ७० इंच ऊँचे तथा २८ इंच चौड़े शिलाखण्ड से खड्गासन मुद्रा में हुआ है। इसकी नासिका, मुख, दाढ़ी, हाथ और पैर की अंगुलियाँ खण्डित है। प्रतिमा के पीछे भामण्डल है। केश घुघराले हैं। दोनों ओर एक–एक चँमरवाही खड्गासनस्थ देव अंकित है। ये आभूषणों से अलंकृत है। आसन पर वायीं ओर उपासक श्रावक को अंकित किया गया है। दायीं ओर भी उपासक की प्रतिमा के रहने का अनुमान होता है। आसन के उपरी भाग में आमने–सामने मुख किये चिह्न स्वरूप दो हरिण तथा उनके नीचे सात पंक्ति में उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण है। मूलपाठ की अंतिम तीन पंक्तियाँ अपठनीय हैं। यह अंश बहुत घिसा हुआ है। सम्प्रति यह प्रतिमा संग्रहालय के बरामदे में दीवाल के सहारे विराजमान है।

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख वही, ले. सं. 11/313 पृ 141

अभिलेख - १६१

अहार, अर्हन्त प्रतिमालेख, संवत १२१६, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. संवत् १२१६ फालु (ल) गुरा वदि सोम दिने ११ सिद्धांती स्री सागरसेण अर्ज्जिका जयसिरि सिषेणी रतनसिरि पूनसिरि (पूर्ण्णश्री) प्रणम (मं) ति नित्यं।।

२. जैसवालान्वये साधु वाहड़। भार्या सिवदे। पुत्री साविति गाविति। पद्मा। मदना। प्रणमंति नित्यं।।

पाठ टिप्पणी

इस मूलपाठ में श्री के लिए सिरि शब्द का उल्लेखनीय व्यवहार हुआ है।

भावार्थ

संवत् १२१६ फाल्गुन वदि अष्टमी सोमवार को जैसवाल अन्वय के वाहड उनकी पत्नी शिवदे, पुत्री सावित्री, गावित्री, पद्मा, मदना सिद्धान्ती श्री सागरसेन आर्यिका जयश्री, उनकी शिष्याएँ रतनश्री, पूर्णश्री द्वारा कराई गई प्रतिष्ठा से प्रतिष्ठापित इस प्रतिमा की नित्य वंदना करते है।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ४६ से संगृहीत है। इसका निर्माण देशी काले–नीले पाषण से पद्मासन मुद्रा में हुआ है। पालिश काला चिकना और चमकदार है। इस प्रतिमा का सिर और स्कन्ध से कुहनी तक के हाथ नहीं है। अंगुलियाँ खंडित है। आसन से गले तक की अवगाहना डेढ़ इंच और आसन की लंबाई १८ इंच है। आसन के आदि, मध्य और अंत में अष्टदल कमल अलंकरण स्वरूप अंकित है। इन कमलों की दोनो ओर दो पंक्ति में उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण है। चिह्न नहीं है।

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख वही ले. सं.11/314 पृ.142

अभिलेख - १६२

अहार, महावीर प्रतिमालेख, संवत् १२१६, भाषा संस्कृत, लिपि—नागरी

मूलपाठ

१. संवत् १२१६ माह (घ) सुदि १३ स्रीमत्कुटकान्वये पंडित लष्मण देवस्तत्सिष्यार्यदेव अर्ज्जिका लष्म (लक्ष्म)

२. स्री तवेल्लिका (सहेल्लिका) चारित्रस्री तद भ्राता लिंवदेव एते स्रीमद्वर्द्धमान स्वामिन महर्निसं (शं) प्रणमंति।

पाठ टिप्पणी

दूसरी पंक्ति में यद्यपि तवेल्लिका पढ़ने में आता है किन्तु यह शब्द सहेल्लिका होना चाहिए। अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या २५ से संगृहीत प्रतिमा की आसन पर सहेल्लिका शब्द का व्यवहार हुआ है। इसे तथेल्लिका पढ़ा जाना उपयुक्त प्रतीत होता है। इस लेख में घ के लिए ह, क्ष को ष, श को स और श्री को स्री लिखा गया है।

भावार्थ

संवत् १२१६ माघ सुदि त्रयोदशी तिथि में कुटकान्वय के पंडित लक्ष्मणदेव, उनके शिष्य आर्यदेव, आर्यिका लक्ष्मश्री तथा ऐल्लिका चरित्र श्री और उनका भाई लिम्बदेव गे प्रतिष्ठा कराकर श्रीमान वर्द्धमान स्वामी को नित्य प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या २१ से सगृहीत है। इसका निर्माण देशी काले नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में हुआ है। पालिश काला, चिकना और चमकदार है; सिर नहीं है। केवल आसन कुहनियों तक के हाथ शेष हैं। अंगुलियाँ खण्डित हैं। आसन से गले तक की अवगाहना ३५ इंच और आसन फलक की चौढ़ाई ४५ इंच है।

चिहन स्वरूप आसन पर सिंह तथा दो पंक्ति का उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण है।

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख, वही, ने. सं 11/315, पृ. 142

अभिलेख - १६३

अहार, अभिनंदननाथ प्रतिमालेख संवत् १२१६, भाषा संस्कृत लिपि नागरी

मूलपाठ

१. सिद्धांती स्री सागरसेन अर्ज्जिका जयसिरि तस्य चेल्ली रत्नसिरि

२. .... (संवत) १२१६ माघ सुदि १३ सुक्रे जायसवालन्वये सावु वाहड भार्या स्रिदेवि पुत्री साव्विति

३. पद्मा प्रणमंति।।

भावार्थ

सिद्धान्ती सागरसेन, आर्यिका जयश्री तथा उसकी चेली रत्नश्री द्वारा संवत् १२१६ माघ सुदी त्रयोदशी शुक्रवार के दिन जैसवाल अन्वय के शाह वाहड उनकी पत्नी श्रीदेवी और पुत्री सावित्री तथा पद्मा ये सब प्रतिष्ठा करवाकर वंदना करते हैं।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ३३ से संगृहीत है। इसका निर्माण देशी काले-नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में हुआ है। पालिश काला, चिकना, चमकदार है। इस प्रतिमा की केवल आसन शेष है। आसन पर चिन्ह स्वरूप बंदर तथा तीन पंक्ति में उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण है। अभिलेख फलक की लंबाई १६ इंच और चौड़ाई दो इंच है।

व्याख्या

सिद्धान्ती : सिद्धान्त मर्मज्ञों के लिए व्यवहृत पद। इस पद के धारी जैन सिद्धान्त के विशेष ज्ञाता होते हैं।

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख, वही, ले.सं. 11/316 पृष्ठ 143

अभिलेख - १६४

अहार, विमलनाथ प्रतिमालेख, संवत १२१६, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. संवतु (त) १२१६ माघ सुदि

२. – (१) ३ शुक्र दिने ।। साधु आम्र

३. देव ।।

४. देवचद्र ।। प्रणमति नित्यं!!

भावार्थ

संवत् १२१६ माघ सुदी त्रयोदशी शुक्रवार के दिन प्रतिभा प्रतिष्ठा कराकर शाह आम्रदेव एवं देवचंद्रादि तथा उसके परिजन नित्य वंदना करते हैं।

प्रतिमा–परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या १०४ से सगृहीत है। इसका निर्माण देशी काले नीले पाषाण से खड्गासन मुद्रा में हुआ है। पालिश काला, चिकना, चमकदार है। सिर नहीं है। घुटनों से भी खण्डित है। हथेली में कमल पुष्प अंकित है। हाथों के नीचे दोनों ओर एक–एक चँमरवाही देव सेवारत खडे हैं। आसन से गले तक की अवगाहना २३ इंच है। आसन की लंबाई १६ इंच है। चिह्न स्वरूप आसन पर सूकर और उसकी दोनों ओर चार पंक्ति में उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण है।

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख, वही, ले स 11/317 पृष्ठ 144

अभिलेख - १६५

अहार, अर्हन्त प्रतिमालेख, संवत १२१६, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. ..... (संवत्) १२..........(१६) माघ सुदि १३ सुक्रे ग्र (गृ) पत्यन्वये

२. लषण सुत सावु मामदे.. (प्र)

३. णमति नीत्यं (नित्यं)।।

पाठ टिप्पणी

इस मूलपाठ के संवत सूचक अंतिम दो अंक अप्राप्त हैं। लेख में अंकित माघ सुदि १३ सुक्रे यह संवत् १२१६ के लेखों में प्राप्त होता है। अतः इस प्रतिमालेख का संवत् १२१६ ज्ञात होता है।

भावार्थ

संवत् १२१६ माघ सुदी १३ सुक्रवार के दिन गृहपत्यन्वय के श्रावक लखन के पुत्र शाह मामदे के परिजन प्रतिमा प्रतिष्ठा कराकर नित्य वंदना करते हैं।

प्रतिभा परिचय

यह प्रतिभा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या १०२ से संगृहीत है। इसका निर्माण देशी काले–नीले पाषाण से खड्गासन मुद्रा में हुआ है। पालिश काला, चिकना और चमकदार है। इस प्रतिमा का सिर तथा स्कंध भाग नहीं है। वायाँ हाथ छिला हुआ है। हथेली में कमल पुष्प अंकित है। हाथों के नीचे दोनों ओर एक–एक चँमरवाही देव सेवा रत खड्गासन मुद्रा में दर्शाया गया है। आसन पर चिह्न नहीं है। तीन पंक्तियों में उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण किया गया है।

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र अभिलेख, वही, ले.सं. 11/318 पृष्ठ 145

अभिलेख - १६६

अहार, शासनदेवी अभिलेख, संवत् १२१६, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. अवधपुरान्वये साहु सीतल

२. ..... (तस्य) भार्या गागा (गांगी) एते नित्यं प्रणमंति।

३. संवत् १२१६ आ–(षा) ढ सुदि८सोमे।

भावार्थ

अवधपुरान्वय के शाह सीतल और उनकी पत्नी गांगी संवत् १२१६ अषाढ़ सुदी अष्टमी सोमवार को प्रतिष्ठा कराकर इसे नित्य प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ३१८ से संगृहीत है। इसका निर्माण देशी पाषाण से हुआ है। इस देवी के ऊपरी भाग में दोनों ओर चरण के संकेत हैं जो उसके उपर निर्मित मूर्ति के सूचक हैं। ये प्रतिमाएँ देवी के ऊपर अंकित होने से तीर्थंकर पार्श्वनाथ की रही ज्ञात होती है। देवी की दोनों ओर एक–एक उपासक की प्रतिमा है। आसन की लंबाई ६ इंच तथा प्रतिमा के अवशिष्ठ अंश की ऊँचाई ८ इंच है। यह देवी प्रतिमा पदमावती की ज्ञात होती है।

विशेष

संवत् १२१६ में तीन बार प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न हुए हैं। सर्वाधिक प्रतिष्ठाएँ वर्ष में प्रथमवार माघ सुदी १३ शुक्रवार को हुई। दूसरी प्रतिष्ठा फाल्गुण वदी ८ सोमवार के दिन और तीसरी पदमावंती देवी की प्रतिष्ठा आषाढ़ सुदी ८ सोमवार को हुई।

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख, वही, ले.सं 11/319 पृ. 145

अभिलेख - १९७

वदनावर, अर्हन्त प्रतिमालेख संवत १२१६ भाषा संस्कृत लिपि नागरी

मूलपाठ

सं. (संवत्) १२१६ जेस्ट सुदि ५ बुधे आचार्य कुमारसेन चंद्रकीर्ति वर्द्धमानपुरान्वये साधु वाहिव्वः सुत माल्हा भार्य्या पाण्णु सुत पील्हा भार्या पाहुणी प्रणमति नित्यं।

भावार्थ

वर्द्धमानपुरान्वय के शाह वाहिब्ब की पौत्रवधू, मल्हू और उसकी पत्नी पाणु के पुत्र पील्हा की पत्नी पाहुणी आचार्य, कुमारसेन और चंद्रकीर्ति से संभवतः संवत् १२१६ जेठ सुदी पंचमी बुधवार को प्रतिष्ठा कराकर प्रतिमा की नित्य वंदना करती है।

संदर्भ

1. अनेकान्त वर्ष 25 किरण 4, पृ.169 भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ भाग 3, पृ. 276

अभिलेख - १९८

वदनावर, अर्हत् प्रतिमालेख संवत १२१६ भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् १२१६ चैत सुदि ५ बुधे रामचंद प्रणमति वर्द्धमान पुरान्वये साहु सुभोदित सुत (ता) वालासीपा भार्या रापा सुत विल्ला भार्या वायणि प्रणग (मं) ति।

भावार्थ

वर्द्धमानपुरान्वय के शाह सुमोदित का पौत्र और वालासीपा तथा उसकी पत्नी रापा का पुत्र विल्ला और पुत्रवधू वायणि एवं (शाह) रामचंद्र संवत १२१६ चैत्र सुदी पंचमी बुधवार को प्रतिष्ठा कराकर प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा बदनावर से जयसिंह पुरा जैन पुरातत्व संग्रहालय उज्जैन में मूर्ति क्रमांक ६२ से संगृहीत है।

संदर्भ

1. भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ भाग 3, पृ. 276

अभिलेख - १६९

ऊन, संभवनाथ प्रतिमालेख, संवत १२१८ भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. संवत् १२१८ स्री बलात्कारगण पंडित स्री देस (श) नंदि गुरुवर्यवरान्वये साधु धण पंडित तत्सि (त्शि)स्य साधु

२. सीलेण तस्य भार्या हर्षिणी तयोः सुत साधु गासुल सातेण प्रणमंति नित्यं।

पाठान्तर

पं. बलाभद्र जैन ने इस प्रतिमा का संवत् भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ, भाग ३, पृ. ३११ में १२१८ बताया है जबकि पं. परमानन्द शास्त्री ने इसका संवत् १२५८ लिखा है।

भावार्थ

वलात्कारगण में हुए देशनन्दिगुरुवर्यवर अन्वय (आम्नाय) के पंडित धण के शिष्य शीलेण और उनकी पत्नी हर्षिणी तथा पुत्र शाह गासुल और सातेण संवत् १२१८ में प्रतिष्ठा कराकर इसे नित्य प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा–परिचय

यह प्रतिमा धर्मशाला के पीछे भूगर्भ से प्राप्त हुई थी। इसकी अवगाहना २ फुट ८ इंच है। इसकी आसन पर उक्त दो पंक्ति का लेख उत्कीर्ण है। चिह्न स्वरूप अश्व अंकित है।

संदर्भ

1. पं. परमानंद शास्त्री, अनेकान्त वर्ष 12 पृ. 192 से साभार

अभिलेख - १७०

अहार, पद्मावती प्रतिमालेख, संवत् १२१८ भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

गोल्लापूर्व्वान्वये साहु महिपति पुत्री हम्मा प्रणमतः। सं. (संवत्) १२१८।

भावार्थ

गोलापूर्व अन्वय के शाह महिपति और उनकी पुत्री हम्मा संवत् १२१८ में प्रतिष्ठा कराकर दोनों प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा-परिचय

यह प्रतिमा पद्मावती देवी की ज्ञात होती है। इसके निर्माण में देशी पाषाण व्यवहृत हुआ है। पालिश मटियाले रंग का है। पैरों के ऊपर का भाग मय धड़ के नहीं है। इसकी अवगाहना खड्गासन मुद्रा में अनुमानतः १८ इंच है।

संदर्भ

1 अहार से प्रकाशित प्राचीन शिलालेख, ले.सं. 80, पृष्ठ 38-39 से साभार

अभिलेख - १७१

वदनावर, अर्हत् प्रतिमालेख संवत् १२१६, भाषा-संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् १२१६ ज्येष्ट (ष्ठ) सुदि ५ बुधे आचार्य्य कुमारसेन चंद्रकीर्ति वर्द्धमानपुरान्वये।

पाठान्तर

वदनावर के ही संवत् १२१६ के एक प्रतिमालेख में भी यही मास, पक्ष, तिथि और

दिन दिया गया है, अतः दोनों प्रतिमालेख एक ही संवत् के प्रतीत होते हैं। संवत् पढ़ने में कहीं भूल हुई है।

भावार्थ

संवत् १२१६ जेठ सुदी पंचमी बुधवार के दिन आचार्य कुमारसेन के संभवतः उपदेश से चन्द्रकीर्ति प्रतिष्ठाचार्य ने वदनावर में प्रतिष्ठा कराई। वे वर्द्धमानपुरान्वयी थे।

व्याख्या

वर्द्धमान पुरान्वय

भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ, भाग ३ के पृष्ठ २८३ में वर्द्धमानपुरान्वय को पुन्नाटगण की एक शाखा का नाम बताया गया है, जिसका नामकरण वर्द्धमानपुर वर्तमान वदनावर के नाम पर हुआ है। आचार्य कुमारसेन और समवतः उनके शिष्य चन्द्रकीर्ति इसी शाखा के साधु थे।[1]

संदर्भ

1. भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ . भाग 3, पृष्ठ 275 से साभार

अभिलेख - १०२

बजरंग–गढ, अर्हन्त प्रतिमालेख, संवत् १२२० भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् १२२० माघ सुदि १३ स्री साधु आचार्य्यन्वय नामचंद्र–नागान्वय राजमुनि सुत सायराविवेस्य भार्य्या रला प्रणमति नित्यं वागदिल्लू वालिसाथ।

भावार्थ

श्री साधु नामक आचार्यन्वय में हुए चन्द्रनागान्वय राजमुनि के पुत्र सायराविवेस्य की पत्नी रला वागदिल्लू और वालि के साथ संवत् १२२० माघ सुदी त्रयोदशी को प्रतिष्ठा कराकर नित्य प्रणाम करती है।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा गुना जिले के बजरंग–गढ नामक नगर से पुरातत्व संग्राहलय जयसिंह

पुरा, उज्जैन में मूर्ति क्रमांक १२४ से संगृहीत की गयी है। इसका केवल पादस्थल शेष है। इसके निर्माण में स्लेटी पाषाण व्यवहृत हुआ है।

संदर्भ

1 अनेकान्त वर्ष 25, किरण 4, पृष्ठ 169 दि0 1/10/72 से साभार

अभिलेख - १०३

अहार, चन्द्रप्रभ प्रतिमालेख संवत् १२२२, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. संवत् १२२२ आषाढ़ वदि २ लल्हपहु पुत्र–
२. स्य यह ....भार्या............इति।

भावार्थ

संवत् १२२२ आषाढ वदी द्वितीया को लल्हपहु के पुत्रादिक ने प्रतिष्ठा कराई।

प्रतिमा–परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या १७ से संगृहीत है। इसका निर्माण देशी काले–नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में हुआ है। पालिश काला, चिकना और चमकदार है। प्रतिमा का सिर नहीं है। आसन से गले तक की अवगाहना १२ इंच और फलक की चौडाई १५ इंच है। आसन पर चिह्न स्वरूप अर्द्धचन्द्र तथा दो पंक्ति में उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण है।

संदर्भ

1 अहार क्षेत्र के अभिलेख : वही, ले.सं. 11/320 पृ. 146

अभिलेख - १७४

नागदा, आदिनाथ प्रतिमालेख, संवत् १२२२, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् १२२२ राज्याधित्मेदांस सत्यपयागच्छ सूरि भासमि स्री रंगम स्रीनाथ आदिनाथ कियेन।

भावार्थ

संवत् १२२२ में आदिनाथ प्रतिमा का निर्माण कराकर प्रतिष्ठा कराई गई। शेष भाग अस्पष्ट है।

प्रतिमा--परिचय

यह प्रतिमा देवास जिले के नागदा नगर से जयसिंहपुरा संग्रहालय उज्जैन में मूर्ति क्रमांक ७१ से संगृहीत है। इसका निर्माण काले स्लेटी पाषाण से हुआ है।

संदर्भ

1. अनेकान्तः वर्ष 25, किरण 4, पृष्ठ 169, दि0 1/10/72 से साभार

अभिलेख - १७५

वदनावर, अर्हत, प्रतिमालेख, संवत् १२२२, भाषा संस्कृत. लिपि--नागरी

मूलपाठ

सं. (संवत्) १२२२ जेस्ट (ज्येष्ठ) सुदि ७ वुधे स्री खंडेरकगच्छे सा. (साधु) गोसल भार्य्या आसा (शा) गुणा स्री मदनस्री तग...........स्री.............प्रतिस्टिताः (प्रतिष्ठिताः)।

भावार्थ

संवत् १२२२ ज्येष्ठ सुदी ७ बुधवार को श्री खण्डेरक गच्छ के शाह गोसल उनकी पत्नी आशा गुणश्री मदन श्री आदि ने प्रतिष्ठा कराई।

प्रतिमा–परिचय

प्रतिमा का निर्माण काले स्लेटी पाषाण से हुआ है। जयसिंहपुरा पुरातत्त्व संग्रहालय उज्जैन में यह प्रतिमा वदनावर से संगृहीत की गई है।

संदर्भ

1. अनेकान्त : वर्ष 25 किरण 4 पृ. 189 दि. 1/10/72 से साभार

अभिलेख - १०६

वदनावर, सुपार्श्वनाथ प्रतिमालेख, संवत् १२२२ भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् १२२२ परगुण (फाल्गुन) सुदि...............प्रणमति नित्यं

भावार्थ

संवत् १२२२ फाल्गुन सुदि..........में प्रतिष्ठा कराकर प्रतिष्ठा करानेवाला प्रतिमा की नित्य वन्दना करता है।

प्रतिमा–परिचय

यह प्रतिमा काले स्लेटी पत्थर से पद्मासन मुद्रा में निर्मित है। पालिश काला, चिकना और चमकदार है। आसन पर चिह्न स्वरूप स्वस्तिक तथा उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण है। सम्प्रति यह प्रतिमा जयसिंह पुरा पुरातत्व संग्रहालय उज्जैन में मूर्ति क्रमांक १६५ से वदनावर से लाकर संगृहीत की गई है।

संदर्भ

1. अनेकान्त : वर्ष 25, किरण 4

अभिलेख - १७७

पचरई, अर्हत् प्रतिमालेख, संवत् १२२२, भाषा संस्कृत, लिपि–नागरी

मूलपाठ

ग्वालियर पुरातत्व विभाग द्वारा प्रकाशित मध्यभारत के प्राचीन अवशेष सूची में मूर्ति प्रविष्ठि क्रमांक १२५१ से पचरई (शिवपुरी) की संवत् १२२२ की एक प्रतिमा का उल्लेख किया गया है। ग्वालियर वार्षिक रिपोर्ट ईसवी १९१४–१९१५ में भी इस प्रतिमा का नाम दर्शाया गया है। लेख का उल्लेख नहीं है।

अभिलेख - १७८

धार संग्रहालय, अर्हत् प्रतिमालेख संवत् १२२३, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् (१) २२३ वर्षे माघ सुदि ७ ....प्रणभति नित्यं

भावार्थ

संवत् १२२३ माघ सुदि सप्तमी को प्रतिष्ठा कराकर प्रतिष्ठाकारक नित्य प्रणाम करता है।

प्रतिमा परिचय

पद्मासन मुद्रा में निर्मित इस प्रतिमा का केवल पादपीठ शेष है, जिस पर उक्त लेख उत्कीर्ण है। लेख का हजार संख्यक अंक का पाषाण खण्डित हो गया है। शेष अंशधार संग्रहालय में प्रविष्ठि संख्या २६७ से संगृहीत है।

संदर्भ

1. धार संग्रहालय से प्राप्त जैन मूर्ति–विवरण से साभार

अभिलेख - १७९

अहार, आदिनाथ प्रतिमालेख, संवत् १२२३, भाषा–संस्कृत, नागरी

मूलपाठ

षं (खं) डिलवालान्वये साधु धामदेव भार्या पल्हा पुत्र सालू भार्या वस्ता।
संवत् १२२३ वैसाष (वैशाख) सुदि ८ प्रणमंति न्यत्यं (नित्यं)।।

पाठ टिप्पणी

इस प्रतिमालेख में श के लिए 'स' और ख के लिए 'ष' व्यवहृत हुआ है। नित्यं के स्थान में न्यत्यं का प्रयोग संभवतः स्थानाभाव के कारण हुआ है।

भावार्थ

खण्डेलवाल अन्वय के शाह धामदेव उनकी पत्नी पल्हा, पुत्र सालू पुत्रवधू वस्ता अथवा वस्रा संवत् १२२३ वैशाख सुदि अष्टमी तिथि में प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराकर नित्य प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या २९ से संगृहीत है। इसका निर्माण देशी काले–नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में हुआ है। पालिश काला, चिकना और चमकदार है। इसका सिर नहीं है। बायें हाथ के कुहनी का ऊपरी भाग भी नहीं है। दायीं कांख के नीचे छिला हुआ है। आसन पर चिह्न स्वरूप वृषभ तथा एक पंक्ति में उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण है। इसकी आसन से गले तक की अवगाहना १७ इंच और फलक की चौड़ाई २३ इंच है।

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख : वही, ले.सं. 11/321 पृ. 146

अभिलेख - १८०

चूलगिरि, मंदिरलेख संवत् १२२३, भाषा संस्कृत लिपि नागरी

मूलपाठ

यस्य स्वव्ज तुषार कुंद विसदा कीर्तिर्गुणानां निधिः
श्रीमानभूपति वृन्दवन्दितपदः श्री रामचन्द्रो मुनिः।
विश्वक्ष्माभृदखर्व्वसेखर सिखा संचारिणी हारिणी
उव्व्यां सत्रुजितो जिनस्य भवन व्याजेन विस्फूर्ज्जति।।
रामचन्द्र मुनेः (:) कीर्ति (:) संकीर्ण्णां भुवनं किल।
अनेक लोक संघर्षाद् गता सवितुरन्तिकं (कम्)।।
संवत् १२२३ वर्षे भाद्रपद वदि १४ सुक्रवासरे।

पाठ–टिप्पणी

इस लेख में श के लिए स वर्ण का प्रयोग हुआ है। काल सूचक अंश को छोड़कर शेष अंश पद्य में लिखा गया है। क्रमशः दो श्लोक हैं जो शार्दूलविक्रीडित तथा अनुष्टुप छन्दों में लिखे गये हैं

भावार्थ

श्रीमान् नृप समूह से वन्दित चरणवाले, गुणों की निधि मुनि रामचन्द्र, जिनकी कमल, वर्फ तथा कुंद पुष्प के समान निर्मल कीर्ति संसार में पर्वतों के ऊँचाई संबंधी गर्व का हरण करती, चोटियों पर विहरती कर्म रूपी शत्रुओं को जीतने वाले जिनेन्द्र भवन (जिनालय) के व्याज से पृथिवी पर फैली हुई है।।१।। मुनि रामचन्द्र की कीर्ति को निश्चय से संसार कम पड़ गया है। लोक–संघर्ष से वह सूर्य के पास चली गई है ।।२।। संवत् १२२३ भाद्रपद वदि चतुर्दशी शुक्रवार को (इस मंदिर की प्रतिष्ठा हुई)।

मंदिर–परिचय

बड़वानी शहर से ७ किलोमीटर दूर सिद्धक्षेत्र चूलगिरि स्थित है। यहाँ से इन्द्रजीत और कुम्भकर्ण मुनि मोक्ष गये हैं। प्राकृत निर्वाणकाण्ड में प्राप्त गाथा इस संबंध में उल्लेखनीय है–बड़वानी वरणयरे दक्खिणभायम्मि चूलगिरिसिहरे।

इंदजिय कुम्भकरणो णिव्वाणगया णमो तेसिं।।

चूलगिरी के मुख्य मंदिर के सभामण्डप में पूर्व की ओर उक्त लेख उत्कीर्ण है। यह मंदिर मुनि रामचन्द्र की स्मृति में निर्मित कराया गया ज्ञात होता है।

संदर्भ

1. जनरल एसियाटिक सोसायटी ऑफ बैंगाल जिल्द 18, क्रमांक 1 पृ. 950-952 एवं अनेकान्त : वर्ष 12, पृ. 192 साभार

अभिलेख - १८१

चूलगिरि, मंदिर लेख, संवत् १२२३, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

ॐ नमो वीतरागाय।।
आसीद्यः कलिकाल कल्मषकरिध्वंसैक कंठीरवो
वेनक्ष्मापति मौलि चुम्बित पदः या लोकनन्दो मुनिः।
शिष्यस्तस्य ससर्व संघतिलकः श्री देवनन्दो मुनि
धर्म्मज्ञान तपोनिधिर्यतिगुण ग्रामः सुवाचां निधिः।।
वंशो तस्मिन् विपुल तपसां संमतः सत्त्वनिष्ठो
वृत्तिं पापां विमलमनसा त्यज्यविद्या विवेकः।
रम्यं हर्म्य सुरपतिजितः कारितं येन विद्या।
शेषा कीर्त्तिर्भ्रमति भुवने रामचन्द्रः स एष।।
संवत् १२२३ वर्षे।

पाठ टिप्पणी

प्रथम शिलालेख के समान इस दूसरे शिलालेख में भी दो श्लोक हैं, जिनमें क्रमशः शार्दूलविक्रीडित और मन्दाक्रांता छन्द व्यवहृत हुए हैं।

भावार्थ

ओं। वीतरागता के लिए नमस्कार हो।

कलिकाल के पाप रूपी हाथियों का ध्वंस करने के लिए सिंह स्वरूप, वेन राजा के द्वारा मुकुट से वन्दित-पदवाले लोकनन्दि मुनि हुए। उनके सर्वसंघ में तिलक स्वरूप, धर्म-ज्ञान और तप के निधि, गुणग्राम, मंगल वाणी की निधि श्री देवनन्दि मुनि शिष्य थे ।।१।। उनकी वंशआम्नाय में महान् तपस्वियों से सम्मत, प्राणि हितैषी, पापवृत्ति से निर्मल मन, विद्या और विवेक से त्यागी, जिनके द्वारा इन्द्रजीत का सुंदर भवन (मंदिर) बनवाया गया, उन रामचन्द्र मुनि की अवशिष्ट कीर्त्ति संसार में भ्रमणशील है। इस इन्द्रजीत-मंदिर की संवत् १२२३ में प्रतिष्ठा हुई।

प्राप्ति स्थान

चूलगिरि के मुख्य मंदिर के सभामण्डप में दक्षिण की ओर यह लेख उत्कीर्ण है।

संदर्भ

1. जनरल एसियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल, जिल्द 18, पृ. 951,–952 नं. 2 से साभार

अभिलेख - १८२

पनागर, अर्हत् प्रतिमा लेख, संवत् १२२५, भाषा, संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

नेवान्वये साधु वरणसामि तद्भार्य्या रत्ना सुत लाषू (खू) प्रणमंति संवत् १२२५।

भावार्थ

नेवान्वय के शाह वरणसामि, उनकी पत्नी रत्ना, पुत्र लाखू संवत् १२२५ में प्रतिष्ठा कराकर प्रणाम करते हैं।

प्राप्ति स्थल

यह प्रतिमा होसंगाबाद जिले के पनागर ग्राम से प्राप्त हुई थी।

संदर्भ

1. खण्डहरों का वैभव : पृ. 30 से साभार

अभिलेख - १८३

छतरपुर, आदिनाथ प्रतिमालेख संवत् १२२५ भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् १२२५ फाल्गुन सुदि ६ सोने कीर्तिकान्तेय वत्सला नामा कवली पुत्र शक्ति नित्यं प्रणमतः।

भावार्थ

संवत् १२२५ फाल्गुन सुदी ६ सोमवार को कीर्तिकान्ता की कवली नाम की पुत्री तथा पुत्र शक्ति प्रतिष्ठा कराकर नित्य प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा परिचय

श्री चौधरी दिगम्बर जैन मंदिर छतरपुर में विराजमान इस प्रतिमा की अवगाहना ३० इंच और चौड़ाई २५ इंच है। पद्मासन मुद्रा में अंकित है।

संदर्भ

1 जिनमूर्ति प्रशस्ति लेख . क्र. 173 से साभार

अभिलेख - १८४

अहार, महावीर प्रतिमालेख, संवत् १२२५, भाषा–संस्कृत, लिपि–नागरी

मूलपाठ

१. वस्तु (संवत्) १२२५ जेस्ठ (जेष्ठ) सुदि १५ गुरु दिने पंडीत् (पंडित) श्री (श्री) सी (शी) लदिवाकरनी असकेलिरेलि पद्मसिरि............(रतनसिरि)।। प्रण

२. मति (मंति) नित्यं।।

पाठ टिप्पणी

इस लेख में श के लिए स तथा श्री के लिए श्री और सिरि दोनों रूप प्रयुक्त हुए हैं।

भावार्थ

सवत् १२२५ ज्येष्ठ सुदी १५ गुरुवार के दिन प्रतिष्ठा कराकर) पण्डिता शीलदिवाकरनी, असकेलिरेली, पद्मश्री और संभवतः रतश्री नित्य वन्दना करती हैं।

प्रतिमा–परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ३५ से संगृहीत है। इसका निर्माण देशी काले–नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में हुआ है। पालिश काला, चिकना और चमकदार

है। इसकी आसन तथा मात्र कुहनियों तक के हाथ शेष है। आसन पर पूँछ उठाये चिह्न स्वरूप सिंह तथा दो पंक्ति में उक्त लेख उत्कीर्ण है। पं. गोविंद दास कोठिया द्वारा पढ़ा गया जसकीर्ति का लेख में नामोल्लेख नहीं है।

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख : वही, ले. सं. 11/323 पृ. 147

अभिलेख - १८५

अहार, अर्हन्त प्रतिमालेख, संवत् १२२५,

मूलपाठ

संवत् १२२५.......................

भावार्थ

इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा संवत् १२२५ में सम्पन्न हुई।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ८३७ (काला नम्बर) से संगृहीत है। इस प्रतिमा का निर्माण देशी काले-नीले पाषाण से हुआ है। पालिश काला, चिकना और चमकदार है। प्रतिमा का केवल आसन का एक भाग उपलब्ध है। चिह्न नहीं है। लेख उत्कीर्ण है किन्तु केवल संवत् सूचक अंक रह गये हैं। बाकी भाग टूट हुआ होने से लेख का अन्य भाग क्या था? पता नहीं नहीं लगाया जा सका। प्रतिमा की आसन नोट करने में रह गई है।

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख वही, ले.सं. 11/322 पृ. 147

अभिलेख - १८६

धार संग्रहालय अर्हत् प्रतिमालेख, संवत् १२२६ भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् १२२६ मिति माघ सुदि १२ रवि। मूलसंघारसीगण बाय (अन्वये) पंडित श्री आचार्य.................

भावार्थ

. संवत् १२२६ माघ सुदी १२ रविवार को इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा मूलसंघ के आरसीगण परम्परा के पंडित आचार्य द्वारा सम्पन्न हुई।

प्रतिमा–परिचय

देशी पाषाण से पद्मासन मुद्रा में निर्मित यह प्रतिमा धार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ८२ से संगृहीत है। प्रतिमा खण्डित है। उक्त मूलपाठ इसके पाठपीठ पर उत्कीर्ण है।

संदर्भ

1. धार संग्रहालय से प्राप्त मूर्ति विवरण से साभार

अभिलेख - १८७

धार संग्रहालय अर्हत् प्रतिमालेख संवत् १२२६ भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् १२२६ वर्षे माघ सुदि १३.................प्रणमति।

भावार्थ

संवत् १२२६ माघ सुदि त्रयोदशी को प्रतिष्ठा कराकर प्रतिष्ठा करानेवाला प्रतिमा की नित्य वन्दना करता है।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा देशी पाषाण से पद्मासन मुद्रा में निर्मित है। सम्प्रति केवल पादपीठ शेष है, जिस पर उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण है। यह अवशेष धार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ४०४ से संगृहीत है।

संदर्भ

1. धार संग्रहालय से प्राप्त मूर्ति विवरण से साभार

अभिलेख - १८८

इन्दौर संग्रहालय, नेमिनाथ प्रतिमालेख संवत् १२२७ भाषा संस्कृत लिपि नागरी

मूलपाठ

१. संवत् १२२७ । श्रीमदेसी (शी) गणा धीस (श) गुणचंद्रो महामुनि (:।) श्रीवर्द्धित पंडिताचार्य श्रव्य (सर्व) रत्नत्रयो दधिः।।तस्य णि (शि) स्य महो

२. दान ....(ज्ञान) चंद्र विचक्षणाः। तीव्रचंद्र संघाचार्य्य संघे सा (शा) स्त्र–विसा (शा)रदः ।। गुर्जरान्वये साधु तीकम तस्य पुत्र राजुल

३. तत्पुत्रो वीन प्रणमति नित्यं।।

पाठ टिप्पणी

इस लेख में श के स्थान पर स का तथा अनुनासिक न के स्थान में अनुस्वार का प्रयोग हुआ है।

लेख परिचय

लेख के आदि में दो अनुष्टुप छन्द में निर्मित श्लोक हैं। इनके बाद गद्य भाग है जिसमें प्रतिष्ठाकारक का नामोल्लेख है।

भावार्थ

देशीगण में बुद्धि सम्पन्न महामुनि, रत्नत्रय रूपी प्रवर्द्धमान लक्ष्मी से उदधि स्वरूप पण्डिताचार्य गुणचन्द्र के शिष्य महादानी, ज्ञानियों में विचक्षण चन्द्र स्वरूप संघ के आचार्य, संघ में शास्त्रों के ज्ञाता, तीव्रचन्द्र हुए। संभवतः प्रतिमा–प्रतिष्ठा कार्य में प्रतिष्ठाचार्य का कार्य इन्होंने ही सम्पन्न किया था। गुर्जरान्वय में हुए शाह तीकम का पौत्र ओर राजुल का पुत्र वीन (वीनू) संवत् १२२७ में इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराकर नित्य वन्दना करता है।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा केन्द्रीय संग्रहालय इन्दौर में संग्रहालय प्रविष्टि क्रमांक ८.२७ से संगृहीत है। भारतीय ज्ञानपीठ दिल्ली से प्रकाशित जैनशिलालेख संग्रह भाग ४ में लेख संख्या २६६ से लेख के भाव बताये गये है। प्रतिमा के चित्र में प्रतिमा का सिर और बायीं भुजा नहीं है। पादपीठ में चिह्न स्वरूप शंख तथा तीन पंक्ति का उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण है। प्रतिमा योगासन में विराजमान है।

संदर्भ

1. *इन्दौर संग्रहालय में संरक्षित जैन तथा बौद्ध प्रतिमाएँ एवं विविध कलाकृतियाँ, म.प्र. शासन भोपाल ई. 1991 प्रकाशन, पृष्ठ 35*

अभिलेख - १८९

झारडा देवी प्रतिमालेख संवत् १२२७, भाषा संस्कृत लिपि नागरी

मूलपाठ

शांति भलई..............यः।। कांता न गुहुतो।। वर्द्धमाना शिष्य जेष्ठ कांति सोभये थस्तयो संवत् १२२७ वर्षे ज्येष्ठ वदि प्रतिपदा गुरौ।।

भावार्थ

कान्ता और गुहुत दोनों (बहिनों) ने संवत् १२२७ जेठ वदी प्रतिपदा दिन गुरुवार को इस देवी प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई।

प्राप्ति स्थल परिचय

उज्जैन जिले की शहीद पुर तहसील में महीदपुर से २२ मील दूर पूर्व में झारडा ग्राम स्थित है। यहाँ अनेक प्रतिमाएँ प्राप्त हुई हैं। ईसवी १६३४ के इन्दौर स्टेट गजेटियर में पद्मावती एवं सिद्धायिका देवियों की प्रतिमाएँ अभिलेख युक्त बताई गई हैं। यह मूलपाठ इन्हीं दो देवियों में किसी एक देवी की आसन पर उत्कीर्ण है।

संदर्भ

1. *डा. सुरेन्द्र कुमार आर्य उज्जैन , अनेकान्तः वर्ष 29 किरण 2 पृ0 89 में प्रकाशित लेख से साभार*

अभिलेख - १९०

झारडा, देवी प्रतिमालेख, संवत् १२२७ भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

सं. (संवत्) १२२७ वर्षे ज्येष्ठ वदि प्रतिपदा गुरौ साधु सां (शां) ति सुत नमै प्रणमति नित्यं।।

भावार्थ

संवत् १२२७ जेठ वदी प्रतिपदा दिन गुरुवार को शाह शान्ति का पुत्र नमै (इस प्रतिमा को) नित्य प्रणाम करता है।

प्रतिमा परिचय

डा. सुरेन्द्र कुमार 'आर्य' उज्जैन ने अनेकान्तः वर्ष २६ किरण २ पृ. ८६ में प्रकाशित अपने एक लेख में पद्मावती और सिद्धायिका में किसी एक देवी की आसन पर यह मूलपाठ अंकित बताया है। ये प्रतिमाएँ उज्जैन जिले की महीदपुर तहसील से २२ मील पूर्व में स्थित झारडा ग्राम से प्राप्ति बताई गई हैं।

संदर्भ

1. अनेका॰ ' वर्ष 29, किरण 2, पृष्ठ 89।

अभिलेख - १९१

बदनावर, अर्हत् प्रतिमा लेख, संवत् १२२८ भाषा संस्कृत लिपि नागरी

मूलपाठ

सं. (संवत्) १२२८ वर्षे फाल्गुन सुदि ५ स्री माथुरसंघे पडिताचार्य्य स्रीधर्म्म तस्य सिस्य (शिष्य) आचार्य्य ललितकीर्ति।

भावर्थ

श्री माथुरसंघ में हुए पंडिताचार्य श्रीधर्म के शिष्य आचार्य ललितकीर्ति के संभवतः

उपदेश से संवत् १२२८ फाल्गुन सुदी पंचमी को इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई है।

प्राप्ति स्थल

यह प्रतिमा रतलाम जिले के वदनावर नामक ग्राम से प्राप्त बताई गई है। वदनावर में ७३ जैन मंदिर तथा ७२० के आसपास खण्डित प्रतिमाएँ बताई जाती हैं।

संदर्भ

1. श्री सत्यंधर सेठी उज्जैन अनेकान्त, वर्ष 25 किरण 4 पृष्ठ 189 में प्रकाशित लेख से साभार

अभिलेख - १९२

अहार, आदिनाथ प्रतिमालेख, संवत् १२२८, भाषा–संस्कृत, लिपि–नागरी

मूलपाठ

१. संवत् (त्) १२२८ फलग्न (फाल्गुन) सुदि ११ सोमे गोलापूर्व्वन्वे साहु पापे भार्या मल्हु सुत वील्हे छीतु साल्हु (।)

२. स.......... (हु आ) सल भार्या मलमा पुत्र माल्हु वालु प्रणमति (प्रणमंति) नित्यं।।

पाठ टिप्पणी

संवत् के त वर्ण मे संयोजित हलन्त सूचक रेखा ऐसी प्रतीत होती है जैसे त वर्ण उ स्वर से संयुक्त हो। अन्वये के स्थान पर अन्वे, फाल्गुन को फलग्न लिख गया है।

भावार्थ

संवत् १२२८ फाल्गुन सुदी ११ सोमवार दिन को गोलापूर्व अन्वय के शाह पामे उनकी पत्नी मल्हु, पुत्र वील्हे, छीते और साल्हु तथा शाह आसल उनकी पत्नी मलमा, पुत्र माल्हु बालु प्रतिष्ठा कराकर नित्य वन्दना करते हैं।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या १६ से संगृहीत है। इसका निर्माण देशी काले–नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में हुआ है। सिर नहीं है। दायाँ हाथ और हथेलियाँ खण्डित है। आसन से गले तक की अवगाहना १६ इंच और फलक की चौड़ाई २३ इंच है। चिह्न स्वरूप आसन पर वृषभ तथा दो पंक्ति का उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण है।

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख ले.सं. 11/324 पृ. 148

अभिलेख - १९३

अहार, नेमिनाथ प्रतिमालेख संवत् १२२८ भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. संवत् १२२८ फालुग्ग (फाल्गुन) सुदि ११ जैसवालान्वये सावु (साहु) देदू भ्राता पल्हू सुत वाल्हस्सुत कुल्हा वीकलोहट

२. वाल्ह सुत असव प्रणम (मं) ति नित्यं।।

भावार्थ

संवत् १२२८ फाल्गुन सुदी ११ तिथि में जैसवाल अन्वय के शाह देदू उनके भाई पल्हू तथा पल्हू के पुत्र वाल्ह पौत्र कुल्हा, वीकलोहट और असव, प्रतिमा प्रतिष्ठा कराकर नित्य प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ७७ से संगृहीत है।

इसका निर्माण देशी काले-नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में हुआ है। यह सिर विहीन है। अंगुलियाँ खण्डित हैं। आसन से गले तक की अवगाहना २१ इंच तथा फलक की चौडाई २३ इंच है। चिह्न स्वरूप आसन पर शंख तथा उक्त दो पंक्ति में मूलपाठ उत्कीर्ण है। पालिस काला, चिकना और चमकदार है।[1]

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख : ले. स. 11/325 पृ. 149

अभिलेख - ११४

अहार, महावीर प्रतिमालेख संवत् १२२८ भाषा संस्कृत लिपि–नागरी

मूलपाठ

१ संवत् १२२८ फाल्गुन सुदि ११ सोमवारे वलार्ग्गणान्वये पंडित स्री जिनचंद्र शिष्य भामचंद्र अ

२. र्जिजका गौरसी (स्री) चेल्ली ललितासी (स्री तस्या चैल्लिकाग्रणा स्रीपते सर्व्वेपि प्रणम (मं) ति नित्यं।।

भावार्थ

संवत् १२२८ फाल्गुन सुदि ११ सोमवार के दिन वलार्गणान्वय के पंडित श्री जिनचन्द्र के शिष्य भामचन्द्र, आर्यिका गौरश्री की शिष्या ललितश्री तथा उसकी शिष्या श्रीपती ये सभी प्रतिष्ठा कराकर नित्य वन्दना करते हैं।

प्रतिमा–परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या १२३२ से संगृहीत है। इसका निर्माण देशी काले–नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में हुआ है। प्रतिमा खण्डित है। प्राप्त अवशिष्ट भाग की ऊँचाई ५ इंच तथा फलक की चौड़ाई १६ इंच है। चिह्न स्वरूप आसन पर सिंह तथा दो पंक्ति का उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण है। यहाँ यह प्रतिमा कुडीला ग्राम से लाई गई थी।

व्याख्या

वलार्ग्गणान्वय इस अन्वय का संबंध प्रस्तुत लेख में मुनियों और आर्यिकाओं से बताया गया है। अतः यह अन्वय गृहस्थों के अन्वय से भिन्न ज्ञात होता है। यह सामान्य जैन उपजाति के लिए व्यवहृत नहीं हुआ है। कुछ बाद के अभिलेखों में मूलसंघ के साथ बलात्कारगण का उल्लेख मिलता है। अनुमानतः प्रस्तुत लेख का वलार्गण मूलसंघस्थ वलात्कारगण है।[1]

संदर्भ

1 अहार क्षेत्र के अभिलेख, वही, · ले. स 11/326 पृ. 149

अभिलेख - १९५

वदनावर, अच्युता देवी प्रतिमालेख, संवत् १२२६, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. ६० (उँ)।। संवत् १२२६ वैसाष (वैशाख) वदि ६ (७) सुक्र (शुक्र) अद्य (ह) वर्द्धमानपुरे श्री (स्री) सां (शां) तिनांथ चेत्से (चेत्ये) सा. (साहु) श्री (स्री) सलन सा. (साहु) गोस (श) ल

२. ठ. (ठक्कुर) ब्रह्मदेव ठ. (ठक्कुर) कउदेवादि कुण्ठवं (कुणडवं) सहितेन निज गोत्र दित्याः (दिव्याः) श्री (स्री) अच्छुम्नाथाः (अच्छुतायाः) प्रति.............(कृति) कारिता।

३. श्री (सी) कुलमा कुलचं द्रो (द्रो) पाध्यायै प्रतिष्ठिता।।

भावार्थ

संवत् १२२६ वैशाख वदी नौवीं दिन शुक्रवार को वर्द्धमानपुर नगर के श्री शान्तिनाथ चैत्यालय (मंदिर) में शाह श्री सलन, शाह गोसल, ठाकुर ब्रह्मदेव, ठाकुर कउदेव ने कुटुम्ब सहित अपने गोत्र की अत्युचा देवी की प्रतिमा निर्मित कराकर कुल के चन्द्रोपाध्याय से प्रतिष्ठित कराई।

देवी प्रतिमा परिचय

यह देवी ललितासन से घोड़े पर सवार है। एक हाथ से घोड़े की लगाम और दूसरे हाथ में ढाल धारण किये है। दो हाथ खण्डित हैं। देवी के निचले भाग में उसके उपासकों का अंकन हुआ है। देवी के ऊपरी भाग में पद्मासन मुद्रा में शातिनाथ प्रतिमा अंकित की गई है, जिसकी आसन पर चिह्न स्वरूप हरिण दर्शाया गया है। प्रतिमा की दोनों ओर एक एक उड़ते हुए मालाधारी देव प्रतिमाएँ भी अंकित हैं।

संदर्भ

1. डॉ. सुरेन्द्रकुमार आर्य एवं श्री सत्यंधर सेठी उज्जैन के प्रकाशित लेखों से साभार अनेकान्त वर्ष 25 किरण 4।

अभिलेख - ११६

जयसिंहपुरा संग्रहालय, अर्हत प्रतिमालेख संवत् १२२६

मूल पाठ

जयसिंहपुरा दिगम्बर जैन पुरातत्व संग्रहालय उज्जैन में मूर्ति क्रमांक ११५ से संगृहीत पद्मासनस्थ प्रतिमा की आसन पर उसका प्रतिष्ठा काल संवत् १२२६ अंकित है। प्रतिमा मठमैले पाषाण से निर्मित है। यह प्रतिमा इन्दौर गढ़ से प्राप्त बताई गयी है।

संदर्भ

1. श्री सत्यंधर सेठी उज्जैन के सौजन्य से साभार।

अभिलेख - ११७

वदनावर, अर्हत प्रतिमालेख संवत् १२३० भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् १२३० माघ शुक्ला (सुदि) १३ श्री (स्री) मूलसंघे आचार्य भट्टाराम नागयाने भार्या जमनी सुत साधु सवहा तस्या भार्या रतना प्रणमंति नित्यं धांधा वीलू वाल्ही साधू।

पाठ टिप्पणी

मूलपाठ में संभावित शुद्ध पाठ कोष्टक में दिये गये हैं।

भावार्थ

संवत् १२३० माघ सुदी त्रयोदशी को मूलसंघ के आचार्य भट्टाराम की संभवतः प्रेरणा से नागयाने उसकी पत्नी जमनी, पुत्र सवहा पुत्रवधू रतना तथा संभवतः पौत्र धंधा, नीलू, वाल्ही और साधू प्रतिष्ठा कराकर नित्य वन्दना करते हैं।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा वदनावर से जयसिंहपुरा पुरातत्व संग्रहालय उज्जैन में संगृहीत है।

संदर्भ

1. अनेकान्त : वर्ष 25, किरण 4 पृ. 169 से साभार

अभिलेख - १९८

बजरंगढ़ अजितनाथ प्रतिमालेख संवत् १२३१, भाषा–संस्कृत, लिपि–नागरी

मूलपाठ

संवत् १२३१ साधु नरपति................प्रणमति।

भावार्थ

शाह नरपति संवत् १२३१ में इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराकर उसे प्रणाम करता है।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा गुना के निकट जंगल से प्राप्त हुई थी। सम्प्रति जयसिंहपुरा पुरातत्व संग्रहालय उज्जैन में मूर्ति क्रमांक १७१ संगृहीत है। यह सिर विहीन है। हथेलियों और चरणतल में चन्द्र अंकित हैं। आसन पर चिह्न स्वरूप हाथी तथा उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण है। इसके निर्माण में काला स्लेटी पाषाण व्यवहृत हुआ है।

संदर्भ

1. अनेकान्त, वर्ष 25, किरण 4, पृष्ठ 169 से साभार

अभिलेख - १९९

खजुराहो, अर्हत् प्रतिमालेख, संवत् १२३४

मूलपाठ

प्रतिमा की आसन पर अंकित लेख से यह प्रतिमा खजुराहो से प्राप्त लेखों में परवर्तीकाल संवत्, १२३४ में प्रतिष्ठित हुई ज्ञात हाती है।

संदर्भ

1. इसका उल्लेख कनिंघम रिपोर्ट 21 पृ. 68 और जैन शिलालेख संग्रह भाग 3 ले. सं. 392 में किया गया है।

अभिलेख - 200

वदनावर, अर्हत, प्रतिमा लेख संवत् १२३४, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

सं. (संवत्) १२३४ वर्षे माघ सुदि ५ वुधे श्रीमन्माथुरसंघे पंडिताचार्य धर्मकीर्तिः सि (शि) स्य (ष्य) ललितकीर्त्तिः वर्द्धमानपुरान्वये सा. (साहु) प्रामदेव भार्या प्राहिणी सुत राणू सा. (साहु) दिगम सा. (साहु) याका सा. (साहु) जादड सा. (साहु) राणू भार्या माणिक सुत महण किज (निज) कुले वालू सा. (साहु) महुल भार्या रोहिणी प्रणम (मं)ति नित्यं।

पाठ टिप्पणी

इस लेख में साहु के लिए केवल सा. संक्षिप्त रूप व्यवहृत हुआ है। श के लिए स का प्रयोग भी द्रष्टव्य है।

भावार्थ

श्री माथुरसंघ के पंडिताचार्य धर्मकीर्त्ति के शिष्य ललितकीर्त्ति संभवतः प्रतिष्ठाचार्य थे तथा वर्द्धमान पुरान्वय के शाह प्रामदेव, उनकी पत्नी प्राहिणी, पुत्र राणू, दिगम, याका, जादड, शाह राणू की पत्नी माणिक, उसका पुत्र महण और उसकें अपने कुल में हुए बालू

शाह महुल तथा उसकी पत्नी रोहिणी संवत् १२३४ में माघ सुदी पंचमी बुधवार के दिन प्रतिष्ठा कराकर प्रतिदिन प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा–परिचय

वदनावर से प्राप्त यह प्रतिमा जयसिंहपुरा पुरातत्व–संग्रहालय उज्जैन में संगृहीत है।

संदर्भ

1 अनेकान्तः वर्ष 25 किरणा 4 पृष्ठ 169 से साभार

अभिलेख - 209

छतरपुर, ऋषभनाथ प्रतिमा लेख, संवत् १२३५ भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

सं. (संवत्) १२३५ अषाढ़ वदि १० शुक्र प्रतिष्ठितं श्री देवसेनसंघे वलगति भार्या लखमां पुत्री कल्ला पुत्र पाहेल तत्पुत्री वंशो पुत्री भामिनी पुत्र वनली अलिका लखमा तैमामिनी।

भावार्थ

संवत् १२३५ अषाढ वदी दसमी शुक्रवार को श्री देवसेनसंघ के वलगति उनकी पत्नी लखमा पुत्री कल्ला, पुत्र पाहेल, पौत्री वंशी तथा वंशो की पुत्री भामिनी और उसकी पुत्री वनली अलिका लखमा और मामिनी ने इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई।

प्रतिमा परिचय

छतरपुर के जोधाबाई श्री दिगम्बर जैन मंदिर में विराजमान यह ऋषभनाथ प्रतिमा धातु से निर्मित एक चौबीसी के रूप में है। इसकी अवगाहना १० इंच और चौड़ाई ७ इंच है।

संदर्भ

1. जिनमूर्ति प्रशस्तिलेख : ले. सं. 267 पृ. 60 से साभार

अभिलेख - 202

बजरंग–गढ़ शान्तिनाथ प्रतिमालेख संवत् १२३६, भाषा–संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

।।संवतु (त्) १२३६ फाल्गुन सुदि ५ प्रतिष्ठापितं।।

भावार्थ

संवत् १२३६ फाल्गुन सुदी पंचमी को इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई।

प्रतिमा–परिचय

बजरंगढ मंदिर के गर्भगृह में शान्ति कुंथु और अरहनाथ चक्रवर्तियों की खड्गासन प्रतिमाएँ विराजमान हैं। शान्तिनाथ प्रतिमा मध्य में है। उसकी दायीं ओर कुन्थुनाथ और बायीं ओर अरहनाथ प्रतिमा है। विशेषता यह है कि तीनों प्रतिमाओं की आसनों पर उनके चिन्हों के अतिरिक्त हरिण भी अंकित हैं। शातिनाथ प्रतिमा के पादपीठ पर चिह्न स्वरूप आमने सामने मुख किये दो हरिण तथा एक पंक्ति में उक्त लेख उत्कीर्ण है। सिंहासन पृथक पृथक हैं। मूर्तियों के गले की रेखाएँ और उदरस्थित त्रिवली आकर्षक है। श्रीवत्स का अंकन भी हुआ है। ऊपर मालाधारी उड़ते देव तथा नीचे हाथी पर खड़े चँमरधारी देव दर्शाए गये हैं। शान्तिनाथ प्रतिमा के ऊपर मालाधारी देव नहीं है। प्रतिमाओं का पालिश पीतवर्णी है। गुना से बजरंगगढ़ ५ मील दूर है।

संदर्भ

1. सम्पादक द्वारा पठित

2. अनेकान्त, वर्ष 18, किरण 2, जून 65 ईसवी।

अभिलेख - 203

सोनागिरि, नन्दीश्वर द्वीप स्तम्भ लेख, संवत् १२३६ भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. संवतु (त्) १२३६

२. चारु सुरें (द्र) कीर्ति

३. सुदि १२ फाल्गु
४. णु। ....

भावार्थ

संवत् १२३६ फाल्गुन सुदि द्वादशी को इस रचना की प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। चारू सुरेन्द्रकीर्ति संभवतः प्रतिष्ठाचार्य थे।

स्तम्भ रचना–परिचय

सोनागिरि मंदिर क्रमांक ३४ में एक पाषाण निर्मित स्तम्भ है। यह चार भागों में विभाजित है। प्रथम ऊपरी भाग में चारों ओर तीन–तीन खड्गासन प्रतिमाएँ हैं। दूसरे तीसरे खण्ड में ५–५ और चौथे खण्ड में उक्त लेख अंकित है। लेख की वायीं ओर उपासक और दायीं और उपासिका स्थित है। आम्रवृक्ष क नीचे अम्बिका देवी को अपने पुत्र के साथ बताया गया है। इस स्तम्भ का आकार एक फुट आठ इंच है। चारों ओर ५२ प्रतिमाएँ तथा प्रत्येक दिशा में ३, ५, ५ के क्रम से १३ प्रतिमाएँ विराजमान हैं।

संदर्भ

1. सम्पादक द्वारा पठित

अभिलेख - २०४

अहार, शान्तिनाथ प्रतिमालेख संवत् १२३७, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. ओं नमो वीतरागाय।। ग्र (गृ)हपतिवंश (श) सरोरु (रु) ह सहस्र रस्मिः (रश्मिः) सहम् (स्र) कूटँ यः । वाणपुरे व्यधिताशीत्स्रीमानि–
२. ह देवपाल इति ।।१।। श्री रत्नपाल इति तत्तनयो वरेण्यः पुण्यैक मूर्तिरभवद्वसुहाटिकायां। कीर्ति (र्ज्जगत्रय)
३. परिभ्रमण नु (श्र) मार्त्ता यस्यस्थिराजनि जिनायतनच्छलेन ।।२।।
एकस्तावदनूनवुद्धिनिधना श्री (श्री) शान्ति (चै) त्या त (ल)
४. यो दिश्यात्तं (न्नं)दपुरे परः परनरानंद प्रदः श्री (श्री)मता। येन श्री (श्री) मदनेससागरपुरे तज्जन्मनो निर्म्मिमे। सोयं (सोऽयं) श्रे (श्रे)ष्ठि वरिष्ठ गल्हण इति श्री (श्री) रल्हणख्याद
५. भूत् ।।३।। तस्मादजायत कुलाम्बर पूर्ण्णचंद्रः श्री (श्री) जाहडस्तदनुजोदय चं (द) नामा। एकः परोपकृति हेतु कृतावतारो (ध)र्म्मात्मकः पु (व) नरमो–

६. घ सुदानसारः ।।४।। ताभ्यामसे (शे) ष दुरितोघसमैक हेतु निर्म्मापितं भुवनभूषणभूतमेतत्।
श्री शान्ति चैत्यमति (मिति) नित्य सुख प्रदा

७. (नात्) मुक्ति शिर (श्रि)यो वदनवीक्षण लोलुपाभ्य(भ्यां)।। एज ।।(५)।। छ छ छ।। संवत्
१२३७ मार्ग्ग सुदि ३ सुक्रे (शुक्रे) स्री (श्री) मतपरमाडिदेव विजयराज्ये–

८. चंद्रभास्कर समुद्रतारका यावदत्र जनचित्त हारकाः।
धर्म्मकारिकृत सु (शु)द्ध कीर्त्तनं तावदेवजयतात्सुकीर्तनं (म्)।।

९. दाल्हणास्य सुतः श्रीमान रूपकारो महामतिः।
पापटो वास्तु सास्तज्ञस्तेन विंवं सुनिर्म्मितं।।१

पाठ टिप्पणी

१. न और म अनुनासिक वर्णों के स्थान में अनुस्वार का प्रयोग हुआ है।
२. श के लिए स और श´के लिए श दोनों रूप व्यवहृत हुए हैं।
३. श्री तीन प्रकार से लिखा गया है–श्री स्री, स्री।
४. 'इ' स्वर कहीं दो और कहीं तीन बिन्दुओं के रूप में भी लिखा गया है। कहीं कहीं क व्यंजन इ के लिए व्यवहृत हुआ है।
५. ए की मात्रा के लिए वर्ण के पूर्व एक खड़ी रेखा (पडि मात्रा) दी गयी है।
६. र वर्ण में उ की मात्रा मध्य में संयुक्त न होकर नीचे संयुक्त हुई है।
७. स वर्ण में र दो प्रकार से संयुत हुआ है–वायीं ओर की खड़ी रेखा में नीचे और दायी ओर की घुमावदार खड़ी रेखा के मध्य में।
८. ध च व वर्ण सामान्यतः समानाकृति में हैं।
९. ण वर्ण ल आकृति में भी लिखा गया है।
१०. इ ई ओ की मात्राएँ घुमावदार हैं।
११. सरेफ वर्ण द्वित्व हुए हैं।

छन्द परिचय

इस मूलपाठ में विभिन्न छन्दों का प्रयोग हुआ है। प्रथम श्लोक में आर्या छन्द है दूसरे, चौथे और पाँचवें श्लोक में वसंततिलिका, तीसरे श्लोक में शार्दूलविक्रीडित, छठे श्लोक में रथोद्धता और सातवें श्लोक में अनुष्टुप छन्द है।

भावार्थ

१. वीतराग के लिए नमस्कार है। जिन्होंने बानपुर में सहस्रकूट चैत्यालय बनवाया, वे गृहपति वंश रूपी कमलों को प्रफुल्लित करने के सूर्य स्वरूप देवपाल यहाँ हुये।
२. उनके रत्नपाल नामक श्रेष्ठ पुत्र वसुहाटिका नगरी में पवित्रता की मूर्ति हुए, जिसकी

कीर्ति तीनों लोकों में परिभ्रमण करने के श्रम से थककर जिनायतन के बहाने स्थिर हो गई।

३. श्री रल्हण के श्रेष्ठियों में प्रमुख श्रीमान् गल्हण का जन्म हुआ जो समग्र बुद्धि के निधान थे और जिन्होंने श्री शांतिनाथ भगवान का एक चैत्यालय नन्दपुर में और सभी लोगों को आनन्द देनेवाला दूसरा चैत्यालय अपने जन्मस्थान श्रीमदेनशसागरपुर में बनवाया था।

४. उनके कुल रूपी आकाश के लिए पूर्णचन्द्र के समान श्री जाहड उत्पन्न हुए। उनके छोटे भाई उदयचन्द्र थे। उनका जन्म प्रधानता से परोपकार के लिए हुआ था। वे धर्मात्मा और अमोघदानी थे।

५. मुक्ति रूपी लक्ष्मी के मुखावलोकन के लोलुपी उन भाइयों के द्वारा समस्त पापों के क्षय का कारण, पृथिवी का भूषण स्वरूप शाश्वत् सुख को देनेवाला श्री शान्तिनाथ भगवान का विम्ब निर्मित कराया गया।

सम्वत १२३७ अगहन सुदी ३. शुक्रवार, श्री परमाद्धिदेव के विजय राज्य में-

६. इस लोक में जब तक सूर्य, चन्द्र, समुद्र और तारागण मनुष्यों के चित्तों का हरण करते हैं, तब तक धर्मकारी का रचा हुआ सुकीर्तिमय यह सुकीर्त्तन विजयी रहे।

७. दा (वा) ल्हण के पुत्र महामतिशाली मूर्ति–निर्माता और वास्तुशास्त्र के ज्ञाता श्रीमान् पापट हुए। उनके द्वारा इस प्रतिमा की रचना की गयी।[२]

व्याख्या

प्रस्तुत अभिलेख के वाणपुर नगर में गृहपति वंश के श्रीमान, देवपाल द्वारा सहस्रकूट चैत्यालय निर्मित कराये जाने का उल्लेख है। यह नगर टीकमगढ़ से १८ मील दूर पश्चिम में स्थित है। टीकमगढ़ से पक्का रोड है। यहाँ सड़क के किनारे आज भी चैत्यालय विद्यमान है। यह सात भागों में विभाजित है। ऊपरी भाग संभवतः नहीं है। पश्चिम की ओर ऊपर से नीचे तक के छहों भागों में क्रमश २३, ६३, ६४, ४३, ३३ और १३ कुल २३६ प्रतिमाएँ हैं। दक्षिण और पूर्व की ओर भी इतनी ही हैं। उत्तर की ओर छहों भागों में ऊपर से नीचे क्रमशः २३, ६७, ६४, ३१, ३ और १३ कुल २०७ प्रतिमाएँ हैं। इस प्रकार चारों दिशाओं में कुल ६२४ प्रतिमाएँ आज भी विद्यमान हैं। शेष ८४ प्रतिमाएँ चारों दिशाओं में २१–२१ ऊपरी भाग में रही ज्ञात होती हैं।

पूर्व और दक्षिण में मध्य में विराजमान मुख्य प्रतिमा के ऊपर पाँच फणवाला सर्प अंकित है। जिससे वे प्रतिमाएँ सुपार्श्वनाथ तीर्थंकर की ज्ञात होती हैं। पश्चिम में चन्द्रप्रभ और उत्तर में नेमिनाथ तीर्थंकर की मुख्य प्रतिमाएँ हैं।

दायीं ओर एक पंक्ति का लेख है जिसमें संवत् १००६ पढ़ने में आता है। वायी ओर दो पंक्ति का लेख है–

१. गांगलि..........पीहिणि वाहिणि २. ....(अपठनीय)

यहाँ एक फलक में मध्य में आदिनाथ प्रतिमा तथा उसकी दायीं ओर बाहुबली तथा बायीं ओर भरत की प्रतिमा अंकित की गई है। एक अन्य फलक पर मूलनायक आदिनाथ प्रतिमा है तथा अन्य ५२ प्रतिमाएँ भी अंकित है। संभवतः यह फलक बावन जिनालयों का प्रतीक है। इसे नन्दीश्वर द्वीप-रचना भी कह सकते हैं। यहाँ अनेक शिल्प दर्शनीय हैं। इस नगर का नामोल्लेख संवत् १२०७ के अर्हन्तप्रतिमा लेख और संवत १२१३ के पाण्डुकशिला लेख में भी हुआ है।

वसुहाटिका

गृहपति वंश के जिस देवपाल ने वाणपुर में सहस्रकूट चैतालय निर्मित कराया था, उसके पुत्र रत्नपाल इस नगर के निवासी थे। उन्होंने यहाँ एक जिनायतन का निर्माण कराया था।

वसुहाटिका में वसु पूर्वपद और हाटिका उत्तरपद है। वसु का अर्थ द्रव्य या पदार्थ होता है और हाट का अर्थ बाजार। जो नगर बहुत बड़े होते हैं वहाँ दो प्रकार के बाजार भरते हैं। इनमें मुख्य बाजार सप्ताह में किसी एक दिन भरता है तथा दूसरा वह बाजार होता है जो प्रतिदिन भरता है। ऐसे बाजार आज बजरिया के नाम विश्रुत है। हाटिका संभवतः बजरिया थी जहाँ दैनिक उपयोग की वस्तुएँ विक्रयार्थ आती थीं। यह स्थान मुख्य नगर का संभवतः हृदय स्थल होता था। इस प्रतिमालेख में जिस मदनेशसागरपुर नगर का नामोल्लेख है, वसुहाटिका उस नगर का केन्द्रस्थल रहा ज्ञात होता है।

प्रतिमालेख में इस स्थान में जिनायतन निर्माण के उल्लेख के तुरंत बाद श्रेष्ठी गल्हण के पुत्र रल्हण द्वारा मदनेशसागरपुर में शान्तिनाथ चैत्यालय बनवाये जाने का उल्लेख है। इन मंदिरों के निर्माण से मदनेशसागरपुर नगर की विशालता का बोध होता है। वसुहाटिका मदनेशसागरपुर नगर का उपनगर या वार्ड हो सकता है। यह नहीं कहा जा सकता कि मदनेशसागरपुर नगर के नष्ट भ्रष्ट किये जाने के बाद मदनेशसागरपुर का वसुहाटिका नाम रखा गया।[३]

मदनेशसागरपुर

रल्हण के पुत्र श्रेष्ठियों में प्रमुख गल्हण ने दो मंदिर बनवाये थे। इनमें एक शान्तिनाथ मंदिर का निर्माण उसने अपने जन्मस्थल श्री मदनेशसागरपुर में कराया था। यह मंदिर वर्तमान में जहाँ स्थित हैं, वह स्थली अहार के नाम से विश्रुत है। संवत् १२०६ में अहार में प्रतिष्ठापित नेमीनाथ-प्रतिमा के लेख में इस नगर का नामोल्लेख मदनसागरपुर हुआ है। इस साक्ष्य के आलोक में यह नगर संवत् १२०६ में मदनसागरपुर नाम से विश्रुत रहा ज्ञात होता है। यह नाम संवत् १२८८ के एक प्रतिमालेख में भी आया है। अहार के विशाल सरोवर को आज भी मदनसागर कहा जाता है। अतः निष्कर्ष रूप से ज्ञात होता है कि अहर ही अतीत में मदनसागरपुर और मदनेशसागरपुर कहा जाता रहा है।

नन्दपुर

प्रस्तुत प्रतिमालेख की चौथी पंक्ति में रल्हण के पुत्र गल्हण द्वारा दूसरा शान्तिनाथ मंदिर इस नगर में बनवाये जाने का उल्लेख है। इसे तन्दपुर और कंदपुर भी पढ़ा जा सकता है। अहार के पास कन्नपुर नामक ग्राम है, न तन्दपुर है और न कंदपुर। अतः नन्दपुर स्वीकार करना अधिक तर्कसंगत प्रतीत होता है।

अहार के पास नारायण पुर नामक ग्राम है। यहाँ एक प्राचीन मंदिर भी है। मंदिर में प्राचीन प्रतिमा नहीं है। संभवतः सिर तोड़ दिये जाने से उसे वेदिका से कहीं अन्यत्र रख दिया गया हो।

प्रतिष्ठाचार्य श्री गुलाबचन्द्र 'पुष्प' से ज्ञात होता हुआ है कि झांसी–सोजना मार्ग पर सोजना से चार किलोमीटर दूर उत्तर पूर्व कोण में नावई नामक स्थल है जिसे आज नवागढ़ कहते हैं। यहां शान्ति कुन्थु अरह तीर्थकरों की भग्न प्रतिमाएं हैं। शान्तिनाथ प्रतिमा की अवगाहना लगभग सात फुट है। एक स्तम्भ पर श्रेष्ठी रल्हण–गल्हण के नाम भी उत्कीर्ण हैं। यह यादवों की वस्ती है। पंडित जी का अनुमान है कि अतीत में इसे नन्दपुर कहा जाता रहा है। नावई और नवागढ़ नाम बाद में कभी विश्रुत हुए है। यादवों का आवास स्थल होने से श्री 'पुष्प' जी का अनुमान ठीक प्रतीत होता है। शान्ति कुंथु अरह प्रतिमाओं तथा रल्हण गल्हण के नाम प्राप्त होने से यहाँ मंदिर के होने तथा उसका निर्माण रल्हण के पुत्र गल्हण द्वारा कराये जाने का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। इस प्रकार नावई/नवागढ़ को नन्दपुर से समीकृत किया जा सकता है।

मंदिर–निर्माता–वंश

इस प्रतिमा लेख में अहार के शान्तिनाथ जिनालय का निर्माता रल्हण का पुत्र गल्हण श्रेष्ठी बताया गया है। इसके दो पुत्र थे–जाहड और उदयचन्द्र। शान्ति, कुन्थु और अरह प्रतिमाओं का निर्माण इन्हीं दोनों भाइयों ने कराया था। यह परिवार देवपाल और रत्नपाल से भिन्न है। देवपाल और रत्नपाल गृहपति वंश के थे और वसुहाटिका के निवासी थे। रल्हण–गल्हण श्रीमदनेशसागरपुर के निवासी थे। संभवतः वे गृहपति वंश के नहीं थे देवपाल–रत्नपाल नामोल्लेख के बाद रल्हण गल्हण का नामोल्लेख होने से इन्हें भी सामान्यतः गृहपति वंश का मान लिया जाता है किन्तु रल्हण का रत्नपाल से कौटुम्बिक संबंध नहीं दर्शाये जाने से वे विभिन्न वंशी ज्ञात होते हैं।

सहस्राकूट

यह एक ऐसी रचना होती है जिसमें गन्धकुटियों में १००८ प्रतिमाएँ विराजमान रहती है।

प्रतिमा परिकर

खड्गासन मुद्रा में विराजमान इस शान्तिनाथ प्रतिमा की हथेलियों के नीचे

सौधर्म और ईशान स्वर्गों के इन्द्र चँमर ढोरते हुए दर्शाये गये हैं। बायीं ओर का इन्द्र चँमर दायें हाथ में और दायीं ओर का इन्द्र बायें हाथ में धारण किये है। दोनों इन्द्र आभूषणों से सुसज्जित हैं। उनके सिर मुकुट बद्ध हैं। कर्ण वर्तुलाकार कुण्डलों से युक्त हैं। गले में दो–दो मालाएँ धारण किये हैं। एक हार पांच लड़ियों का और दूसरा तीन लड़ियों का है। हाथों में कंगन और भुजाओं में भुजबन्ध हैं। कटि प्रदेश में करधन लटक रहा है। पैरों में कड़े और पैजन हैं। इन्द्र के नीचे दोनों ओर रत्नाभरणों से मण्डित एक–एक पुरुषाकृति है। इसके सिरों पर तारांकित किरीट, कानों में कुण्डल, बाहुओं में भुजबन्ध, हाथों में कंगन, कटि में करधन है। हाथों में पुष्प लिये हैं। गले में नाभि तक एक लटकता हार पहने हैं। ये नुकीली मूंछें और दाढ़ी रखे हुए हैं। वेशभूषा से ये राजपुरुष या श्रेष्ठी प्रतीत होते हैं। प्रतिमा निर्माता जाह्नड और उदयचंद के होने का भी अनुमान लगाया जा सकता है।

आसन के मध्य एक चक्र अंकित है। इसमें चौबीस आरे दर्शाये गये हैं। चक्र के दोनों ओर आमने–सामने मुख किये चिह्न स्वरूप एक–एक हरिण अंकित है। इनके मुख खण्डित है। इनके नीचे ६ इंच चौड़े और ३१ इंच लम्बे पाषाण खण्ड पर उक्त ६ पंक्ति का मूलपाठ उत्कीर्ण है। सातवीं पंक्ति का आरम्भिक अंश टूटा हुआ है। अभिलेख के मध्य पुष्पाकृति अलंकरण स्वरूप अंकित है।

प्रतिमा–परिचय

यह प्रतिमा २२ फुट ३ इंच और ४ फुट ७ इंच चौड़े देशी पाषाण के शिलाखण्ड से खड्गासन मुद्रा में निर्मित है। इसकी अवगाहना १६ फुट ८ इंच है। आसन सहित अवगाहना १८ फुट ३ इंच है। इस पर मटियाले रंग का चमकदार पीत वर्णी पालिश है। इसका बाहुभाग से दायां हाथ, नासिका और पैरों के अंगूठे पुनः जोड़े गये हैं। ७२ तोले पन्ना की पालिश की गयी है। फिर भी जोड स्पष्ट दिखाई देता है। केश घुघराले हैं। हथेलियों में कमलाकृतियां अंकित हैं। वर्तमान में यह प्रतिमा शान्तिनाथ मंदिर के नाम से विख्यात मंदिर नम्बर एक के गर्भ गृह में विराजमान है। इसकी बायीं ओर कुन्थुनाथ और दायीं ओर अरहनाथ प्रतिमाएँ है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

अहार क्षेत्र अतीत में अपूर्व वैभव और समृद्धि का केन्द्र रहा है। समय ने करवट बदली। जहाँ नगर था वहाँ जंगल हो गया। जहाँ राजा और रैयत थी वहाँ जंगली क्रूर पशु रहने लगे।

ईसवी १८८४ की घटना है। स्व. बजाज सबदल प्रसाद नारायणपुर और पं. भगवानदास पठा ढड़कना (अहार) आये। यहाँ उन्हें लकड़हारों और चरवाहों से जंगल के एक टीले पर खण्डहार में एक विशालकाय प्रतिमा होने की जानकारी प्राप्त हुई। दोनों व्यक्ति खण्डहार में गये और प्रतिमा के दर्शन कर हर्षित हुए। इस स्थान के विकास के लिए मेला भरवाने के विचार आये और कार्तिक कृष्णा द्वितीया मेले की तिथि नियुक्त

की गई। इनके मरणोपरान्त श्री सबदल प्रसाद नारायणपुर के पुत्र बजाज बदली प्रसाद को सभापति और पं. भगवानदास के पुत्र पं बारेलाल जी मंत्री रहे। आपके मरणोपरान्त आपके ज्येष्ठ पुत्र डा. कपूर चन्द पठा ने मंत्री पद सम्हाला। आप इस सेवाकार्य में तन मन धन से संलग्न हैं। शान्तिनाथ कुन्थुनाथ प्रतिमाओं के हाथ खण्डित ही मिले थे। इसी प्रकार अरहनाथ प्रतिमा का स्थान आरंभ से ही रिक्त रहा है।"

मंदिर

यह छह फुट गहरा था। इसमें दो प्रवेशद्वार थे। प्रथम द्वार के आजू–बाजू और बीच में इस प्रकार तीन कमरे थे। दक्षिण कमरे में एक तलघर था। मंदिर के दोनों पार्श्वभागों में २–२ तथा पश्चिम में एक गन्धकुटी थी। मंदिर की तीन ओर से दहलानें गिर गयी थीं। उनकी खुदाई की गई और वहां २६ मनोज्ञ प्रतिमाएं प्राप्त हुई है। ये क्षेत्रीय संग्रहालय में विराजमान हैं। स्व. साहू श्री शान्ति प्रसाद के परम सहयोग से मंदिर का जीर्णोद्धार कराया गया।

मंदिर के निर्माण में विशालकाय पाषाण खण्ड व्यवहत हुए हैं। चारों ओर एक–एक गन्धकुटी निर्मित है। मंदिर की शिखर के पूर्वी भाग में निर्मित गन्धकुटी में एक प्रतिमा खड्गासन मुद्रा में विराजमान है। इसके केश घुंघराले हैं। स्कन्ध भाग से हाथ खण्डित हैं। वे जुड़े हुए दिखाई देते हैं। प्रतिमा की दोनों ओर सूड उठाये एक एक हाथी अंकित है। हाथियों के नीचे मालाधरी उड़ते हुए देव निर्मित हैं। पैरों के पास चंमरवाही इन्द्र और उनके नीचे उपासक हाथ जोड़े हुए अंकित हैं। आसन पर पूर्व की ओर मुख किए दो सिंह अलंकरण स्वरूप दर्शाये गये हैं। चिह्न भी किन्तु दूरी अधिक होने से पहिचाना नहीं जा सका। सम्पूर्ण परिकर रचना से प्रतिमा शान्तिनाथ की तथा चिन्ह हरिण का होना ज्ञात होता है। छत के पास शिखर भाग पूर्व–पश्चिम १६ फुट १० इंच तथा उत्तर दक्षिण ७० इंच चौड़ाई में है।

परमर्द्धिदेव

इस राजा को इस प्रतिमालेख में परमाडिदेव कहा गया है। ईसवी ११८० में अहार इसी राजा के राज्य में था। इसका राज्य ईस्वी ११६६ से ईसवी १२०३ तक रहा है। यह चंदेल वंश का अंतिम महान राजा था। ईस्वी १२०३ में इसने कुतुबुद्दीन ऐवक की आधीनता स्वीकार कर ली थी।[1]

प्राप्ति स्थल अहार

श्री दि. जैन सिद्धक्षेत्र अहार मध्य प्रदेश के टीकमगढ जिले में है। यह टीकमगढ़ से २० किलो मीटर दूर पूर्व की ओर स्थित है। रोड पक्का है। मध्य रेलवे के बम्बई–दिल्ली लाइन पर बीना झांसी जक्शनों के बीच ललितापुर स्टेशन से बस द्वारा टीकमगढ़ होकर अहार पधारना चाहिये।

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख, वही, ले.सं. 1/1 पृष्ठ 1
2. अनेकान्त: वर्ष 9, किरण 10, पृष्ठ 384–385
3. अहार रजत जयन्ति अंक, ई. 1971, पृ. 45
4. वैभवशाली अहार, ई. 1982 प्रकाशन, आहार तब और अब तथा अहार से सम्बद्ध विभूतियाँ शीर्षक लेख।
5. डा ज्योतिप्रसाद जैन, भारतीय इतिहास: एकदृष्टि, भारतीय ज्ञानपीठ, ईसवी 1961 प्रकाशन, पृष्ठ 174–175

अभिलेख - २०५

अहार, कुन्थुनाथ प्रतिमालेख, संवत् १२३७, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. ॐ नमो वीतरागाय।। वभूव रामा नयनाभिरामा श्री (श्री) रल्हणस्ये हमदेस्व (श्व)रस्य। गंगेव

२. गंगा गत पंकसंगा जडास (श) यानेव परं न वक्रा।।१।।............ (गार्हस्थधर्मनितरां) ग्रहणप्रवीणा नि

३. रंतरं प्रेम निभं न धात्री। पुत्र त्रयं मंगल कार्य.............(सूता येषां च कीर्तिरिव सत्वर) धर्म्मवृत्तिः ।।२।।

४. तेषां गांगेयकल्पः प्रथम तनु भवः पुण्य (मूर्ति प्रसूतः स्कंदो भूतेस (श) मेवागु)

५. णरतिरुदयादित्यनामा परस्य। ख्या..................(ता धर्म्मे कुमुदससि) (शशि) लघु भ्रा–

६. तृ युग्मे वियुक्ते संसारासारतां तु (गल्हणोऽभूत) वुद्धिः ।।३।।

दूसरा अंश

१. वित्तानि विद्युदिव सत्वर गत्वराणि राजीव नी

२. जल समानिव जीवितानि। तुल्यानि वारिद गण

३. स्यहि यौवनानि ता संति वित्तुमति जा

४. त्य हि बुद्धं (द्धि) रेसः (रेवः) ।।४।।

पाठ टिप्पणी

पंक्ति २ में नेव, ३ में प्रेम, ४ में गांगेय, ६ में युग्म और रियुक्ते शब्दों में ए स्वर की मात्रा के लिए वर्ण के पूर्व एक खड़ी रेखा दी गयी है।

छन्द परिचय

इस प्रतिमालेख के प्रथम श्लोक में उपजाति, दूसरे और चौथे श्लोक में वसन्ततिलका तथा तीसरे श्लोक में स्रग्धरा छन्द व्यवहृत हुआ है।

भावार्थ

श्लोक–१ ओं। वीतराग देव को नमस्कार। इस मदनेशसागरपुर में रल्हण की पत्नी गंगा, शंकर की गंगा के समान हुई। जैसे महेश्वर की गंगा वक्र रहित, जडाश्रया हुई ऐसे ही वह रल्हण की पत्नी गंगा निर्मल–निर्विकार, नयनप्रिय और सरल प्रकृति की थी, कुटिल नहीं थी।।१।।

श्लोक २– वह गार्हस्थ धर्म–ग्रहण करने में निरंतर प्रवीण थी। निरंतर प्रेम करती थी। किन्तु धाय के समान नहीं। उसने मंगल कार्य रूप तीन पुत्रों को जन्म दिया, जिनकी कीर्ति के समान शीघ्र धर्म में प्रवृत्ति हुई।।२।। श्लोक ३– इन तीनों में भगीरथ के समान पुण्यमूर्ति गांगेय पहला पुत्र हुआ और दूसरा–महादेव के पुत्र कार्तिकेय के समान गुणवान उदयादित्य हुआ। कुमुदनी के लिए चन्द्र के समान, धर्म में विख्यात दोनों छोटे भाइयों के वियोग से गल्हण (रल्हण के ज्येष्ठ पुत्र) की संसार के प्रति असार बुद्धि हुई।। ३।।

श्लोक ४– धन को विजली के समान क्षण भंगुर, जीवन को जल में उत्पन्न कमल के समान और यौवन को बादल–समूह के समान अस्थिर जानकर जो धन था उसे इस कार्य (मंदिर–निर्माण) में लगाने की बुद्धि उत्पन्न हुई।।४।।

प्रतिमा–परिचय

यह प्रतिमा मंदिर नम्बर एक–शान्तिनाथ मंदिर के गर्भगृह में शान्तिनाथ–प्रतिमा की बायीं ओर खड्गासन मुद्रा में स्थापित है। यह १३ फुट ऊंचे तथा ३ फुट ३ इंच चौडे शिलाफलक पर उत्कीर्ण की गयी है। इसकी अवगाहना सिर से आसन तक ११ फुट २ इंच है। नासिका, उपस्थ, पैरों के अंगूठे खण्डित हैं। बायाँ हाथ पुनः जोड़ गया है। शान्ति कुन्थु अरह तीनों प्रतिमाओं का शिल्पी वास्तुकार पापट ही रहा है। प्रतिष्ठाएँ भी एक साथ संवत् १२३७ में सम्पन्न हुई। पालिश मटियाले रंग की है।

परिकर

प्रतिमा की दोनों ओर चँमरवाही इन्द्र सेवारत खड़े हैं। इनके नीचे हाथ जोड़े हाथों में पुष्प लिये उपासक प्रतिमाएँ अंकित हैं। बायीं ओर का उपासक बायां पैर मोड़कर भूमि पर लिटाये हुए है और दायां पैर मोड़े हुए करवद्ध आसीन है। इसी प्रकार दायी ओर का उपासक अपना बायां पैर भूमि पर मोड़ हुए है। दोनों उपासक रत्नाभरणों से अलंकृत हैं। इनकी दाढ़ी नहीं है किन्तु मूंछे ऊपर की ओर उठी हुई है। ये दोनों उपासक संभवतः रल्हण के वे दोनों पुत्र हैं जो असमय में मर गये थे। लगता है कि प्रतिमा का निर्माण उनकी स्मृति स्वरूप हुआ था।

आसन

आसन की लम्बाई १६ इंच और चौड़ाई ८ इंच है। आसन के मध्य में चिह्न स्वरूप बकरा अंकित है। ऊपर से छिल गया है। चिह्न की दोनों ओर छह पंक्ति में लेख का प्रथम अंश उत्कीर्ण है। दूसरा अंश चार पंक्तियों में इस प्रतिमा की दायी ओर शासन देवता की आसन पर उत्कीर्ण है। लेखन शैली और लिपि शान्तिनाथ प्रतिमा लेख के समान है। अभिलेख जगह जगह से टूटा हुआ है।

संदर्भ

1 इस मूलपाठ में कोष्टक में दिया गया अंश पं. गोविन्ददास कोठिया द्वारा पठित है।

2 अहार क्षेत्र के अभिलेख : ले. सं. 1/2 पृ. 9

अभिलेख - २०६

अहार, पंचतीर्थ प्रतिमालेख, संवत् १२३७, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. संवत् १२३७ मार्ग्ग सुदि ३ सु (शु)

२. क्रे साधु वाल्हण................प्र

३. णमती (ति)...................(नित्यं)।

पाठ टिप्पणी

सरेफ वर्ण का द्वित्व और श के स्थान में स का व्यवहार हुआ है।

भावार्थ

संवत् १२३७ मगसिर सुदी तृतीया शुक्रवार के दिन शाह वाल्हण और उसके परिजन प्रतिष्ठा कराकर नित्य वन्दना करते हैं।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या १७८ से संगृहीत है। इसका निर्माण देशी मटमैले लाल पाषाण से हुआ है। इस फलक में पांच प्रतिमाएं अंकित रही हैं। तीन प्रतिमाएं खड्गासन मुद्रा में और दो पद्मासन मुद्रा में। मूल नायक प्रतिमा का सिर नही है। इसकी दोनों ओर एक एक प्रतिमा अंकित है। ये तीनों खड्गासनस्थ रही है। संभवतः

शान्ति, कुन्थु और अरह तीर्थकर की प्रतिमाएं हैं। इन प्रतिमाओं के ऊपर दोनों ओर एक–एक पद्मासन स्थ प्रतिमा के होने का भी अनुमान होता है। इस अवशिष्ट फलक की अवगाहना ६.७ इंच और आसन की लम्बाई ७ इंच है। चिन्ह नहीं है आसन पर तीन पंक्ति में उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण है।[1]

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख : ले.सं. 11/327 पृ. 150

अभिलेख - २००

अहार, शान्तिनाथ प्रतिमालेख, संवत् १२३७ भाषा संस्कृत लिपि नागरी

मूलपाठ

१. संमत् (संवत्) १२३७ मार्ग्ग सुदि ३ सुक्रे (शुक्रे)

२. गोल्लापूर्व्वान्वये ....

भावार्थ

संवत् १२३७ मगसिर सुदी तृतीया शुक्रवार को गोलापूर्व अन्वय के श्रावको द्वारा प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई गई।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या २३६/८७६ से संगृहीत है। इसका निर्माण देशी लाल–मठमैले पाषण से खड्गासन मुद्रा में हुआ है। इसका कटि–प्रदेश से नीचे का भाग ही शेष है। इस भाग की अवगाहना २७ इंच और आसन फलक की लम्बाई १३ इंच है। दोनों ओर एक–एक चँमरवाही देव सेवारत खड्गासनस्थ है। आसन पर चिह्न स्वरूप हरिण तथा दो पंक्ति में उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण है।[1]

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख : ले. सं. 11/328 पृ. 150

अभिलेख - २०८

अहार, अर्हन्त प्रतिमालेख, संवत् १२३७, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

।।संवत् १२३७ मार्ग्ग सुदि ३ सुक्रे (शुक्रे) गोलाराडान्वये साधु स्री (श्री) देवचंद्र सुत दामर भार्या त्रिपिली प्रणमंति वित्यं (नित्यं)।।

भावार्थ

संवत् १२३७ मगसिर सुदी ३ शुक्रवार को गोलाराड अन्वय के शाह श्री देवचन्द्र पुत्र दामर पुत्रवधू त्रिपिली प्रतिष्ठा कराकर नित्य प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ४१ से संगृहीत है। इसका निर्माण देशी काले–नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में हुआ है। पालिश काला, चिकना और चमकदार है। प्रतिमा का सिर और हाथों की अंगुलियाँ नहीं हैं। आसन से गले तक की अवगाहना १४ १/२ इंच और फलक की चौड़ाई १७ इंच है। आसन पर एक पंक्ति में उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण किया गया है। चिह्न नहीं है।[1]

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख : ते.सं. 11/329 पृ. 151

अभिलेख - २०९

अहार, नेमिनाथ प्रतिमालेख, संवत् १२३७, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् १२३७ मार्ग्ग सुदि ३ सुक्रे गोलापूर्व्वान्वये साधु जसई पुत्र ऊदे तथा वील्हण रत्नाधर एते श्री नेमिनाथं नित्यं प्रणम (मं)ति।। मंगल (लं) महाश्री।।

भावार्थ

संवत् १२३७ मगसिर सुदी ३ शुक्रवार को गोलापूर्व अन्वय के शाह यशाई के पुत्र ऊदे, पील्हण रतनाघर ये प्रतिमा प्रतिष्ठा कराकर नेमिनाथ प्रतिमा की नित्य वन्दना करते हैं। इन्हें मंगलदायी महालक्ष्मी प्राप्त हो।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ४५ से संगृहीत है। इसका निर्माण देशी काले--नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में हुआ है। पालिश काला, चिकना, चमकदार है। प्रतिमा का सिर तथा स्कन्ध भाग से कुहनी के नीचे तक के हाथ नहीं हैं। आसन से गले तक की अवगाहना १८ १/२ इंच और फलक की चौड़ाई ३३ इंच है। चिह्न अस्पष्ट है। आसन पर एक पंक्ति का उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण है। लेख से प्रतिमा नेमिनाथ तीर्थंकर की ज्ञात होती है। अतः शंख चिह्न स्वरूप अंकित रहा होगा।

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख, वही, ले.सं. 11/330 पृ. 151

अभिलेख - २९०

अहार, आदिनाथ प्रतिमालेख, संवत् १२३७, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

।।संवत् १२३७ मार्ग्ग सुदि ३ सु (शु)क्रे।। गोलापूर्व्वान्वये साधु वाल्हे भार्या मदना बेटी रतना श्री रिय (ष) भनाथं प्रणमंति नित्यं ।।कारापक पद्मराजण इति।

पाठ टिप्पणी

इस लेख में श के लिए स तथा ऋ के लिए रि का प्रयोग हुआ है। तीन बिन्दुओं में इति का संकेत किया गया है।

भावार्थ

संवत् १२३७ मगसिर सुदी तृतीया शुक्रवार को गोलापूर्व अन्वय के शाह वाल्हे, उनकी पत्नी मदना, पुत्री रतना प्रतिमा प्रतिष्ठा कराकर ऋषभनाथ प्रतिमा की नित्य वंदना करते हैं। इस प्रतिमा का निर्माता शिल्पी पद्मराजन था।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ५० से संगृहीत है। इसका निर्माण देशी काले—नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में हुआ है। पालिश काला, चिकना चमकदार है। इस प्रतिमा का सिर और कुहनी तक के हाथों का भाग नहीं है। अंगुलियाँ छिल गई हैं। आसन से गले तक की अवगाहना १६ इंच और फलक की चौड़ाई १६ १/२ इंच है। आसन के मध्य में चिह्न स्वरूप वृषभ तथा एक पंक्ति में उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण है।

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख : ले.सं. 11/331 पृ. 152

अभिलेख - २११

अहार, महावीर प्रतिमालेख, संवत् १२३७ भाषा संस्कृत, लिपि—नागरी

मूलपाठ

१. संवत् १२३७ मार्ग्ग सुदि ३ सु (शु) क्रे (।) श्री वीरदेव इत्यासीत् खंदिन्वान्वय भास्करः। प्रतिष्ठाचार्य त (व) र्योभूतत्पुत्रों उपमक्षमः।। कमलानिवासवसतिः कमलदलाक्षः प्रस—

२. न्न मुखकमलः। वुध—कमल—कमलवंधुर्व्विकलंकः कमलदेव इति।।श्री (श्री) वीरवर्द्ध मानस्य विंवं तत्पुण्यवृद्धये। कारितं

३. केस (श) वेनेदं तत्पुत्रेणा (ति) निर्म्मलम्।। साधु श्री मामटस्यापि पुत्रो देघहराभिधः। तेनापि कारितं चैत्यं तर्वादेणन्नवेतसा।।

पाठ टिप्पणी

इस लेख में अवग्रह का व्यवहार नहीं हुआ है।

भावार्थ

खण्डेलवाल अन्वय में श्री वीरदेव सूर्य स्वरूप थे। उनका कमलदेव नाम का अनुपमेय प्रतिष्ठाचार्यो में श्रेष्ठ पुत्र हुआ। वह लक्ष्मी का निवास—स्थल था। कमल दल के समान नेत्र और मुँह विकसित कमल के समान प्रसन्न था। बुधजन रूपी कमलों के लिए सूर्य स्वरूप वह निष्कलंक था। इसके पुत्र केशव के द्वारा अति निर्मल पुण्यवृद्धि के लिए श्री वीरवर्द्धमान की प्रतिमा का निर्माण किया गया। शाह श्री मामट के देघहर नामक पुत्र हुआ। इसके द्वारा भी नत नरसल (वेत) के किनारे चैत्यालय निर्मित किया गया। इस प्रतिमा एवं मंदिर की प्रतिष्ठा संवत् १२३७ मगसिर सुदी तृतीया शुक्रवार के दिन सम्पन्न हुई। संभवतः कमलदेव प्रतिष्ठाचार्य थे।

अभिलेख परिचय

इस प्रतिमा लेख में चार श्लोक है। इनमें प्रथम, तीसरे और चौथे श्लोक में अनुष्टुप और दूसरे श्लोक में आर्या छन्द है।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या १० से संगृहीत है। इसका निर्माण देशी काले–नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में हुआ है। प्रतिमा का सिर नहीं है। आसन से गले तक की अवगाहना १६ १/२ इंच है। शिला फलक की चौड़ाई २ फुट है। हथेलियों और तलवों पर कमल पुष्प अंकित हैं। चिह्न स्वरूप आसन पर सिंह तथा तीन पंक्ति में उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण है।

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख : ले.सं. 11 /332 पृ. 153

अभिलेख - २१२

अहार, सुमतिनाथ–प्रतिमालेख, संवत् १२३७, भाषा संस्कृत लिपि नागरी

मूलपाठ

१. ।। संवत् १२३७ आग्रहण (अगहन) सुदि ३ सु (शु) क्रे षं (खं)– डिल्लवालान्वये साहू वाल्हण भार्या वस्ता

२. सुत लाषू (लाखू) विथू आसवन सादू प्रणम (मं)ति नित्यं।

पाठ टिप्पणी

यहाँ मगसिर मास का नाम आग्रहण दिया गया है। श के लिए स तथा ख के लिए 'ष' प्रयुक्त हुआ है।

भावार्थ

संवत् १२३७ अगहन सुदी तीज शुक्रवार को प्रतिष्ठा कराकर खंडेलवाल अन्वय के शाह वल्हण, उनकी पत्नी वस्ता पुत्र लाखू, विथू, आसवन और सादू नित्य प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ६६ से संगृहीत है। इसका निर्माण देशी काले–नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में हुआ है। पालिश काला चिकना चमकदार है। इस प्रतिमा का सिर नहीं है। हथेलियाँ छिल गई हैं।

आसन पर चिह्न स्वरूप चक्रवाक पक्षी तथा दो पंक्ति में उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण है।[1]

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख : ले.सं. 11/333 पृ. 154

अभिलेख - 293

अहार, आदिनाथ प्रतिमालेख संवत् १२३७ भाषा संस्कृत लिपि नागरी

मूलपाठ

१. ।।संवतु (त्) १२३७।। मार्गसिरु सुदि ३ सुक्रे (शुक्रे) म (अ) वधपुरे (रा) न्वए साधु ताल्हण साधु सीले उल्के साधु

२. जाल्लू सिवराज कीतू वाल्हे।। सर्व्व श्रेष्ठी (श्रेष्ठी) प्रसादं भवतु कसितं (कारितं) जयतपुरे प्रणम (मं)ति नितं (नित्यं)

भावार्थ

संवत् १२३७ अगहन सुदी तीज शुक्रवार को कराई गई यह प्रतिष्ठा अवधपुरान्वय के शाह ताल्हण, शाह शीले, उल्के शाह, जाल्लू शिवराज, कीतू वाल्हे सभी श्रेष्ठियों की प्रसन्नता के लिए हो। वे नित्य प्रणाम करते हैं। प्रतिमा का निर्माण जयतपुर संभवतः जयपुर में हुआ था।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या २३ से संगृहीत है। इसका निर्माण देशी काले–नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में हुआ है। पालिश काला, चिकना और चमकदार है। प्रतिमा का सिर, कुहनी के ऊपर के हाथ नहीं है। आसन से गले तक की अवगाहना १४ इंच है। फलक की चौड़ाई १८ इंच है। आसन पर चिह्न स्वरूप वृषभ तथा दो पंक्ति का उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण है।[1]

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख, वही, ले.सं. 11/334 पृ. 154

अभिलेख - २९४

अहार, अर्हन्त प्रतिमालेख, संवत् १२३७, भाषा–संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. साहु भीमदेव भार्या

२. श्री चंद्र ....(वती) संवत् १२३७

३. मार्ग्गसिर सुदि ३ सुक्रे।[1]

भावार्थ

शाह भीमदेव और उनकी पत्नी चन्द्रवती ने संवत् १२३७ अगहन सुदी तीज शुक्रवार को यह प्रतिमा–प्रतिष्ठा कराई।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अेहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ८७६ से संगृहीत हैं। निर्माण देशी मठमैले लाल पाषाण से खड्गासन मुद्रा में हुआ हैं। केवल चरण शेष है। दोनों ओर एक–एक करवद्ध उपासक प्रतिमा है, चिन्ह नहीं है। तीन पंक्ति में उक्त मूलपाठ अवश्य उत्कीर्ण है।

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख, वही, ले. सं. 11/335 पृ. 155

अभिलेख - २९५

अहार, अर्हन्त प्रतिमालेख, १२३७, भाषा-संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. ....

२. श्री चंद्रवानू सं. (संवत्) १२३७

३. मार्ग्गसिर सुदि ३ सुक्रे।

भावार्थ

श्री चन्द्रवानू ने संवत् १२३७ अगहन सुदी तीन शुक्रवार को इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या २०७ से संगृहीत हैं। इसका निर्माण देशी मठियाले पाषाण से खड्गासन मुद्रा में हुआ है। प्रतिमा के मात्र चरण शेष है। यह अवशेष ६ इंच ऊँचा और १० इंच चौड़ा है। चिह्न नहीं है। आसन पर तीन पंक्ति में उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण है।

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख: ले.सं. 11/336 पृ. 156

अभिलेख - २९६

अहार शान्तिनाथ प्रतिमालेख, संवत् १२३७, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. संवत् १२३७ मार्ग्ग सुदि ३ सुक्रे ग्र (गृ) ह-(प)

२. त्यन्वये साधु देऊ भार्या लखमि ....

३. नित्यं प्रणमंति।।

भावार्थ

संवत् १२३७ अगहन सुदी तीज शुक्रवार को प्रतिष्ठा कराकर गृहपत्यन्वय के शाह देऊ उसकी पत्नी लखमी और अन्य परिजन नित्य प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा देशी मढमैले लाल पाषाण से खड्गासन मुद्रा में निर्मित हैं। इसके चरण मात्र हैं। चिह्न स्वरूप हरिण अंकित है। आसन पर तीन पंक्ति में उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण है। यह प्रतिमा पंच पहाड़ी मार्ग की क्षेत्रीय भूमि में खोदे गये कुँए में प्राप्त हुई थी। यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या १२२८ ई से संगृहीत है।[1]

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख,वही, ले.सं. 11/337 पृ. 156

अभिलेख - २१७

मदनपुर, मन्दिर स्तम्भलेख, संवत् १२३६, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. चाहूमान बंशे
२. न पृथिवीराज (पृथ्वीराज) भू –
३. भुज (:।) परमार्दी नरेंद्र
४. स्य देशोयमुदवश्यते (।।)

(२)

१. ओं (।।) अर्ण्णोव्वजस्य पौत्रेण श्री ,
२. सोमेश्वर सूनुना (।) जेजाका
३. भुक्ति देशोयं पृथ्वीराजेन
४. लुनीथ (।।) सं. (संवत्) १२३६ (।।)[1]

भावार्थ

ओं–पंच परमेष्ठियों को नमस्कार हो। चौहान वंश में हुए राजा अर्णोराज के पौत्र और श्री सोमेश्वर राजा के पुत्र पृथ्वीराज द्वारा राजा परमर्द्धिदेव का जेजाकभुक्ति देश काट लिया (जीत लिया) और वह वहाँ से निकाल दिया गया।

पाठ टिप्पणी

लेख दो भागों में है। प्रथम भाग पूर्णतः पद्य में है। एक ही श्लोक है जिसमें अनुष्टुप छन्द व्यवहृत हुआ है। दूसरे भाग में गद्य और पद्य साहित्य की दोनों विधाएँ हैं। मंगलसूचक आदि में अंकित ओं शब्द तथा अन्त में अंकित संवत् १२३६ गद्य में है। शेष भाग पद्य में अनुष्टुप छन्द में रचा गया एक श्लोक है।

कनिंघम के विचार

लेख के सम्बन्ध में कनिंघम ने अपनी दसवीं रिपोर्ट में निम्न प्रकार भाव व्यक्त किये हैं –

The Old and thriving village of Madanpur is situated at the mouth of the best and easiest pass leading from Sagar to the north. The principal road runs by malthon through the Narhat pass, to Lalitpur. Madanpur is 24 miles to the south east of Lalitpur and 30 miles to the north of Sagar.

On one side of the village there is a Jain temple with an inscription dated in Samavat 1206 or A.D. 1149 which contains the name of Madanpur. But the most interesting and valuable inscriptions are preserved in a small pillared building, supported on 6 squares shaftes, which is known by name of Bardari, on the pillars of this small building there are angraved two short records of the great chavhan prince prithviraj which are of singular intrest and importance, each of these consists of four lines but they are of supreme historical value as they record the of Prithvirajas conquest of king Parmardi and his country Jejakbhukti Samvat year 1939.

From the first of these records as I understand it we learn that "Joy was introduced in to the country of king Parmardi by king Prithviraj of the fortunate race of chauhan a pamlit whom I have consulted wishes to omit the Anuswar and to read deshoyam Udvashyte which we would translate by "was peopled". But as this rendering takes no notice of Uda. I prefer may own reading.

The second inscription gives the date, the name of the conquered country, and the genealogy of the conguerer as follows. The country of Jejakbhukti was conquared by Prithviraj son of the fortunate smoeshowar and grand son of Anannraj in the somvat year 1239.

The first point deserving of notice in these two short but precious records is the name of the country jejakbhukti, which is clearly the Jajahuti of Abu Rinan, formed by the common elision of the letter K and the change of S to h. The meaning of the word is doubtful but it was certainly the name of the country, as it is coupled with Desa. I may add also that there are still considerable numbers of Jeja hutiya Brahaman and Baniya, in the old country of the chandela's which I have repeatedy traversed in many different directions. I would identify Jejahuti with the District of Tamsis Empalathra, Kurapovina and Nadubandagar. Judging from the relative positions assigned to them by ptolemy. I think that the first, which is to the north east of

Sandrabatis, may be Darsande. The second Mahoba, the thrid Khajuraho and the fourth which is the most westerly, Bhandar, the name of Kuraporniya appears to correspond very fairly with kharjurpuri which is the Sanskrit from of Khajuraho.

The Second point worthy of notice is the name of Amnoraj the grandfather of Prithviraj his name is still preserved in that of the great Lake of Ajmer, called Amnasagar, According to Tod the Last four generations were vishaldev. Arnnoj, someshwar and prithviraj. As this genealogy is confirmed by the present inscription.

The third point to be noted is the date of the conquese of Mahoba and the country of the chandel kings in the Mahoba Khand of Chand's Prithviraj Raso the date of the chandel war is given as samvat 1241 or A.D. 1184 but in these inscriptions it is placed two years earlier in samvat 1239. The difference is not much but as the true date must have been known to chand, the deviation tends to a general distrust in all the dates inserted in his poem.

प्राप्तिस्थल परिचय

सागर–ललितपुर के मध्य मालथौन के आगे रोड के किनारे मदनपुर नामक ग्राम स्थित है। इस ग्राम के उत्तर की ओर तीन पुराने जैन मन्दिर हैं। इनमें एक बारदरी नाम का मन्दिर है। ये दोनों लेख इसी मन्दिर के स्तम्भों पर अंकित हैं। दोनों लेख चार–चार पंक्तियों में उत्कीर्ण हैं।

अभिलेखों का महत्त्व

पृथिवीराज की जेजाकभुक्ति देश पर विजय, का संवत् और पृथिवीराज की वंशपरम्परा की दृष्टि से ये लेख महत्तवपूर्ण हैं। चन्दवरदाई के पृथिवीराज रासो में पृथिवीराज के युद्ध का समय संवत् १२४१ बताया गया है जबकि इन लेखों से वह समय संवत् १२३६ ज्ञात होता है।

व्याख्या

जेजाकभुक्ति – यह एक देश था। संवत् १२३६ में इस देश का राजा परपर्द्धिदेव चन्देल था। इसे पराजित करके संवत् १२३६ में ही पृथिवीराज ने इस देश को अपने आधीन कर लिया था और चौहानों का राज्य हो गया था।

पृथ्वीराज – यह चौहान वंश का महान् विजेता नृप था। इसने चन्देल परमर्द्धिदेव को संवत् १२३६ में पराजित किया था तथा उसके जेजाकभुक्ति राज्य पर अपना अधिकार जमाया था। अर्णोराज इसके बाबा तथा सोमेश्वर पिता थे।

संदर्भ

1. कनिंघम, आर्कि. सर्वे रिपोर्ट 10, ले.सं. 9–10 से साभार

अभिलेख - २१८

अहार, अर्हन्त प्रतिमालेख, संवत् १२४१, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् १२४१ पहिल (पाहिल) सर्व्व।

भावार्थ

संवत् १२४१ में पाहिल ने प्रतिष्ठा कराई।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा मन्दिर नम्बर दो–भोयरे में वेदिका की प्रथम कटनी पर उत्तर से दक्षिण की ओर चौथे क्रमांक से विराजमान हैं। इसका निर्माण देशी मठमैले पाषाण से खड्गासन मुद्रा में हुआ है। इसकी अवगाहना ८½ इंच तथा असान की चौड़ाई ३ १/४ इंच है। चिह्न नहीं है। एक पंक्ति में उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण है।

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख, वही, ले.सं. 2/103 पृष्ठ 30

अभिलेख - २१९

विदिशा, गोमेध प्रतिमालेख, संवत् १२४२, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. संवत् १२४२ वैसाष (वैशाख) सुदि १० खंडिल्लान्वय साधु

२. सोघ सोढक ....

भावार्थ

संवत् १२४२ वैशाख सुदी १०वीं तिथि में खण्डेलवाल अन्वय के शाह शोघ सोढक आदि ने इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई।

प्रतिमा परिचय

आर्किऑलॉजिकल डिपार्टमेंट देहली से प्रकाशित ग्वालियर म्युजियम जिल्द–एक क्रमांक १४२३/६३ में यह प्रतिमा विदिशा से प्राप्त कही गयी है। इसको गरुडवाही विष्णु के रूप में पहिचाना गया है। जबकि यह नरवाही एक मुखी एवं चतुर्भुजी देव है। नरवाहन होने से यह गोमेध देव ज्ञात होता है। इसके हाथ टुटे हुए हैं, अतः अधिक हाथ होने की संभावना भी है। गोमेध बाईसवें तीर्थंकर नेमिनाथ का शासनदेव माना गया है। तीर्थंकर नेमिनाथ–प्रतिमा के होने की संभावना भी है।

संदर्भ

1. *ग्वालियर म्युजियम जिल्द एक, क्रमांक 1423/63*
   प्रकाशक – आर्किऑलॉजिकल डिपार्टमेंट देहली।

अभिलेख - २२०

ऊन शान्तिनाथ प्रतिमालेख, संवत् १२४२, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. संवत् १२४२ वर्षे। माघ वदि ७ सोमे। श्री काष्ठा मा (थुर)
२. संघे पंडिताचार्य्य स्री माधवचंद्र तत्सिस्य (तत्शिष्य) पंडिताचार्य्य स्री गजें ....
३. द्र नदिं (नंदि) त (तत्) सिस्य (शिष्य) प्रोढाचार्य (प्रतिष्ठाचार्य) स्री महाकीर्त्ति स्री अमरकीर्त्ति
४. तथा पद्मचंद्र सार्धः प्रणमंति। संघाचार्य्यान्वये साधु महीपति
५. भार्य्या गोगा तस्य पुत्र माघव तस्य भार्या – (माणिक) तस्य पुत्र सा. (साधु)
६. कान्हदत्त वीरमसुत लक्ष्मदे
७. वो तेषा (तस्य) सि (शि) ष्य साधु रत्न (देवो)
८. साधु साल्ह स्री (श्री) धर सुत रामदेव
९. कदम्व (देव) सुत दाहड सार्थी (र्व्वी) प्रणमंति नित्यं।

भावार्थ

संवत् १२४२ माघ वदी ७ सोमवार के दिन श्री काष्ठा संघ में हुए पंडिताचार्य श्री माधवचन्द्र, उनके शिष्य पंडिताचार्य श्री ....गजेन्द्रनंदि साधु, उनके शिष्य प्रतिष्ठाचार्य

श्री महाकीर्त्ति श्री अमरकीर्त्ति तथा पद्मकीर्त्ति सहित (सभी प्रतिष्ठा कराकर) प्रतिमा की वन्दना करते हैं। संघ के आचार्य के अन्वय में हुए शाह महीपति, उनकी पत्नी गोता पुत्र माधव, पुत्रवधु (नाम नहीं) पौत्र शाह कान्हदत्त तथा वीरम और वीरम के पुत्र लक्ष्मदेव तथा लक्ष्मदेव का शिष्य रत्नदेव, शाह साल्ह, श्रीधर के पुत्र रामदेव, कदम्बदेव तथा कदम्बदेव के पुत्र दाहड़ और सार्वी सभी प्रतिष्ठा करानेवाले श्रावक नित्य वन्दना करते हैं।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा ऊन की सड़क के किनारे नहाल अवार का डेरा बस्ती के पास उत्तर की ओर उत्तराभिमुख निर्मित मंदिर में ईसवी १६३० तक विराजमान रही, पश्चात्,इन्दौर म्युजियम ले जायी गयी। कायोत्सर्ग मुद्रा में इस सहित तीन प्रतिमाएँ क्रमशः शांति कुंथु अरह तीर्थकरों की रही है। यह सर्वाधिक ऊँची थी। इस प्रतिमा कर आसन पर चिह्न स्वरूप हरिण तथा ६ पंक्ति का उक्त लेख उत्कीर्ण है। इस प्रतिमा का निर्माण हल्के हरे रंग के पाषाण से १५५x५५ सेंटीमीटर में हुआ है।

संदर्भ

1 इन्दौर संग्रहालय में संरक्षित जैन तथा बौद्ध प्रतिमाएँ एवं विविध कलाकृतियाँ, पुरातत्व म.प्र. शासन भोपाल ई0 1991 प्रकाशन, पृष्ठ 31

अभिलेख - २२१

पनागर, अर्हत प्रतिमालेख, संवत् १२४४, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

सं० (संवत्) १२४४ फाल्गुन सुदि ४ गुरौ उ .... सवाल्यवये (ओसवालान्वये) साधु देह सुत तोहट भार्या साकसीया प्रणम (मं) ति नित्यं।

भावार्थ

संवत् १२४४ फाल्गुन सुदि चतुर्थी गुरुवार के दिन ओसवाल अन्वय के शाह देह, उसका पुत्र शाह तोहर और पुत्रवधु साकंसीया (प्रतिष्ठा कराकर) नित्य प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा परिचय

पनागर ग्राम होसंगाबाद जिले में दूधी नदी के किनारे बसा है। इसी नदी के तट पर एक विशाल कोरणी युक्त जैन मंदिर था जिसमें ५० प्रतिमाएँ लेखयुक्त प्राप्त हुई थीं।

सलेख मूर्तियों की ऐसी सामुहिक उपलब्धि पनागर को छोड़कर महाकोशल में कहीं अन्यत्र नहीं हुई है। यह लेख जिस प्रतिमा की असान पर अंकित मिला है। वह प्रतिमा १८x१८ इंच की निर्मित है। पालिश इतना अधिक स्निग्ध है कि मुखदर्शन भी हो जाता है।

संदर्भ

1. मुनि कान्तिसागर, खंडहरों का वैभव, पृ0 30 से साभार

अभिलेख - २२२

वजरंग गढ़, नेमिनाथ प्रतिमालेख, संवत् १२५०, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. संवतु (त्) १२५० जेठ सुदि १२ बुद्धेः साधु सांती भार्या कदलि सुत सल्हें।।
२. .... प्रणमंति नित्यः।।

भावार्थ

संवत् १२५० जेठ सुदी द्वादशी दिन बुधवार को शाह शान्ति उसकी पत्नी कदली पुत्र सलहे और पुत्रवधु तथा संभवतः पौत्र और पौत्रवधु प्रतिष्ठा कराकर नित्य प्रणम करते हैं।

प्रतिमा–परिचय

यह प्रतिमा दायीं ओर की चतुर्थ वेदी पर कृष्णवर्ण पाषाण की चौबीसी से निर्मित द्वाराकृति के मध्य पद्मासन मुद्रा में विराजमान है। यह कृष्णवर्ण की है। इसकी अवगाहना २१ इंच है। इसके स्थान में पहले ऋषभदेव प्रतिमा रही है। जिसकी प्रतिष्ठा संवत् १६०३ में सम्पन्न हुई थी। चौबीसी की आसन पर चिह्न स्वरूप बैल प्रतिष्ठा संवत् १६०३ आदि उत्कीर्ण है। इस नेमिनाथ प्रतिमा के केश गुच्छकों में दर्शाये गये हैं। कर्ण स्कन्ध भाग का स्पर्श कर रहे हैं। गले में तीन रेखाएँ अंकित हैं। श्रीवत्स चिह्न वक्षस्थल पर स्थित है। दोनों ओर विभूषित मुकुटबद्ध चँवरधारी एक–एक देव सेवारत खड़ा है। आसन के मध्य चिह्न स्वरूप शंख और उसकी दोनों ओर दो पंक्ति में उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण है। बजरंग गढ–गुना–आरौन मार्ग पर गुना से सात किलो मीटर दूर है।

संदर्भ

1. भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ, भाग 3, चित्र सख्या 14 से साभार

अभिलेख - २२३

ऊन, महावीर प्रतिमालेख, संवत् १२५०, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

आचार्य स्त्री (श्री) प्रभाचंद प्रणमति नित्यं। सं. (संवत्) १२५२ माघ सुदि ५ रवौ चित्रकूटान्वयें साधु वाल्हु भार्या साल्हा तथा मंदोदरी सुत गोल्ह रतन भालू प्रणमंति नित्यं।

भावार्थ

संवत् १२५२ माघ सुदी पंचमी रविवार को चित्रकूटान्वय के शाह वाल्हु, उनकी पत्नी साल्हा तथा मंदोदरी पुत्र गोल्ह, रतन, भालू संभवतः आचार्य प्रभाचन्द्र से प्रतिष्ठा कराकर आचार्य प्रभाचन्द्र सहित सभी प्रतिमा की नित्य् वन्दना करते हैं।

प्रतिमा परिचय

ऊन (पावागिरि) धर्मशाला के मध्य निर्मित महावीर मन्दिर में मूलनायक प्रतिमा के रूप में विराजमान श्याम वर्ण के पाषाण से दो फुट दो इंच अवगाहना से निर्मित यह तीर्थकर महावीर की प्रतिमा है। यह उत्खनन में प्राप्त हुई थी। पद्मासन मुद्रा में यह मनोज्ञ प्रतिमा है।

संदर्भ

1. *भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ, भाग 3, पृष्ठ 310–311*
2. *अनेकान्तः वर्ष 22 –1 अप्रैल 1969 ईसवी, पृष्ठ 31*
3. *पावगिरि सिद्ध क्षेत्र का इतिहासः क्षेत्रीय प्रकाशन ईसवी 1960 पृष्ठ 16*

अभिलेख - २२४

ऊन, श्रेयांसनाथ प्रतिमालेखा, समय १२ वीं शताब्दी

प्रतिमा परिचय

तीर्थकर श्रेयांसनाथ की कायोत्सर्ग मुद्रा में अंकित इस प्रतिमा की आसन पर प्रतिष्ठा काल अंकित है, जो अपठनीय हो गया है। प्रतिमा का निर्माण हल्के हरित वर्ण के पाषाण

से हुआ है। शिल्पांकन से प्रतिमा का समय १२वीं शताब्दी अनुमानित किया गया है। सम्प्रति यह प्रतिमा केन्द्रीय संग्रहालय इन्दौर में प्रविष्टि क्र. २५–२४०० से संगृहीत है।

अभिलेख - २२५

अलीराजपुर, श्रुतदेवी – अभिलेख, समय १२ वीं शताब्दी,

मूलपाठ

श्री गोविंदा (न्) वये गणाधीश सुय वे (दे) ला (वा) या।

प्रतिमा परिचय

अलीराजपुर (झाबुआ) से प्राप्त यह प्रतिमा कमल पर आसीन त्रिभंग मुद्रा में अंकित है। नीचे का दायाँ हाथ वरद् मुद्रा में है। ऊपरी एक हाथ में सनाल कमल है। बाये निचले हाथ में पुस्तक तथा ऊपरी हाथ में अक्षमाला धारण किये हैं। पीछे प्रभावली अंकित है। इसकी दो परिचारिकाएँ भी फलक में दर्शाई गई है। व्यवहृत वर्ण माला से इसका समय १२ वीं शताब्दी बताया गया है। इसका निर्माण कांस्य धातु से हुआ है। प्रतिमा के गले में हार, कानों में कुण्डल और पैरों में पायल है।

संदर्भ

1. केन्द्रीय संग्रहालय इन्दौर में प्रविष्टि संख्या 7397 से संगृहीत

अभिलेख - २२६

धार संग्रहालय अर्हत् प्रतिमालेख, समय १२ वीं शताब्दी, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

.... यं साधु देउ सुतः रुद्रदेव भार्या रंमा प्रणमति नित्यं मंगलं।

भावार्थ

साधु देउ के पुत्र रुद्रदेव की पत्नी रंमा मंगलार्थ नित्य प्रणाम करती है।

प्रतिमा परिचय

पद्मासन मुद्रा में अंकित प्रतिमा का केवल पादपीठ शेष है। यह धार संग्रहालय में प्रविष्टि क्रमांक ६८ से संगृहीत है। उक्त मूलपाठ इसी पादपीठ पर अंकित है। लेख के आरंभिक अंश का पाषाण टूटा हुआ है। लिपि की दृष्टि से प्रतिमा का समय १२ वीं शताब्दी ज्ञात होता है।

संदर्भ

1. धार संग्रहालय के सौजन्य से प्राप्त जैन मूर्ति विवरण से साभार।

अभिलेख - २२७

धार संग्रहालय अर्हत् प्रतिमालेख, समय १२ वीं शताब्दी, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

.... आचार्य प्रणमति ....

प्रतिमा परिचय

धार संग्रहालय में प्रविष्टि क्रमांक ७२ से संगृहीत पद्मासन मुद्रा में अंकित भग्न इस प्रतिमा की आसन पर उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण है। इसका समय १२ वीं शताब्दी बताया गया है।

संदर्भ

1. धार संग्रहालय के सौजन्य से प्राप्त विवरण से साभार

अभिलेख - २२८

धार संग्रहालय अर्हत् प्रतिमालेख, समय १२ वीं शताब्दी, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

.... स्री लाटवागट संघे .... प्रणमति नित्यं।

प्रतिमा परिचय

पद्मासन मुद्रा में अंकित यह खण्डित प्रतिमा धार संग्रहालय में प्रविष्टि क्रमांक ७७ से संगृहीत हैं। आरंभ और मध्य में लेख का पाषाण टूटा हुआ है। मूलपाठ प्रतिमा के पादपीठ पर अंकित है। इसका समय १२वीं शताब्दी ज्ञात होता है।

संदर्भ

1. धार संग्रहालय के सौजन्य से प्राप्त जैन–प्रतिमा विवरण से साभार।

अभिलेख - २२९

धार संग्रहालय, अर्हत् प्रतिमालेख, समय १२ वीं शताब्दी, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

.... पंडिताचार्य लिंगसुत ....

प्रतिमा परिचय

प्रतिमा की केवल जंघा एवं आसन मात्र शेष हैं। उक्त मूलपाठ इसी आसन पर उत्कीर्ण हैं। लेख में केवल लिंगसुत पंडिताचार्य पढ़ा जा सका है। यह आसन धार संग्रहालय में संग्रहालय प्रविष्टि क्रमांक ८१ से संगृहीत हैं। इसका समय १२वीं शताब्दी ज्ञात होता है।

संदर्भ

1. धार संग्रहालय के सौजन्य से प्राप्त जैन–प्रतिमा विवरण से साभार।

अभिलेख - 230

धार संग्रहालय अर्हत् प्रतिमालेख, समय १२ वीं शताब्दी, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

.... माघ वदि ५ माथुर .... (अन्वये) प्रणमति आचार्य माधवचंद्रो।

भावार्थ

माथुरान्वय के आचार्य माधवचंद्र संवत् .... माघ वदी पंचमी को प्रतिष्ठा सम्पन्न करके प्रतिमा की वन्दना करते हैं।

प्रतिमा परिचय

प्रतिमा कयोत्सर्ग मुद्रा में अंकित की गयी थी। अब वह खण्डित है। यह लेख इसके पादपीठ पर उत्कीर्ण हैं। यह सम्प्रति धार संग्रहालय में प्रविष्टि क्रमांक ८५ से संगृहीत हैं। इसका समय १२वीं शताब्दी ज्ञात होता है।

संदर्भ

1 धार संग्रहालय के सौजन्य से प्राप्त जैन–प्रतिमा विवरण से साभार।

अभिलेख - 239

धार संग्रहालय, अर्हत् प्रतिमालेख, समय १२ वीं शताब्दी, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

.... प्रणमति नित्यं।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा धार संग्रहालय में प्रविष्टि संख्या ६० से संगृहीत हैं। इस प्रतिमा के

पादपीठ पर लेख उत्कीर्ण है, जिसका अन्तिम अंश मात्र सुरक्षित है। शेषलेख भाग का पाषाण टूट गया है। समय १२वीं शताब्दी ज्ञात होता है।

संदर्भ

1 धार संग्रहालय के सौजन्य से प्राप्त जैन–प्रतिमा विवरण से साभार।

अभिलेख - 232

धार संग्रहालय, अर्हत् प्रतिमालेख, समय १२ वीं शताब्दी, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् ....माघ .... र्य ....।

प्रतिमा परिचय

पद्मासन मुद्रा में निर्मित यह प्रतिमा धार संग्रहालय में प्रविष्टि क्रमांक ८४ से सगृहीत हैं। इसका पादपीठ उत्कीर्ण है। लेख का पाषाण छिल गया है। समय १२वीं शताब्दी ज्ञात होता है।

सदर्भ

1 धार सग्रहालय के सौजन्य से प्राप्त जैन–प्रतिमा–विवरण से साभार।

अभिलेख - 233

धार संग्रहालय, पद्मप्रभप्रतिमालेख, समय १२ वीं शताब्दी, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

.... श्री पद्मप्रम देवः।।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा धार संग्रहालय में प्रविष्टि क्रमांक ३४६ से संगृहीत हैं। इसका पादपीठ

उत्कीर्ण है। लेख में प्रतिमा पद्मप्रभ तीर्थंकर की बताई गई है। इसका समय १२वीं शताब्दी ज्ञात होता है।

संदर्भ

1 धार संग्रहालय के सौजन्य से प्राप्त जैन–प्रतिमा विवरण से साभार।

अभिलेख - २३४

त्रिपुरी, अर्हत्, प्रतिमालेख, समय १२ वीं शताब्दी, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

श्री वीरनंदि आचार्य्येन (या) प्रतिमायां, (प्रतिष्ठा) कारापिता।

भावार्थ

श्री आचार्य वीरनंदि के द्वारा इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई गई।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा तेवर (जवलपुर) के बालसागर तालाब के किनारे निर्मित मन्दिर में विराजमान बताई गई है। यहाँ से प्राप्त प्रतिमाएँ कलचुरि संवत् की प्रमाणित हुई हैं, अतः इसका समय १२ वीं शताब्दी ज्ञात होता है।

संदर्भ

1 इन्स्क्रिप्शन्स इन दी सी0पी0 एण्ड बरार क्र0 55 पृ0 41 से साभार।

अभिलेख - २३५

अहार, अजितनाथ प्रतिमालेख, समय १२ वीं शताब्दी, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

साबु (हु) देवचंद्र प्रणमति नित्यं।

भावार्थ

शाहदेवचन्द्र प्रतिष्ठा कराकर नित्य वन्दना करता है।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या २१७ से संगृहीत है। इसका निर्माण देशी काले–नीले पाषाण से खड्गासन मुद्रा में हुआ है। इस प्रतिमा के घुटनों से ऊपर का भाग नहीं है। दोनों ओर एक–एक चमरवाही इन्द्र सेवारत खडा है। आसन पर चिह्न स्वरूप हाथी तथा एक पंक्ति में उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण है।

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेखः ले.सं. 11/342 पृ0 159 से साभार

अभिलेख - २३६

अहार, महावीर प्रतिमालेख, समय १२ वीं शताब्दी, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. ठाक्कुर स्त्री (श्री) ददे पुत्र ठक्कुर पद्मसिंह तस्य
२. भार्या – (अ) सकेलि एते नित्यं प्रणमं
३. ति ।

भावार्थ

ठाकुरं ददे, उनके पुत्र ठाकुर पद्मसिंह पुत्रवधु असकेली ये नित्य प्रणाम करते हैं।

समय

ठाकुर ददे और उनके पुत्र पद्मसिंह द्वारा संवत् १२०६ वैशाख सुदि त्रयोदेशी में आदिनाथ प्रतिमा का निर्माण कराया गया था। अहार संग्रहालय संख्या ४३ से संगृहीत प्रतिमालेख मे प्राप्त उक्त रांवत् और नामों से विदित होता है कि इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा में पिता, पुत्र और पुत्रवधु तीनों का सहयोग रहा है।

व्याख्या असकेलि

प्रस्तुत लेख में इसे ठाकुर ददे की पुत्रवधु और पद्मसिंह की पत्नी कहा गया है। अहार संग्रहालय संख्या ३५ से संगृहीत महावीर प्रतिमा के संवत् १२२५ के लेख में इसे पंडिता आर्यिका के रूप में बताया गया है। अतः इस से ज्ञात होता है कि यह विदुषी थी। संवत् १२०६ के बाद कभी इसने गृहस्थ बन्धन से मुक्त होकर आर्यिका पद धारण कर लिया था।

प्रतिमा परिचय

अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या २२ से यह प्रतिमा संगृहीत हैं। इसका निर्माण देशी काले–नीले पाषाण से हुआ है। पाषाण खण्ड ६ इंच चौड़ा है। इस फलक में तीन प्रतिमाओं के चरण मात्र शेष हैं। आसन के मध्य चिह्न स्वरूप सिंह अंकित है। अन्य दो प्रतिमाओं के चिह्न नहीं हैं। तीन पंक्ति में उक्त मूलपाठ भी आसन पर उत्कीर्ण है।

संदर्भ

1 अहार क्षेत्र के अभिलेखः ले.सं. 11/343 पृ0 160 से साभार

अभिलेख - 230

अहार, महावीर प्रतिमालेख, समय १२ वीं शताब्दी, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. ग्र (गृ) हपत्यन्वये साधु कुलधर भार्या

२. सुद्धंदिन्ना कर्मक्षयाय –

भावार्थ

गृहपति अन्वय के शाह कुलधर और उनकी पत्नी शुद्धंदिना ने कर्मो के क्षय हेतु इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई।

समय

अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ३८ से संगृहीत आदिनाथ प्रतिमा के संवत् १२१० के एक लेख में भी ग्रहपति अन्वय के शाह कुलधर का नामोललेख हुआ है। इस प्रतिमा लेख से प्रस्तुत प्रतिमालेख का समय भी संवत् १२१० ज्ञात होता है।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ७६ से संगृहीत हैं। इसका निर्माण देशी काले–नीले पाषाण से खड्गासन मुद्रा में हुआ है। पालिश काला, चिकना, चमकदार है। इस प्रतिमा का एक चरण मात्र शेष हैं। आसन पर चिह्न स्वरूप पूंछ उठाये सिंह तथा उक्त दो पंक्ति का मूलपाठ उत्कीर्ण है।[1]

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेखः ले.सं. 11/344 पृ0 160 से साभार

अभिलेख - २३८

अहार, अजितनाथ प्रतिमालेख, समय १२ वीं शताब्दी, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. साधु लेनेपगे
२. नित्यं प्रणमति

भावार्थ

शाह लेनेपगे प्रतिष्ठा कराकर नित्य प्रणाम करता है।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ६८ से संगृहीत हैं। इसका निर्माण देशी काले–नीले पाषाण से खड्गासन मुद्रा में हुआ है। इसका सिर और मुख छिला हुआ है। बायें हाथ की हथेली नहीं हैं। दायें हाथ की हथेली में पुष्प का अंकन हुआ है। हाथों के दोनों ओर एक–एक अलंकृत चँमरवाही देव खड्गासन मुद्रा में सेवारत दर्शाया गया है। आसन पर चिह्न स्वरूप हाथी तथा दो पंक्ति में काल रहित उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण है। शिल्पांकन से इस प्रतिमालेख का समय भी १२वीं शताब्दी ज्ञात होता है।[1]

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख, वहीं, ले.सं. 11/345 पृ0 161 से साभार

अभिलेख - २३९

अहार, आदिनाथ प्रतिमालेख, समय १२वीं शताब्दी, भाषा संस्कृत लिपि नागरी

मूलपाठ

.... परवाडान्वये (ये) साधु पानस भार्या नूविणि सुत राढरिसि भार्या जमकलि ....

भावार्थ

यह पानस, उनकी पत्नी नूविणि, पुत्र राढ, रिसि की पत्नी जमकली (प्रतिष्ठा कराकर नित्य प्रणाम करते हैं)।

समय

शिल्पाकन से समय १२वीं शताब्दी ज्ञात होता है।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या १७० से संगृहीत हैं। इसका निर्माण देशी काले--नीले पाषाण से हुआ है। पालिश काला चिकना चमकदार है। इस प्रतिमा की मात्र आसन शेष है। अवशिष्ट भाग की ऊँचाई मात्र ४ इंच है। लेख फलक ८ १/२ इंच लम्बाई में है। आसान पर चिह्न स्वरूप वृषभ तथा उक्त एक पंक्ति का मूलपाठ उत्कीर्ण है।[1]

संदर्भ

1 अहार क्षेत्र के अभिलेख ले.स 11/346 पृ0 161 से साभार

अभिलेख - २४०

अहार, नेमिनाथ प्रतिमालेख, समय १२वीं शताब्दी, भाषा संस्कृत लिपि नागरी

मूलपाठ

साबु (हु) देवगज

भावार्थ

शाह देवराज ने इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई।[1]

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या १२८ ब से संगृहीत है। इसका निर्माण देशी काले--नीले पाषाण से हुआ है। आसन मात्र शेष है। आसान की लम्बाई १८ इंच तथा ऊँचाई ६ इंच है। चिह्न स्वरूप आसान पर शंख तथा उक्त एक पंक्ति का मूलपाठ उत्कीर्ण है।

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख, वहीं, ले.सं. 11/347 पृ0 162 से साभार

अभिलेख - २४१

अहार, अभिनन्दननाथ प्रतिमालेख, समय १२वीं शताब्दी, भाषा संस्कृत लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् .... (१२०३) माघ सुदि १३ गुरौ गोल्लापूर्व्वन्वये साधु स्री आल्ह विल्हण प्रणमंति नीत्य (नित्यं)। इति।

भावार्थ

संवत् १२०३ माधु सुदी गुरूवार को गोलापूर्व अन्वय के शाह श्री आल्ह और विल्हण प्रतिष्ठा कराकर नित्य प्रणाम करते हैं।

समय

माघ सुदी १३ गुरूवार को प्रतिष्ठाएँ संवत् १२०३ में सम्पन्न हुई हैं। अतः इसका समय भी संवत् १२०३ स्वीकार किया गया है।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या १२२८ द से संगृहीत हैं। इसका निर्माण देशी काले–नीले पाषाण से हुआ है। इसकी आसन मात्र शेष है जिसकी अवगाहना १२ इंच और चौड़ाई २२ इंच है। चिह्न स्वरूप आसन पर घोड़ा तथा उक्त एक पंक्ति का मूलपाठ उत्कीर्ण है।

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख, वहीं, ले.सं. 11/348 पृ0 182 से साभार

अभिलेख - २४२

ऊन, शान्तिनाथ प्रतिमालेख, संवत् १२६३, भाषा संस्कृत लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् १२६३ जेष्ठ वदि १३ गुरौ आचार्य श्री यशकीर्त्ति प्रणमति

भावार्थ

संवत् १२६३ जेठ वदी त्रयोदशी गुरूवार को (संभवतः प्रतिष्ठा विधि सम्पन्न कराकर) आचार्य यशकीर्त्ति प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा परिचय

ऊन के ग्वालेश्वर मन्दिर के गर्भगृह में विशाल खड्गासन मुद्रा में तीन प्रतिमाएँ विराजमान हैं। ये तीनों क्रमशः शान्तिनाथ, कुन्थुनाथ और अरहनाथ तीर्थंकरों की है। इनमें मध्यवर्ती प्रतिमा तीर्थंकर शान्तिनाथ की है। इसकी अवगाहना १२ फुट ६ इंच हैं। काले, चिकने, चमकीले पालिश से सहित है। पीठासन पर चिह्न स्वरूप हरिण तथा उक्त मूलपाठ अंकित है। लेख और भी है। किन्तु अपठनीय है। इस प्रतिमा की बायीं ओर कुन्थुनाथ और दायीं और अरहनाथ प्रतिमाएँ है।

संदर्भ

1. भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ, भाग 3, पृष्ठ 314 से साभार

अभिलेख - २४३

ऊन, कुन्थुनाथ प्रतिमालेख, संवत् १२६३, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

श्री संवत् १२६३ वर्षे ज्येष्ट (ज्येष्ठ) वदि १३ गुरौ साधु पंडित रूणु तैयेनितं, (तै प्रेरितं) सुत सीलहारेण (शीलधारेण) प्रणमति नित्यं।

भावार्थ

संवत् १२६३ वर्ष जेठ वदी त्रयोदशी गुरूवार को शाह पण्डित रुणु के द्वारा प्रेरित उनके पुत्र शीलधर के द्वारा (प्रतिमा प्रतिष्ठा कराई गई)। वह प्रतिमा की नित्य वन्दना करता है।

प्रतिमा परिचय

ऊन के ग्वालेश्वर मन्दिर के गर्भालय में शान्तिनाथ प्रतिमा की बायी ओर कुन्थुनाथ प्रतिमा विराजमान हैं। इसकी अवगाहना अनुमानतः आठ फुट हैं। इस प्रतिमा की आसन चिह्न स्वरूप बकरा, उक्त मूलपाठ तथा यक्ष-यक्षिणी अंकित हैं।

सदर्भ

1 भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ, भाग 3, पृष्ठ 314 से साभार

अभिलेख - २४४

ऊन, अरहनाथ प्रतिमालेख, संवत् १२६३, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

सं. (संवत्) १२६३ जेस्ट (ज्येष्ठ) वदि १३ गुरौ साधु पं. (पंडित) तंरगसिंह सुत जीतसिंह प्रणमति।

भावार्थ

संवत् १२६३ जेठ वदी त्रयोदशी गुरूवार को शाह पण्डित तरंगसिंह का पुत्र जीतसिंह (प्रतिष्ठा कराकर) प्रणाम करता है।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा ऊन के ग्वालेश्वर मन्दिर के गर्भालय में शान्तिनाथ प्रतिमा की दायीं ओर विराजमान है। इसकी अवगाहना भी अनुमानतः आठ फुट है। पादपीठ पर चिह्न स्वरूप मत्स्य तथा उक्त मूलपाठ अंकित है। तीनों प्रतिमाओं के दोनों पार्श्वों में चँमरवाही देव सेवारत खड़े दर्शाये गये हैं।

संदर्भ

1. भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ, भाग 3, पृष्ठ 314 से साभार

अभिलेख - २४५

पनागर, अर्हत् प्रतिमालेख, संवत् १२६४, भाषा–संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् १२६४ वर्षे वैसाष (वैशाख) सुदि १० रवौ गृहपति साधु आसड़खेता .... (सुत) उसील पिता–पुत्र प्रणमंति नित्यं।।

भावार्थ

गृहपति वंश के शाह आसड़खेता उसकी पत्नि और पुत्र उसील संवत् १२६४ वें वर्ष में वैशाख सुदी नवमी रविवार को (प्रतिष्ठा कराकर) नित्य प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा होसंगाबाद जिले के पनागर ग्राम से प्राप्त हुई थी। इसकी अवगाहना २२ इंच और चौड़ाई १६ इंच है। पालिश काला, चिकना और चमकदार है।

संदर्भ

1. खंडहरों का वैभव : पृ0 30 से साभार।

अभिलेख - २४६

भोपाल, आदिनाथ प्रतिमालेख, संवत् १२६४, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. संवत् १२६४ वैसाष (वैशाख) सुदि १२ बुधे जैसवालान्वे (वये) साधु बाल्ह भार्या सल्हा सुत

२. जाल्हण माल्ह भार्या रत्नाकई सूल्हण भार्या वीना किन्न भार्या रन्नी अल्हण भा

३. र्या मासइ सुत रन्नसा भार्या नवला साहु प्रणमति (प्रणमंति) नित्यं।

भावार्थ

जैसवाल अन्वय के शाह वाल्ह, उनकी पत्नी सलहा, पुत्र जाल्हण, माल्ह उनकी पत्नी रत्नाकई, सूल्हण और उनकी पत्नी वीणा, किन्न और उनकी पत्नी रन्नी, अल्हण और उनकी पत्नी मासउं, उनका पुत्र रत्नसा पुत्रवधू नवला संवत् १२६४ वैशाख सुदी द्वादशी बुधवार को प्रतिष्ठा कराकर नित्य प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा लाल देशी पाषाण की ओपदार पालिश से युक्त है। इसकी अवगाहना अनुमानतः एक हाथ है। पद्मासन मुद्रा में निर्मित इस प्रतिमा की आसन पर चिह्न अंकित नहीं हैं। कंधों पर लहराते केश गुच्छकों से प्रतिमा आदिनाथ तीर्थंकर के नाम से प्रसिद्ध है। यह प्रतिमा सुल्तानिया रोड पर झिरनों के मंदिर भोपाल में स्थित नये मन्दिर में विराजमान है। चिह्न के अभाव में लहराती केश राशि से कुण्डलपुर की महावीर प्रतिमा को पुरातत्त्वविदों ने आदिनाथ प्रतिमा कहा है। अतः यह प्रतिमा भी आदिनाथ की ही प्रमाणित होती है।

संदर्भ

1. श्री गुलाबचंद आदित्य के सौजन्य से सम्पादक द्वारा पठित।

अभिलेख - २४७

पनागर, अर्हत्, प्रतिमालेख, संवत् १२६८, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् १२६८ वर्षे वैसाष (वैशाख) सुदि १० रवौ आचार्य स्री (श्री) स्रु (श्रु) तकीर्त्ति गुरूपदेसे (शे) साह पाल्ह भार्या आमिलि ललिया सुत साधु थीरु भार्या वल्हा सुत महिपति धणपति प्रणमंति नित्यं।।

भावार्थ

आचार्य श्री श्रुतकीर्ति गुरू के उपदेश से शाह पाल्ह, उनकी पत्नियाँ आमिलि और ललिया, इनमें ललिया का पुत्र शाह थीरू उसकी पत्नी वल्हा, पुत्र मतिपति और धणपति संवत् १२६८ वें वर्ष में वैशाख सुदी दसवीं रविवार के दिन प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराकर नित्य प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा परिचय

होसंगाबाद जिले में दूधू नदी के किनारे स्थित पनागर ग्राम से प्राप्त यह प्रतिमा १६ इंच अवगाहना और २० इंच चौड़ाई में निर्मित है। इसकी पादपीठ पर उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण है।

संदर्भ

1 खण्डहरो का वैभव : पृ0 30 से साभार।

अभिलेख - २४८

होशंगाबाद, धर्मनाथ प्रतिमालेख, संवत् १२७१, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. संवत् १२७१ जेस्ट (ज्येष्ठ) वदि ५ स्री (श्री) मूलसंघे वाटकागणे (वलात्कारगणे) आचार्य स्री (श्री)

२. पद्मकीर्त्तिः ।। गगराडान्वये (गर्गराटान्वये) साधु राल्हा भार्या
३. गाविति सुत साधु रामदेव साधु चोहित्थ साधु दाल्हु भार्या सल
४. सु सुत वामदेव प्रणमंति नित्यं।।

भावार्थ

संवत् १२७१ जेठ वदी ५ (पंचमी) के दिन श्री मूलसंघ वलात्कारगण के आचार्य श्री पद्मकीर्त्ति (के उपदेश से) गर्गराटान्वय के शाह राल्ह, उनकी पत्नी गाविति पुत्र शाह रामदेव, शाह चोहित्थ, शाह दाल्हु और उनकी पत्नी सलसु तथा पुत्र वामदेव (ये सभी प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराकर) प्रतिदिन प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा मध्यप्रदेश के होसंगाबाद जिले से नागपुर संग्रहालय में संग्रहालय क्रमांक ब–१५ (ब–२६) से संगृहीत संग्रहालय कक्ष के पार्श्ववर्ती मैदान में विराजमान हैं। बाहर अन्य प्रतिमाएँ भी वहाँ हैं। ये काले संगमरमर पाषाण से पद्मासन मुद्रा में अंकित है। सभी के गले से ऊपर का भाग नहीं है। श्रीवत्स यथास्थान अंकित है। धर्मचक्र भी प्रदर्शित है।

प्रस्तुत मूलपाठ धर्मनाथ प्रतिमा की आसन पर चार पंक्ति में उत्कीर्ण है। चिह्न स्वरूप आसन पर वज्रदण्ड भी अंकित है। इसकी अवगाहना ५ फुट ८ इंच है। पीछे भामण्डल दर्शाया गया है। केश गुच्छकों में प्रदर्शित है। कान स्कन्ध भाग का स्पर्श कर रहे हैं। बायाँ पैर कम और दायाँ पैर अधिक भग्न है। हाथ भी खण्डित हैं। दोनों ओर एक–एक चँमरधारी देव है। प्रतिमा का निर्माण काले संगमरमर–पाषाण से हुआ है।

संदर्भ

सम्पादक द्वारा पठित

अभिलेख - २४९

छतरपुर, ऋषभनाथ प्रतिमालेख, संवत् १२७२, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् १२७२ वर्षे माघसुदि ५ श्री मूलसंघ (घे) सरस्वतीगच्छ (गच्छे) भट्टारक श्री धर्मचंद जी सहनिका वीसलचंद्र भारीनाथ सातासारग उरण (ण) थता श्री राजराव हमीरदेव।

भावार्थ

श्री रावराजा हमीरदेव के संभवतः शासनकाल संवत् १२७२ वें वर्ष में माघ सुदी पंचमी को मूलसंघ में सरस्वतीगच्छ के श्री धर्मचन्द्र, सहनिका, पीसलचन्द्र, भारीनाथ, सातासारग, और उरणथता भट्टारकों ने संभवतः इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई।

प्रतिमा परिचय

पद्मासनस्थ यह ऋषभनाथ की प्रतिमा श्री दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर छतरपुर मध्यप्रदेश में विराजमान है। इसकी ऊँचाई २६ इंच और चौड़ाई २८ इंच हैं। श्वेत पाषाण (संभवतः संगमरमर पाषाण) से निर्मित है।

संदर्भ

1. जिनमूर्ति प्रशस्तिलेख: ले. क्र० 4 पृ० 26 से साभार।

अभिलेख - २५०

छतरपुर, पार्श्वनाथ प्रतिमालेख, संवत् १२७२, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् १२७२ वर्षे माघ सुदि ५ श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे भट्टारक श्री धर्मचन्द्र जी छत्रेवासी श्री पाहल राजवंश नासदागरु पार्श्वनाथ श्रीराज।

भावार्थ

संवत् १२७२ वें वर्ष में माघ सुदी पंचमी को श्रीमूलसंघ में सरस्वतीगच्छ के भट्टारक श्री धर्मचन्द्र जी के संभवतः उपदेश से छतरपुर निवासी पाहल राजवंश के नासदागरु ने पार्श्वनाथ प्रतिमा की संभवतः प्रतिष्ठा कराई।

व्याख्या

छत्रेवासी – इस लेख में छत्र शब्द संभवतः छत्रपुर का बोधक संक्षिप्त नाम है। वर्तमान में इसे छतरपुर के नाम से जाना जाता है। जिनमूर्ति प्रशस्तिलेख पुस्तक के लेख क्रमांक १००, १०१, १०२ संवत् १८३६ के तथा संवत् १८६६ के ले. क्र १३१ संवत् १६०० के लेख क्र. १३२ प्रतिमालेखों में छतरपुर का प्राचीन नाम छत्रपुर था जो संवत् १६०० तक व्यवहृत होता रहा। इसके पश्चात इसे छतरपुर कहा जाने लगा।

प्रतिमा परिचय

छतरपुर के श्री दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर में विराजमान पद्मासनस्थ यह प्रतिमा श्वेत पाषाण (संभवतः श्वेत संगमरमर पाषाण) से निर्मित है। इसकी अवगाहना ४० इंच और चौड़ाई २७ इंच है।

संदर्भ

1. जिनमूर्ति प्रशस्तिलेखः ले. क्र0 5 पृ0 26 से साभार।

अभिलेख - २५१

छतरपुर, नेमिनाथ प्रतिमालेख, संवत् १२७२, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

सं. (संवत्) १२७२ वर्षे माघ सुदि ५ श्री मूलसंघ (घे) सरस्वतीगच्छे भट्टारक श्री धर्मचंद्र शाह (साधु) वीसलचंद्र विसालाहरण करण शुभार श्रीरजा।

भावार्थ

संवत् १२७२ वें वर्ष में माघ सुदी पंचमी को श्रीमूलसंघ–सरस्वतीगच्छ के भट्टारक श्री धर्मचन्द्र के संभवतः उपदेश से शाह विशालचन्द्र ने असाताहारी शुभकारी श्री (नेमिनाथ प्रतिमा) जी की प्रतिष्ठा कराई।

प्रतिमा परिचय

पद्मासनस्थ यह प्रतिमा छतरपुर के श्री दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर में विराजमान है। इसकी आसन पर उक्त मूलपाठ और चिह्न स्वरूप शंख उत्कीर्ण है। इसका निर्माण श्वेत पाषाण (संभवतः श्वेत संगमरमर) से ३४ इंच अवगाहना में हुआ है। चौड़ाई २६ इंच है।

संदर्भ

1. जिनमूर्ति प्रशस्तिलेखः ले. क्र0 6 पृ0 26 से साभार।

अभिलेख - २५२

छतरपुर, अजितनाथ प्रतिमालेख, संवत् १२७२, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

सं. (संवत्) १२७२ वर्षे माघ सुदि ५ श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे भट्टारक श्री धर्मचंद्र शाह वलोवसद चंद्रवरसहागमरणार्थ (रक्षर्थ) श्री राजराव हमीरदेव वसत।

भावार्थ

संवत् १२७२ वें वर्ष में माघ सुदी पंचमी को श्रीमूलसंघ–सरस्वतीगच्छ के भट्टारक श्री धर्मचन्द्र (के उपदेश से) शाह बलोवसद और चन्द्रवरस ने आगम–रक्षार्थ रावराजा हमीरदेव की वस्ती में (इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई)।

प्रतिमा परिचय

यह अजितनाथ तीर्थंकर की प्रतिमा छतरपुर के जोधाबाई श्री दिगम्बर जैन मंदिर में विराजमान है। इसका निर्माण श्वेत पाषाण (संभवतः श्वेत संगमरमर पाषाण से पद्मासन मुद्रा में हुआ है। इसकी अवगाहना ३६ इंच और चौड़ाई २७ इंच हैं। आसन पर चिह्न स्वरूप हाथी अंकित है।

संदर्भ

1. जिनमूर्ति प्रशस्तिलेखः ले. क्र0 268 पृ0 60 से साभार।

अभिलेख - २५३

छतरपुर, अजितनाथ प्रतिमा लेख, संवत् १२७२, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

सं. (संवत्) १२७२ माघ सुदि १ (५) मूलसंघे सरस्वतीगच्छे सिंघई (भट्टरक) श्री ध र्मचंद्र शाह थांस जी सत्यन्त (सत्यंत) सुलारी जी सहाय करें।

पाठ टिप्पणी

इस पाठ में सिधई, सहाय करें जैसे पद प्रयोग मूलपाठ में विचारणीय हैं।

भावार्थ

संवत् १२७२ माघ सुदी पंचमी को मूलसंघ सरस्वतीगच्छ के भट्टारक धर्मचन्द्र के उपदेश से शाह सत्यना जी और सुलारी जी ने प्रतिष्ठा कराई। ईश्वर इनकी सहायता करें।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा छतरपुर के श्री दिगम्बर जैन नया मन्दिर में विराजमान है। इसका निर्माण पद्मासन मुद्रा में श्वेत पाषाण (संभवतः संगमरमर पाषाण) से ३३ इंच अवगाहना और २८ इंच चौड़ाई में हुआ है।

संदर्भ

1. जिनमूर्ति – प्रशस्तिलेखः ले. क्र0 291 पृ0 63 से साभार।

अभिलेख - २५४

सोनागिरि पार्श्वनाथ प्रतिमालेख, संवत् १२७२, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. संवत् १२७२ वरष (षे) माघ सुदि ११ श्री मूलसंघ (घे) सुर (सर) –

२. सतिगदेव (गच्छ) ....

३. ....

प्रतिमा परिचय

सोनागिरि चन्दप्रभ मन्दिर के समीप एक मन्दिर में यह प्रतिमा पद्मासन मुद्रा में विराजमान है। सिर पर नौ फण दर्शाये गये हैं। इससे प्रतिमा पार्श्वनाथ की प्रतीत होती है। आसन पर अंकित चिह्न स्वरूप उल्टा स्वस्तिक प्रतिमा सुपार्श्वनाथ की घोषित करता है। संभवतः स्वस्तिक भूल से बन जाने से उसे उल्टा स्वरूप दिया गया है। यह प्रतिमा भट्टारक धर्मचन्द्र द्वारा संवत् १२७२ में प्रतिष्ठित कराई गई थी। संभवतः वे मुख्यतः पार्श्वनाथ के उपासक थे। प्रतिमा का निर्माण श्वेत संगमरमर पाषाण से हुआ है।

संदर्भ

1. सम्पादक द्वारा पठित

अभिलेख - २५५

होसंगाबाद, चन्द्रप्रभ प्रतिमालेख, संवत् १२७६, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. संवत् १२७६ फाल् (गुन) सुदि ८ स (श) नौ स्री (श्री) मूलसंघे वलाक्कारगणे (बलात्कारगणे) स्री (श्री) पद्मकीर्त्ति (:) ।। गगगहान्वये (गर्गराडान्वये) साधु राल्हा भार्या गोविति सुत रामदेव साधु सोमदेव

२. साधु चोहिथ साधु धागदेव साधु आमदेव भार्या क – (र्मा) साधु दाल्हु भार्या सलषु जाऊ साधु षाहड सुत मंगदेव भार्या षाभू सेहूदेव प्रणमंति नित्यं।। स्री (श्री) ....

भावार्थ

संवत् १२७६ फाल्गुन सुदि अष्टमी शनिवार को मूलसंघ– वलात्कारगण के श्री पद्मकीर्त्ति संभवतः प्रतिष्ठाचार्य से गर्गराटान्वय के शाह राल्हा, उसकी पत्नी गोविति, पुत्र रामदेव, शाह सोमदेव, शाह चोहिथ, शाह धागदेव, शाह आमदेव उसकी पत्नी कर्मा, शाह दाल्हु, उसकी पत्नी सलसू, उससे उत्पन्न पुत्र, शाह शाहड, उसका पुत्र मंगदेव पुत्रवधु साभू और सेहूदेव (प्रतिष्ठा कराकर) नित्य प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा परिचय

होसंगाबाद मध्यप्रदेश से प्राप्त यह चन्द्रप्रभ प्रतिमा नागपुर संग्रहालय में क्रमांक ब–१२ (ब–१०) से संगृहीत है। पद्मासन मुद्रा में इस प्रतिमा की अवगाहना २ फुट ११ इंच है। इसका निर्माण में काला संगमरमर पाषाण व्यवहत हुआ है। प्रतिमा सिर विहीन है। हाथ और पैरों से भी खण्डित है। श्रीवत्स चिह्न यथास्थान अंकित है। पादपीठ के मध्य में चिह्न स्वरूप अर्द्धचन्द्र अंकित है। इसकी दोनों ओर दो पंक्ति में उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण है।

पाठ टिप्पणी

मूलपाठ में श के स्थान में 'ष' का व्यवहार हुआ है। नागपुर संग्रहालय से प्रकाशित

लेख सूची में इसका संवत् १२७८ बताया गया है किन्तु अभिलेख में वह १२७६ समझ में आता है।

संदर्भ

1. सम्पादक द्वारा पठित।

अभिलेख - २५६

अहार, मुनिसुब्रतनाथ प्रतिमालेख, संवत् १२८८, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. सं० (संवत्) १२८८ माघ सुदि १३ गुरौ पुष्य नक्षत्रे
२. गोलापूर्व्वान – (वये) साधु रासल सुत सादु (।), ग (गृ) ह – पति वंशे (वंशे) साधु भामदेव तीगरमल। सुत पं. (पंडित) स्री
३. मालधन मार्या कंपा सतु (सुत) विकत सुत साबु सीलण हाणरस्तत्पुत्र जनपति लाल चाहड
४. वामदेव तथा पाल्हू पुत्र नागदेव पणमंति (।) चाहड (चारउ) प्रणमंति।
५. नेत्यं (नित्यं) मदनसागरतिलकं।

भावार्थ

गोलापूर्व – अन्वय के शाह रासल के पुत्र सादु, गृहपति वंश के शाह भामदेव, तीगरमल के पुत्र पंडित श्री मालधन, उनकी पत्नी कम्पा पुत्र विकत, पौत्र शाह शीलण, हाणर के पुत्र जनपति, लाल, चाहड, वामदेव तथा पाल्हु का पुत्र नागदेव चारों (परिवार) इस प्रतिमा की संवत् १२८८ माघ सुदी त्रयोदशी पुष्य नक्षत्र में प्रतिष्ठा कराकर नित्य वन्दना करते हैं।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ४८ से संगृहीत हैं। इसका निर्माण देशी काले–नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में हुआ है। प्रतिमा का सिर नहीं है। हथेलियों से रहित कुहनियों के नीचे के हाथ शेष हैं। बायाँ पैर खण्डित है। आसन की लम्बाई १६ इंच है। चिह्न स्वरूप कछुआ तथा पांच पंक्ति में उक्त मूलपाठ आसन पर उत्कीर्ण है।

विशेष

इस मूलपाठ में प्रणमंति के बाद पुनः चारउ प्रणमंति नित्यं मदनसागर तिलकं

उत्कीर्ण किया गया है। प्रथम प्रणमति का संबंध इसी प्रतिमा से है। 'मदनसागरतिलक' पद शान्तिनाथ प्रतिमा के लिए व्यवहृत हुआ है।

इस प्रतिमा प्रतिष्ठा का संवत् पं. बलभद्र जैन ने १५८८ बताया है।[1] किन्तु प्रतिमालेख की लिपि के आधार से यह १२८८ का ज्ञात होता है। संवत् सूचक सैकड़ा और हजार सूचक दो अंक मिले हुए हैं। इनके मिले हुए होने से पढ़ने में भ्रन्ति उत्पन्न होती हैं। इसका संवत् न ५८८ हैं और न १५८८। मदनसागर का नामोलेख इसके संवत् १२८८ के होने की सूचना देता है।

संदर्भ

1. *भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ, भाग 3, पृ0 127 से साभार*
2. *अहार क्षेत्र के अभिलेखः ले.सं. 11/338 पृ0 157 से साभार*

अभिलेख - २५७

उज्जैन अर्हत प्रतिमालेख, संवत् १२६६, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् १२६६ चैत्र सुदि ६ खंडिलवालान्वये दिनौ सनि (शनि) आराम (वासरे) सा० (साधु) कर्ला भार्या गौरा स्री सागररुद्र भार्या प्रणम (मं) ति नित्यं।

भावार्थ

खण्डेलवाल अन्वय के शाह कर्ला और उसकी पत्नी गौरा तथा श्री सागर उसकी पत्नी रुद्र संवत् १२६६ चैत्र सुदी नौवीदिन शनिवार को प्रतिष्ठा कराकर ये दोनों सपत्नी नित्य प्रणाम करती हैं।

प्रतिमा परिचय

डॉ० कैलाशचन्द्र जैन उज्जैन के अनुसार यह प्रतिमा विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन में संगृहीत है।

संदर्भ

1. *डॉ0 कैलाशचन्द्र जैन उज्जैन से साभार*

अभिलेख - २५८

बदनावर, आदिनाथ प्रतिमालेख, संवत् १३०८, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् १३०८ माघ सुदि ६ श्री वागडसंघ (घे) आचार्य श्री कल्याणकीर्त्ति बन्धेन वध ेरवाल सा० (साधुबाहर) सुत कोका संघा (साधु) कमलसिरि सुत षामंत्रदा (तद) भार्या भागदा द्वितीय भार्या काकु प्रणम (मं) ति नित्यं।

भावार्थ

संवत् १३०८ माघ सुदी नौवीं को श्री बागडसंघ के आचार्य कल्याणकीर्त्ति के उपदेश से बघेरवाल शाह बाहर, उसका पुत्र कोका, शाह कमलश्री, उसका पुत्र खामा, उसकी पत्नी भागदा और दूसरी पत्नी काकु प्रतिष्ठा कराकर नित्य प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा संगमरमर पाषाण से निर्मित है। प्रतिमा खण्डित हैं। प्रतिमा के केवल चरण शेष है। १ फुट ६ इंच x १० इंच आकार में पद्मासन मुद्रा में अंकित इस प्रतिमा की आसन पर वृषभ तथा उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण हैं। यह प्रतिमा वंदनावर से प्राप्त करके जयसिंहपुरा दिगम्बर जैन पुरातत्तव संग्रहालय उज्जैन में मूर्ति क्रमांक १७ से संगृहीत है।

संदर्भ

डॉ0 कैलाशचन्द्र जैन उज्जैन के शोध लेख "मालवा में जैनपुरातत्त्व तथा उसका केन्द्र" से साभार।
तथा
अनेकान्तः वर्ष 25 किरण 9 से साभार

अभिलेख - २५९

वदनावर, पद्मप्रभ प्रतिमालेख, संवत् १३०८, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् १३०८ वर्षे माघ सुदि ६ लार (ड) वागड एवं (संघे) श्री कल्याणकीर्त्ति सिद्धमेन

(सिद्धसेन) सुलसा द्वितीय कार्दऊ यंत्रा (ता) वतामत्ति (प्रणमति) नित्यं।

भावार्थ

संवत् १३०८ माघसुदी नौवी को लाडवागड संघ के कल्याणकीर्त्ति के संभवतः उपदेश से सिद्धसेन, उसकी संभवतः पत्नी सुलसा और कार्दऊ तथा संभवतः उसकी पत्नी यंता (प्रतिष्ठा कराकर) नित्य प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा परिचय

बदनावर से प्राप्त पद्मासन में यह प्रतिमा संगमरमर पाषाण से निर्मित है। इसकी अवगाहना ६ फुट १ इंच तथा चौड़ाई १० इंच हैं। आसन पर चिह्न स्वरूप कमल तथा उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण हैं। सम्प्रति यह प्रतिमा जयसिंह पुरा दिगम्बर जैन पुरातत्व संग्रहालय उज्जैन में मूर्ति क्रमांक २१ से संगृहीत है।

संदर्भ

डॉ0 कैलाशचन्द्र जैन उज्जैन के शोध लेख "मालवा में जैनपुरातत्त्व तथा उसका केन्द्र" से साभार।
तथा
अनेकान्तः वर्ष 25 किरण 9 से साभार

अभिलेख - २६०

बदनावर, अर्हत, प्रतिमालेख, संवत् १३०८, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् १३०८ वर्षे माघ सुदि ६ .... (लाडबागडसंघे) सा० (साधु) बदवला भार्या कामाद मदनकेनि पदेसा पनवेषवर्णे सुत जस्सो पुत्र परमति सा० (साधु) वेदान्त (वंदांत) प्रणम (मं) ति।

भावार्थ

संवत् १३०८ माघ सुदी नौवी को लाडवागड संघ के शाह बदवला, उसकी पत्नी कामा, मदनकेनि उसकी पत्नी पदेसा, पनवे उसकी पत्नी ववर्णे पुत्र यशो पौत्र परमति, शाह वेदान्त प्रतिष्ठा कराकर प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा परिचय

प्रतिमा का केवल पादस्थल वदनावर से प्राप्त हुआ है। सम्प्रति यह जयसिंहपुरा दिगम्बर जैन पुरातत्त्व संग्रहालय उज्जैन मूर्ति क्रमांक ११६ से संगृहीत है। संगमरमर पाषाण से निर्मित यह अवशेष १० फुट २ इंच अवगाहना में है।

संदर्भ

1. *डॉ० कैलाशचन्द्र जैन उज्जैन के "मालवा में जैन पुरातत्त्व तथा उसका केन्द्र" शीर्षक लेख से साभार। तथा अनेकान्त : वर्ष 25 किरण 4 से साभार*

अभिलेख - २६१

बदनावर, अर्हत प्रतिमालेख, संवत् १३०८, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् १३०८ वर्षे माघ सुदि ६ .... श्री वर्द्धनापुरान्वय (वर्द्धमानपुरान्वय) पंडित रतनु भार्या साधु सुत साइम भार्या कोडे पुत्र सा० (साधु) असि भार्या हेन्तु नित्यं प्रणम (मं) ति।

भावार्थ

संवत् १३०८ माघ सुदी नौवीं को श्री वर्द्धमानपुरान्वय के पण्डित रतनु और उसकी पत्नी, पुत्र शाह साइग और उसकी पत्नी कोडे, पुत्र शाह असि और पुत्र वधु हेन्तु प्रतिष्ठा कराकर नित्य प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा परिचय

वदन्तवर से प्राप्त और जयसिंहपुरा दिगम्बर जैन पुरातत्त्व संग्रहालय उज्जैन में मूर्ति क्रमांक १२७ से संगृहीत पद्मासन मुद्रा में निर्मित इस प्रतिमा का केवल पादस्थल शेष है। आसन पर उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण है। प्रतिमा का निर्माण संगमरमर पाषाण से हुआ है।

संदर्भ

1. *डॉ० कैलाशचन्द्र जैन उज्जैन के "मालवा में जैन पुरातत्तव तथा उसका केन्द्र" शीर्षक लेख अनेकान्त वर्ष 25, किरण 4 से साभार*

अभिलेख - २६२

वदनावर, महावीर प्रतिमालेख, संवत् १३०८, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् १३०८ माघ वदि ६ प्रागवाटान्वाये सहा (साह) सलका भार्या पट्टणि पुत्र साबू (साधु) हाल (लू) प्रणमति नित्यं।

भावार्थ

संवत् १३०८ माघ वदी नौवीं को प्रागवाटान्वय के शाह सलका, उसकी पत्नी पट्टणी, पुत्र शाह हालू प्रतिष्ठा कराकर नित्य प्रणाम करता है।

प्रतिमा परिचय

वदनावर से प्राप्त यह प्रतिमा जयसिंहपुरा दिगम्बर जैन पुरातत्त्व संग्रहालय उज्जैन में मूर्ति क्रमांक १२६ से संगृहीत है। इस प्रतिमा की आसन पर चिह्न स्वरूप सिंह तथा उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण है। प्रतिमा का निर्माण संगमरमर पाषाण से हुआ है।

संदर्भ

1 डॉ कैलाशचन्द्र जैन उज्जैन के "मालवा में जैन पुरातत्त्व तथा उसका केन्द्र" शीर्षक लेख अनेकान्तः वर्ष 25 किरण 4 से साभार

अभिलेख - २६३

वदनावर, महावीर प्रतिमालेख, संवत् १३०८, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् १३०८ वर्षे माघ सुदि ६ रविका (वा) रे बागडान्वय आचार्य स्री (श्री) कल्याणकीर्त्ति पौराचार्यन्वय सधु गणिरह सुत वासदेव भार्य्या ललांत सउटचन्ना गृहेण चिदचंद्र प्रणम (मं) ति नित्यं।

भावार्थ

संवत् १३०८ माघ सुदी ६ रविवार को वागडान्वय के आचार्य श्री कल्याण कीर्ति नगर के आचार्य थे। उनके अन्वय के शाह गणीनह के पुत्र वासदेव उसकी पत्नी ललान्त, राउच्छन्ना गृहस्थ और चिदचन्द्र संभवतः आचार्य कल्याणकीर्ति से प्रतिष्ठा कराकर इस प्रतिमा को प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा परिचय

वदनावर से प्राप्त यह प्रतिमा जयसिंहपुरा दिगम्बर जैन पुरातत्तव संग्रहालय उज्जैन द्वारा मूर्ति क्रमांक १३० से संगृहीत की गयी है। इसका निर्माण संगमरमर पाषाण से पद्मासन मुद्रा में हुआ है। इसकी आसन पर चिह्न स्वरूप सिंह तथा उसकी दोनों ओर उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण किया गया है।

संदर्भ

1 डॉ0 कैलाशचन्द्र जैन उज्जैन के "मालवा मे जैन पुरातत्त्व तथा उसका केन्द्र" शीर्षक लेख अनेकान्तः वर्ष 25, किरण 4 से साभार

अभिलेख - २६४

वदनावर, अर्हत् प्रतिमालेख, सवत् १३०८, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् १३०८ वर्षे माघ सुदि ६ रवौ स्री (श्री) लाटवागटसंघे भट्टारक स्री (श्री) कल्याणकीर्त्ति प्रागवाटवान्वय सा० (साधु) सोडले सुत नरदेव भार्य्या खमगिरि।

भावार्थ

संवत् १३०८ माघ सुदी ६ रविवार को लाटवागटसंघ के भट्टारक श्री कल्याणकीर्ति के संभवतः उपदेश से प्रागवाट कुल के शाह सोडले के पुत्र नरदेव पुत्रवधू खमगिरि द्वारा इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई गई।

प्रतिमा परिचय

वदनावर से प्राप्त यह प्रतिमा जयसिंहपुरा दिगम्बर जैन पुरातत्त्व संग्रहालय उज्जैन द्वारा मूर्ति क्रमांक १६३ से संगृहीत की गयी है। इसका निर्माण श्वेत संगमरमर पाषाण

से पद्मासन मुद्रा में हुआ है। आसन पर उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण है।

संदर्भ

1 डॉ0 कैलाशचन्द्र जैन उज्जैन के "मालवा में जैन पुरातत्त्व तथा उसका केन्द्र" शीर्षक लेख अनेकान्तः वर्ष 25, किरण 4 से साभार

अभिलेख : २६५

वदनावर, अर्हत् प्रतिमालेख संवत् १३०८, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् १३०८ वर्षे माघ सुदि ६ .... (रविवासरे) वागडान्वय पंडित स्री (श्री) भानुकीर्त्ति पौरवालान्वय सा० (साधु) कान भार्या सात (सांता) सा० (साधु) चाहो (तहो) भार्या पदिमनी पुत्र सामा (सोमा) चांद्र (चांद्रा) पुत्र वामविच भार्या चाहिणी खेम्मन सुत हरिचन्द्र (हरिचंद्र) प्रणम (मं) ति नित्यं।

भावार्थ

वागडसघ के पंडित श्री भानुकीर्त्ति के संभवतः उपदेश से पौरवालान्वय के शाह कान, उसकी पत्नी शान्ता, शाह चहो और उसकी पत्नी पदिमनी पुत्र सोमा, पुत्रवधू चान्द्रा, पौत्र वामविच पौत्रवधू चाहिणी, खेम्मन और उसका पुत्र हरिचन्द्र ये सभी सवत् १३०८ माघ सुदी ६ रविवार को इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराकर नित्य प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा परिचय

वदनावर से प्राप्त यह प्रतिमा जयसिंहपुरा दिगम्बर जैन पुरातत्त्व संग्रहालय उज्जैन द्वारा मूर्ति क्रमांक १६४ से संगृहीत हैं। इसका निर्माण श्वेत संगमरमर पाषाण से पद्मासन मुद्रा में हुआ है। अब केवल पादस्थल शेष है। आसन पर उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण है।

संदर्भ

1. डॉ0 कैलाशचंद्र जैन उज्जैन के "मालवा मे जैन पुरातत्त्व तथा उसका केन्द्र" शीर्षक लेख अनेकान्तः वर्ष 25, किरण 4 से साभार

अभिलेख - २६६

वदनावर, आदिनाथ प्रतिमालेख, संवत् १३०८, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् १३०८ (९) वर्ष (वर्षे) माघ सुदि ६ लाटवागटसंघे कल्याणकीर्त्ति स्री (श्री) पोरवाल घैन्वय्र (पौरवालान्वये) जैसारे।

पाठ-टिप्पणी

इस लेख में उल्लिखित मास, पक्ष और तिथि से संवत् १३०८ प्रतीत होता है।

भावार्थ

संवत् १३०८ माघ सुदी नौंवी को लाटवागडसंघ के कल्याणकीर्त्ति के संभवतः उपदेश से पोरवालान्वय के जैसारे द्वारा प्रतिष्ठा कराई गई।

प्रतिमा परिचय

वदनावर से प्राप्त यह प्रतिमा जयसिंहपुरा दिगम्बर जैन पुरातत्त्व संग्रहालय उज्जैन द्वारा मुर्ति क्रमांक २२७ से संगृहीत की गई है। इस प्रतिमा का केवल पादस्थल शेष है। आसन पर चिह्न स्वरूप वृषभ तथा उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण है। इसका निर्माण श्वेत संगमरमर पाषाण से पद्मासन मुद्रा में हुआ है।

संदर्भ

1 वदनावर के सभी प्रतिमालेख डॉ० कैलाशचन्द्र जेन के शोध लेख "मालवा में जैनपुरातत्त्व तथा उसका केन्द्र" से साभार ग्रहण किये गये हैं। इनका पंक्ति के अनुसार प्रकाशन अपेक्षित है, जिसमें प्रतिमा का पूर्ण परिचय भी प्रकाशित हो। डॉ० कैलाशचन्द्र जैन उज्जैन का यह लेख अभिनन्दनीय है।

अभिलेख - २९७

छतरपुर, यंत्रलेख, संवत् १३१०, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् १३१० माह (माघ) सुदी (सुदि) ५ गुरौ मूलकलंकणेरनद्याम्नाये (मूलसंघे अकलंकयोरनद्याम्नाये) वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्य्याम्नायेन भट्टारक स्री (श्री) नरेंद्रकीर्त्ति तदाम्नाये खंडेलवालान्ये (न्वये) सादगोत्रे संसक पाटणी गोत्रे संपतदास प्रतिष्ठाप्यां (यां) अजमेर गोत्रे श्रावक स्री (श्री) नित्यं प्रणम (मं) ति।

भावार्थ

संवत् १३१० माघ सुदी पंचमी गुरुवार को मूलसंघ में आज तक अकलंक वलात्कारगण सरस्वतीगच्छ कुंदकुंदाचार्य आम्नाय के भट्टारक श्री नरेन्द्रकीर्त्ति की आम्नाय के खण्डेलवाल अन्वय में सादगोत्र के संसक और पाटनीगोत्र के संपतदास तथा अजमेरा गोत्र के श्रावक प्रतिष्ठा कराकर नित्य प्रणाम करते हैं।

यंत्रा परिचय

यह यंत्र पीतल धातु से वर्तुलाकार निर्मित है। सम्प्रति छतरपुर के श्री दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर में विराजमान है।

संदर्भ

1 जिनमूर्ति प्रशस्तिलेखः पृ0 68 से साभार

अभिलेख - २९८

घुसई, शिलालेख, संवत् १३१३, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

ग्वालियर पुरातत्त्व रिपार्ट ईसवीं १९१६–१९१७ में तथा मध्यभारत के प्राचीन स्मारकों की सूची क्रमांक ५५५ से मन्दसौर जिले के घुसई ग्राम से प्राप्त एक जैन मन्दिर प्रस्तरलेख का उल्लेख किया गया है। जिसमें सवंत् १३१३ है।

संदर्भ

1. ग्वालियर पुरातत्त्व रिपोर्ट, ई0 1916–1917 से साभार

अभिलेख - २६९

नरवर, अर्हत् अतिमालेख, संवत् १३१६, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

सं. (संवत्) १३१६ ज्येस्ट (ज्येष्ठ) वदि ५ सोमे।

भावार्थ

संवत् १३१६ जेठ वदी पंचमी सोमवार को इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा हुई।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा सफेद संगमरमर पाषाण से निर्मित है। नरवर किले में यह अखण्डित प्रतिमा है। इसकी आसन पर एक पंक्ति में उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण है।

संदर्भ

1. ग्वालियर पुरातत्त्व रिपोर्ट संवत् 1982 में क्रमांक 4 से इस प्रतिमा का उल्लेख किया गया है।
2. पं. परमानन्द शास्त्री, मध्यभारत का जैन पुरातत्त्व: अनेकान्त: वर्ष 19 किरण 1–2, पृष्ठ 69 से साभार

अभिलेख - २७०

भीमपुर वेदी प्रशस्ति, संवत् १३१६, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. ।।स्वस्ति।। भामंडलीयमिषतः सवितारमेषा संसेवितुं दिवस वासवनन्दिनीव। य स्यां शयोर्ल्लसति कुन्तलकान्तलेखा सश्रेयसे भवतु वः प्रभुरादि देवः ।।१।। उद्भासयन्ति यदु पर्युरगेंद्रचूला रत्नप्र –

२. दीपकलिकाः किल सप्त संख्याः। तत्वानि सप्तभुवनेकुमनांधकारे पार्श्वप्रभुर्भवतु सैष विभूतये वः।।२।। विघ्नं समानलव–णोदधिमेखलेय माकंपमानकुल शैल नितम्ब विम्बा।

यस्मिन्न

३. भूदवनि योषिदिदंमुदेवः श्रीवीर भर्त्तुरमराचलचालनंस्ता त्।।३ यस्याः प्रसादमधिगम्य जडाश यस्याप्याभाति सारस विशिष्ट निनाद्दसंग्या। श्री:शारदीन शिशिरद्युति कौमुदीव साहर्न्नि –

४. शं मनसि दीव्यतुशारदा मे।।४ स्याद्वादविद्यार्ण्णव पार्श्वणेंदवः कारुण्यरत्नांकुर रोहणाद्रयः। कीर्त्तिप्रभा धौतदिगम्वराश्रियः श्री मूलसंघे मुनयः पुनन्तु वः।।५ इतश्च।। यज्वपाल इति सार्थक –

५. नामा संवभवू वसुधाधववंशः। सर्व्वतः कलितकीर्त्तिरुज्वलश्छत्रमेक मसृजद्भुवनेयः।।६ कुलेकिलस्मिन्न जनिष्ट – वीर चूडामणिः श्री परमाडिराजः। शूरच्छिदामर्त्तिततारक–श्री स्कंदोपि नास्कंदति –

६. येन साम्यं।।७ तत्र नाकयुवति स्तनस्थली पत्रवल्लि – घनडंवरस्पृशि। याहडः प्रतिनरेन्द्र कानन त्योषदाव – शिखिमूर्त्तिरुद्ययौ।।८ तत्रस्वग्न (स्वर्ग्ग) पुरीपौर गौरवंस (श) मुपेयुषि। नृवर्म्मा वैरिमर्म्माविन्मही जानि :

७. रजायत (त्)।।६ यस्मिन्विलास कुशलेह्रदयाधिनाथे स्थानेकरक्षिपति सागरमेखलेयम्। उत्कंठकानपृथुकंपवती न जज्ञे प्रोढांगनेव न वमार विवर्णभावं।।१० अस्निासे (षे) दुषिस्वर्ग्ग श्रीसंसर्ग्गमहीभुजे। नंदत्या –

८. सलराजें दुर्मीलितारिमुखांवजः।।११ संग्रामेषु समग्र साहसरिपुक्षुण्णेभ कुंभस्थलामुक्तादंतुरिताकृपाण लतिका वाभाति हस्तेतव। श्रीमन्नासलभूप किंतु भवते जैतश्रिया प्रेषितः कदर्प्पोत्सवलेख –

६. एष कदलीपत्रे पवित्राक्षरः।।१२ त्वयावधूत भूपालगोरक्षेणारि योषिताम्।। लोचनेषुनृपासल्ल चक्रे लक्ष्मीर्न्निरंजना।।१३ अस्य प्रतापकनकैरमलैर्यशोभि र्मुक्ताफलैरखिल भूषणविभ्रमायां।। पादोनलक्षवि –

१०. षयक्षिति पक्ष्मलाक्ष्या भारतेपुरं नलपुरं तिलकायमानं।। १४ अथ च।। भ्रमरहितविकासः प्रीतिसच्चक्रवर्ग्गः परिचित धनपंकं नालसत्वंदधानः। जयतिभुवनलक्ष्मी विभ्रमागार भूमिः कमलवनसनाभिर्जै –

११. सवालान्ववायः।।१५ एतद्वंस (श) सुधाम्भोधिसुधादीधि तिरुद्ययौ। साढदेवः सुधी पूर्व्वम पूर्व्वमति वैभवः।। १६ अभीक मावंभुविभीरुवंधुर्य्यन्नाम कुर्वन्नपियऽव्यकार। सश्रीकुमारः सुकुमारवंधो पीयूषवर्षी तदपत्यमासीत्।।१७ मोमणस्तदनु –

१२. तस्यनन्दनश्चन्द्रनैरिवयशोभिरुज्जवलैः। पूर्व्वपुरुष वियोग – वेदिनीं मेदिनीं शशि मुखीमुपाचरत्।।१८ येतः श्रिताकेतक गर्मगौरं गिरः शरच्चंद्र सुधांस (शु) धर्म्माः। शीलश्रियामंगल–सौधमंगं राजल्लदेवी गृहिणी तदीया।।१६ वा –

१३. कुक्षि रोहणक्षोणि माणिक्यं द्योतते भुवि। जैत्रसिंह क्षमापाल समायुवतिभूषणं।।२० नानादानावसरविसरत्क त्पनावारिभिस्ते भूयः पंकां यदियमवनिं त्वद्यशः श्रीर्भ्रमित्वा। भेजेदेव प्रवरभवनं चंद्र पीयूष –

१४. कुण्डे धौतांह्नि (:) सन्मृगमिव महापंकितज्जैत्रसिंहः।।२१ नाकेशवत्केशवदेवनामा नित्यं

सुधर्म्माश्रयवर्द्धित श्रीः। यस्याः पिता साकुल धर्म्महर्म्म विराजति श्रीर्दयिता तदीया।।२२ सा सप्तगोत्रस्थिति सप्त भौमासा–

१५. ध्वा कृतीनसप्तसुतानसूत। महारथे श्री जिनधर्म्म–भानोराविभ्रतः सप्ततुरंगभंगीः।।२३ तेषामुदयसिंहाख्यो मुख्यः सिंह इवैधते। निर्मिद्य कलिकालेभंकीर्त्ति मुक्तावलीः किरन्।।२४ अद्यापि किं दहति दुरदरिद्रमुद्रा –

१६. विश्वं विभातिमयि दौस्थ्यवनैकदावे। किं दक्षिणस्तवन पाणिरितीवकोपा दुज्जाज्वलीत्युदयसिंह सशोण शोचिः।।२५ त्यक्त्वासागरमन्दि भालगरलं नित्यं ज्वलत्कोस्तुभ स्वाहा वल्लभमाविहायमुज योर्म्मध्यं मुरारेर

१७. पि। शश्वत्यापि (दयाति) शिलीमुखालिविषमादम्भो रूहाद्विम्यती धावत्यौदयसिंह मस्तदुरितं धामप्रति श्रीर्ध्रुवम्।।२६ श्रृंगारसिंह स्तदनुज्जिहीते श्रृंगाररत्नं सुविवेक भाजाम्। ततोनुभूराजति राजसिंहः कलानिधानंसु

१८. कृतैकतानः।। २७ तस्यानुजन्मा सुकृतार्थजन्मासन्मानसः खिल्लति विरसिंहः। यशः पराभूतसुधांशुधामा तस्यानुजो लक्षणसिंह नामा।। २८ आस्तेविपश्चिता रत्नं रत्नसिंह स्तदन्तिमः। लघुर्नयनसिंहाख्यस्तस्मा –

१९. दप्यलघुर्ग्गुणैः।। २९ साधोरूदयसिंहस्य सारिष्टाज (सारिष्टाब्ज) गुणिर्व्वधुः। चतुरश्चतुरम्भोधिविश्रु तान्सुषुवे सुतान्।।३० कर्म्मसिंहः पुरस्तेषा देदूसिंह स्ततोनुजः। तृतीयः पद्मसिंहाख्यो ध्र्म्मसिंहश्चतुर्थकः।। ३१ भार्येश्रं –

२०. गारसिंहस्य शोभालदुअडामिधे। प्रेयसीराजसिंहस्य पद्मापद्मालयाकृतिः।। ३२ नाम्ना विजयदेवीति वीरसिंहस्य गेहिनी। पवित्रचरितस्तस्याः क्षेमसिंहस्तनूरूहः।। ३३ अन्यदा धन्यधीः स्वान्ते जैनसिद्धान्त –

२१. पाविते। जैत्रसिंहः प्रवुद्धात्मा चिन्तयामासिवानिति।। ३४ नित्यैकजैनेंद्र कृतप्रतिष्ठो विल्हस्ततो भूदणगेर्गुणज्ञः। साकंभरीनाथकृत प्रसिद्ध क्षेमंकराख्यः पुरूषोत्तमः प्राक्।।३५ अस्मत्कुलालंकृतये वभूवुरन्ये –

२२ पि धन्या इति जैत्रासिंहः। विमृश्य तन्नामनवीचकारं पलासकुंडे कृतजैन सौधः।। ३६ व्योमाभोगात्किमयमरद्वीपिनीवारिपूरः पृथ्वीपीठे पतति यदि वा तुंगमीशाद्रिशृगं। वेलः शैलः किमुत धवल(ः) –

२३. क्षीरसिन्धूर्म्मि धोतन् नो न श्रीमाञ्जिनवरगृहे राजते जैत्रसिंहः। ३७ श्रीपौरपाटान्वय जैन वर्ग धुरंधरः श्रीधर वंधुसूनुः। अषंडधीः पंडित पुंडरीव खंडश्रिये हंसति नागदेवः।। ३८ तस्यानुजौ चाहड गा (गां)

२४. गदेवौ स्वकीर्त्ति वाचालित नागदेवौ। सुतावुभावादिम आम्रदेवः कम्राकृतिस्तल्लध् ुसोमदेव।। ३९ श्रितमाहेन्द्र मुंद्रेण नागदेव मनीषिणा। प्रतिष्ठात्र कृता चैत्ये निधि – न्द्वग्नीन्दुवत्सरे।।४०

२५. दुर्व्वादिगुर्व्व गुरुपर्व्वत वज्रदंडः श्रीखंड कीर्त्तिमहिमामर कीर्त्तिदेवः। वोधामृताण्णव विधुश्च वसन्तदेवः प्रातिष्ठ कृत्यविषयेत्रगुरूर्वभूव।।४१ श्रीजैसवालान्वय पारिजात वाल प्रवाल –

२६. श्चरितार्थ नामा (१) प्रफुल्लयन्नुल्बण कीर्तिमल्ली: श्रेष्ठीधनी राजति माधवाह्नः।।४२ तत्सुनुर्देवसिंहाख्यः श्रीणां लीलानिकेतनं। गुणकैरवपर्व्वेन्दुः श्रद्धा वल्लिनवाम्बुदः।।४३ वीराख्या गृहिणी तस्य धीरौ तत्तनयावु

२७. भौ। प्राक संलक्षण सिंहाह्वः कृत्यसिंहस्ततः परः।।४४ जसे साधु तनूजन्मा साधुर्व्विजयदेवकः। श्रृंगारदेवी तज्जाया निर्म्मायां धर्म्मकर्म्मसु।।४५ तदगर्भसंभवौ शोभावैभव ध्वस्तमनमथौ। सनाथौ तनयौ भ्रात स–

२८. ह देवाभ्रदेवकौ।।४६ जाजे श्रेष्ठी सतां श्रेष्ठः परवाड–कुलाग्रणीः। कलिसन्तापितक्षोणि चंदनीकृतकीर्त्तिकः।।४७ सहदेवः समाधुर्य्य वधावर्षः कलापितां (विदां)। अनध्यायः कुकृत्यानामसत्यानामनास्पदं।।४८

२९. सव्येतरं प्रवर पाणि सरोजरंध्रं निःस्यंदमागगन दानजलेनजाते। जंवाल भूमनियशः श्रितपंकजाली–धेनाक साधुरनुवर्द्धयते धरित्र्याम्।। ४९ आहडः स्फटिक–शैलइवास्ते रः (श) करं शिरसि धारयमाणः।

३०. मानसेन विमलेन पवित्रश्चित्रमेषनतुकूटसमेतः।।५० सुवर्ण्णचरितंयस्य कलिकालकषोपले। शुद्धिंदधाति–साधूनां घाहडः सैषशेखरः।।५१ .... मानि ज्वालावीचि साधुः सर्व्वज्ञान्हि स्मेरदम्भोजभृगः। दानी –

३१. मानी कीर्त्ति कान्त्याहिमानी जेतानेता धीमतां–धौतचेताः।।५२ गम्भीरताधः कृतनीरनाथः स्थैर्येण सन्तार्जित सानुचूलः। दानावदातैर्व्वलिराजकल्प–स्तल्पश्रिया (नंदति) साधुवीचिः।। ५३ साधुराभः पराभूत कुतीर्थपथ –

३२. संकथः। हृदिसर्व्वज्ञरक्तेपि धत्ते वैमल्यमद्भुतम्।। ५४ माढू चाहनामानौ गाढर (क्तौ) जिनध्वनि। गुण केतक विस्मेरभाववर्षागमौपमौ।। ५५ स (श) क्रः श्रावक चक्रस्य ग्रामणी गुणशालिनां। पंडित पंडिताशेष .... (विपथः श्रीढु) लाभिधः।। ५६

३३. तमश्छेदविधिच्छेकमाविभ्राणः सुदर्शनम्। सत्यो नारायणः श्रीमान्भातिमाथुरवंशजः।। ५७ साधुकुलधरः (शंभु) वुधश्च भृगुनन्दनः। सौजन्य वल्लिपर्जन्यसन्यस्ता–खिलदूषणः।।५८ जैणपालः कृपालुनांधुरि धर्म्मसुधा–

३४. म्बुधिः प्रह्वस्तिहुणपालाह्वः श्रीजिनाराधने धनी।। ५९ सप्तव्यसन सप्तार्च्चि संतापशमनांवुदि। धर्म्मकर्म्मणि–धौरेयो साधुमाधवरासलः।। ६० कृपाव्रतति जीमूत पूतधीः (अडा) विधः। तेजू नामा सुधीः पा –

३५. त्रं यशसांशि (श) शि तेजसां।। ६१ साधुमालुसुतौ – सत्यशीलौछीहुलवीहुलौ। प्रणीत विवुधानंदोगीर्व्वाणा भिषजाविव।।६२ पौरपाटकुलविंध्यभूधरे भद्रजाति महिमन्युदीयते। उद्यशः कुसुमसौरभेदि –

३६. शामर्ययन्वितथोयमद्भुतः।। ६३ एतेऽस्मिन्नाहते (व्यक्ताः) जैनार्च्चालय कारिणः। वर्द्धन्तां गोष्ठिकाः पुण्यवनकंदलनांवुदाः।। ६४ चंद्रांशुमत्कुण्डलमंडितेयं तारालिमुक्ताफलहारयष्टिः। चकास्ति यावदग –

३७. गनस्य लक्ष्मीर्जिनालयं नन्दतु तावदेतत्।। ६५ अस्यौ केशगणार्विद तरणिः श्रीदेवगुप्तः प्रभु व्याख्यानक्षणं– तोषितक्षितिपतिः श्वेताम्बरा व्याकुलः। आसीदुग्रसमग्र–वादिकरटिक्षोदैकपंचानन तत् पादाम्बुजराजहं–

३८. समहिमा श्रीवीरचंद्रः कविः।। ६६ तस्माज्जंगमभारतीतिं जगति ख्याताभिधानाद् गुरोर्व्वीरदोरधिगत्यसत्य महिमं भ्राजिष्णुसारस्वतम्। संसिद्धांवरसिंधुवंधुर– गिरां शुद्धिः सुधानीरधीः श्रांतः प्रोतपदां प्रशस्ति–मकृतश्री

३९. देवचंद्रः कृती।। ६७ वासतव्यान्वयकायस्थ शेखरः शरदात्मजः। प्रशस्तिमलिखद्वे देरिमां–सोमासमुद्भवः।। ६७ भूतः कस्यपगोत्रोसौ पापिकः सूत्रकारक। आमदेव सुतस्तस्य प्रशस्तिप्रोच्चकारसः।।६९

४०. श्रीमाथुरान्वय महावर्ण्णव राजहंस लोकोपकारकरणे–सद्धर्म्मकर्म्म कुशलो .... लोकलानां .... सुत साधु ऊदः।।७०।। संवत् १३ (१६)

छन्द परिचय

वसन्ततिलका	:	शेक १, २, ३, ४, १०, १४, २५, ४१, ४६, ७०	१०
इन्द्रवज्रा	:	श्लोक – ३५, ५३,	२
अनुष्टुप	:	श्लोक ६, ११, १३, १६, २०, २४, २६, ३०, ३१, ३२, ३३, ३४, ४०, ४३, ४४, ४५, ४६, ४७, ४८, ५१, ५४, से ६२, ६४, ६८, ६६	३२
शार्दूलविक्रीडित	:	श्लोक – १२, २६, ६६, ६७	४
मालिनी	:	श्लोक – १५	१
मन्द्राक्रान्ता	:	श्लोक – २१, ३७	२
उपजाति	:	श्लोक – ७, १७, १६, २२, २३, २७, २८, ३६, ३८, ३९, ४२, ६५	१२
रथोद्धता	:	श्लोक – ८, १८, ६३	३
इन्द्रवंशा	:	श्लोक – ५	१
स्वागता	:	श्लोक – ६, ५०	२
शालिनी	:	श्लोक – ५२	१
	:	कुल	७०

भावार्थ

श्लोक १ : जिनके कंधों पर सुन्दर केशराशि सुशोभित थी, जो केशराशि भामण्डल के समीप ऐसी प्रतिभाषित होती थी मानो सूर्य–पुत्री यमुना ही सूर्य–सेवा में संलग्न हो। ऐसे वेआदिदेव हमारा कल्याण करें।

श्लोक २ : नागराज–फण रूपी सप्त रत्नदीप शिरोपरि धारंण करनेवाले वे पार्श्वनाथ हमें विभूतिदायक हों। मिथ्यात्व–अन्धमयी संसार में ये रत्नदीप सप्त तत्वों के प्रदर्शक हैं।

श्लोक ३ : वे महावीर, जिनके मेरू कम्पन से अवनि रूपी स्त्री की लवण समुद्र रूपी मेखला शिथिल हुई। कुलाचल रूपी नितम्ब जिसके कम्पित हुए, हमारा कल्याण करें।

श्लोक ४ : सारसों के मधुर कलरव से जैसे शरत् कालीन चन्द्र–छटा अधिक सुशोभित होती है। वैसे ही मूर्खों की जड़ता भी जिसकी कृपा से सार और वैशिष्ट्य को प्राप्त होती है, वह शारदा रात दिन मेरे मन में प्रकाशमान् रहे।

श्लोक ५ : स्याद्वादविद्या रूपी सागर के लिए जो पौर्णमासी के चन्द्र हैं। करुणा रूपी रत्नांकुरों के जो उदयाचल हैं, पवित्रकीर्ति युत दिगम्बर श्री से जो विभूषित है, वे मूलसंघ के मुनि हमें पवित्र करें।

श्लोक ६ : यज्वपाल (यज्ञ, याज्ञिकों के रक्षक) सार्थक नाम युत पृथिवी पर एक वंश हुआ। इस वंश की उज्जवल कीर्ति एक छत्रराज्य के रूप में सम्पूर्ण पृथिवी पर व्याप्त थी।

श्लोक ७ : इस वंश में वीर चूडामणि श्री परमाद्रिराज हुए। शत्रुओं के मारने में तारकासुर को मारनेवाले कार्त्तिकेय भी उनके समान न थे।

श्लोक ८ : उन परमाद्रिराज के चित्रांकितनयुवतियों के स्तनों का स्पर्श करने पर अर्थात् स्वर्गस्थ होने पर शत्रु शासक रूपी वन के लिए दावानल स्वरूप चाहड हुये।

श्लोक ९ : राजा चाहड के भी स्वर्गपुरी के वासी देवों के गौरवंश को प्राप्त होने पर अर्थात् मरने पर वैरियों के विनाशक पृथिवीपति नृवर्म्मा हुये।

श्लोक १० : हृदयाधिनाथः नृवर्म्मा के कुशलतापूर्वक कर लगाये जाने पर इस पृथिवी की स्थिति प्रौढांगना के समान हुई। वह न तो उत्कंठित हुई और न रोमांचित। जैसे कि प्रौढांगना विलासप्रिय पति के द्वारा काम स्थानों पर स्पर्श किये जाने पर भी न तो रोमांचित होती है औ न उसका मुंह म्लान होता है।

श्लोक ११ : नृवर्म्मा के भी स्वर्ग–श्री से संसर्ग हो जाने पर अर्थात् मर जाने पर शत्रु–मुख रूपी कमलों को संकुचित करनेवाले चन्द्र तुल्य आसलराज हुए।

श्लोक १२ : संग्राम में आसल्लराज के हाथ में सम्पूर्ण शत्रुओं के साहस का दलन करनेवाली, रिपु–गज–कुम्भस्थलों का विदारण करनेवाली, गजमुक्ता के लिप्त कृपाण–लतिका ऐसी शोभती थी मानों विजयलक्ष्मी ने आसललराज के लिए केले के पत्ते पर पवित्र अक्षरों से निर्मित वसन्तोत्सव–लेख भेजा हो।

श्लोक १३ : हे आसल्लदेव! पराजित शासकों की भूमि की रक्षा करनेवाले आपने शत्रुओं की नारियों के नेत्रों की अंजन रहित किया था अर्थात रूदन से शत्रुओं की स्त्रियों का अंजन धुल गया थां

श्लोक १४ : आसल्लदेव के प्रताप रूपी स्वर्ण और निर्मल यश रूपी मुक्ताफलों से अलंकृत पौन लाख आबादी वाली भूमि स्त्री का तिलक स्वरूप नलपुर नामक नगर है।

श्लोक १५ : (इस नगर में) भ्रमर समूह के हित के लिए विकसित होनेवाले कमल के समान दुःखियों के हितार्थ विकास करनेवाला सूर्य रूप, सज्जन वर्ग में प्रीति करनेवाला,

घनपंक में पूर्वार्जित पुण्य से कमल–नाल स्वरूप, सांसारिक लक्ष्मी की विलासभूमि, जैसवाल वंश जयवन्त हो।

श्लोक १६ : इस जैसवाल वंश रूपी उदधि से चन्द्र स्वरूप अपूर्व बुद्धि सम्पन्न विवेकी साढदेव हुए।

श्लोक १७ : पृथिवी पर स्वयं निर्भीक रहकर भीरूओं के भय का निवारण करने के लिए बन्धु स्वरूप, मृदु वाणी से अमृत के समान वर्षा करनेवाला साढदेव का श्रीकुमार नामक पुत्र था।

श्लोक १८ : श्रीकुमार से मोमण नामक पुत्र हुआ। मोमण ने पूर्व पुरुषों के वियोग से आकुलित पृथिवी को चन्दन के समान अपने उज्जवल यश से शशिमुखी अर्थात् आल्हादित किया था।

श्लोक १६ : मोमण की राजल्लदेवी नामक गृहिणी थी। राजल्लदेवी का हृदय केवड़े के (पुष्प) समान स्वच्छ था। उसकी वाणी शरच्चन्द्र की भाँति अमृतमय थी। वह शील लक्ष्मी थी। उसके अंग मंगल का आगार थे।

श्लोक २० : राजल्लदेवी की कूंख रूपी पृथिवी से मांणिक के समान जैत्रसिंह जन्में थे। वह राजसभा रूपी युवति के भूषण पृथिवी पर प्रकाशमान हैं।

श्लोक २१ : हे जैत्रसिंह! विभिनन प्रकार के आपके दानावसरों पर कृत संकल्प रूप जलधारा से उत्पन्न पंक युत पृथिवी पर ऐसा लगता है कि यशश्री भ्रमण कर और चन्द्र रूपी अमृत कुण्ड में पाद प्रक्षाल कर जैन मन्दिर में आयी हो। चन्द्र स्थित मृग मानो यशश्री के पाद प्रक्षालन की कालिमा है।

श्लोक २२ : जैत्रसिंह की लक्ष्मी नाम की पत्नी थी। नित्य के धर्माचरण में उसका लालन–पालन हुआ था। केशवदेव उसके पिता थे। वह पिता के कुलधर्म की आगार थी।

श्लोक २३ : लक्ष्मी देवी ने वंश की स्थिति के लिए सप्त भौम रूप साधु–सुशील सुरूपवान् सात पुत्रों को जन्म दिया था। वे पुत्र जिनधर्मरूपी सूर्य–रथ में संलग्न सप्त भंग रूपी मानों सप्त तुरंग थे।

श्लोक २४ : उन (जैत्रसिंह के) सप्तपुत्रों में कलिकाल रूप हाथी को भेद कर कीर्ति रूपी मुक्तावली की किरणों के धारी उदयसिंह सब से ज्येष्ठ थे।

श्लोक २५ : दारिद्रय रूपी वन को भस्म करने के लिए दावानल स्वरूप उदयसिंह के रहते हुए भी यदि द्ररिद्रता से संसार पीडित है, तो उदयसिंह सोचता है कि मेरे इस दान संकल्प से क्या? उसकी क्रोधाग्नि प्रज्जवलित हो उठती है।

श्लोक २६ : कालकूट विष युत होने से समुद्र और शिव का वक्षस्थल पर नित्य प्रज्जवलित रहनेवाले कौस्तुभ मणि के होने से विष्णु का, भ्रमर समूहों से व्याप्त रहने के कारण कमलों का परित्याग कर निश्चय से लक्ष्मी निरापद उदयसिंह के घर की ओर दौड़ रही है।

श्लोक २७ : विदेशियों से अलंकार स्वरूप श्रृंगारसिंह नामक (दूसरा) पुत्र और कलानिधान, सत्कार्य–कर्त्ता पृथिवी की शोभा स्वरूप राजसिंह नामक (तृतीय) पुत्र हुआ

था।

श्लोक २८ : राजसिंह के बाद अपने जन्म को कृतार्थ करनेवाले, सहृदय वीरसिंह (चतुर्थपुत्र) हुआ। इसके पश्चात् अपने यश से चन्द्र को भी धवलता से पराजित करनेवाला लक्षणसिंह नामक वीरसिंह का छोटा भाई पांचवाँ पुत्र हुआ।

श्लोक २९ : इसके बाद विद्वानों में रत्नस्वरूप रत्नसिंह हुए। तथा उससे भी छोटा नयनसिंह नामक पुत्र हुआ। यह गुणों से भी रत्नसिंह से छोटा था।

श्लोक ३० : शाह उदयसिंह की पत्नी ने समुद्र पर्यन्त प्रसिद्ध चतुर चार पुत्रों को जन्म दिया।

श्लोक ३१ : कर्मसिंह बड़ा पुत्र था। देदूसिंह कर्मसिंह का अनुज था। पद्‌मसिंह तीसरा और धर्मसिंह चौथा पुत्र था।

श्लोक ३२ : शृंगारसिंह की शोभाल और दुअड़ा नामक दो पत्नियाँ थीं और राजसिंह की कमलमुखी पद्‌मा नामकी प्रेयसी थी।

श्लोक ३३ : वीरसिंह की विजय देवी नामकी गृहिणी थी। इससे क्षेमसिंह नामक सदाचारी पुत्र हुआ था।

श्लोक ३४ : जैनसिद्धान्त पारंगत, धन्यबुद्धि, प्रबुद्धात्मा जैत्रसिंह ने अपने हृदय में एक दिन इस प्रकार सोचा।

श्लोक ३५ : नित्य एक जिन प्रतिमा का प्रतिष्ठा करानेवाले विल्ह और गुणज्ञ अणग तथा साकंभर के राजा से सन्मानित पुरुषोत्तम क्षेमंकर पहले हुए हैं।

श्लोक ३६ : हमारा कुल इनसे और अन्य पुण्यात्माओं से अलंकृत रहा है। इस भाति उन पूर्वजों के सम्बन्ध में विचार कर जैत्रसिंह ने पलाशकुंड में एक जैनमन्दिर बनवाया था।

श्लोक ३७ : आकाश मार्ग से क्या यह सुरगंगा का जल प्रवाह पृथिवी पर गिर रहा है? अथवा यह उत्तुंग कैलाश–शिखर है। या क्षीरसागर की लहरों से उत्पन्न श्वेत फेनपुंज है; नहीं, नहीं यह तो जैत्रसिंह द्वारा बनवाया हुआ श्री जिन–मन्दिर सुशोभित हो रहा है।

श्लोक ३८ : श्री पौरपाट अन्वय के जैनों में श्रेष्ठ श्रीधर का नागदेव नाम का भतीजा था। वह अखण्ड बुद्धिवाले पंडित रूपी कमलसमूह को हँसानेवाला था।

श्लोक ३९ : उनके दो छोटे भाई थे। चाहड़ और गांगदेव। उन्होंने अपनी कीर्त्ति से नागदेव को भी वाचालित कर दिया था। नागदेव के दो पुत्र थे। प्रथम का नाम था आम्रदेव और उससे छोटे द्वितीय पुत्र का नाम था, सुन्दर आकृतिवाला सोमदेव।

श्लोक ४० : विद्वान् नागदेव ने इन्द्र मुद्रा धारणकर संवत् १३१९ में इस चैत्यालय की प्रतिष्ठा कराई थी।

श्लोक ४१ : दुर्वादी रूपी छोटे बड़े सभी पर्वतों के लिए वज्रदण्डरूप, धवल कीर्त्तिशाली, देवतुल्य वैभव सम्पन्न कीर्त्तिदेव, तथा ज्ञानामृत रूपी सागर के लिए चन्द्रस्वरूप वसन्तदेव इस प्रतिष्ठा विषयक कार्य में गुरू हुए थे।

श्लोक ४२ : श्री जैसवाल वंश रूपी कल्पवृक्ष की कोपल के समान 'यथा नाम तथा गुणवाले उच्च कीर्त्ति रूपी लता को विकसित करने में समर्थ धनवान सेठ माधवराज हुए।

श्लोक ४३ : उनका देवसिंह नामक पुत्र हुआ। वह लक्ष्मी लीला का आगार, गुण रूपी समुद्र के लिए पूर्णिमा का चन्द्र, तथा श्रद्धा रूपी वेल के लिए नवीन मेघ तुल्य था।

श्लोक ४४ : उसकी वीरा नाम की पत्नी थी। धैयवान् दो पुत्र थे। प्रथम का नाम था सलक्षणसिंह और द्वितीय का कृत्यसिंह।

श्लोक ४५ : शाह जसे का पुत्र शाह विजयदेव था। श्रृंगारदेवी उसकी पत्नी थी। वह धर्म-कर्म में संलग्न माया विहीन थी।

श्लोक ४६ : इसके गर्भ से कामदेव-शोभा को भी तिरस्कृत करनेवाले सहदेव और आम्रदेव दो भाइयों ने जन्म लिया था।

श्लोक ४७ : परवाड वंश में मुख्य, सज्जनों में श्रेष्ठ जाजे नामक सेठ थे। उन्होंने कलिकाल से संतप्त पृथिवी को शान्ति प्रदान कर कीर्त्ति अर्जित की थी।

श्लोक ४८ : कलाविदों के लिए मधुर वाणी की वर्षा करनेवाले सहदेव थे। उन्होंने दुराचार का पाठ ही नहीं पढ़ा था। वे असत्य से कोसों दूर रहते थे।

श्लोक ४६ : उभय हस्त कमलों के बन्ध से स्रवित धन-दान जल से उद्‌भूत कीच में शाह मैनाक के यशरूपी सफेद कमलों की पंक्ति मैनाक वृद्धि के साथ बढ़ने लगी।

श्लोक ५० : शाह आहड हिमालय तुल्य थे। वे अपने शिर पर मंगलकारी कार्य धारण करते थे। हृदय से पवित्र थे। हिमालय भी यद्यपि शिर पर शंकर धारण करता है, निर्मल मानसरोवर युत है। आश्चर्य यह है कि हिमालय सकूट अर्थात् शिखर युत है। जबकि आहड कुटिलता युक्त न थे।

श्लोक ५१ : कलिकाल रूपी कषौटी पर चाहड के चरित्र स्वर्ण तुल्य था अत्यधिक शुद्धि धारण करने से वे सज्जनों में मुमुट स्वरूप थे।

श्लोक ५२ : शाह वीचि मानियों के लिए ज्वाला स्वरूप थे। सर्वज्ञचरण रूपी विकसित कमलों के मानों वे भ्रमर थे। दानी थे, स्वाभिमानी थे और कीर्त्ति की कांति से हिम श्रेणी थे। वे विजेता थे, विद्वानों के नेता और पवित्र चित्त भी थे।

श्लोक ५३ : गंभीरता से जिन्होंने समुद्र को भी तिरस्कृत कर दिया था। स्थिरता से पर्वत को जिन्होंने तिरस्कृत किया था। दान कार्यों में शाह वलि के तुल्य थे। वे सुन्दर स्त्रियों से आनन्दित थे।

श्लोक ५४ : कुधर्म-मार्ग-परिचर्चा को समाप्त करनेवाले शाह आम हुए। उनका हृदय सर्वज्ञ में रक्त रहते हुए भी अद्‌भुत विमल था, रक्ताभ नहीं।

श्लोक ५५ : शाह मादू और चाहड हुए हैं। वे जिनवाणी में अत्यन्त अनुरक्त रहते थे। गुण रूपी केतकी के विकसित करने में वे वर्षा ऋतु के समान थे।

श्लोक ५६ : श्रावक संघ के इन्द्र, गुणियों के नायक, कुमार्गो के खण्डक, श्रीहुल

नामक पंडित हुए हैं।

श्लोक ५७ : मिथ्यान्धकार—छेदन करने की विधि में कुशल, सम्यक् दर्शन को धारण करनेवाले माथुरवंश में शाह श्रीमान् सत्यनारायण हुए।

श्लोक ५८ : सौजन्य रूपी वेल के लिए मेघ स्वरूप, समस्त दोषों से रहित, कुल रक्षक, भृगु—पुत्र विद्वान् शाह शम्भु हुए।

श्लोक ५६ : धर्मामृत के सागर, दयालुओं में मुख्य जैनपाल तथा जिनेन्द्रभक्ति में आसक्त धनवान तिहणपाल हुए है।

श्लोक ६० : सप्त व्यसन रूप सप्ताग्नियों के संताप को शमन करने के लिए मेघ स्वरूप धर्म—कर्म में अग्रणी शाह माधव और रासल हुए।

श्लोक ६१ : कृपारूपी वेल के लिए मेघ स्वरूप, पवित्र बुद्धि अडामिध तथा चन्द्र तेज के समान यश के पात्र विद्वान तेजू हुए।

श्लोक ६२ : शाह मालू के सत्य और शीलवन्त छीहुल और वीहुल दो पुत्र हुए। वे दोनों विद्वानों को आनन्द देने के लिए सुरवैद्य तुल्य मिष्ठभाषी थे।

श्लोक ६३ : पौरावाट कुल रूपी विंध्याचल पर्वत में चन्दन रूप भद्रजाति महिमा से सम्पन्न, उदीयमान यश रूपी पुष्प—सौरभ को फैलाते हुए शाह (बन्धु) हुए।

श्लोक ६४ : ये सभी व्यक्ति जैनालय के निर्माता थे। ये निर्माता पुण्यरूपी वन के नवाकरों के लिए मेघरूप, एक ही गोष्ठी के सदस्य थे। यह सब वैभवसम्पन्न हों।

श्लोक ६५ : चन्द्र—सूर्य रूपी कुण्डल से मण्डित तारागण रूपी मोतियों के हार से सुशोभित जब तक आकाश—लक्ष्मी सुशोभित है, तब तक यह जिनालय (सभी को) आनन्दित करता रहे।

श्लोक ६६ : केशगण रूपी कमलों के लिए सूर्य स्वरूप, व्याख्यान से क्षण भर में संतोष देनेवाले राजा देवचन्द्र हुए। वे दुखियों को आकाश के समान शरण देनेवाले थे। समग्र उग्रवादी रूपी हाथियों के लिए सिंह स्वरूप थे। उनके चरण—कमलों की शोभा हेतु राजहंस रूपी श्री वीरचन्द्र कवि हुए।

श्लोक ६७ : संचरणशील विद्या के नाम से संसार में प्रसिद्ध उनगुरू वीरचन्द्र कवि से सरस्वती का अध्ययन कर सत्य महिमा से दैदीप्यमान तथा आकाशगंगा (तारागण) के बन्धु चन्द्र के समान प्राप्त वाणी से शुद्ध और अमृत के समान सुखद् निर्मल नीर के समान स्वच्छ बुद्धिधारी श्री देवचन्द्र ने शान्त उक्त पदों से इस प्रशस्ति की रचना की थी।

श्लोक ६८ : कायस्थ जाति के श्रीवास्तव गोत्र में हुए शरद और उनकी पत्नी सोमा के पुत्र शेखर ने मन्दिर की वेदी पर यह प्रशस्ति लिखी थी।

श्लोक ६६ : कस्यप गोत्र में हुए सुखकार पापिक के पुत्र आमदेव ने इस प्रशस्ति को उत्कीर्ण किया था।

श्लोक ७० : माथुर वंश रूपी मानसरोवर के राजहंस, लोक का उपकार करने .... सत्कार्य और धर्म करने में कुशल .... शाह ऊद हुए। संवत् १३

(१६)

(मूलपाठ और भावार्थ में संशोधन अनेकान्तः वर्ष २३ किरण ३–४ में प्रकाशित श्री रतनलाल कटारिया के लेख से किया गया है। मैं उनका ह्रदय से आभारी हूँ)

प्रशस्ति परिचय

यह प्रशस्ति दो फुट तीन इंच ऊँचे और दो फुट साढे दस इंच चौड़े पाषाण खण्ड पर चालीस पंक्तियों में उत्कीर्ण है। इसकी रचना सत्तर श्लोकों में हुई है। वर्तमान में ग्वालियर पुरातत्तव संग्रहालय में संगृहीत है। यह वर्तमान में नरवर से तीन मील दूर भीमपुर नामक ग्राम से प्राप्त हुई थी। प्रशस्ति में भीमपुर का नामोललेख नहीं है। नलपुर का नाम आया है। नलपुर के नामोल्लेख से कुछ जैन विद्वानों ने इसे नलपुर का जैन शिलालेख नाम दिया है। प्रशस्ति में जैन मन्दिर नलपुर के पलाशकुण्ड में निर्मित होना कहा गया है। भीमपुर–जहाँ प्रशस्ति प्राप्त हुई है। वहाँ संभवतः कोई कुण्ड रहा है जो पलाशकुण्ड के नाम से विश्रुत रहा है। संभवतः यह स्थल भीमपुर के पास ही रहा है। कालान्तर में मन्दिर ध्वस्त हो गया और यह पाषाणखण्ड वहाँ से ग्वालियर ले जाया गया। भीमपुर से प्राप्त होने से इसे भीमपुर प्रशस्ति कहना सार्थक प्रतीत होता है।

पाठ टिप्पणी

ए स्वर की मात्रा वर्ण के पूर्व एक खड़ी रेखा दी गयी है। ऐ स्वर की मात्रा के लिए वर्ण के पूर्व और ऊपर दोनो जगह एक–एक खड़ी रेखा दी गई है। ओ स्वर के लिए वर्ण के आगे पीछे दोनों ओर एक–एक रेखा का प्रयोग हुआ है। औ स्वर के वर्ण के पूर्व एक खड़ी रेखा तथा आगे वर्तमान ओ स्वर की मात्रा व्यवह्रत हुई है। ए स्वर के लिए वर्ण के पूर्व एक खड़ी रेखा तथा वर्ण के शीर्ष भाग पर भी एक खड़ी रेखा दी गयी है। र वर्ण में उ स्वर नीचे संयुक्त हुआ है। त्र वर्ण के लिए र वर्ण में त् संयुक्त किया गया है। य वर्ण को द्वित्य रूपी में लिखने के लिए ऊपर वायी ओर से नीचे दायीं ओर एक रेखा वर्ण के मध्य दर्शाई गई है। सरेफ वर्ण द्वित्य रूप में प्रयुक्त हुए हैं। अबग्रह का यथास्थान प्रयोग हुआ है। श के स्थान में स का प्रयोग भी हुआ है। अनुनासिकों के दोनों प्रयोग हुए हैं। ख वर्ण के लिए ष वर्ण का व्यवहार भी हुआ है।

व्याख्या नलपुर

प्रस्तुत प्रशस्ति के चौदहवें श्लोक में नलपुर नामक नगर का नामोल्लेख किया गया है। इसकी आबादी पौन लाख बताई गई है। यह नगर इस प्रदेश में तिलकस्वरूप यज्वपाल वंश के राजा आसल्लदेव का शासन रहा है। जायसवाल जैत्रसिंह ने यहाँ से नातिदूर पलासकुण्ड में जैनमन्दिर बनवाया था, जिसकी वेदी में यह प्रशस्ति खचित की गयी थी। वर्तमान में इसे नरवर से समीकृत किया जा सकता है। संवत् १३१६ के कचेरी अभिलेख में इसे नलगिरी नाम दिया गया है। श्लोक निम्न प्रकार है –

तत्र भवन्नृपतिरूग्र तरप्रतापः श्री चाहडस्त्रिभवुन प्रथमान कीर्तिः।
दोर्दण्ड चण्डिमभरेणपुरः परेमयो येनाझता नलगिरि प्रमुखा गरिष्ठाः।।
(अनेकान्तः वर्ष १६ कि १-२, छोटेलाल स्मृति अंक पृ० ६८)।

यज्वपाल वंश

यह एक राजकीय वंश था। इसमें चार शासक हुये। इनमें चाहडदेव पहला राजा था। उसके मरने पर नरवर्मदेव ने शासन किया। इसके मरणोपरान्त आसल्लदेव ने और इसके मरने पर इसके पुत्र गणपतिदेव ने राज्य किया। यह राजवंश सार्थक नामवाला कहा गया है। संभवतः ये शासक यज्ञ, याज्ञिकों की भरपूर रक्षा करते थे। इसी वंश को कचेरी संवत् १३३६ के शिलालेख में जज्जयेल नाम दिया गया है। यह नाम जयपाल के नाम पर रखा गया बताया गया है। इस वंश के चाहडदेव के नाम का एक लेख संवत् १३०० का उदयेश्वर मन्दिर की पूर्वी मेहराव पर अंकित मिला है।

संदर्भ

1 अनेकान्त वर्ष 19 किरण 1–2, वर्ष 23 किरण 3–4

अभिलेख - २०१

अहार, आदिनाथ प्रतिमालेख, संवत् १३२०, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. संवत् १३२० फाल्गुण सुदि .... (१३) सोमवासरे मलयर्कति (मलयकेति)
२. .... त्ये साधु मदन्ह (मदन) भार्या रोहिणि सुत घू – (ने)
३. भार्या देवा सुत माधेव (माधव) भार्या वाछिणि प्रणमंति
४. नित्यं। इति।।

पाठ टिप्पणी

इसमें नित्यं के बाद दर्शाये गये दो बिन्दु इति के सूचक हैं।

भावार्थ

संवत् १३२० फाल्गुन सुदी त्रयोदशी सोमवार को प्रतिष्ठा कराकर मलयकेति का पुत्र मदन, पुत्रवधु रोहिणी, पौत्र धूने पौत्रवधू देवा, प्रपौत्र माधव प्रपौत्र वधू वाछिणी नित्य वन्दना करते हैं।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ५२१/१६३ से संगृहीत है। इसका निर्माण देशी पाषाण से पद्मासन मुद्रा में हुआ है। चिह्न स्वरूप आसन पर वृषभ तथा चार पंक्ति में उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण है। इस प्रतिमा का कुहनी से नीचे का भाग और आसन मात्र शेष है।[1]

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख: ले.सं. 11/339 पृ0 158 से साभार

अभिलेख - २०२

अहार, आदिनाथ प्रातिमालेख, संवत् १३२०, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. संवत् १३२० फाल्गुण सुदि १२ रवौ स्री (श्री) वार्य .... (देव) स्रेष्टि (श्रेष्टि) महेस (श) तत्सुत .... (सडगण भार्या) सांतिणि (शान्तिणि) .... (तत्सुत) गंगि ... . (देव) भार्यादेवा।

२. .... (तत्पुत्र) सोमदेव उद .... (य) प्रणम (मं) ति।।

भावार्थ

संवत् १३२० फाल्गुन सुदि १२ रविवार को प्रतिष्ठा कराकर श्री वार्यदेव, श्रेष्ठी महेश उसका पुत्र संभवतः षडगण, पुत्रवधु शान्तिणी, पौत्र गंगिदेव, पौत्रवधु देवा–प्रपौत्र सोमदेव, उदय ये सब प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा अहार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ५६ से संगृहीत है। इसका निर्माण देशी काले–नीले पाषाण से पद्मासन मुद्रा में हुआ है। पालिश काला चिकना और चमकदार है। इस प्रतिमा का नाभि से ऊपर का भाग नहीं है। हाथ कुहनी से नीचे है। आसन की लम्बाई २३ इंच है। चिह्न स्वरूप आसन पर वृषभ तथा दो पंक्ति में उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण है।[1]

संदर्भ

1. अहार क्षेत्र के अभिलेख, वही. ले.सं. 11/340 पृ0 158 से साभार

अभिलेख - २०३

घुसई, मन्दिर, स्तम्भलेख, संवत् १३२३,

मूलपाठ परिचय

मध्यप्रदेश के मंदसौर जिले में घुसई नामक ग्राम है। वहाँ कभी जैन मंदिर रहा है। मन्दिर ध्वस्त हो गया है। किन्तु मन्दिर स्तम्भ पर उत्कीर्ण लेख से संवत् १३२३ में वहाँ जैन मन्दिर की प्रतिष्ठा सम्पन्न होने का प्रमाण मिलता है।

संदर्भ

1. ग्वालियर पुरातत्व रिपोर्ट ईसवी 1916—1917 से साभार।

अभिलेख - २०४

उज्जैन, अर्हत्, प्रतिमालेख, संवत् १३२३, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् १३२३ वर्षे माघ सुदि ६ सोमे श्री मूलसंघे श्री विसालकीर्तिदेव तस्य सिस्य दुमनकीर्त्तिदेव मंडलाचार्य श्री सागरचंद्र तत्सिस्य रत्नकीर्त्ति श्री मेडतवालान्वय सा० (सा])) मोमा भार्या साविझी (त्री) पुत्र माविल भार्या विल्हा पुत्र परमा भार्या पद्मश्री प्रतिष्ठितं प्रणम (मं) ति नित्यं।।

भावार्थ

यह प्रतिमा संवत् १३२३ माघ सुदी नवमी सोमवार को मूलसंघ के श्री विशालकीर्त्तिदेव के शिष्य दुमनकीर्त्तिदेव के संभवतः उपदेश से मंडलाचार्य श्री सागरचन्द्र के शिष्य रत्नकीर्त्ति संभवतः प्रतिष्ठाचार्य से मेडतवालान्वय के शाह मोमा उसकी पत्नी सावित्री, पुत्र माविल, पुत्रवधू विल्हा, पौत्र परमा, पौत्रवधू पद्मश्री प्रतिष्ठा कराकर नित्य प्रणाम करते हैं।

संदर्भ

1. डॉ० कैलाशचन्द्र जैन उज्जैन के 'मालवा में जैन पुरातत्व और उसका केन्द्र' शीर्षक शोधलेख से साभार।

अभिलेख - २०५

धार संग्रहालय, आदिनाथ प्रतिमालेख, संवत् १३२६, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् १३२६ आषाढ सुदी (सुदि) २ शनि श्री खंडेलगच्छे सा० (साधु) रेवट सुत सपद्म (सुपद्म) .... संधी देदा भार्या अहित पुत्र नसेर पुत्र परादेत्रे भार्या पणिति कारितं श्री साधारणी भार्या बेकास्ति प्रतिष्ठित (तं) श्री नमेसूरिभि।

भावार्थ

संवत् १३२६ अषाढ सुदी दोज शनिवार को श्री खण्डलेवालगच्छ के शाह रेवट के पुत्र सुपद्म, देदा, उसकी पत्नी अहित पुत्र नसेर, पौत्र परादेत्र पाणिति ने प्रतिमा निर्माण कराई तथा श्री साधारणी और उसकी पत्नी वेकास्ति ने श्री नमिसूरी से प्रतिष्ठा कराई।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा जयसिंहपुरा दिगम्बर जैन पुरातत्त्व संग्रहालय उज्जैन में प्रतिमा क्रमांक ३० से संगृहीत हैं। यह धार मं. प्र. से प्राप्त बताई गई है। इसका निर्माण पद्मासन मुद्रा में श्वेत संगमरमर पाषाण से हुआ है। आसन पर चिह्न स्वरूप वृषभ तथा उसकी दोनो ओर उक्त लेख उत्कीर्ण है। प्रतिमा के पृष्ठभाग में अलंकृत प्रभामण्डल दर्शाया गया है। गोमुख यक्ष भी अंकित है। चिह्न तथा गोमुख शासनदेव के अंकन से प्रतिमा आदिनाथ तीर्थंकर की प्रमाणित होती है।

संदर्भ

अनेकान्त. वर्ष 25, किरण–4

अभिलेख - २०६

वदनावर, सम्भवनाथ प्रतिमालेख, संवत् १३२३, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् १३२६ वर्षे .... (आषाढ) सुदि २ शनिवार वोडाक गोलसावस्य (श्रावक)

आटक्षतः वदना सा० (साधु) दातायां वयवप नरोदव गलसप्रतीति।

भावार्थ

संवत् १३२६ अषाढ सुदी दोज शनिवार को संभवतः गोलापूर्व श्रावक बोडाक ने प्रतिष्ठा कराई। आगे का अर्थ अस्पष्ट है।

प्रतिमा परिचय

बदनावर से प्राप्त यह प्रतिमा श्वेत संगमरमर पाषाण से कायोत्सर्ग मुद्रा में निर्मित है। आसन पर चिह्न स्वरूप घोड़े का अंकन हुआ है, तथा उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण है।

संदर्भ

1 अनेकान्त वर्ष 25, किरण 4 से साभार

अभिलेख - २००

नरवर, अर्हत् प्रतिमालेख, संवत् १३२६, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. संवत् १३२६ वैसाष (ख) सुदि ....

२. देवी पुत्र सदा प्रणमति ....

३. भार्या पद्मा ....

भावार्थ

संवत् १३२६ वैशाख सुदी में इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा हुई। प्रतिष्ठा करानेवाले श्रावक प्रतिमा को सदा प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा परिचय

इस प्रतिमा की आसन मात्र शेष है। जिस पर उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण है। यह प्रतिमा मध्यप्रदेश के शिवपुरी संग्रहालय में प्रतिमा प्रविष्टि क्रमांक ४३ से संगृहीत है।

अभिलेख - २०८

नरवर, अर्हत प्रतिमालेख, संवत् १३२६, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. सं (संवत्) १३२६ वैसाष (वैशाख) सुदि ....

२. .... भार्या लषमा भार्या वप्रा ....

३. .... प्रणम (मं) ति।

भावार्थ

संवत् १३२६ वैशाख सुदी में लखमा अपनी पत्नी वप्रा तथा अन्य कुटुम्बियों के साथ इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराकर प्रणाम करता है।

प्रतिमा परिचय

नरवर से प्राप्त इस प्रतिमा की केवल आसन शेष हैं। वह वर्तमान में मध्यप्रदेश के शिवपुरी पुरातत्व संग्रहालय में प्रतिमा–प्रविष्टि क्रमांक १६ से संगृहीत है। उक्त मूलपाठ आसन पर उत्कीर्ण हैं।

अभिलेख - २०९

अजयगढ़, सुमतिनाथ प्रतिमालेख, संवत् १३३१, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. ॐ।। संवत् १३३१ वर्षे फाल्गुण वदि ११ बुधे स्री मूलसंघे प्रथित ....

२. मुनि कुन्दकुन्दा स्रीमद् वीरवर्म्मदेवराज्ये आचार्य घनकीर्त्ति (:)

३. आचार्य कुमुचन्द्रेण प्रतिष्ठा का .... (रिता)।

भावार्थ

मंगल स्वरूप पंच परमेष्ठी सूचक ओं आदि में लिखा गया है। इसके पश्चात् संवत् १३३१ फाल्गुन वदी एकादशी बुधवार को श्री मूलसंघ में मुनि कुन्दकुन्द की आम्नाय के

आचार्य धनकीर्ति के शिष्य आचार्य कुमुदचन्द्र द्वारा श्रीमान् वीरवर्मदेव के राज्य में प्रतिष्ठा कराई गई।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा लखनऊ विश्वविद्यालय के प्राध्यापक आर०के० दीक्षित को ईसवी १९५०–१९५१ में अजयगढ़ नगर के दुर्ग में अजयपाल सरोवर के पश्चिमी तट पर ईटों से निर्मित एक कोट के भीतर मिली थी। प्रतिमा का अधोभाग तथा आसन मात्र शेष बताया गया है। आसन के मध्य चिह्न स्वरूप पक्षी की आकृति का उल्लेख किया गया है। यह पक्षी चक्रवाक ज्ञात होता है, जिससे प्रतिमा सुमतिनाथ तीर्थंकर की ज्ञात होती है।

संदर्भ

1. डॉ0 ज्योतिप्रसाद जैन, चन्देलयुग का एक नवीन जैन प्रतिमालेख, अनेकान्त वर्ष 13 किरण 4 पृष्ठ 98–99 से साभार

अभिलेख - २८०

धार संग्रहालय, अर्हत् प्रतिमालेख, संवत् १३३१, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

सं. (संवत्) १३३१ वर्षे ....

....

....

.... प्रणमति नित्यं श्री।।

भावार्थ

प्रतिष्ठा करानेवाला श्रावक संवत् १३३१ में प्रतिष्ठा कराकर इसे नित्य प्रणाम करता है।

प्रतिमा परिचय

धार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या २६६ से संगृहीत यह प्रतिमा पद्मासन मुद्रा में निर्मित है। अब केवल पादपीठ शेष है। उक्त मूलपाठ पाद पीठ पर उत्कीर्ण है।

संदर्भ

1. धार संग्रहालय द्वारा प्रेषित जैन प्रतिमा विवरण से साभार।

अभिलेख - २८१

धार संग्रहालय, शान्तिनाथ प्रतिमालेख, संवत् १३३२, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

(संवत्) १३३२ वर्षे ....

.... एत (एते) प्रणम (मं) ति नित्यं।

भावार्थ

इस प्रतिमा की संवत् १३३२ में प्रतिष्ठा कराकर प्रतिष्ठा करानेवाले उसे नित्य प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा परिचय

धार संग्रहालय में संग्रहालय संख्या ४३ से संगृहीत यह प्रतिमा कायोत्सर्ग मुद्रा में निर्मित है। इसका केवल कमर से नीचे का भाग तथा पादपीठ शेष है। पादपीठ पर उक्त मूलपाठ तथा चिह्न स्वरूप हरिण अंकित है।

संदर्भ

1. धार संग्रहालय द्वारा प्रेषित जैन प्रतिमा विवरण से साभार।

अभिलेख - २८२

ऊन, अर्हत् प्रतिमालेख, संवत् १३३२, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

पादपीठ की दायी ओर अंकित

संवत् १३३२ वर्षे माघ वदि ७ सोमे।।..................... अघे (मूलसंघे) हलः करगणः ाम (बलात्कारगणान्वये) पंडिताचार्य (र्य्य) श्री उमानदिड (टुमनदेव) .... (तस्य सिस्य स्री सागरचंद्र तत्सिस्य) पंडिताचार्य (र्य्य) श्री रतनकीर्तिः प्रणमति नित्यं।

पादपीठ की बायीं ओर अंकित

झंडरीलाल साधु .... कदम्ब तस्य सुत साधु माहण तस्य सुत साधु साऊल प्रतस्य स्पर्धा (भार्या) जोज (जोजे) प्रथलज्य (प्रतिष्ठाप्य) प्रणम (मं) ति नित्यं ।। साहु तीकव भ्रातृ .... (उदयादित्य देव) राज्य (ये) तस्य श्रुत (सुत) सा० (साहु) वहिण तस्य भार्या .... लतायाः पु .... (पुत्र) प्रणम (मं) ति नित्यं ।। मंगलं महाश्री।।

भावार्थ

संवत् १३३२ में माघ वदी सप्तमी सोमवार को संभवतः मूलसंघ बलात्कारगण के पंडिताचार्य संभवतः दुमनदेव के प्रशिष्य और सागरचन्द्र के शिष्य पंडिताचार्य श्री रत्नकीर्ति संभवतः प्रतिष्ठाचार्य के रूप में प्रतिष्ठा कराकर नित्य प्रणाम करते हैं।

पादपीठ की बायीं ओर अंकित पाठ का भावार्थ

प्रतिमा की प्रतिष्ठा करानेवाले दो परिवार थे। प्रथम परिवार में शाह कदम्ब का पौत्र तथा शाह माहण का पुत्र शाह साऊल और उसकी पत्नी जोजे प्रतिष्ठा कराकर प्रतिमा को नित्य प्रणाम करते हैं। दूसरे परिवार में उदयादित्यदेव के राज्य में तीकव की माता, उसका पुत्र शाह बहिण तथा उसकी पत्नी और पुत्र मंगल महाश्री की कामना से नित्य प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा ऊन से प्राप्त हुई थी। संभवतः चौबारा डेरा मन्दिर क्रमांक एक में विराजमान रही है। वर्तमान में केन्द्रीय संग्रहालय इन्दौर में यह प्रतिमा प्रविष्टि क्रमांक ६–२८ से संगृहीत है। इसकी अवगाहना ५०x१२० सेंटीमीटर हैं। इसका निर्माण वलुए पाषाण से हुआ हैं। आसन पर अलंकरण स्वरूप धर्मचक्र तथा दोनों ओर सिंह अंकित बताये गये हैं।

विशेष

संवत् १३३२ का एक शिलापट ऊन के चौबारा डेरा गांव में देवालय के द्वार पर लगा हुआ बताया गया है। यह भी लिखा गया है कि इस शिलापट पर धर्मचक्र तथा उसके दोनों ओर सिंह और हाथी बने हुए हैं। वर्तमान में यह शिलापट इन्दौर संग्रहालय में सुरक्षित है।

संदर्भ

1. भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ भाग 3 पृष्ठ 311 से साभार

और

इन्दौर संग्रहालय में संरक्षित जैन तथा बौद्ध प्रतिमाएँ एवं विविध कलाकृतियाँ: पुरातत्त्व म.प्र. शासन बाण गंगा भोपाल प्रकाशन, पृष्ठ 80–81 से साभार

अभिलेख - २८३

सिरपुर, देवकुलिका प्रतिमालेख, संवत् १३३४, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. ॐ।। स्वस्ति श्री सं. (संवत्) १३३४ वर्षे वैसाष सुदि २ बुध दिने श्री वृहगच्छे सा० (साधु) प्रहहा (ला) दन पुत्र सा० (साधु) रत्नासिंह कारितः श्री सां (शां) तिनाथ चैत्ये सा. (साधु) समघा पुत्र महणा भार्या सोहिणी पुत्री कुम –

२. रल श्राविकया पितामह सा. (साधु) पूता श्रेयासे देवकुलिका कारिता।

भावार्थ

संवत् १३३४ वैशाख सुदी द्वितीया बुधवार को श्री बहदगच्छ के शाह प्रहलादन के पुत्र शाह रत्नसिंह द्वारा बनवाये गये तथा प्रतिष्ठापित शान्तिनाथ चैत्यालय में शाह समघा के पुत्र महण और उसकी पत्नी सोहिणी की पुत्री कुमरल श्राविका के द्वारा पितामह शाह पूता के कल्याणार्थ देवकुलिका का निर्माण कराया गया।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा रायपुर जिले के सिरपुर नामक स्थान से प्राप्त हुई थी। सिरपुर रायपुर के आरंग नामक स्थान के निकट है। ब्र० चन्दाबाई अभिनन्दन ग्रन्थ के पृष्ठ ३८३ में बताया गया हैं कि मुनि कान्तिसागर को एक ऋषभ तीर्थकर की धातु प्रतिमा भी प्राप्त हुई थी। इस उल्लेख से सिरपुर जैनों का प्राचीन केन्द्रस्थल रहा ज्ञात होता है।

संदर्भ

1. पूर्णचन्द नाहर, जैनलेखसंग्रहः भाग 2, लेख संख्या 1801 पृ0 204 से साभार।

अभिलेख - २८४

इन्दौर संग्रहालय, अर्हत् प्रतिमालेख, संवत् १३३४, भाषा संस्कृत, लिपि 'नागरी

मूलपाठ

सं० (संवत्) १३३४ माघ वदि ७ सोमे ....

भावार्थ

इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा संवत् १३३४ माघ वदी सप्तमी को सम्पन्न हुई।

प्रतिमा परिचय

इस लेख में पंडिताचार्य रत्नकीर्त्ति का नामोल्लेख भी किया गया है। संभवतः इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा उन्होंने ही कराई थी। ऊन के प्रतिमालेखों में भी इनका नाम मिलता है। अतः ऐसा प्रतीत होता है कि मूलतः प्रतिमा ऊन की रही है। वहाँ से लायी जाकर इन्दौर के केन्द्रीय संग्रहालय में संगृहीत है। प्रतिमा भग्नावस्था में है। आसन पर उक्त पाठ उत्कीर्ण है।

संदर्भ

1. एन्युवल रिपोर्ट ऑन इण्डियन एपीग्राफिका: ई० 1950–1951, क्रमांक 123 से साभार।

अभिलेख - २८५

नरवर, अर्हत् प्रतिमालेख, संवत् १३३४, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. संवत् १३३४ वैसाष (वैशाख) सुदि ....

२. ....

३. ....

भावार्थ

इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा संवत् १३३४ वैशाख सुदी में सम्पन्न हुई।

प्रतिमा परिचय

प्रतिमा शिवपुरी संग्रहालय में संगृहीत है। प्रतिमा चित्र में आसन पर उत्कीर्ण तीन पंक्ति का लेख दिखाई देता है। चित्र में प्रतिष्ठासंवत् ही पढ़ा जा सका है। प्रतिमा का निर्माण नरवर की अन्य प्रतिमाओं के समान संगमरमर पाषाण से होने की संभावना है।

अभिलेख - २८६

ग्वालियर, अर्हत् प्रतिमालेख, संवत् १३४०, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

सं. (संवत्) १३४० वै० (वैसाष) सुदि २ गुरौ श्रीमाल ज्ञा (जा) ती .... श्री प्रधुम्नसूरिभिः।

भावार्थ

इस प्रतिमा की संवत् १३४० वैशाख सुदी द्वितीया गुरूवार को श्रीमाल जाति के श्रावकों द्वारा श्री प्रद्युम्नसुरी से प्रतिष्ठा कराई गई।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा ग्वालियर के पंचायती जैन मन्दिर में विराजमान बताई गई है। प्रतिमा का अन्य विवरण नहीं दिया गया है।

संदर्भ

1 श्री पूर्णचन्द्र नाहर के जैनलेखसग्रह भाग 2, ले स 1364 से साभार

अभिलेख - २८७

नरवर अर्हत् प्रतिमालेख, संवत् १३४०, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

सं० (संवत्) १३४० वैसाष (वैशाख) वदि ७ सोमे .... ।

भावार्थ

इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा संवत् १३४० वैशाख वदी सप्रेमी सोमवार को हुई थी।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा श्वेत संगमरमर पाषाण से निर्मित हैं। आसन पर उक्त आलेख उत्कीर्ण

है। वर्तमान में यह नरवर के किले में बताई गई है।

संदर्भ

1. *ग्वालियर पुरातत्त्व रिपोर्ट: 1982, संख्या 5 से साभार।*
2. *अनेकान्त: वर्ष 19, किरण 1–2 पृष्ठ 69 से साभार -*

अभिलेख - २८८

गढभैरव, आदिनाथ प्रतिमालेख, संवत् १३४०, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

संवत् १३४० वर्षे ज्येष्ठ वदि १२ शनि माथुरसंघे वघेरवालान्वये सा० (साधु) जसे भार्या पदि्मणि तत (पुत्र) लाला भार्या पुथम (प्रथम) श्रीमातृ पाल्हा भार्या राययसिरिमातृ जात्या भार्या .... सिरिमाल जात्या भार्या लाडी पुत्रस्य लाजूमातृ कांत पुत्र महादेवे सहदेव प्रणम (मं) ति नित्यं।

भावार्थ

संवत् १३४० जेठ वदी द्वादशी दिन शनिवार को माथुर संघ में वघेरवालान्वय के शाह जसे उसकी पत्नी पदि्म, पुत्र लाला, पुत्रवधु प्रथम श्रीमाता, द्वितीय पुत्र पलह, पुत्रवधु राजश्रीमाता तृतीय पुत्र जात्या और उसकी पत्नी तथा श्रीमाल और उसकी पत्नी लाड़ी, पुत्रवधु लाजू पुत्रवधु मातृकांत और पौत्र महादेव सहदेव, प्रतिष्ठा कराकर नित्य प्रणाम करते हैं।

प्रतिमा परिचय

उज्जैन के गढभैरव धार्मिक स्थल के पास एक कालभैरव का मन्दिर है। इसके निकट क्षिप्रा नदी के तट पर एक ओखलेश्वर का मन्दिर भी है। यहाँ ईसवी १६७४ की ग्रीष्म ऋतु में उन्नीस जैन प्रतिमाएँ प्राप्त हुई थीं। इनमें एक प्रतिमा तीर्थंकर ऋषभदेव की भी थी। इस प्रतिमा की आसन पर चिह्न स्वरूप वृषभ तथा उसकी दोनों ओर उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण मिला है। लेख की पंक्ति संख्या नहीं बताई गई है।

संदर्भ

1. *अनेकान्त: वर्ष 29, किरण 2, पृष्ठ 89 में प्रकाशित डॉ० सुरेन्द्रनाथ आर्य, 4 धन्वन्तरि मार्ग माधवनगर, उज्जैन के "मालवा की नवीन अप्रकाशित जैन प्रतिमाओं के अभिलेख" शीर्षक शोधलेख से साभार।*

अभिलेख - २८९

नरवर आदिनाथ प्रतिमालेख, संवत् १३४१, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. संवत् १३४१ फाल्गुन सुदि १० ....

२. ....

३. ....

अभिलेख परिचय

तीन पंक्ति के इस लेख में मात्र प्रतिमा प्रतिष्ठा तिथि पठनीय है, शेष लेख अपठनीय हो गया है। प्रतिमा का सिर नहीं है। श्रीवत्स यथा स्थान अंकित है। आसन पर चिह्न स्वरूप वृषभ तथा उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण हैं। यह लेख प्रतिमा के चित्र से पढ़ा गया था। हो सकता हैं प्रतिमा में पठनीय हो। प्रतिमा शिवपुरी संग्रहालय में संगृहीत है।

संदर्भ

1. सम्पादक द्वारा पठित

अभिलेख - २९०

बूढा (मन्दसौर) पार्श्वनाथ प्रतिमालेख संवत् १३४२, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. संवत् १३४२ वर्षे वैशाष (ख) सुदि २ शनौ प

२. रीक्षिज (स) (प्रतीष्ठित) वीर श्री श्री पार्श्वनाथ विंब।

भावार्थ

संवत् १३४२ वैशाख सुदी द्वितीया शनिवार के दिन परीक्षि और जशवीर ने पार्श्वनाथ प्रतिमा की प्रतिष्ठा सम्पन्न कराई।

प्रतिमा परिचय

प्रतिमा कायोत्सर्ग मुद्रा में ५१x२५ सेंटीमीटर के पाषाण फलक पर अंकित है। इसमें वायीं ओर परिकर के रूप में हाथी, सिंह, व्यालाकृतियाँ तथा चँमरधारी देवों का आलेखन है। लांछन नहीं है। आसन पर उक्त दो पंक्ति का मूलपाठ उत्कीर्ण है। सम्प्रति यह प्रतिमा प्रविष्टि क्रमांक ५०४ से इन्दौर संग्रहालय में संगृहीत है। प्राप्ति स्थान मन्दसौर जिले का बूढा ग्राम है।

संदर्भ

1. इन्दौर संग्रहालय में संरक्षित जैन तथा बौद्ध प्रतिमाएँ एवं विविध कलाकृतियाँ, आयुक्त पुरातत्त्व एवं संग्रहालय मध्यप्रदेश शासन, बाणगंगा रोड, भोपाल प्रकाशन वर्ष 1991 ईसवी, पृष्ठ 47 से साभार

अभिलेख - २११

बूढा (मन्दसौर) पार्श्वनाथ प्रतिमालेख संवत् १३४२, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. संवत् १३४२ वर्षे वैशाष (ख) सुदि २ शनौ
२. परीक्षि जसवीर सभक्त श्री पार्श्वनाथ बिं
३. बस्य।।

भावार्थ

संवत् १३४२ वैशाख सुदि द्वितीया शनिवार के दिन परीक्षि और जसवीर भक्त ने पार्श्वनाथ प्रतिमा की (प्रतिष्ठा कराई)।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा मूलतः मन्दसौर जिले के बूढा ग्राम से प्राप्त हुई थी। सम्प्रति इन्दौर संग्रहालय में प्रविष्टि क्रमांक ५०५ से संगृहीत है। कायोत्सर्ग मुद्रा में अंकित इस प्रतिमा का दायाँ हाथ अंशतः भग्न है। लांछन नहीं है। आसन पर उक्त तीन पंक्ति का लेख उत्कीर्ण है जिसमें प्रतिमा का नामोल्लेख भी किया गया है।

संदर्भ

1 वही, पृष्ठ 47–48, ले. संख्या 290 से साभार

अभिलेख - २९२

बूढा (मंदसौर) पार्श्वनाथ प्रतिमालेख संवत् १३४२, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. श्री संवत् १३४२ वर्षे वैशाष (ख) सुदि २ शनौ श्री काशोदभवदग्रप्रतिबद्ध प्रासादे श्री संमेदविहारे श्री माथुरगच्छे श्री धर्कटवंशे परीक्षि रत्नाचार्य माल्हणि पुत्र नासल कुवर पालसी

२. ह अट्टसीह भार्या चांद्र पुत्र परीक्षि जसवीर भार्या जसदेवि पुत्र अभयसीह कुमार पुत्र पद्मसीह जाटव समुदायेन श्री पार्श्वनाथ [1]बिंव कारितं प्रतिष्ठित श्री शालिसूरिभिः।।

भावार्थ

श्री सवत् १३४२ वें वर्ष के वैशाख सुदि द्वितीया शनिवार को सम्मेदाचल विहार में माथुरगच्छ धर्कटवश के परीक्षि, रत्नाचार्य माल्हणि के पुत्र नासल तथा कुवर पालसिंह और अट्टसिह तथा उसकी पत्नी चांद पुत्र परीक्षि, एवं जसवीर उसकी पत्नी जसदेवी तथा पुत्र अभयसीहकुमार पौत्र पद्मसिह जाटव आदि समुदाय द्वारा श्री पार्श्वनाथ प्रतिमा का निर्माण कराया गया तथा श्री शालिसूरि द्वारा प्रतिष्ठा कराई गई।

प्रतिमा परिचय

प्रतिमा १२७x४० से.मी. आकार में संगमरमर फलक पर उत्कीर्ण है। सिंहासन के कोनों पर पार्श्वनाथ के यक्ष और पद्मावती का अंकन है।

संदर्भ

1 वही, लेख सख्या 290 पृष्ठ 83 से साभार

अभिलेख - २९३

ग्वालियर, पार्श्वनाथ प्रतिमालेख संवत् १३४३, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

सं. (संवत्) वर्षे स्री शुभकीर्त्तिदेव भार्या जदु पुत्र नरपति प्रणमति।

भावार्थ

संवत् १३४३ में श्री शुभकीर्तिदेव और उसकी पत्नी जदु का पुत्र नरपति इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराकर प्रणाम करता है।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा तीर्थंकर पार्श्वनाथ की है। इसकी अवगाहना छह इंच और चौड़ाई तीन इंच हे। इसका निर्माण धातु संभवतः पीतल धातु से किया गया है। आसन का उल्लेख नहीं किया गया है। असन पर उक्त मूलपाठ उत्कीर्ण हैं। सम्प्रति यह प्रतिमा गोकुलचन्द्र दिगम्बर जैन मन्दिर ग्वालियर में विराजमान है।

संदर्भ

1. अनेकान्त वर्ष 22, पृ0 122 मे प्रकाशित स्व. प. परमानन्द शास्त्री के शोधलेख से साभार।

अभिलेख - २९४

नरवर, अर्हत् प्रतिमालेख, संवत् १३४४, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. संवत् १३४४ फाल्गुन सुदि ११ .... श्री मूलसंघे .... कीर्त्तिदेव ....

२. साधु .... प्रणंमति नित्यं।

भावार्थ

संवत् १३४४ फाल्गुन सुदी एकादशी को इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा हुई। प्रतिष्ठाचार्य संभवतः कीर्त्तिदेब थे। प्रतिष्ठा कराकर प्रतिष्ठा करानेवाला श्रावक नित्य प्रणाम करता है।

प्रतिमा परिचय

यह लेख प्रतिमा के चित्र से पढ़ा गया है। चित्र में प्रतिमा का आसन पर उक्त दो पंक्ति में मूलपाठ अंकित दिखाई देता है। चित्र में प्रतिमा सिर विहीन हैं केवल आसन दर्शाई गयी है। प्रतिमा शिवपुरी के पुरातत्त्व संग्रहालय में संगृहीत कही गयी है।

संदर्भ

1. सम्पादक द्वारा पठित ।

अभिलेख - २९५

छतरपुर, चन्द्रप्रभ प्रतिमालेख संवत् १३४५, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

सम्वत् १३४५ वर्षे वैसाष (वैशाख) सुदि ६ श्री मूलसंघे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्र जी सहा (शाह) विमल कोकित्पुन्यत् (कोकिल पुत्र) श्री जवाहरसिंह सेहर प्रणम्यते।

भावार्थ

संवत् १३४५ वैशाख सुदी नवमी को शाह विमल उनकी पत्नी कोकिल का पुत्र जवाहरसिंह प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराकर सिर से प्रणाम करता है। इस प्रतिष्ठा के प्रतिष्ठाचार्य संभवतः श्री मूलसंघ के भट्टारक श्री प्रभाचन्द्र थे।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा श्याम पाषाण से पद्मासन मुद्रा में निर्मित हैं। इसकी अवगाहना १३ इंच और चौड़ाई १० इंच हैं। सम्प्रति यह प्रतिमा श्री दिगम्बर जैन चौधरी मन्दिर में विराजमान है।

संदर्भ

1. जिनमूर्तिः प्रशस्तिलेखः ले. स. 175 पृष्ठ 48 से साभार।

अभिलेख - २९६

नरवर, अर्हत्, प्रतिमालेख, संवत् १३४८, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

सं. (संवत्) १३४८ वैसाष (वैशाख) सुदि १५ शनौ।

भावार्थ

संवत् १३४८ वैशाख सुदी पूर्णिमा शनिवार को प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा श्वेत संगमरमर पाषाण से निर्मित है। इसकी आसन पर उक्तलेख उत्कीर्ण है। प्रतिमा नरवर के किले में विराजमान है।

संदर्भ

ग्वालियर पुरातत्त्व रिपोर्ट: संवत् 1982, संख्या 6 तथा अनेकान्त: वर्ष 19 किरण 1–2 पृष्ठ 60 से साभार।

अभिलेख - २९७

ग्वालियर, अर्हत् प्रतिमालेख संवत् १३५२, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

सं. (संवत) १३५२ वैसाष (वैशाख) सुदि १२।

भावार्थ

संवत् १३५२ वैशाख सुदी द्वादशी को इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा हुई।

प्रतिमा परिचय

इस प्रतिमा की अवगाहना दो इंच और चौड़ाई एक इंच है। इसका निर्माण धातु से हुआ है। वर्तमान में यह गोकुलचन्द्र दिगम्बर जैन मन्दिर ग्वालियर में विराजमान है।

संदर्भ

1. अनेकान्त: वर्ष 22, पृ० 122 में प्रकाशित स्व. पं. परमानंद शास्त्री के लेख से साभार।

अभिलेख - २९८

अहार, पार्श्वनाथ प्रतिमालेख, संवत् १३५२, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

१. संव (संवत्) १३५२ फा०: शु. (फाल्गुन सुदि) ६

२. परसदी (परसादी) शांति (शांति) ....

३. ....

भावार्थ

संवत् १३५२ फाल्गुन सुदि नवमी को परसादी शान्ति आदि ने इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई।

प्रतिमा परिचय

इस प्रतिमा का निर्माण ताम्र मिश्रित पीतल धातु से पद्मासन मुद्रा में हुआ है। आसन सहित अवगाहना ३ इंच हैं। आसन की चौड़ाई २ १/२ इंच है। सिर की फणावली टूटी हुई है। वर्तमान में यह प्रतिमा मन्दिर नम्बर दो–भैंयरे में वेदी की प्रथम ऊटनी पर विराजमान हैं। इस कटनी पर पीतल धातु से निर्मित यह सातवीं प्रतिमा है।

संदर्भ

1 अहार क्षेत्र के अभिलेख ले. सं 2/130 पृ0 40 से साभार

अभिलेख- २९९

शहडोल, अर्हत् प्रतिमालेख, काल रहित

मूलपाठ

१. ॐ ह्रॉं ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा स्वाहा

२. ....

अभिलेख परिचय

यह लेख भारतीय ज्ञानपीठ में संगृहीत प्रतिमाचित्रों में शहडोल के एक प्रतिमाचित्र से पढ़ा गया है। दूसरी पंक्ति अपठनीय रही। प्रतिमा फलक में दायीं बायीं ओर १२–१२ तथा मध्य में एक प्रतिमा अंकित है। मध्यवर्ती प्रतिमा कायोत्सर्ग मुद्रा में है और शेष पद्मासन मुद्रा में। मूलनायक प्रतिमा के शिर पर तीन छत्र दर्शाये गये हैं। मंत्र सूचक यह उल्लेखनीय लेख है।

संदर्भ

1. सम्पादक द्वारा पठित।

अभिलेख - 300

ऊन, अर्हत्, प्रतिमालेख, काल रहित, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

श्रेष्ठि .... प्रणमति सुत लाषन (लखन) प्रणमति।

भावार्थ

लाखन प्रतिष्ठा कराकर प्रणाम करता है।

प्रतिमा परिचय

ऊन से प्राप्त इस प्रतिमा का कटि प्रदेश से नीचे का भाग ही प्राप्त हुआ था। यह इन्दौर संग्रहालय में प्रविष्टि क्रमांक २३—२३६८ से संगृहीत है। इसका निर्माण स्लेटी रंग के पाषाण से पद्मासन मुद्रा में हुआ है। लिपि की दृष्टि से इसका समय तेरहवी शताब्दी बताया गया है।

अभिलेख - 301

पुरागिलाना, अम्बिका देवी प्रतिमालेख, काल रहित, भाषा—संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

महान्तारिका सर्पिणी प्रणमति नित्यं।

भावार्थ

पार लगानेवाली महान देवी को सर्पिणी नित्य प्रणाम करती है।

प्रतिमा परिचय

इस देवी का सिर नहीं है। ललितासन से विराजमान है। गले में हार, हाथों में चूडियाँ, भुजाओं में भुजबन्ध और पैरों में पायल धारण किये है। यह देवी प्रतिमा मन्दसौर जिले के पुरागिलाना से प्राप्त हुई थी। वर्तमान में यह इन्दौर के केन्द्रीय संग्रहालय में

प्रविष्टि क्रमांक ५—२४ से संगृहीत है। लिपि की दृष्टि से इसका समय तेरहवीं शताब्दी ज्ञात होता है। सम्पूर्ण विवरण भारतीय ज्ञानपीठ में संगृहीत चित्र से प्राप्त किया गया है। इस प्रतिमा का वाहन सिंह बताया गया है, जिससे यह अम्बिका देवी प्रतिमा ज्ञात होता है।

संदर्भ

1. सम्पादक द्वारा पठित।

अभिलेख - 302

पुरागिलाना, अम्बिका देवी प्रतिमालेख, काल रहित, भाषा संस्कृत, लिपि नागरी

मूलपाठ

महान्तारिका रूपिणी प्रणमति नित्यं।

भावार्थ

पार लगानेवाली महान् देवी को रूपिणी नित्य प्रणाम करती है।

प्रतिमा परिचय

यह प्रतिमा भी मन्सौर जिले के पुरागिलाना नामक ग्राम से प्राप्त बताई गई है। वर्तमान मे इन्दौर केन्द्रीय संग्रहालय में संगृहीत है। इसका निर्माण रेलीते पाषाण से हुआ है। इसके साथ नग्न दो बालक भी अंकित किये गये हैं। इन बालको से यह तीर्थंकर नेमीनाथ की शासन देवी अम्बिका ज्ञात होती है।।

विशेष

सर्पिणी और रूपिणी संभवतः दोनों बहिने थीं। उन्होंने पृथक् पृथक् अम्बिकादेवी की प्रतिमाएँ बनाकर प्रतिष्ठित कराई थीं। इसका समय भी तेरहवी शताब्दी ज्ञात होता है।

संदर्भ

1. सम्पादक द्वारा पठित।

अभिलेख - 303

गवालियर, सासबहू मन्दिर प्रशास्ति, संवत् ११५०, भाषा संस्कृत, लिपि प्राचील नागरी

मूलपाठ

१. ॐ नमः पद्मनाथाय। हर्षात् फुल्लविलोचनैर्दिशि दिशि प्रोद्गीयमानं जनै (र्मेदिन्यांवितसन्ततो हरिहर ब्रह्मास्पदानि क्रमात्। श्वेतीकृत्य यदात्मना परिणतं श्री पद्मभूमृद्यशः पायादेष जगन्ति निर्म्मल वपुः श्वेतानि रूद्ररिचरम् ।।१।। मौलिन्यस्त महानील शकलः पातु वो हरिः। दर्शयन्निव केशस्य नवजीमूत कार्णिकाम् ।।२।। मुक्ताशैलच्छेन क्षितिति

२. लकयशो राशिना निर्म्मतोऽयन्देवः पाया दुषायाः पतिरति धवल स्वच्छ कान्तिर्जगन्ति। मन्वानः सर्व्वथैव त्रिभुवन विदितं श्यामतां पह्नवं यः शङ्के स्वं वर्णचिह्नं मुकुट तट मिलन्नील कान्त्या विभिर्त्ति ।।३।। इदं मौलिन्यस्तं न भवति महानील शकलं न मुक्ताशैलेन स्फुरति घटिश्चैष –

३. भगवान्। उषाकर्णोत्तंसीकरणसुभगं नीलनलिनं वहत्या द्याप्यस्याश्चिर विरहपाण्डूकृततनुः।।४।। आसीद्वीर्यलघु कृतेन्द्रतनयो निःशेष भूमिभृतां वन्द्यः कच्छपघातवंश तिलकः क्षौणीपतिर्लक्ष्मणः। यः कोदण्डधरः प्रजाहित करश्चक्के स्वचित्तानुगाङ्गामेकः पृथुवत्पृथूनपि हठादुत्पा द्यपृथ्वीभृतः।।५।। तस्माद्वज्रधरोपमः क्षिति –

४. पतिः श्री वज्रदामाभवद् दुर्वारोर्ज्जितवाहुदण्ड विजिते गोपिद्र दुर्गेयुवा। निर्व्याजंपरिभूय वैरिनगराधीश प्रतापोदयं यद्वीरव्रत सूचकः सममवत् प्रोद्घोषणा किंकिमः ।।६।। न तुलितः किल केनचिदप्य भूज्जगति भूमिभृतेति कुतूहलात्। तुलयतिस्म तुला पुरूषः स्वयं खमिह वर्ष्म विशुद्ध हिरण्मयैः।।७।। ततो रिपुध्वान्त सहस्त्रधामा नृपोभव –

५. न्मङ्गलराजनामा। यद्वीश्वरैकप्रणति प्रभावान् महेश्वराणाम्प्रणतः सहस्त्रैः।।८।। श्री कीर्त्तिराजो नृपतिस्ततोभूद्यस्य प्रयाणेषु चमूसमुत्थै। धुली–वितानैः सममेव चित्रं मित्रस्य वैवर्ण्यमभूद द्विषश्च।।६।। क्रिं बूमोस्य कथामृतं नरपते रेतेन शौर्याब्धिना धत्ते मालवभूमिपस्य समरे सङ्ग्रामतीतोर्ज्जितः यस्मिन् रङ्ग मुपागते दिशि दिशि भासा

६. त्कराग्रच्युतैर्ग्रामीणाः स्वगृहाणि कुन्दनिकरैः सञ्छादयाञ्चक्रिरे।।१०।। अद्भुतः सिंह पानीयनगरे येन कारितः। कीर्त्ति स्तम्भ इवाभाति प्रसादः पार्वतीपतेः।।११।। तस्मादजायत महामति मूलदेवः पृथ्वीपतिर्भुवनपाल इति प्रसिद्धः। श्री नन्ददण्डगद निन्दित चन्द्रवर्ति चिन्है रलंकृततनुर्मनु–तुल्यकीर्त्तिः।।१२।। यस्य ध्वस्तारि भूपालां सर्वांरपालयतः

७. प्रभोः। भुवन त्रैलोक्य मल्लस्य निः सपत्नमभूज्जगत्।।१३।। पत्नी देवव्रता तस्य हरे र्लक्ष्मीरिवाभवत्। तस्यां श्री देववालो भूत्तनयस्तस्य भूपतेः। दानेन कर्ण्णमजयत् पार्थ

कोदण्डविद्यया। धर्मराजश्च सत्येन स युवा विनयाश्रयः।।१४।। सुनुस्तस्य विशुद्ध बुद्धि विभवः पुण्यैः प्रजानामभून्मान्धातेव स चक्रवर्तितिलकः श्री पद्मपालः प्रभुः यत्स्वाम्येपि क –

८. रप्रवृत्ति रपरस्येतीव यश्चिन्तयन्दिग्यात्रासु मुहुः खरांशुमरूणं सान्द्रैश्च भूरेणुभिः।।१५।। कृत्वान्याः स्ववशे दिश क्रमवशात्सक्ष्मापतिर्दक्षिणानुत्खिप्ता चल सन्निभानविरत .... वाजिव्रजैः। उद्भूतान् पततः प.. संप्रेक्ष्य रेणूत्करान् भूयोप्युद्भटसेतुबन्धनधिया त्रस्यन्ति .... ।।१६।। तस्येन्दुद्युति सुंदरेण यशसा नाके सुरणांगणे सौवर्ण्य भ्रमशील खंडन –

९. भयादप्राप्नुवत्यः प्रियान्। नूनं शक्रपुरः सुरासुर वधू सङ्घा श्रिये साम्प्रतं .... यंति ये प्रथमतः सर्वा वपु संश्रिते। कैर्दृप्ता .... पादपां गावः कामदुघा .... कैश्चिन्तितार्थप्रदाः। पूर्णाः कस्य मनोरथा इह न कैः .... मुना पूरिता वीरो यानि तदस्ति तद्गुणवतः कस्य द्रुमादीन्यपि। श्रुत्वा न पद्मनृपतिं परि रक्षितारं प्राप्तोदयोपि यदसौ वतनप्रभावः।

१०. योद्यापि .... तनुर्बिपिनेष्यशो .... ।। भ्रमः कुलालचक्रे च लाभः पुण्यार्जनेषु च। काठिन्यं .... कुम्भेषु कं .... शासविमर्दिनीम्।। असम्मतो .... पीडा साधुर्ननिस्त्रिंशपरि .... तोप इ .... ललग्नेन धनुर्न चासिं तथापि या बैरिगणं जिगाय। संघ ....

११. .... पाधिप शिरोमणि भि .... लोकानुरागयशसापि .... प्रतापं बिस्तारयतां यदसि .... ।। बलयानीव नारीणा हिमानीव नभःश्रिय। .... स विमृश्य नंदीपूर चत्वरे सम्पदायुष पूर्त्तधर्मो मति चक्रे जिघृक्षु रनयोः फलम्। प्रजा .... त्वते।

१२. न क्षितितिलकभूतं न भवनं .... कारितमदः। .... मिव गिरा यस्य शिखरं समारूढ़ सिंहो मृगमिव नृ .... मशितुम् ।। .... सश्च .... वर शिखवरस्पर्द्धिनो हिममण्ड .... त्यावतीयं शशिकरधवला वैजयन्ती पतन्ती। निर्व्यातं भाति भूतिच्छूरितनिजतनोर्देव देवस्य शम्भोः स्वर्गाद गङ्गेव पिङ्गस्फुटवि –

१३. कटजटाजूटमध्यं विशन्ती।। तदेतद् ब्रह्माण्डं स इह भविता पंकज–भुवः पुनर्वयं बोढास्मो वयमिह .... वियति .... तदिदमुररीकृत्य सकलं ध्रुवं संसेवन्ते हरिवदन .... तममी।। .... कनकाचलः शुभ विद्यावन्तः स्थितः श्री पतिर्विप्राणोद्विजसत्तमानुदधिजावासो नृसिंहान्वितः। निर्म्माता स्ववृतः समस्त विबुधैर्लब्धप्रतिष्ठै रयं प्राप्तोदृश्च।

१४. धरातले सममहो कल्पं हरेः कल्पताम्। .... द्विजपुङ्गवेषु प्रतिष्ठितेष्वष्टषु पद्मपालः युवैव दैवप्रतिकूल भावा .... बभूव।। तस्य भ्राता नृपतिरभवत् सूर्यपालस्य सूनुः श्री गोपाद्रे प्रकृतनिलयः श्री महीपालदेवः।

यम्प्राप्यैव प्रथितयश सन्तापभूतां समाथोसेयं स्यागो हरिरविसुता मावदुस्थोऽचिरेण। सृष्टिङ्कुर्वन्न मात्स्यानां विप्रा –

१५. णं स नृपस्थितिम्। प्रलयं विद्विषामासीद् ब्रह्मोपेन्द्रहरात्मकः यत्र धामनिधौ राज्ञि पालयत्यवनीतलम्।। .... मुद्वहन्ति शिरसः खलु राजहंसा सृष्टास्तया पुनरिभा समयावसन्नाः। नाथ प्रजा सुमनसां प्रथमो .... सित्वं सिद्धवीररसता –

१६. मरसोद्भवस्य।। लक्ष्मीपतिस्त्वमसि पङ्कजचक्रचिह्न पाणिद्वयं वहसि भूपभुवं विभर्षि। श्यामं वपुः प्रथयसि स्थिति हेतु रेकस्त्वं कोपि नीति विजितो .... सम्पालयस्य निशमर्थिजनस्य कायं रामश्रिया त्वमसि नाथ सु .... सङ्कर्षणस्त्वमसि विद्विषदायु धन्त्वं त्व कोसि सच्चरित्त हाल हलायुधस्य।। .... ख्याता रति .... रूपं तवातिपा –

१७. यविस्मयकारिदेव। त्वं मीनसिद्ध पुरुषोत्तमसम्भवोसि कस्त्वं क्षितिशबर शंकर सूदनस्य।। भूभृतसुता पतिरसिद्विषतां पुराणि भेता त्वमीश .... म। भूतिं दधास्य मलचंद्र विभूषितांग कस्त्वं सदंबुज दिवाकर शङ्करस्य।। त्वं तेजसाशिखिन मिद्धमधः करोषि शक्तिं दधासि ....। त्वन्तारकं रिपुबल –

१८. .... बलान्ति हसि कस्त्वं नवी नल नील मलब्ध जन्मा। त्वं वजभ्रत्वमसि पक्षभि दप्यशेषं भूमिभृतां विवुध बन्ध गुरू प्रयोसि .... दुर्गाचरणोसि कोसि त्वं भीम साहससहस्त्र बिलोचनस्य। ख्यातं तवेश बहु पुण्य जनाधि पत्यं कान्ताल कावलिभि राप्त तमैः सुगुप्ता।। त्वा मामनन्ति परमेश्वर बद्धसख्यं त्वं कोसि सद्गुण निधानधरा

१९. धिपस्य। तेजोनिधि स्त्वमसि भूमिभृतः समग्राः कान्ताः करैः प्रयतमुग्रतरैस्तमेश। प्रप्तोदयः सततमर्थिजनस्य कोसि त्वं कल्पभूधर सरोरुह बान्धवस्य।। आनन्ददोसि जनता नोत्पलाना माप्यायिता खिल जनः करमार्दवेन। त्वं शश्वदीश्वर शिरस्तलदत्त पादस्त्वं कोसि मर्त्य भुवनेश निशाकरस्य।। त्वामंशमीशनि –

२०. गदन्ति मधुद्विषोमी श्यामाभिराम तनुरस्य मलप्रबोधः। पुण्यं .... रतभिदं विहितं त्वयैव त्वं कोसि सत्यधन सत्यवती सुतस्य। .... न्ति सुरसिन्धुरियं समुद्रप्रान्तन्त्वयोन्नति मसौ गमितः स्ववंशः। पूर्वे पवित्रवनके विहिताश्च कोसि बंशस्थ लब्ध परता .... भगीरथस्य।। एतत्वया कृतमताङ्क मासुधिस्त्वं व्याप्ता महीह –

२१. .... रीश मनोजवैस्ते पुण्यावतार करणाक्षत दुर्दशास्त्वं कोसि हन्त रिपुलाघाव राघवस्त्वम्। धर्म्मप्रसूस्त्वमसि सत्यधरस्त्वमेकस्त्वं वासुदेव चरणार्चनदत्तचित। त्वं कोसि विप्र जन सेवित शेषभूतिः संग्राम निष्ठुर युधिष्ठिर पार्थिवस्य।। त्वं भूरि कुंजरवलो भुवनैक मल्ल .... भूषित तनुर्नृप–पावनोसि। प्रच्छन्नं।

द्वितीय पत्थर

१. .... कस्त्वं कवीन्द्रकृतमाद .... कन्दरस्य। पक्वस्त्वमीश धर्मभृता वरिष्ठः सस्वामी कारिगुणदर्पहरस्त्वमाजौ। त्वं सर्व्वराजपूतना विजयाप्त कीर्त्तिस्त्वं कोसि सुन्दर पुरन्दर नन्दनस्य। दुर्योधनारिवलदर्प ह्रतस्ववेश यत्नः परार्जनयशः प्रसरे निरोद्धुम्। त्वं कोसि भूजनित .... कर्तन विकर्तन सम्भवस्य।

२. यस्त्वमसि कर्मगम्भीर तायास्त्वं पासि पार्थसमभूमिभृतः प्रविष्ठान्। अन्तः स्थितंस्तव हरिः सततं नरेश कस्त्वं विदीर्ण रिपुजागर सागरस्य।। .... क्रमसमागत सत्ववृत्तिस्त्वंराज कुञ्जरशिरः प्रवितीर्ण पादः। द्वीप्तारि भास्करतिरस्कृति सिंहिकः भूः कस्त्वं महीपति मृगाङ्क मृगाधिपस्य। दानं ददासि विकटो वत वंश शोभस्त्वं दन्तपालि करवा –

३. लहतारिदर्पः क्षोणीभृतो जयसि तुच्छतया नरेन्द्र त्वं कोसि वैरिबलदारण वारणस्य।। सद्मश्रिस्त्वमसि मित्रकृत प्रमोदस्त्वं राजहंस सम लंकृतपादमूलः। स्वामिन्नघः कृतज कोसि जनाभिरामः कस्त्वं स्मिताद्यमुखपंकज पंकजस्य।। सत्पत्रभूषित तनुः सुविशुद्ध कोशस्त्वं चंद्रकीर्ति समलंकृत कान्तमूर्तिः। ख्यातं तवैव कविवर्ण .... न्व बुहिक ....

४. समरभैरव कैरवस्य।। त्वं पश्यतां हरसि देव मनांसिसस्वन् मङ्गल्यभूस्त्वमसि निर्मलताभिरामः। कोसि प्रसीद वहु सद्गुण रत्नयोनिस्त्वं कच्छपारि कुलभूषण भूषणस्य।। धात्रा परोपकरणाय विसृष्टकायः सञ्जायजन्म समलं – कृततुङ्गगोत्र। बूहि .... मननीश्वर नन्दनीयस्त्वं कोसि सूर्यनृपनन्दन चन्दनस्य . ...।। नत्वाशु शुद्धहृदय प्रथितो।

५. ग्रमायस्त्वं जानुजा क्षतवृषो न जकीकृताहल स्तेनास्तु नाथ हरिणोपमितिः कथं ते।। नित्यं सन्निहिते कृपाण तमसा प्रायोभि भूयेत स त्वत्रासाद् भुवनैकनाथ हरिणा– स्तस्योदरे प्राविशन्। मूर्तिस्ते च कलङ्किता सजमंता धत्ते .... शङ्खस्थेर्विदितस्तथापि नृपते राजा त्वं .... दमुतः................................. .... विमुखतां पर्थित नीता परे व्यसिनस्तुतिरर्ज्जुन –

६. स्या विहिते व्यज्ञापि पूर्व्वकिल तत्सम्यक् प्रतिभाति सम्प्रति पुनः श्रीमन्महीपालवत् त्वामालोक्य सहस्त्र शोरिपुबलं निधनन्तमेकं रणं।। किं ब्रूमोपि .... स्त्वं नीति पात्रं परं वृत्तान्तं जगतीपतेरतिसृणात्मप्रियाणां श्रणु। कीर्त्ति ग्रास्यति दिक्षु .... किं चित्रं भुवनैक मल्लयदि।

७. मन्दाकिनीं पद्ममूलोका दुद्धरता भगीरथनृपेणा नायिनिम्नना महीम्। आश्चर्य पुनरेतदीश यदि ते निम्नान्मही मंगला दूर्द्धं कीर्त्ति .... श्री कमल भूलोकं त्वयाप्रापिता। चित्रं नात्र कल .... सर्वात्मन्व विद्विषो विशिखै समू– र्च्छितस्याहवे। .... मध्ये –

८. न्नताश्चर्यकृत्।। अत्यवुधिभवद्वैमत्यादित्य भवन्महः। अतिसिंह भवत् शौर्यमतः

केनोपमीयते।। केयूरबलभूपाल भुजदण्डं विराजते किरीटमिव .... नित्यासि विजश्रियः .... भुवनगुरोस्तोत्रमकृथास्तदेव –

९. वैतालिकैरित्थम् मिष्टुतेन संपूजिता मर्त्यगुरू द्विजेन। विमुक्त कारागृह संयतेन विदीर्णमूतामयदक्षिणेन। तेन भिषितमात्रेण प्रतिजज्ञे द्वयं स्वयं। पद्मनाथस्य भू– सिद्धि कन्याया ....।। .... यशः शरीरम् ।। स–

१०. सर्षिता ब्रह्मपुरी च तेन शेषान् विधायावनिदेव सुख्यान्। प्रवर्ति – ब्रममतन्द्रितेनं मृष्ठान्त पानरति धार्मिकेणा। श्रीपद्मनाथस्य सलोकनाथ .... नैवेद्यपाकी .... विला

११. सिनीवा .... नादिर्यथार्हतः पादकुलस्य मूर्तिम्। स पद्मनाथस्य पुरः समग्राम कलपयत् प्रेक्षण कायभूपः।। पाषाणपल्लीं प्रविभज्य सम्यग देवाय ....। सम्पादयामास तथा द्विजेभयः।

१२. गतो योगीश्वरांगोद्भवः ख्यातः सूरिसलक्षणः क्षितिपतेः सर्व्वत्र विश्वासभूः। आधारो विनयस्य शील भवनं ,भूमिः श्रुतस्याकरः स्वाध्यायस्य क क वसति ....

१३. हीपाले नटो विप्रास्तस्मिन् ग्रामे प्रतिष्ठिताः। तेषां नामालिख्यन्ते विसूरः शासनोदित्तः।। देवलब्धि सुधीरा ख्यस्ततः ओघरदीक्षितः।

१४. .... रामेश्वरों द्विजवरस्तथा दामोदरो द्विजः। अष्टादशैतें विप्राश्च .... द्विजः। पादनोपदिका .... णेकौसुरार्चकौ। द्वावर्द्ध पदिनावेष विप्राणां संग्रहः कृतः। .... दद्धपदंनृपः। विधाय .... कायस्य सूरये देवाय दत्तः। सौवर्णो राज्ञा दत्तैः समाचितम्। .... हरियमणिमयंभूपं –

१५. .... कं ददौ। रत्नैर्विचित्रं निश्कश्च निष्क .... स भूपतिः।। प्रा–केयूरयुगलं रत्नैर्वहुभिराचितम् कङ्कणानां चतुकश्च महार्हमणिभूषितम्। .... द्वितीय मनि .... स्थ सौवर्ण केवलं यथा। कङ्कणानां चतुकश्च नीलपट्टद्वयं तथा। .... लै पंचभिर्युता। .... धारापात्रश्च का

१६. .... चतुष्टयं। सुवर्ण्णाकत्रयं देवपरिवारविभूषिणम्। .... परिहेमाब्जमातपत्री कृतं विभोः। निवेश्य ताम्र पट्टे च तन्मये नैवम् ....। प्रतिमा नित्यं मणि .... राजती .... प्रतिमा .... का द्वितीया .... द्युती राज .... मयी चान्या ....। ताः प्रयत्नेन तिस्रोपि पूज्यते .... वेश्मनि। तत्र ताम्रमयं देवं दीपार्थ मण्डिकाकृतम्।

१७. .... क। ताम्रार्थ पात्रद्वितयं तथा दत्त महीभुजा। सधूपदहनाः सप्त घंटाश्च। दत्ता शङ्खाश्च सप्तैव ताम्रपात्री चतुष्टयम्। स कांस्य भाजनंप्रादा– न्नृपतिः . ... चामरंदण्ड .... वृहदच्चतुष्टयं ताम्रमयं तांस्ता ....। दत्ताश्च रातन्मया।।.................. देवोपकरण द्रव्याणां संग्रहः कृतः।

१८. .... वापीकूपतड़ागादि .... नानावनेषु च। दशमासं तथा विशत्यूर्द्धं सर्व्वत्र मंडले। ददौ राजा नि .... चते सर्व प्रवर्तते। अयं देवालयों नाम .... स्फटिकामल .... नारद्वाजेन मीमांसा न्याय संस्कृत बुद्धिना।

कवीन्द्रराम पौत्रेण गोबिन्द कविसूनुना। कविता–मणिकर्ण्णेन सुभाषित सरस्वती।। प्रशस्ति

१६. .... लंकेश्वरवान द्वितीयां विभ्रत्सुहृतां मणिकण्ठ सूरैः। (अशेष भाषासु कविर्लिलेख वर्णान्यशोदेव दिगम्बरराकः)।। पञ्चासे चाश्विने मासे कृष्णपक्षे नृपाज्ञया। रचिता मणिकर्ण्णेन प्रशस्तिरिमयुज्जवला। अङ्कतोपि ११५०। आश्विन बहल पञ्च।

२०. .... खिलां महीमं यस्य गीर्वाणमन्त्री च मन्त्री गौरो भव। प्रशस्तिरियमुत्कीर्णा सद्वर्णा पद्मशिल्पिना।

(पूर्णचन्द्र नाहर, जैनलेखसंग्रहः भा. २ः ले. सं. १४२६, पृ० ८५–६२)

हिन्दी भावार्थ

प्रशस्ति की प्रथम चार पंक्तियों में पद्मनाथ स्तुति है। इसके उपरान्त शासक महीपाल की वंश परम्परा का उल्लेख हैं। पूर्वजो में सर्वप्रथम कच्छपघातवंश- -तिलक लक्ष्मण का नाम आया है। लक्ष्मण के बाद क्रमशः वज्रदामन् मंगलराज, श्रीकीत्तिराज, मूलदेव, देवपाल, पद्मपाल, सूर्यपाल के नाम मिलते हैं। इन शासकों से सम्बन्धित संक्षिप्त वर्णन प्रस्तुत कर महीपाल की कीर्त्ति का उल्लेख है। आरम्भ में पद्मनाथ को नमस्कार किया गया तथा प्रशस्ति के दूसरे अंश की ११वीं पंक्ति में 'अर्हत् मूर्ति' का उल्लेख जैनत्व की दृष्टि से विचारणीय है।

द्वितीय अंश में कतिपय द्विज नाम देकर १८ ब्राह्मणों की चर्चा हैं। ब्रह्मपुरी का बताया जाना निर्दिष्ट है। प्रतिमा की पूजन व्यवस्था हेतु जो विभिन्न दान दिये गये उनका नामांकन किया गया है।

प्रशस्ति के रचयिता मणिकर्ण थे। पद्मशिल्पी ने उसे उत्कीर्ण किया था, और मणिकर्ण के मित्र यशोदेवदिगम्बरार्क ने लिपिबद्ध करने में सहयोग दिया था।

इस प्रशस्ति में "दिगम्बरार्क यशोदेव का नाम ही जैनत्व की दृष्टि से उल्लेखनीय है। अन्य दृष्टियों से भी यह प्रशस्ति महत्वपूर्ण है। इसमें पद्मनाथ तीर्थंकर पद्मनाथ के लिए भी कहा गया ज्ञात होता है।

छन्द परिचय

प्रथम भाग

इस प्रशस्ति में जो अभग्न अंश हैं। उनमें निम्न छन्द हैं।

शार्दूलविक्रीडितम् : श्लोक १,५, ६, १०, १५

अनुष्टुप् : श्लोक २, ११, १३, १४

स्रग्धरा : श्लोक ३

शिखरिणी : श्लोक ४

उपजाति : श्लोक ८, ६

वसन्ततिलका : श्लोक १२ और पंक्ति १६ के आगे

मन्दाक्रान्ता : पंक्ति १४

अभिलेख परिचय

यह प्रशस्ति ग्वालियर के प्रसिद्ध सासबहू मन्दिर के एक शिलाखण्ड पर दो भागों में अंकित है। दोनों अंशों में संस्कृत भाषा में क्रमशः २१ और २० पंक्तियाँ हैं। दूसरे अंश में पंक्ति १९ में "अशेष भाषासु कविर्लिलेख वर्णान्यशोदेव दिगम्बरार्कः" श्लोक का उत्तरार्द्ध डॉ. गुलाबचन्द्र चौधरी कीरचना "पालिटिकल हिस्ट्री ऑफ नार्दरन इण्डिया" के पृष्ट ७६ से ली गयी है। प्रशस्ति प्रस्तर ग्वालियर संग्रहालय में संगृहीत है।

संदर्भ

श्री पूर्णचन्द नाहर, जैन शिलालेख संग्रह भाग 2, लेख संख्या 1426, पृष्ठ 85-92।

परिशिष्ट-1

अभिलेख-प्राप्तिस्थल और उन स्थलों से प्राप्त अभिलेख-संख्या

क्रमांक	अभिलेख-प्राप्तिस्थल	प्राप्त अभिलेख संख्या	अभिलेख योग
१	अजयगढ़	२७९	१
२	अलीराजपुर	२२५	१
३	अहार	११, १२, २१, २९, ५१, ५४, ५५, ५६, ६१, ६२, ६३, ६५, ६६, ७४, ७५, ७६, ७७, ७८, ७९, ८०, ८१, ८२, ८३, ८४, ९२, ९३, ९४, ९५, ९६, ९७, ९८, ९९, १००, १०३, १०४, १०५, १०६, १०७, १०८, १०९, ११०, १११, ११२, ११३, १२०, १२१, १२२, १२३, १२४, १२५, १२६, १२७, १२८, १३१, १३२, १३३, १३४, १३५, १३८, १३९, १४०, १४१, १४२, १४३, १४४, १४५, १४६, १४७, १४८, १४९, १५४, १५८, १५९, १६०, १६१, १६२, १६३, १६४, १६५, १६६, १७०, १७३, १७९, १८४, १८५, १९२, १९३, १९४, २०४, २०५, २०६, २०७, २०८, २०९, २१०, २११, २१२, २१३, २१४, २१५, २१६, २१८, २३५, २३६, २३७, २३८, २३९, २४०, २४१, २५६, २७१, २७२, २९८	११३
४	इन्दौर संग्रहालय	१८८, २८४,	२
५	उज्जैन	२५७, २७४	२
६	उदयगिरि	४	१
७	उर्दमऊ	४५,	१

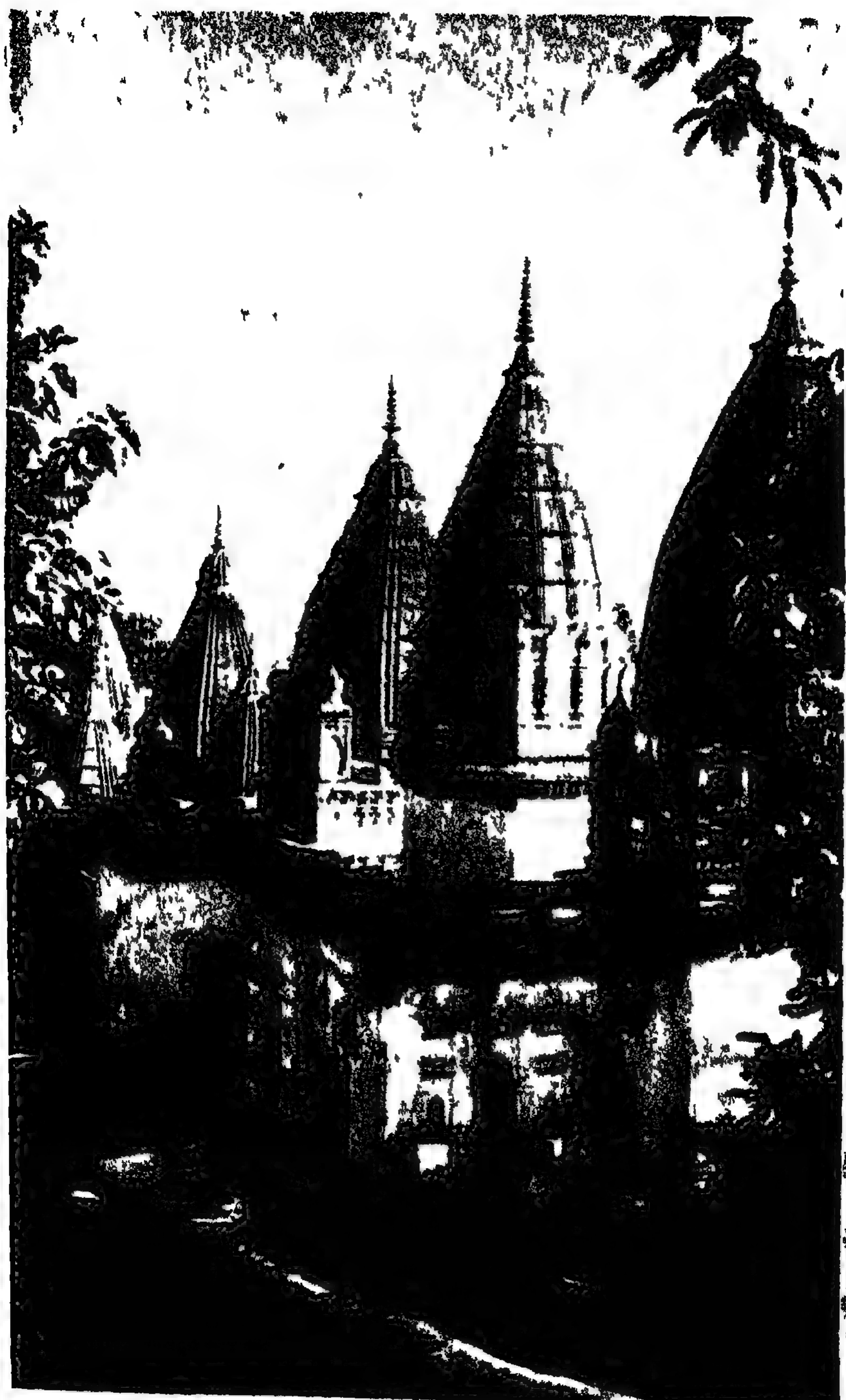
८	ऊन	४२, ४४, १६६, २२०, २२३, २२४, २४२, २४३, २४४, २८२, ३००	११
९	कंठाल	२२	१
१०	कुड़ीला	५२, ६४, ६७,	३
११	खजुराहो	७, ८, ६, १०, १६, ३१, ८७, ८८, ८६, १३६, १५६, १५७, १६६	१३
१२	गढ़भैख	२८८	१
१३	गुड़ार	६१	१
१४	गोंदलमऊ	४३	१
१५	ग्वालियर	५, २०, २४, २७, २८, ४६, ५०, २८६, २६३, २६७, ३०३	११
१६	घुसई	२६८, २७३	२
१७	घूलगिरि	१८०, १८१,	२
१८	चैत	४७, ४८,	२
१९	छतरपुर	१४, ३३, ३५, ३७, ४६, ६८, ८५, ८६, १०१, १०२, ११४, १५०, १८३, २०१, २४६, २५०, २५१, २५२, २५३, २६७, २६५,	२१
२०	जतारा	५६	१
२१	जयसिंहपुरा	१६६	१
	उज्जैन संग्रहालय		
२२	झारडा	१८६, १६०	२
२३	त्रिपुरी	३६, २३४	२
२४	दुर्जनपुर	१, २, ३	३
२५	दूबकुण्ड	३२, ३८, ३६, ४०,	४
२६	धार संग्रहालय	१७८, १८६, १८७, २२६, २२७, २२८, २२६, २३०, २३१, २३२, २३३, २७५, २८०, २८१,	१४
२७	नरवर	१५१, २६६, २७७, २७८, २८५, २८७, २८६, २६४, २६६	६
२८	नागदा	१७४	१
२९	पचरई	२६, १२६, १३०, १५२, १७७	५
३०	पनागर	१८२, २२१, २४५, २४७	४
३१	पपौरा	६६, ७०	२
३२	पुरागिलाना	३०१, ३०२	२
३३	बधा	६०, ११५, ११६, ११७, ११८	५

३४	बड़ोह	२३, ३०	२
३५	बड़नगर	६	१
३६	बहोरीबन्द	३४	१
३७	बूढ़ा	२६०, २६१, २६२	३
३८	भीमपुर	२७०	१
३६	भोजपुर	४१	१
४०	भोपाल	२४६	१
४१	मंडला	५३	१
४२	मऊ	५७, ५८, ७१, ७२, ७३	५
४३	मदनपुर	६०, १३७, २१७	३
४४	रदेव	१८	१
४५	लखनादौन	१७	१
४६	वजरंग–गढ	११६, १५५, १७२, १६८, २०२, २२२	६
४७	वदनावर	२५, १६७, १६८, १७१, १७५, १७६, १६१, १६५, १६७, २००, २५८, २५६, २६०, २६१, २६२, २६३, २६४, २६५, २६६, २७६	२०
४८	विदिशा	२१६	१
४६	शहडोल	२६६	१
५०	सिरपुर	२८३	१
५१	सिहोनिया	१३, १५	२
५२	सोनागिरि	१६, १५३, २०३, २५४	४
५३	होशंगाबाद	२४८, २५५	२
			३०३

परिशिष्ट : 2 जैन उपजातियाँ

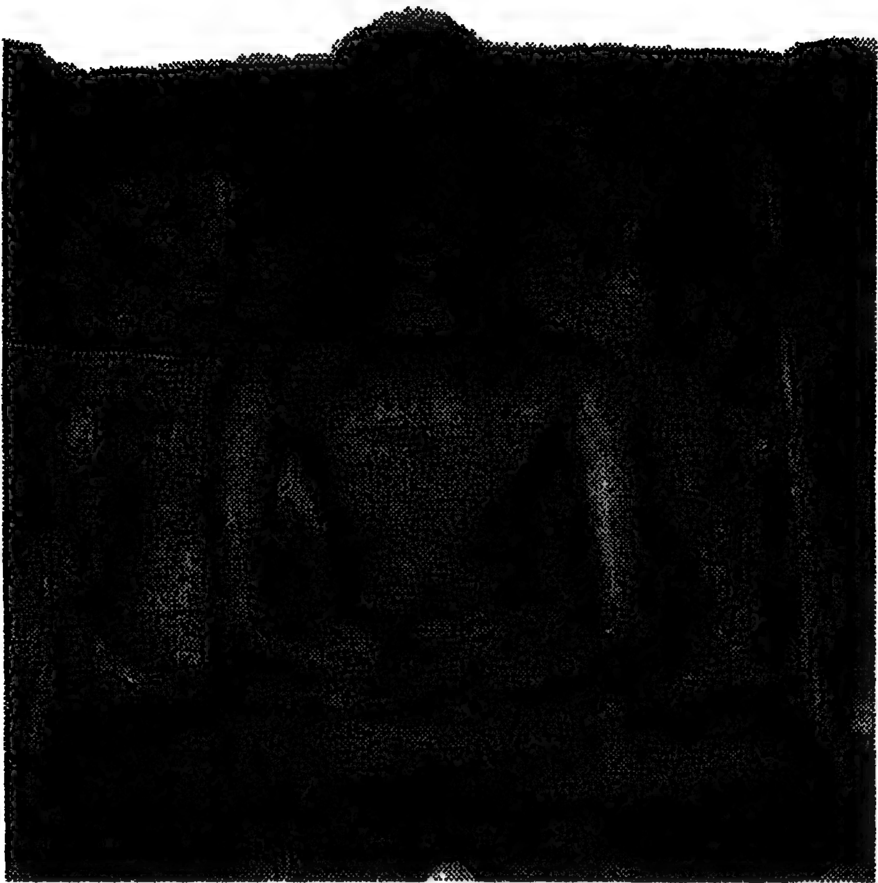
क्रमांक	नाम	अभिलेख संख्या	योग
	जैन उपजाति		
१.	अवधपुरान्वय	१५४, १६६, २१३	३
२.	कुटकान्वय	१४१, १६०, १६२	३
३.	खंडिलवालान्वय	६६, १५८, १७६, २१२, २१६, २५७, २६७, २७५,	८
४.	खंदिन्वान्वय	२११	१

५.	गर्गराटान्वय	५४, ५५, ७६, २४८, २५५	५
६.	गुर्जरान्वय	४४, १८८	२
७.	गृहपत्यन्वय	८७, ८८, ६२, ६४, ६७, ६६, १००, १०४, ११३, १२५, १२८, १४४, १४६, १५६, १६५, २०४, २१६, २३७,	१८
८.	गोलापूर्वान्वय	३४, ३७, ४५, ५७, ५८, ५६, ६६, ६८, ६६, ७०, ७१, ७५, ८२, ८६, १०८, १०६, ११०, १४२, १४३, १४५, १५३, १७०, १६२, २०७, २०६, २१०, २४१, २५६	२८
६.	गोलाराडान्वय	२०८	१
१०.	चित्रकुटान्वय	२२३	१
११.	जैसावालान्वय	३२, ६१, ७७, ८०, ८१, ६५, १०५, १०६, १२७, १३१, १५६, १६१, १६३, १६३, २४६	१५
१२.	नेवान्वय	१८२	१
१३.	परवरान्वय	६७	१
	परवाडान्वय	५२, ७३, २३६, २७०	४
	पुरवाड	५६, ६२	२
	परपाटान्वय	२६	१
	पौरपाटान्वय	६४, १११, ११६ १२०, १२६, २७०	६
१४.	पौरवालान्वय	२६५, २६६	२
१५.	प्रागवाटान्वय	२६२, २६४	२
१६.	मइडितवालान्वय	६३, १०३, १२२, १२४, २७४	५
१७.	माथुन्वय	१४०	१
१८.	माथुरान्वय	८३, १०७, १३३	३
१६.	लंमकंचुकान्वय	६५, १२१	२
२०.	वर्द्धमानपुरान्वय	१६७, १६८, १७१, २००, २६१	५
२१.	वलार्गणान्वय	१६४	१
२२.	वेमकान्वय	४१	१
२३.	वैश्यान्वय	७८	१
२४.	श्रीमाल	२८६, २८८	२

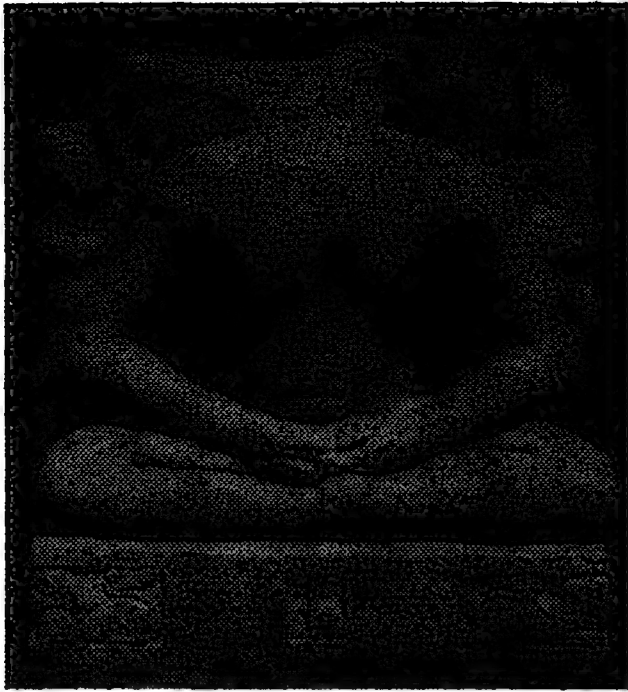




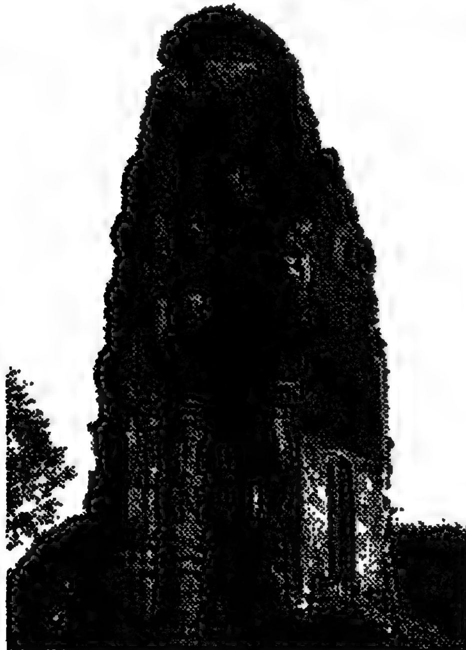
अभिलेख १८०— चुलगिरि, विश्व की सबसे विशाल प्रतिमा भगवान ऋषभदेव। यह ८२ फुट ऊँची है। जनता में यह 'बावन गजा जी' के नाम से प्रसिद्ध है। समय वि. संवत १२२३



कुन्डलगिरि – भारत की विशालतम पद्मासन १५ फुट ऊँची लगभग १५०० वर्ष (दमोह) म.प्र. पुरानी भगवान आदिनाथ (जटाधारी) प्रतिमा। जनता में यह प्रतिमा बड़े बाबा के नाम से प्रसिद्ध है।



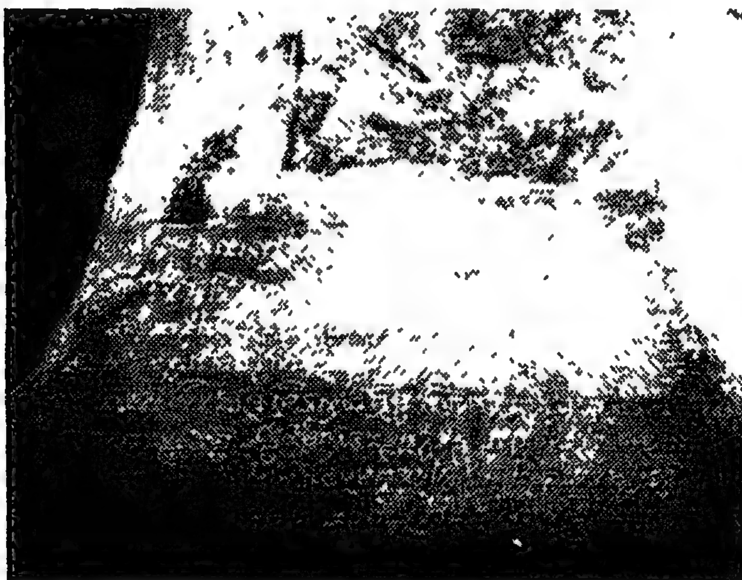
अभिलेख १-- दुर्जनपुर (विदिशा) से प्राप्त भगवान चन्द्रप्रभ की प्रतिमा लगभग ई. ३७५



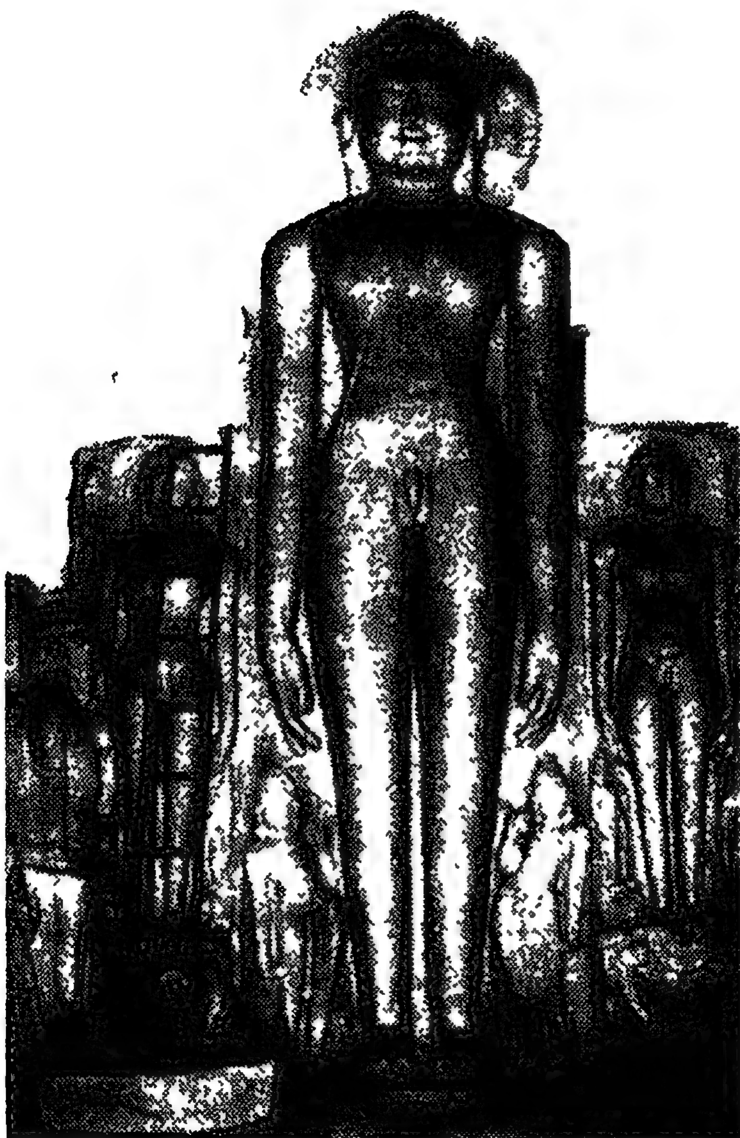
दिगम्बर जैन मन्दिर का बाह्य दृश्य इसका शिल्प सौन्दर्य अनुपम है।
स्थान अरंग जिला रायपुर (म.प्र.)



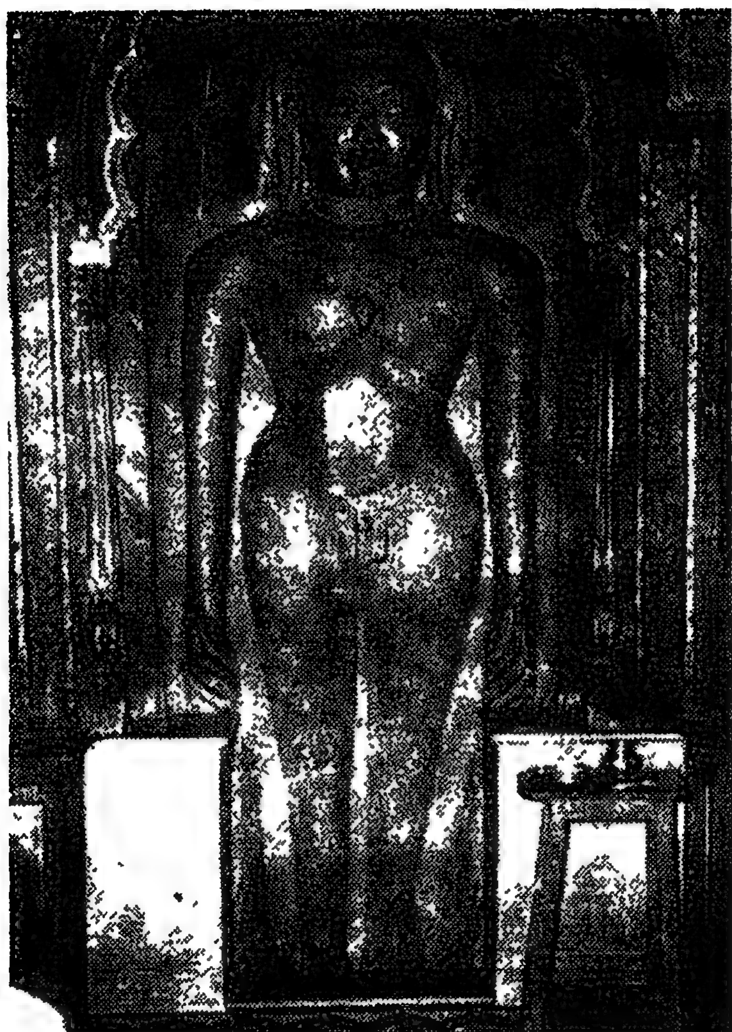
अभिलेख ४– उदयगिरि (विदिशा)–गुप्तकालीन गुहा मन्दिर । ईसवी ४२६



अभिलेख ४– उदयगिरि–गुफा न. १० मे दीवाल पर गुप्तकालीन अभिलेख ।
ईसवी ४२६



अभिलेख १५– सिहौनिया–भगवान् शान्तिनाथजी की १६ फुट ५ इच उन्नत मुर्ति, भुगर्भ से प्राप्त। पार्श्वों मे भगवान कुन्थुनाथ और अरहनाथ। समय १०वी शताब्दी



अभिलेख १६– सोनागिरि–भगवान चन्द्र प्रभ की भव्य प्रतिमा । समय वि० सवत १०३५



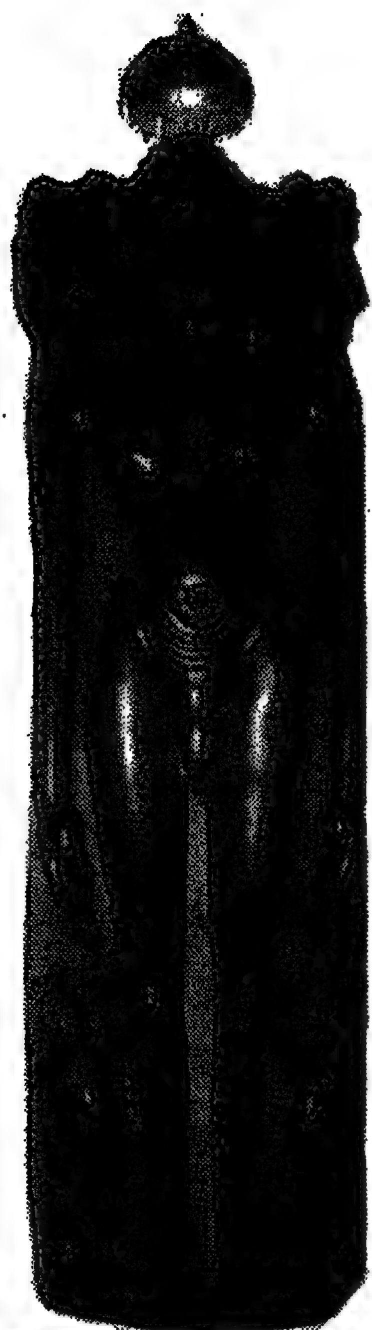
तीर्थक्षेत्र पपौरा जी, मन्दिरों का विहंगम दृश्य टीकमगढ़ जिला मध्य प्रदेश



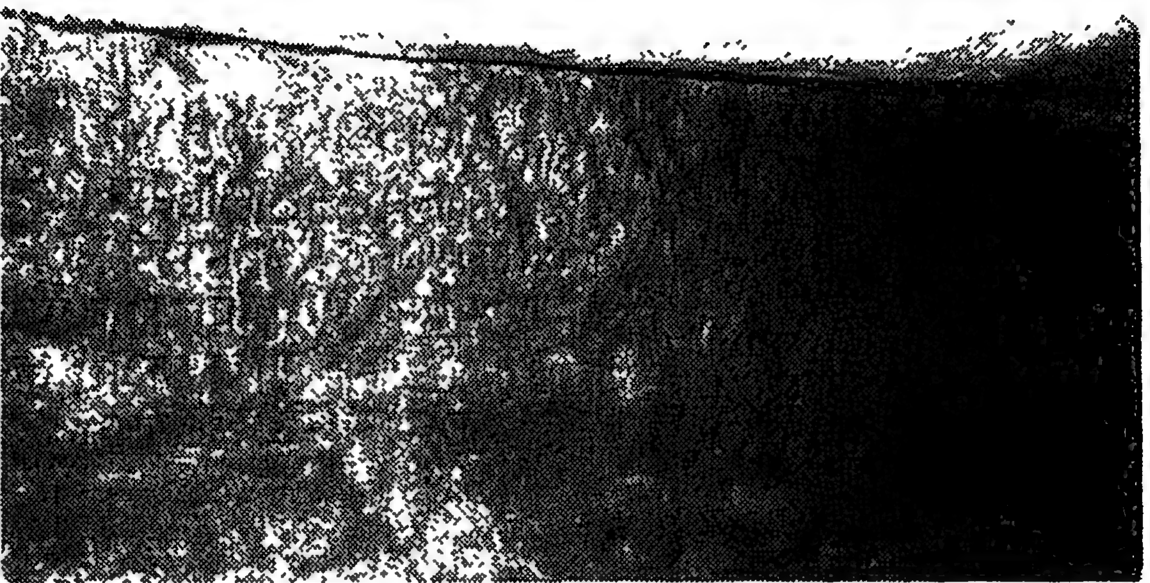
अभिलेख १७– लखनादौन–भुगर्भ से प्राप्त भगवान महावीर की
मध्यकालीन मनोज्ञ प्रतिमा। समय १० वी शताब्दी



अभिलेख १६– खजुराहो शान्तिनाथ मन्दिर मे
भगवान शान्तिनाथ जी की विशाल खड्गासन प्रतिमा ।
वि. संवत १०८५



अभिलेख ३५ – बहोरीबन्द – शान्तिनाथ भगवान की मूलनायक प्रतिमा। जनता में यह १) 'खनुआ देव के नाम से प्रसिद्ध है। समयः वि.संवत् ११२५



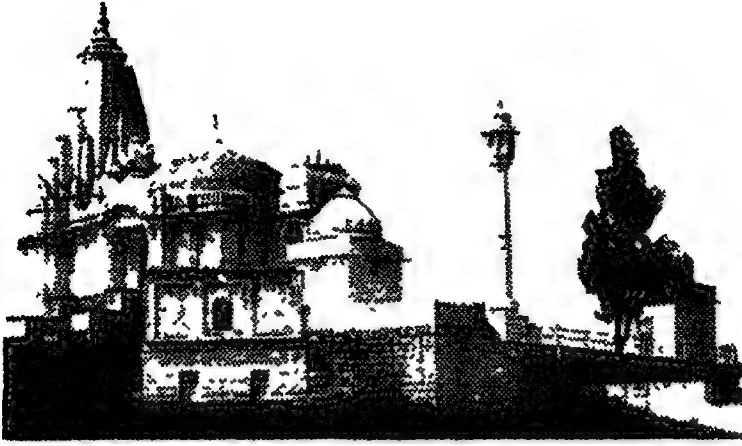
अभिलेख ३५– बहुरी बन्द– शान्तिनाथ की मूलनायक प्रतिमा। जनता मे यह खनुआदेव के नाम से प्रसिद्ध है। समय वि संवत ११२५ श्री शान्तिनाथ भगवान की कायोत्सर्गमूर्ति की पादपीठ मे उत्कीर्ण मूर्तिलेख।



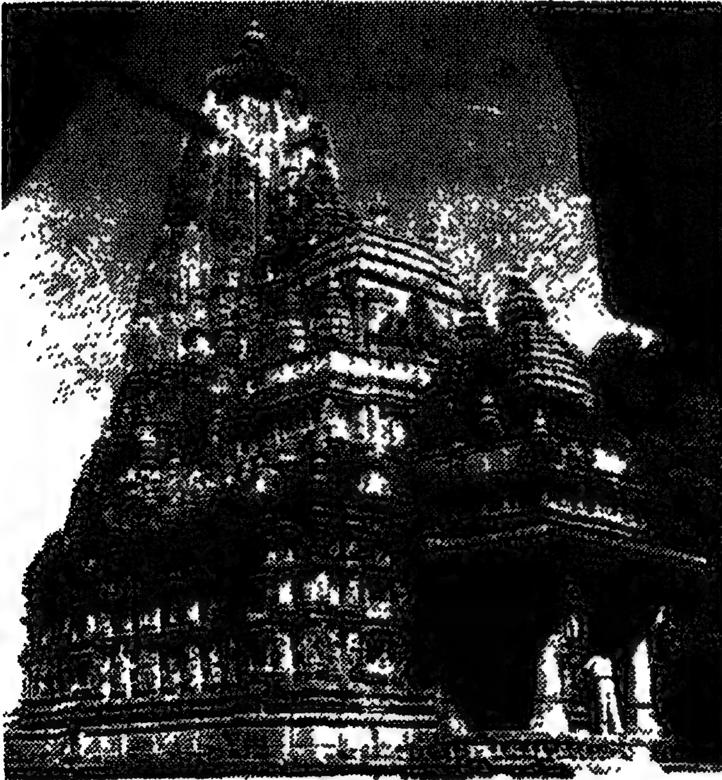
अभिलेख ६८- भगवान नेमिनाथ जी (ऊ. ५६", चौ. ५२") श्री दिगम्बर जैन मन्दिर (चौधरी) छतरपुर (म.प्र.) समय-वि. संवत् १२०२



तीर्थक्षेत्र नैनागिर, मन्दिरों का विहंगम दृश्य



जेन मन्दिर गवालेश्वर, ऊन



खजुराहो— पार्श्वनाथ मन्दिर बाह्य दृश्य—समय वि. संवत् १०११



अभिलेख २०४   अहार जी भगवान शान्तिनाथजी का विशाल मन्दिर । समय १२ वी शताब्दी



अभिलेख २०४-- आहार--भगवान शान्तिनाथजी की भव्य प्रतिमा !
समय वि. संवत् १२३६



अभिलेख २२२– बजरगढ–एक द्वार आकृति में चौबीसी । मध्य में भगवान नेमिनाथ
समय १२ वी शताब्दी



अभिलेख ३०३– ग्वालियर का सास–बहूका अत्यन्त कलापूर्ण बडा मन्दिर
समय वि० सवत् ११५०